लोकार्पण प्रति

हिआउत
हिआओल

डा. रमानन्द झा 'रमण'

डाक्टर जयकान्त मिश्र, आचार्य रमानाथ झा आदि किछु विद्वान जे अनुसन्धान, संग्रह आ' समीक्षाक परम्परा चलाओल ताहि बाटकेँ सम्प्रति प्रायः एकसरे रमणजी धएने छथि।



अनुसन्धानरसिक पण्डित श्री रमानन्द झा 'रमण' नब–नब वस्तुक अन्वेषण करैत छथि तँ आलोचक रमणजी ओकर सारगर्भ समीक्षा सेहो करैत छथि। संग्रह कार्यमे हिनक आचार्य गुरु छलाह प्रो.आनन्द मिश्र। प्रायः रमणजी मानैत छथि जे साहित्यक सृजनहुँ सँ अधिक आवश्यक अछि संरक्षण आ' मूल्यांकन। ई एहि दूनू काजकेँ पूर्वजक पूजा बूझि परम भक्तिभावसँ करैत रहलाह अछि। ओना मैथिली–जगतमे आओरो नामी आलोचक छथि, किन्तु हुनका सभकेँ पूर्वजक साहित्य आ' परम्परामे सड़ाइन गन्ध लगैत छनि आ' साहित्यमे परम्परा भंजन आ' सामाजिक न्यायक निनादटा सोहाइत छनि। एकर विपरीत रमणजीकेँ पुरान चाउरक भात टटका दहीक संग बड़ प्रिय छनि।

–पण्डित श्री गोविन्द झा

77th [illegible]
[illegible] - [illegible]

To Dear Raman Ji

Congratulation बहुत बहुत बधाई

धन्यवाद

[illegible] गिरिजा
14/7/2012
(IAS., Tamilnadu)

शुभकामना सहित,
[illegible] १४/६/१२ C.S.

शुभकामनाओं सहित
[illegible] १४/६/२०१२

[illegible] 14.7.2012

हिआओल

हिआओल

डा. रमानन्द झा 'रमण'

अखियासल प्रकाशन,
लालगंज, सरिसब-पाही
मधुबनी

हिआओल - डा.रमानन्द झा 'रमण' (मैथिली आलोचना)
Hiaol (Maithili Literary Criticism)
by Dr. Ramanand Jha 'Raman', 2012, Rs.200.00

प्रकाशक	:	**श्रीमती कल्पना झा**
स्वत्व	:	**लेखक**
सम्प्रति	:	e-mail: rnjharaman@gmail.com Mob. 09534920451
संस्करण	:	**2012**
प्रति	:	**300**
दाम	:	**200 टाका**
कभर फोटो	:	**लेखक, सुनामी प्रभाव (पोर्ट-ब्लेअर)**
कभर डिजाइन	:	**अभय कुमार झा**

मुद्रक :

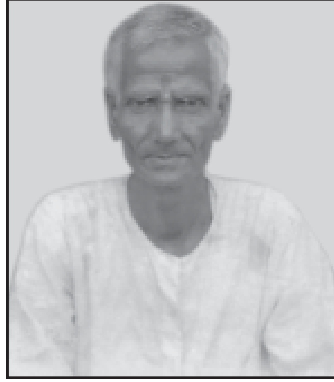
कुशल कम्प्यूटर एण्ड प्रिन्टर्स
लंगरटोली गली, पटना - 4
मोबाइल : 9304429215

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

1. **श्री दुर्गानन्द झा, लालगंज, पो. लोहना, सरिसब-पाही, मधुबनी 847424**
2. **गुप्ता ब्रदर्स, जनकपुर रेलवे स्टेशन, जनकपुरधाम**
3. **विद्यापति भवन, पटना**



दाइ



बाबूक

स्मृतिमे

विषय सूची

हिआओ

भारतीय साहित्यमे कवि-कथाकार-नाटककार, आलोचक आदि साहित्यकारक लेल समान रूपसँ शास्त्र आ' लोक-व्यवहारक सम्यक् ज्ञान राखब आवश्यक मानल गेल अछि। भाषाक शुद्ध प्रयोगक लेल व्याकरण आ' साहित्यिक शब्दक उचित प्रयोग लेल काव्यशास्त्रक ज्ञान अनिवार्य बुझल गेल अछि। संगहि, रचनाक विषयक आधार पर सम्बन्धित इतिहास वा पुराण,पूर्व रचित रचना आ' तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक ओ राजनीतिक स्थिति-परिस्थितिसँ परिचित रहबाक सेहो अपेक्षा कएल गेल अछि। कारण जे, सफल रचनाकार आ' आलोचक ओएह होइत अछि जकरा मे प्रतिभा छैक आ' शास्त्र ओ लोक-व्यवहारक ज्ञानमे निपुणता छैक। मुदा, प्रतिभा आ' निपुणता रहितो आयासपूर्वक कएल गेल रचना वा आलोचनामे ओ विलक्षणता प्रायः प्रकट नहि भए पबैत अछि जे स्वयमेव प्रेरणाक तरंग उठला पर प्रतिभा सर्जनात्मक चमत्कार उत्पन्न करैत अछि।

रचनाकार कथा-कविता-उपन्यास आदि साहित्यिक रचनाक सृजन करैत अछि। ओकर अवलोकन सामान्य साहित्य प्रेमी शास्त्रक समुचित ज्ञानक अभावमे स्थूल दृष्टिसँ करैत अछि। मुदा, जाहि तीक्ष्ण दृष्टिसँ शास्त्र आ' लोकवृत्तिक कसौटी पर कसि कँ आलोचक ओकर अवलोकन करैत अछि, ओ रचनाकारक दृष्टिसँ वेशी दीप्त आ' सूक्ष्म होइत अछि। एही लेल आलोचककेँ सूक्ष्मद्रष्टा सेहो कहल जाइत अछि।

सूक्ष्म विवेचन द्वारा आलोचक अपन वर्तमान आ' परवर्ती रचनाकारकेँ सावधान करैत अछि तँ रचनाकारो आलोचकसँ सावधान रहबाक प्रयत्न करैत अछि। ओना रचनाकार सेहो अपन रचनाक सृष्टिमे आलोचकीय भूमिकाक निर्वहण करैत अछि, तेँ ओकर कृति (रचना)केँ जीवनक आलोचना कहल गेल अछि।

साहित्यक गुणात्मक विकासमे आलोचकक अहम् भूमिका रहैत अछि। कोनो रचनाकारक रचनाकेँ आर-पार देखि कँ आलोचक ओहिमे भाषागत, शिल्प-शैलीगत, तथ्य-कथ्यगत वा पात्र-चरित्रगत अभरल त्याज्य-अत्याज्य दोषमे, त्याज्य दोषक निवारणक हेतु संकेत करैत अछि आ' उपलब्धि (गुण) पक्षपर आह्लादकारी प्रकाश दैत अछि जाहिसँ ओ रचना, रचनाकार आ' स्वयं आलोचक प्रसिद्धि पाबैत अछि।

ध्यातव्य थिक जे रचना जाहि भावभूमि पर रचल गेल हो, ताही पृष्ठभूमिमे कोनो 'वाद'(मत, सिद्धान्त)क आधार पर कएल गेल समीक्षा वा आलोचना सार्थक बुझल जाइत अछि।

मैथिलीमे शास्त्रीय आलोचना-क्षेत्रक केन्द्र स्तम्भ छथि आचार्य रमानाथ झा। ओ विविध प्रबन्ध-निबन्ध आ' भूमिका-टिप्पणीक माध्यमसँ आलोचनाक स्वरूप आ' सिद्धान्तक निरूपणमे अपन तलस्पर्शिनी प्रज्ञा आ' प्रौढ़ विवेचनक परिचय देने छथि। प्रत्यालोचनामे डा.काञ्चीनाथ झा 'किरण' अग्रगण्य रहलाह अछि।

बीसम शताब्दीक सातम दशक बितिते एहि क्षेत्रमे नव आलोच्य-दृष्टिक संग धारदार विचारक प्रक्षेपण करैत किछु युवा विचारक अएलाह आ' प्रचलित आलोचना-प्रणालीकेँ नव दिशा देबामे समर्थ भेलाह। आधुनिक आलोचनाक जड़ि एतय स्थिर भेल। एहीकालमे डा.रमानन्द झा 'रमण'क प्रवेश एहि क्षेत्रमे होइत अछि।

आधुनिक आलोचनाकेँ सुदृढ़ करबाक निमित्त निरन्तर एकनिष्ठभावेँ क्रियाशील रहब डा.रमणक स्वभाव भए गेल छनि। हिनक मुस्कानमे आत्मीयताक आवेश लक्षित होएत तँ चिन्तनशील-रागक सेहो अनुभव होएत। आवेगमे हिनक सहिष्णुता क्षमाशील बनल भेटत तँ विमर्शहुमे मनःस्थितिक अनुकूल हिनक भंगिमा बदलल भेटत। अन्तः-बाह्य दुहू स्थितिमे हिनक आलोचक कोनो 'वाद'क वादक (बजनियाँ) बनल नहि, स्वदेशी पंथक 'वादे वादे जायते'क आवेशी बनल अवश्य भेटत।

'नऽव कविता' पर स्वतन्त्र काव्यशास्त्रक निर्माण कए, डा.रमण आधुनिक आलोचनाक वरिष्ठ आलोचकमे परिगणित छथि। आधा दर्जन आलोचनात्मक निबन्धक पोथी एक दर्जन सम्पादित आ' दुइ गोट अनूदित पोथी प्रकाशित छनि। देशक विभिन्न भाषा-भाषी एवं संस्कृतिक लोकक बीच सांस्कृतिक एकात्मता स्थापन हेतु भारत सरकार (भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर) द्वारा स्थापित 'भाषा भारती सम्मान'सँ पुरस्कृत भेल छथि।

प्रस्तुत निबन्ध संग्रह *हिआओल* मे आलोचना-प्रत्यालोचनाक संगम अछि। डा.रमणकेँ अपन निबन्ध सबहक विषय-वस्तु हिआओल (थाहल, अन्दाजल) छनि। तेँ ओकर प्रतिपादित विषय अप्रामाणिक नहि अछि से ध्वनित होइछ। वैचारिक उदारतासँ देखल जाए तँ लेखकक ई उद्‌देश्य कतहुसँ प्रगट नहि होइछ जे प्रत्यालोचनमे पूर्ववर्ती वा समकालिक साहित्यकारक प्रतिष्ठा केँ धूमिल करब अभीष्ट हो। अभीष्ट तँ लेखकक छनि जे एहिमे उठाओल गेल बिन्दु सभ पर विचारकलोकनि विमर्शक हेतु उपस्थित होथि, जाहिसँ 'वादे वादे जायते तत्त्वबोधः फलित होएत।

डा.रमणकेँ मैथिलीक मूल शब्दसँ अतिशय प्रेम छनि। हिनक लेखनमे मैथिलीक अपन शब्द-सम्पदाक अधिकाधिक प्रयोगक अनुरक्ति स्पष्ट अनुभव होएत। पोथीक नामोधरि ओही शब्द-प्रेमक वशीभूत भेल -*अखियासल, बेसाहल, भजारल, हिआओल* आदि रखलनि अछि। हिनक भाषा-प्रेम आ' साहित्य सेवा प्रशंसनीय अछि। मैथिली भाषा-साहित्यक प्रति मैथिलीक प्रबुद्ध पाठक एवं अध्येताक हिआओकेँ बढ़ेबामे ई पोथी सहायक होएत, से विश्वास अछि।

गंगा दशहरा
02 जून, 2009
लक्ष्मीसागर
दरभंगा-846009

फूलचन्द्र मिश्र 'रमण'

लेखकीय

ओहि दिन छओ वर्षक ईशिता ई पूछि हमरा छगुन्तामे दए देलनि– ‘ई पोथी सभ की होएतैक’? से जे होएतैक, देखल जएतैक! मुदा, एखन *अखियासल, बेसाहल* एवं *भजारल* क बाद अपने सन प्रबुद्ध पाठकवर्गक समक्ष *हिआओल* लए उपस्थित छी। प्रबुद्ध पाठकवर्ग, एहि हेतु जे जाहि विषय सभपर कलम भँजबाक हिआओ हम कएलहुँ अछि, मनोरंजक साहित्यक कोटिमे नहि अबैत अछि। हमहुँ अपन पंडिताइ छँटबाक लेल अरबेधि-अरबेधि एहन-एहन विषयक चयन कए लेलहुँ जाहि हेतु विषयमे गम्भीर प्रवेश अपेक्षित छैक। तकर ने हमरा ऊहि अछि आ’ ने लूरि, तखन मात्र लिलसासँ कतेक पाहि काटब। जँ बहुविधावादी वा संस्थाजीवी रहितहुँ तँ गोधिञा एवं चेला-चपाटीक बल रहैत। आ’ ने हम सदक्षिण-लेखनकला-कुशले छी; तखन के, कतय, कखन, कोना हमरा पर भूभुआ उठैत जएताह, अनुमान नहि कए सकैत छी।

अवसर-अवसर पर लिखित एवं संकलित आलेख कुम्हरौट थिक कि पाकल बासन, तकर फरिछओट अपने करब। मुदा, हम विश्वासपूर्वक कहि सकैत छी, ई सभ ने अपने कें एकभगाह लागत आ’ ने गोधिञाकें लपेलप परसबाक सुनियोजित चालिक आभासे देत। अपने डाह-प्रवीण जगतक लोक नहि थिकहुँ। केहन भेल अछि, मोनेमोन गुनि, मोनेमे नहि राखि लेब, पलखति होअए तँ किछु हमरो फोनिआ दी, से विनम्र अनुरोध।

तीन वर्ष पूर्व *हिआओल* क प्रकाशन-संस्कारक दिन तकबौने रही। सुधीपाठक डा. फूलचन्द्र मिश्र ‘रमण’ धैर्यपूर्वक पढ़ि, दू आखर लिखि पठेबाक उदारता देखौने छलाह। मुदा, किछु विशिष्ट प्रकाशन-कार्यमे बाझि गेला सँ, हमरा नजरिमे जे व्यक्तिगत प्रकाशनसँ बेसी महत्त्वपूर्ण अछि, *एकर* प्रकाशन-संस्कार टरा गेल। ई भिन्न बात जे अपनहिं घूर-धूआँमे आजीवन निमग्न संस्थाजीवी आ’ व्यवसायी प्रवृत्तिक आत्मकेन्द्रित किछु लोक, ओ प्रकाशन सभ देखि धुधुनमुह भए गेल छथि।

जेना, पर्यावरणक प्रदूषणसँ कतेको जीव-जन्तु अलोपित भए गेल, ओहिना समाजमे आत्मकेन्द्रित लोकक चलतीसँ प्रो. आनन्द मिश्र एवं डा. जयकान्त मिश्र सन उदारमना साहित्यकारक प्रजाति मैथिली जगतसँ अलोपित भए रहल अछि। विकट समस्या अछि, कतय लोक अपन शंका राखत आ’ के उदारता देखौताह? तथापि, हम अपनाकें परम सौभाग्यशाली मानैत छी जे पण्डित श्रीगोविन्द झा सन सहृदय शास्त्रविज्ञक स्नेह हमरा प्राप्त अछि।

घरक लोकक सदिखन ध्यान रहैत छनि जे हम प्राप्त सामाजिक-सांस्कृतिक दायित्वक पालन निष्ठापूर्वक करैत रही। सबहक आभारी छिअनि। नीर-क्षीर विवेकी पाठक समुदायक विशेष आभारी रहबनि।

पटना — डा. रमानन्द झा ‘रमण’

ग्रिअर्सन एवं मिथिला भाषाक अध्ययन

मैथिलीमे साहित्य-सर्जनाक परम्परा सुदीर्घ एवं अविच्छिन्न अछि। एक भाषाक रूपमे मैथिलीक अध्ययनक इतिहास सुदीर्घ नहि अछि। 1801 ई. मे एच.टी. कोलब्रूक[1] भाषाक रूपमे 'मैथिली' शब्दक पहिले पहिल प्रयोग कएलनि। संगहि, ओ इहो लिखल जे व्यापक क्षेत्रमे मैथिलीक प्रयोग नहि अछि। कोनो महान कवि नहि भेलाह अछि। एहिसँ बेसी लिखब अनावश्यक अछि। जॉन बिम्स[2](1872 ई.) एवं हॉर्नले[3] (1880 ई.) भाषाक लेल मैथिली शब्दक प्रयोग करैत, हिन्दीक एक भाषिकाक रूपमे मैथिलीक विवेचन कएलनि।

सर जॉर्ज कैम्पबेल, 1874 मे भारतक विभिन्न भाषा-कुलक नमूनाक संकलन करैत बिहारक भाषा (Dialects of Behar) **समूहमे** Vernacular of Patna, vernacular of Gya, vernacular of Champaran, vernacular of West Tirhoot, vernacular of East Tirhoot, vernacular of West Purnea (Hindee), **तथा** vernacular of East Purnea (Bengali)[4] **राखल। संकलित प्रत्येक शब्द एवं मोहाबराक अङरेजी पर्याय देखि प्रतीत होइछ जे हुनक लक्ष्य भारतक भाषाक अध्ययन नहि छल। अपितु, स्थानीय भाषासँ अपरिचित अङरेज पदाधिकारी सभकेँ दैनिक जीवनमे सुविधाक हेतु विभिन्न क्षेत्रीय भाषाक शब्द आ' मोहाबरासँ परिचय एवं अभ्यास कराएब छलनि। अतएव, कैम्पबेलक संकलनकेँ भाषाक अध्ययन मानब उचित नहि होएत। बेसीसँ बेसी**

1. H.T.Colebrooke - On the Sanskrit and Prakrit Languages- *Asiatic Researches*,1801, *Misc. Essays*, P.No.225 - Mait'híla, or Tirhútia, is the language used in Mit'hílà, that is, in the Sircár of Tirhút, and in some adjoining districts, limited however by the river Cusí(Causící,) and Gandhac(Gandhací,) and by the mountains of Népál; it has great affinity with Bengálí; and the character in which it is written differs little from that which is employed throughout Bengal. In Tirhút, too, the learned write Sanscrít in the Tirhutíya character and pronounce it after their own inelegant manner. As the dialect of Mit'hilà has no existensive use, and does not appear to have been at any time cultivated by elegant poets, it is unnecessary to notice it further in this place.
2. Beames -*A Comparative Grammar of the Modern Aryan Languages of India*, 1872. - Introduction, Page No. 96 - " Crossing the Kusi river, and going westwards, we come into the region of Maithila, the modern Tirhut, where the Language is Hindi in type, though in many of its phonetic details it leans towards Bengali."
3. A. F. Rudolf Hoernle- *A Grammar of the Eastern Hindi Compared with the other Gaudian Languages*,1880, Introduction page V.
4. Sir George Campbell - *Languages of India, including those of the Aboriginal Tribes of Bengal*,1874, Page No.60.

नमूना संकलन कहि सकैत छी। एस.एच. केलौग[5] अपन व्याकरणमे मैथिलीक क्रियापद-रूपावलीक वर्णन विस्तारपूर्वक करैत पूर्वी हिन्दीक एक बोलीक रूपमे प्रसंगात तिरहुतक भाषाक उल्लेख कएने छथि।

हॉर्नले ई अनुभव कएल जे पश्चिमी एवं पूर्वी हिन्दी एक नहि थिक, दूनूमे पर्याप्त अन्तर छैक। हॉर्नले पूर्वी हिन्दीक आठ टा भाषिका मानल जाहिमे सातम स्थानपर मैथिली[6] अछि। हुनक स्पष्ट मत अछि जे पूर्वी हिन्दीक अपेक्षा मैथिलीमे अपन पड़ोसी बंगला एवं नेपालीसँ बेसी समानता छैक, भूतकालक निर्माणमे मैथिली विशेषतः बंगलाक अत्यन्त सन्निकट अछि।[7] एहि प्रकारसँ कहि सकैत छी जे मैथिली भाषाक अध्ययन कएनिहार पहिल व्यक्ति जॉन बिम्स आ' दोसर हॉर्नले भेलाह अछि। जॉर्ज अब्राहम ग्रिअर्सन एक स्वतन्त्र भाषाक रूपमे मैथिलीक विस्तृत अध्ययन एवं स्थापना कएलनि। एहि लेल हुनका पर्याप्त धौजनि सेहो भेलनि। मैथिलीक व्याकरण लिखल। एहिमे काज लेल हिनका जॉन बिम्सक क्रियारूपाली पर्याप्त सहायक भेल छनि।

मैथिलीमे साहित्य-सर्जनाक परम्परा सुदीर्घ एवं अविच्छिन्न रहितहुँ तिरहुतक भाषा, मिथिला भाषा वा मैथिलीक अध्ययन नहि होएबाक की कारण छल होएत, ओहि पर दृष्टिपात करबासँ पूर्व किछु अन्य भाषाक भेल अध्ययनक स्थिति पर नजरि देब अपेक्षित अछि। ए. एच. सेसीक[8]अनुसार आधुनिक भारतीय आर्यभाषाक व्याकरण 1872 ई., बंगला भाषाक व्याकरण 1862 ई., ओड़िआ भाषाक व्याकरण 1831 ई., सिन्धी भाषाक व्याकरण 1872 ई., पंजाबी भाषाक व्याकरण 1851 ई, गुजरातीक व्याकरण 1867 ई., मराठीक व्याकरण 1868 ई. तथा हिन्दुस्तानीक व्याकरण 1845 ई. मे लिखल गेल। विश्वम्भर विद्यासागर 1841 ई. मे ओड़िआमे ओड़िआक पहिल व्याकरण प्रकाशित कएल।

5. Rev. S.H.Kellogg, *A Grammar of the Hindi Language*, para 450, page No. 230,1876.- In the dialects of Bhojpur and Tirhut we have a still wider divergence; from High Hindi type conjugation and a close approximation, in the **ल** of the perfect and, in Tirhut in the substantive verb **छी** to the Bengali system.
6. A. F. Rudolf Hoernle, *A Grammar of the Eastern Hindi Compared with the other Gaudian Languages*,1880, page.V. - Seventhly, the Maithili or the dialect of the district of Tirhút, spoken about Muzaffarpur and Darbhanga. It is called so after the ancient city of Mithila, the capital of Videh or modern Tirhút((Tírabhukti).
7. A. F. Rudolf Hoernle, *A Grammar of the Eastern Hindi Compared with the other Gaudian Languages*,1880, Page No..VI.- the Maithili especially exhibits unmistakable similiarities to the neighbouring Bengali and Nepali. Indeed, I am doubtful, whether it is not more correct to class the Maithili as a Bengali dialect rather than as a E.H one. Thus, in the formation of past tense, Maithili agrees very closely with Bengali, while it differ widely from E.H.
8. A.H. Sayce, *Introduction to the Science of Language*, 4th Ed. 1900, Page No. 39. - (I). Beames - *A Comparative Grammar of the Modern Aryan* ...

बंगला पेडिया [9] क अनुसार बंगलाक पहिल व्याकरण पुर्तगीज मिशनरी द्वारा पुर्तगालीमे1734 एवं 1742क बीच लिखाएल तथा लिबसनसँ प्रकाशित भेल। बंगलामे पहिल व्याकरण कलकत्ता स्कूल सोसाइटीक सदस्य राधाकान्त देव लिखल जकर दोसर संस्करण 1821 ई. मे भेलैक।

असमीक पहिल व्याकरण मिशनरी नाथ ब्राउन 1848 ई. मे प्रकाशित कएलनि। पछाति असमी भाषा पर हुनक विस्तृत पोथी आएल। असमी भाषी पर राजकाजक भाषाक रूपमे थोपल गेल बंगलाक स्थान पर असमीके ँ राजकाजक भाषा होएबामे मिशनरी नाथ ब्राउनक उक्त पोथी बहुत सहायक भेल छलैक। भाषाक लेल 'नेपाली' शब्दक प्रयोग पहिले पहिल आयटोन (Ayton) 1820 ई. मे कएलनि आ' A Grammar of the Nepali Language लिखल।

एहि परिप्रेक्षमे मैथिलीक व्याकरण-लेखनक इतिहास पर दृष्टिपात कएल जाए। यद्यपि, मैथिलीक सान्दर्भिक चर्चा किछु-किछु रूपसँ पहिनेसँ होइत छल, किन्तु एक स्वतन्त्र भाषाक रूपमे मैथिलीक पहिल व्याकरण एक विदेशी विद्वान जॉर्ज अब्राहम ग्रिअर्सन 1881 ई. मे लिखलनि। हली झा द्वारा मैथिली व्याकरण लिखल जएबाक जे उल्लेख अम्बिकादत्त व्यास कएने छथि, तकर कोनहु पता नहि अछि। मैथिली व्याकरण सम्बन्धी छिट-फुट लेख *मिथिलामोदक* किछु आरम्भिक अंकमे भेटैत अछि। पण्डित जीवनाथ रायक लिखल 'मैथिलीक स्वरूप ओ लेख शैली' *मिथिला मिहिर* मे प्रकाशित होइत छल[10] जे पछाति अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद द्वारा पुस्तकाकार भेल। मैथिलीक पहिल व्याकरण टंकनाथ मैथिली व्याख्याता गंगापति सिंह *बाल व्याकरण* लिखि 1922 ई. मे प्रकाशित कएल जकर दोसर संस्करण मैथिली साहित्य परिषद द्वारा 1937 ई. मे भेलैक। एकर बाद हीरालाल झा 'हेम' लिखित *मैथिली भाषा व्याकरण भास्कर* लिखल जएबाक उल्लेख भेटैत अछि

... *Languages of India*, 1872, (II). Forbes - *A Grammar of the Bengali Language*, 1862, (III). Sutton - *An Introductory Grammar of the Oriya Language*,1831, (IV.) Trumpp- *Grammar of the Sindhi Language*,1872, (V) Lodiana- *A Grammar of the Panjabi Language*, 1851,(VI)), Yates- *Introduction to the Hindustani Language*, 1845, (VII), Shapunji Edalji- *A Grammar of the Gujarati Language*, 1867, (VIII). do - *The Student's Manual of Marathi Grammar*, 1868.

9. BANGLAPEDIA: Grammar - first Bangla grammar, *Vocabolario em idioma Bengalla*, e Portuguez dividido emduas partes, written by Manoel da Assumpcam, a Portuguese missionary, in Portuguese. Assumpcam wrote this grammar between 1734 and 1742 while he was serving in Bhawal.One of the members of the Calcutta School Society was Radhakanta Deb who believed that without the knowledge of Sanskrit it was not possible to read, write or speak Bangla correctly. His *Bangala Shiksagrantha* (second edition, 1821) was essentially tied to Sanskrit grammar. Radhakanta was the first Bengali to write a Bangla grammar in Bangla.The first full-fledged Bangla grammar by a Bengali was *Gaudiya Vyakaran* (1833) by Ram Mohun Roy who wrote it in 1830 at the request of the School Society.

10. जीवनाथ राय, मैथिलीक स्वरूप ओ लेख शैली, *मिथिला मिहिर*, 11 दिसम्बर 1915 ई.

जकर प्रकाशन 1926 ई. मे श्रीरमेश्वर प्रेस, दरभंगासँ भेल। प्रवासी मैथिलकेँ मैथिली सीखेबाक लेल लक्ष्मीपति सिंह *हिन्दी मैथिली व्याकरण* लिखल।

एहि इतिवृत्तिसँ स्पष्ट अछि जे भारोपीय आर्यभाषाक मागधी अपभ्रंशक प्राच्य समूहक एक प्रमुख भाषा मैथिलीमे साहित्य-सर्जनाक सुदीर्घ परम्पराक पर्याप्त साक्ष्य रहितहुँ सबसँ पछाति एकर व्याकरण लिखल गेल। तकर कारण की?

भाषा प्रयोजन सिद्धिक माध्यम थिक। अतएव, भाषाक महत्त्व एहि बात पर निर्भर अछि जे ओ कतेक प्रक्षेत्रमे समाजक प्रयोजनक सिद्धिक माध्यम अछि। एकर परिमापनक दू टा आधार अछि - कार्यभार (Functional load) आ' कार्यपारदर्शिता, (Functional Transparency) अर्थात् कार्यमे अपेक्षित स्पष्ट अभिव्यक्ति-क्षमता। भाषाक कार्यभार कम अछि वा अधिक, तकर निर्धारण एहि बातपर होइछ जे ओ कतेक प्रक्षेत्रमे कार्यशील अछि। उदाहरणार्थ अङरेजीकेँ देखि सकैत छी। ओ प्रायः सभ पैघ सार्वजनिक प्रक्षेत्र जेना व्यापार, शिक्षा, राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय संवाद, प्रौद्योगिकी, सरकार, कानून आदि मे पसरल अछि। अतएव, अङरेजीक कार्यभार बेसी मानल जाएत। कार्य पारदर्शिता एहि बात पर निर्भर अछि जे भाषाक खास प्रक्षेत्रमे ओकर स्वायत्तता आ' नियन्त्रण छैक वा नहि। यदि एकभाषा दोसर भाषाक प्रयोगक आरि छँटैत अछि तँ ओहि भाषाक कार्यभार उच्च मानल जाइत छैक। दोसर शब्दमे, भाषा कार्यमे पारदर्शी बूझल जाइत अछि, यदि ओ अत्यधिक नीक जकाँ खास कार्य करैत अछि। जेना, संस्कृत भारतीय संस्कृति एवं हिन्दुत्वक व्याख्या करबामे अत्यधिक पारदर्शी रूपेँ कार्य करैत अछि। मुदा, आधुनिकताक कार्यमे पारदर्शी नहि अछि। ओहिना मैथिलीक कतेको प्रक्षेत्रमे हिन्दी सन्हिआ गेल अछि, जाहिसँ मैथिलीक कार्यभार एवं पारदर्शिता - दूनू घटि गेलैक अछि। कमल जाइत अछि। कहि सकैत छी भाषा आ' कार्यमे स्थिर साहचार्य छैक। पारदर्शिता घटल तँ कार्यभार कमल आ' प्रक्षेत्रक संख्या बेसी, तँ कार्यभार उच्च।

कार्यभार आ' कार्य-पारदर्शिताक दृष्टिसँ मैथिली पर विचार कएल जाए। ई कतेको अभिलेखसँ प्रमाणित अछि जे भारोपीय आर्यभाषाक मागधी अपभ्रंशक प्राच्य समूहक भाषामे अन्यतम स्थान प्राप्त मैथिलीमे साहित्य-सर्जनाक सुदीर्घ एवं अविच्छिन्न परम्परा छैक। सिम्रौनगढ़क कर्णाटवंशक सभ राजालोकनि मैथिली भाषाकेँ प्रोत्साहन देलनि एवं ओहिठामक राजा रामसिंहदेवक समयक प्राप्त शिलालेखक आधार पर इतिहासज्ञ डा. हरिकान्त लाल दासक[11] निष्कर्ष अछि जे कर्णाट शासनकालमे राजकाजक भाषा मैथिली छल। प्रो. दासक इहो निष्कर्ष अछि जे मोरंग, मकवानपुर, विजयपुर, पाल्पा आदि राजालोकनिक समयक अभिलेख, स्याहा मोहर, जमीनक हस्तान्तरण सम्बन्धी अभिलेखसँ सेन राजालोकनिक राजकाजक भाषा मैथिली होएब प्रमाणित

11. हरिकान्त लाल दास - नेपालमे मैथिली भाषा प्रति सेन राजालोकनिक दृष्टिकोण - *सयपत्री*, राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान, काठमांडू, वर्ष 4, 2055 साल - मैथिली विशेषांक, पृ.सं. 69 - सिम्रौनगढ़क कर्णाटवंशक सभ राजालोकनि मैथिली भाषाके ँप्रोत्साहन देलनि। तकर प्रमाण ओतए एक खण्डहरसँ प्राप्त किछु खण्डित शिलालेख अछि। खण्डहर निरीक्षणक क्रममे एकटा शिक्षककेँ राजा रामसिंहदेवक समयक Slab inscription भेटलनि जकर लिपि मैथिली अछि।

होइछ।[12] एहि ऐतिहासिक तथ्यसँ निष्पन्न होइछ जे मैथिलीक प्रयोग विभिन्न प्रक्षेत्रमे होइत छल। साहित्य-सर्जना, दैनिक व्यावहारिक जीवन एवं राजकाजक भाषा रहने मैथिली उच्च कार्यभारक भाषा छल। किन्तु, नेपालमे राणाशाही स्थापित भेलाक बादसँ मैथिलीक प्रक्षेत्र क्रमशः घटैत गेल।

मिथिलामे तुर्क, अफगानक आक्रमण एवं आधिपत्यक बाद जखन मुगल बादशाहसँ खंडवला कुलकेँ मिथिलाक राजक प्राप्ति भेलनि तँ जैतुकमे अरबी, फारसी एवं उर्दू सेहो अएलैक। संगहि, लोकनिञा सभ सेहो मैथिली भाषीक्षेत्रमे बसय लागल। एहिसँ मैथिलीक प्रक्षेत्रपर संघातिक आघात भेलैक। मैथिलीक प्रयोगक प्रक्षेत्र घोंकचए लागल। मैथिली भाषीक घनत्व तरल होइत गेल। कोलब्रूकक अभिमतसँ स्पष्टे अछि जे साहित्य-सर्जनाक क्षेत्रमे गतिविधि ठमकल छल। परिणामतः मैथिलीक प्रक्षेत्र दैनिक जीवन आ' मनोरंजक साहित्य-सर्जना धरि सीमित रहल। अतएव, जखन ईस्ट इन्डिया कम्पनीक हाथमे तिरहुतक शासन-सूत्र अएलैक, तँ कम्पनी सरकारक लेल मैथिली कोनो समस्या नहि बनल। तखन समाधानक चिन्ता ओ किएक करैत? आ' जेना आन कतेको भारतीय भाषाक पढ़ौनीक व्यवस्था अपन कर्मचारी-अधिकारी वा सेना-सिपाहीक लेल ओ कएलक, से मैथिलीक लेल किएक करैत? लार्ड मकाले (1835 ई.) प्रायः एहनहि स्थितिमे रिपोर्ट कएने छल होएताह जे जाहि भाषासँ (अरबी, फारसी एवं संस्कृतक सन्दर्भमे लिखल) ने हमर प्रशासनकेँ कोनो

गत वर्ष त्रिभुवन विश्वविद्यालयक इतिहास विषयक एकटा सेमिनार सिम्रौनगढ़मे भेल छल। ओतए इतिहास विषयक प्राध्यापक डा. तुलसी रामबैद्यक नेतृत्वमे अनुसन्धान टोलीकेँ एकटा खण्डित शिलालेख प्राप्त भेलनि जकर भाषा सेहो मैथिली अछि। एहि तरहेँ अनुमान लगाएल जाइत अछि जे कर्णाट शासनकालमे मैथिली राजकाजक भाषा छल।'

12. हरिकान्तलाल दास - ओएह, पृ.सं. 70 - कर्णाटकालमे मैथिली भाषाकेँ जे स्थान प्राप्त छलैक ताहिसँ कम महत्त्वपूर्ण सेन राजालोकनिक नहि छलैक। मोरङसँ मकवानपुर तक अभिलेखकक भाषा होएबाक अनेको कारण प्रमाण भेटैत अछि। एहि सम्बन्धमे पुरातत्त्वविद् जनकलाल शर्मा लिखैत छथि जे पूरबमे विजयपुर आ' पश्चिममे पाल्पाक सेन राजालोकनिक स्याहा मोहर आ' ताम्रपत्र मैथिली भाषामे भेटब कोनो आश्चर्यक गप्प नहि थिक। मोरङ पदावलीसँ ज्ञात होइत अछि जे मैथिली भाषाक साहित्यकार सभकेँ मकवानपुर दरबारक अतिरिक्त विजयपुर आ' पाल्पा दरबारमे सेहो निर्वाह होइत छलनि। विजयपुर राज्यक बोलचालक भाषा मैथिली छल। तेँ राजकाजक भाषा मैथिली बनाओल गेल होएत। दन्तकाली मन्दिरक पुजारीकेँ विजयपुरक सेन राजा द्वारा देल गेल आदेश पत्रक भाषा प्रमाणित... ...करैत अछि जे ताहि समयमे मैथिली राजकाजक भाषा छल। पण्डित तुलारामकेँ कोशी क्षेत्रक जमीन जागीरस्वरूपमे देल गेल छलनि, तकर भाषा सेहो मैथिली अछि। नेपालक एकटा इतिहासकार प्रेमबहादुर लिम्बूक कथन अछि जे सेनराजा लोहाग सेन किरात प्रदेश पर विजय कएलाक बाद ओहि क्षेत्रमे किराताक्षरक स्थानमे मिथिलाक्षरके प्रचारित करौलनि। फलस्वरूप, किरात संस्कृतिमे मिथिलाक संस्कृतिक प्रभाव बहुत दिन धरि रहल। एहि सभ बातक अध्ययन कएलाक बाद कहल जा सकैछ, सेनराजा सभ द्वारा मैथिली भाषाकेँ नीक संरक्षण भेटलैक। ओलोकनि अपन काम-कारबाइ तक मैथिली भाषामे कएलनि। ई बहुत महत्त्वपूर्ण बात छल।'

लाभ छैक आ' ने ओहि भाषाकेँ केओ बिना सरकारी पाइक पढ़ेबाक लेल तैआर छथि, ताहि भाषापर किएक खर्च कएल जाए?[13]

भारतक प्रथम स्वाधीनता संग्रामक असफलताक उपरान्त 1857 ई. मे भारतक शासन-सूत्र ईस्ट इंडिया कम्पनीक हाथसँ ब्रिटिश साम्राज्ञीक हाथमे अएलापर ओ अपन उपनिवेशक लोक सभसँ सामीप्य स्थापित करबाक हेतु क्षेत्र विशेषक भाषाक अध्ययन एवं विकासक प्रसंग नीतिगत निर्णय कएल। भारत सहित ब्रिटिशक विभिन्न उपनिवेशक भाषाक शिक्षणक व्यवस्था भेल। व्याकरण लिखाएल। शब्द एवं लोक-साहित्यक संग्रह आरम्भ भेल। अध्ययन तथा प्रकाशन होअए लागल तथा अधिकारी सभकेँ स्थानीय भाषामे प्रवीणता प्राप्त करबाक हेतु ओहिना प्रोत्साहित कएल गेलनि[14], जेना भारत सरकार सम्प्रति अपन कर्मचारी-अधिकारीकेँ हिन्दीक कार्यसाधक ज्ञान अर्जित करेबाक लेल प्रोत्साहित करैत अछि। जाहि भाषाक कार्यभार बेसी छलैक, ओहि भाषामे काज पहिने आरम्भ भेल। मैथिलीक कार्यभार अल्पतम छल। ध्यान पछाति गेलैक। मुदा, सेहो अध्ययन-अध्यापनक हेतु नहि, रुचि एवं विशेषज्ञताक हेतुए अध्ययन भेल।

जॉर्ज अब्राहम ग्रिअर्सनक अनुसार भारोपीय आर्यभाषाक मागधी अपभ्रंशक प्राच्य समूहक मैथिली एक भाषा थिक। एहि प्राच्य समूहमे 1. ओड़िआ, 2. बिहारी (मैथिली, मगही एवं भोजपुरी), 3. बंगला, आ' 4. असमिआ अछि। हॉर्नले उपयुक्त नामकरणक अभावमे संस्कृतसँ संबद्ध भाषाकेँ सुविधाक हेतु *गौडिअन* [15] कहल। ओना, ओहिसँ पहिने राजा राममोहन राय बंगलाक पूर्ण व्याकरण *गौड़ीय व्याकरण*क नामसँ 1833 ई. मे बंगलामे लिखने छलाह। सम्भव थिक हॉर्नलेक मार्गक अनुसरण करैत उपयुक्त नामकरणक अभावमे ग्रिअर्सन सेहो बिहारक भाषा मैथिली, मगही एवं भोजपुरीक लेल 'बिहारी' नामकरण कए देने होथि। ग्रिअर्सनक ई वर्गीकरण, विशेषतः बिहारक भाषा मैथिली, मगही एवं भोजपुरीक लेल 'बिहारी' नामकरण, पर्याप्त विवादक कारण भेल अछि। ओना साम्प्रतिक राजनीतिक परिदृश्यमे जँ एकर विवेचन करी तँ कहि सकैत छी जे 'बिहारी अस्मिता'क पहिल उद्भावक जॉर्ज अब्राहम ग्रिअर्सन छलाह।

13. Qouted in *Languages in India*, P.No.71, Mysore, Vol. 2: 8 Nov., 2002
14. Minute by the Hon'ble Sir C.E.Travelyan K.C.B., on the tests to be passed in the Native Language by the Junior Civil Servants/ Military Officers in the Nothern India. Calcutta the 25th July, 1864. - Quoted - *Languages in India*, P. No.95, Mysore, Vol. 2: 8 Nov., 2002 - 'If we wish to encourage our officers to become good practical lingiusts, we ought to make it as easy as possible to them, and to give them the same facilities as we have at home in learning French, Italian, or any other language in which there are many dialects but only on standard.'
15. A. F. Rudolf Hoernle, *A Grammar of the Eastern Hindi Compared with the others Gaudian Languages*, 1880, Introduction - I have adopted the term Gaudian to designate collectively all North-Indian vernaculars of Sanskrit affinity, for want of a word; not as being the least objectionable, but as being the most convenient one.

मैथिलीक औपभाषिक विभाजन सेहो विवादक कारण भेल अछि। जार्ज ग्रिअर्सन मैथिलीक औपभाषिक विभाजन छओ भागमे कएने छथि -1. मानक मैथिली, 2. दक्षिणी मानक मैथिली, 3. पूर्वी मैथिली वा गँवारी, 4. छिकाछिकी बोली, 5. पश्चिमी मैथिली एवं 6. जोलहा बोली। पण्डित गोविन्द झा[16] वर्गीकरणक तीन आधार मानल अछि- 1. क्षेत्र, 2. सामाजिक वा शैक्षणिक स्तर तथा 3. जाति। क्षेत्रक अनुसार ओ 1. पूर्वी (नव क्षेत्रीय नामकरण अंगिका, ग्रिअर्सन - छिकाछिकी एवं गँवारी), 2. दक्षिणी, पश्चिर्मी (नव क्षेत्रीय नामकरण बज्जिका, ग्रिअर्सन - पश्चिमी मैथिली), 4. उत्तरी वा नेपाल तथा 5. केन्द्रीय। एहि विभाजनक आधार अछि मैथिलीक भाषायिक चौहद्दी। पूर्बमे बंगला, पश्चिममे भोजपुरी, दक्षिणमे मगही आ' उत्तरमे नेपाली। अभिसरण (Convergence) सिद्धान्तक अनुसार सम्पर्कसँ भाषा प्रभावित होइत छैक। एहि हेतु केन्द्रीय मैथिलीकेँ छोड़ि चारू कातक मैथिली अपन समीपस्थ भाषा सभसँ प्रभावित भेल आ' जे अप्रभावित रहल मानक मैथिली कहल गेल अछि। भाषा वैज्ञानिक तथ्यक आधार पर एहि तथ्यकेँ फरिछबैत डा. रामावतार यादव[17] बिहारमे मधुबनी तथा नेपालमे राजबिराजमे बाजल जाइत मैथिलीकेँ मानक मैथिली कहल अछि।

सामाजिक स्तरक अनुसार सभ क्षेत्रमे मैथिलीक दू स्वरूप गोविन्द झा मानैत छथि - शिक्षित एवं सुसंस्कृत उच्चवर्गक आ' दोसर समाजक अशिक्षित एवं निम्नस्तरक लोकक भाषिका। शिक्षित वर्गक अभिरुचि मैथिलीक मानक स्वरूपक दिस होइत छनि एवं परिष्कृत भाषा बजबामे ओ गौरवक अनुभव करैत छथि। अशिक्षित वा नीचला स्तरक लोकक भाषिकामे स्थानीय एवं जातीय विशेषता विशेष सुरक्षित रहैत अछि। जातिक अनुसार मैथिलीक तीन स्वरूप पण्डित गोविन्द झा मानल अछि - 1. विद्याजीवीक भाषिका, 2. कृषिजीवी जातिक भाषिका तथा 3. व्यवसाय जीवीक भाषिका।

कोन परिस्थितिमे विभिन्न भाषा-भाषी एवं सांस्कृतिक समुदायक लोकक स्थायी निवास मिथिला बनैत गेल तकर चर्च उपर कएलहुँ अछि। मिथिलाक प्रशासनिक क्षेत्रमे ओहि वर्गक वर्चस्व, सेहो घटैत-बढ़ैत रहल। भारतक कतेको प्रान्तमे भाषाक प्रयोगजन्य जे समरूपता देखैत छी एवं प्रयोगजन्य समरूपताक कारणेँ भाषाक नामपर जे एकजुटता अनुभव होइत अछि, तकर घोर अभाव मिथिलामे उक्त कारण सभसँ छल एवं अद्यावधि अछि। एहन कोनो केन्द्रीय राजनीतिक शक्ति वा सामाजिक संगठन नहि छलैक जे मैथिलीक प्रचार-प्रसार वा मैथिलीक पठन-पाठनक मार्गमे अबैत अवरोधक तत्त्वक निराकरण कए, सर्वव्यापी प्रभावकारी निर्णय लए सकैत छल।

मैथिलीक औपभाषिक विभाजन सर्वग्राह्य तँ नहिएँ भेलैक, अपितु किछु अंश धरि दूरत्वक ओ कारण सेहो भए गेल। एहि दूरत्वकेँ बढ़ेबामे बिहार विभाजनक अगुआ एवं पटना विश्वविद्यालयक पूर्व उपकुलपति डा. सच्चिदानन्द सिंहा सन लोकक मैथिली भाषा-संस्कृति विरोधी मानसिकता

16. गोविन्द झा - *मैथिली भाषा का विकास*, 1974, पृ.सं. 50

17. Ramawatar Yadav- Maithili Lingiustic Research : State-of-the-Art - *Contributions to Nepalese Studies*, Vol. 27, No.1 - The standard of spoken Maithili is tacitly identified with the speech of the towns of Madhubani in Bihar and Rajbiraj in Nepal.

सहायक भेलैक। पटना विश्वविद्यालयक पाठ्यक्रममे मैथिलीक स्वीकृतिक प्रस्तावक समय ओ बाबू भोलालाल दासकेँ कहने छलथिन्ह -'बंगालसँ बिहारकेँ अलग कएल हम अपना सभक निमित्त, अहाँलोकनिक लेल नहि। मैथिलीकेँ स्वीकृत कएने मिथिला जीबि उठत। मिथिला जीबि उठत तँ हमरालोकनिकेँ यू. पी. चल जाए पड़त। तँ जावत हम जीअब मैथिलीकेँ स्वीकृत नहि होअए देब।'[18] जखन मैथिलीक अध्ययन-अध्यापने नहि, तखन व्याकरण कोना लिखाइत?

प्रयोजनक दृष्टिसँ व्याकरणक दू कोटि अछि[19] - पारम्परिक एवं शिक्षा शास्त्रीय व्याकरण (Traditional and Pedagogical Grammar)। पारम्परिक व्याकरणक आधार साहित्य होइत अछि। ओ पोथी तथा अन्य उपलब्ध साहित्यक आधार पर भाषाक संरचनात्मक परिचय करबैत अछि। ओ इहो सुझबैत अछि जे कोना लिखी आ' कोना नहि लिखी। कोना बाजी आ' कोना नहि बाजी। तदनुसार, ई अनुशासनात्मक व्याकरण (Prescriptive) सेहो कहबैत अछि। पारम्परिक व्याकरण वर्तमान एवं भविष्य - दूनूक लेल मार्ग-दर्शक होइत अछि।

एकर विपरीत, शिक्षा शास्त्रीय व्याकरण मानक भाषिका एवं लिखित समकालीन भाषाक संरचनात्मक स्वरूपक परिचय करबैत अछि। मानक भाषा लिखब आ' बाजबमे व्याकरणक कोन नियमक कखन प्रयोजन होइत छैक आ' तकर अनुसरण कोना कएल जाए, शिक्षा शास्त्रीय व्याकरण बूझबैत अछि। कहि सकैत छी जे भाषा विशेषक लोकक बीच उक्त समूहक भाषा कोना बाजल जाए, जाहिसँ वक्ताक अभिप्रायक सम्प्रेषण वाधित नहि रहए, वक्ता की कहैत छथि, से उक्त भाषा समूहक लोक बूझि जाथि। एकरा सम्वाद-भाषा सेहो कहि सकैत छी। पारम्परिक व्याकरणक नियम बेसी कठोर होइत अछि किन्तु शिक्षा शास्त्रीय व्याकरण वा सम्वाद-भाषाक व्याकरणमे तारता होइत छैक। ओ भाषाक विभिन्न स्वरूपक प्रयोग सफल सम्वाद-स्थापनक लेल करैत अछि। ठाम-ठाम जँ व्याकरणिक नियम भंगो होइत रहैछ तँ ओहि पर ध्यान नहि दैत अछि। भाषाक परिचयमे शिक्षा शास्त्रीय व्याकरण पाँच स्तर पर सहायक होइत अछि -

1. शब्द स्तर - एहि स्तरपर व्याकरण शिक्षार्थीकेँ शब्द एवं ओकर विभिन्न स्वरूपक परिचय करबैत अछि। ओकर प्रयोगकेँ तेना विश्लेषित करैछ जाहिसँ शिक्षार्थी पुरुष-वचन-लिंग प्रणालीसँ परिचित भए जाथि।

2. रूपात्मक स्तर - एहि स्तरपर व्याकरण शब्द निर्माण, एकवचनसँ बहुवचन, समास, रूपावली, विभक्ति आदिसँ परिचय करबैत अछि। कारक तथा ओकर प्रयोग कोना कएल जाए, से सिखबैत अछि।

3. रूपस्वनिमिकी स्तर - एहि स्तरपर व्याकरण सन्धि तथा व्याकरणक कारणेँ होइत स्वन-परिवर्तनसँ परिचय करबैत अछि।

4. वाक्य स्तरपर - एहि स्तरपर व्याकरण वाक्य-निर्माण कोना कएल जाए, से सिखबैत

18. काञ्चीनाथ झा 'किरण' *किरण समग्र*, 2007, पृ. सं. 266।

19. Kasturi Viswanatham. *New Horizons in Language and Linguistics*, Page No. 312, CIIL, Mysore

अछि। शिक्षार्थी जँ अन्य भाषा-भाषी रहैत छथि तँ हुनक अपन भाषाक वाक्यसँ तुलना करैत विश्लेषण एहि प्रकारेँ कएल जाइछ जाहिसँ काल, वचन, संयुक्तवाक्य, वाक्य-बन्ध, वाक्य परिवर्त्तन, समास आदिक परिचय हुनका नीक जकाँ भए जाइन।

5. डिसकोर्स स्तरपर - भाषामे विचार कोना उतरैत अछि तथा विभिन्न वाक्य कोना सम्बद्ध भए जाइत अछि, से एहि स्तरक व्याकरण सिखबैत अछि।

ग्रिअर्सनक मैथिली व्याकरण सभकेँ जखन पारम्परिक एवं शिक्षा शास्त्रीय व्याकरणक दृष्टिसँ देखैत छी तँ दूनू व्याकरणक अधिकांश विशेषताक लाभ अध्येताकेँ एकहिठाम भेटल सन लगैत अछि।

अङरेज विद्वान तँ उचिते, पाश्चात्य शिक्षा-प्रणालीमे शिक्षित अधिकांश मैथिल विद्वान सेहो, जेना, डा. सुभद्र झा, डा. रामावतार यादव, डा. उदयनारायण सिंह 'नचिकेता', डा. योगेन्द्र प्रसाद यादव, डा. सुनील कुमार झा, डा. बालकृष्ण झा प्रभृति, मैथिलीक भाषाशास्त्रीय अध्ययन अङरेजी माध्यमेँ कएलनि अछि। एहिसँ मिथिला भाषाक विशेषताक व्यापक प्रचार-प्रसार अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भेलैक। हिनकालोकनिक विद्वता एवं परिश्रमसँ विद्वत् समाजमे मैथिलीक स्वीकार्यता बढ़ल एवं मिथिला भाषाक विशेषज्ञक रूपमे प्रख्यात भेलाह। ई सभक लेल गौरवक बात थिक। आह्लादकारी अछि। किन्तु भाषा विज्ञानक क्षेत्रमे नित प्रति होइत नव-नव सिद्धान्तक स्थापना तथा तदनुसार मिथिला भाषाक अध्ययन-विवेचनसँ मैथिलीक लोक वा मैथिलीक माध्यमेँ अध्ययन-अध्यापन कएनिहार- वा करओनिहार मैथिलीक शिक्षार्थी, जे लाभक वास्तविक अधिकारी छथि एवं डेग-डेग पर प्रयोजन होइत छनि, लाभान्वित होएबासँ वंचित छथि। अतएव, मैथिली व्याकरण वा मैथिलीक भाषावैज्ञानिक अध्ययन सम्बन्धी सामग्री वा आकर ग्रन्थक मैथिलीमे अनुपलब्धिक स्थिति अद्यावधि अवश्य आह्लादक नहि अछि।



रमानाथ झा आ' मिथिला भाषा

1

रमानाथ झा पर जीवन कालमे आरोपक टाल लगाओल गेल। रमानाथ झाक प्रतिभा एवं विद्वत्तासँ आच्छन्न लोक निन्दा-कुचेष्टाक बाट धए अनुज पीढ़ीक लेखककेँ प्रभावित करैत रहलाह। रमानाथ झाक अवदानकेँ बिसरेबाक लेल एकसँ बढ़ि एक कुचक्र रचाइत रहल। ओही रमानाथ झाक जन्म शतवार्षिकी (1906 - 2006) आयोजित करबाक भाव ओहि मानसिकताक लोकक मनमे कोना स्फुरित भेल होएत, कम आश्चर्यक विषय नहि अछि। ई देखि सामान्य लोकक मनमे शंका उत्पन्न होएब स्वाभाविके छैक। आ' प्रायः तेँ असम्बद्ध लोकसभकेँ शंका भेलैक अछि जे ई आयोजन सभ कतहु ओही शृंखलाक अग्रिम डेग वा कोनो अव्यक्त योजनाक पूर्वाभ्यास तँ नहि ने थिक?

एहि क्रममे पहिल आयोजन साहित्य अकादमीक तत्त्वावधान एवं चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क नेतृत्वमे जयनगरमे भेल छल। दोसर आयोजन भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरक वित्तीय सहयोगसँ पटनामे भेलैक। ई आयोजन मोहन भारद्वाजक नेतृत्व एवं एक नवजात संस्था 'प्रतिमान'क तत्त्वावधानमे सम्पन्न भेल। 'प्रतिमान'क पत्रसँ ज्ञात भेल छल जे रमानाथ झा, काशीकान्त मिश्र 'मधुप' एवं काञ्चीनाथ झा 'किरण'क जन्मशतवार्षिकी प्रस्तावित अछि। काशीकान्त मिश्र 'मधुप' एवं काञ्चीनाथ झा 'किरण' दीर्घजीवन प्राप्त कएलनि। नवतूरक कतेको साहित्यकारकेँ एहि दूनू व्यक्तिक सान्निध्य पएबाक सुअवसर भेटल छलनि। एहि दूनू गोटेक आकर्षक व्यक्तित्वक प्रभाव लोकपर पड़ल अछि। मुदा रमानाथ झा? रमानाथ झाक स्थिति किरणजी एवं मधुपजीसँ भिन्न अछि। एहि वर्गक साहित्यकारक चमकबासँ पूर्वहि ओ बिदा भए गेल छलाह। बेसी तँ एक-आध बेर केओ कतहु देखने वा सुनने होथि, से सम्भव। व्यक्तिगत सम्पर्कक सम्भावना तँ कमे अछि।

आजुक लोकमे पूर्व पीढ़ीक साहित्यकारक प्रति सहृदयता कमल अछि। हुनका सभक अवदानकेँ बिसरि अपन मूर्ति गढ़बाक प्रवृत्तिमे वृद्धि भेलैक अछि। ई स्थिति अवश्य खटकबाक योग्य अछि। दोसर, जे स्थिति खटकबाक योग्य अछि, से थिक रचनाकारसँ व्यक्तिगत सम्पर्क वा रचनाकारक उत्तराधिकारीसँ घनिष्ठताकेँ कृतिक मूल्यांकनक आधार बनाओल जाएब। घनिष्ठताक आधारपर रचनाकार उठैत छथि वा धंसैत छथि। बेनामी रचनाक लेल रचनाकारक उत्तराधिकारी कटौझ करैत छथि। संयोगवश, जँ उत्तराधिकारी साहित्यकार वा सम्पादक भए जाथि, तँ गप्पे नहि हो। सात खून माफ! एहना स्थितिमे ई आयोजन सभ अवश्य स्वागतयोग्य बूझल जएबाक चाही।

रमानाथ झाक संग एकटा आओर दुर्योग अछि। हिनक उत्तराधिकारी साहित्यकार नहि भेलाह आ' ने हिनक साहित्य मनोरंजनक साधन थिक। अपितु, हिनक साहित्यमे शास्त्रीय विषयक उपस्थापन एवं साहित्यक विवेचन अछि। ओ जाहि विषय सभ पर कलम उठौलनि अछि, पाठकसँ गम्भीर अध्ययनक अपेक्षा करैत अछि, जखन कि गम्भीर साहित्यसँ सामान्यतः लोक काते रहय

चाहैत अछि। परिणामतः रमानाथ झाक साहित्यक पाठकक संख्या कमैत रहल वा साहित्य कतिआ देल गेल। जे किछु गम्भीर पाठक छथिओ, हुनकहु लेल रमानाथ झाक साहित्य दुर्लभ होइत रहल। ने रमानाथ झा व्यक्तिगत रूपमे परिचित छलाह आ' ने हुनक साहित्य सर्वग्राह्य, सहज सुलभ, तखन तँ बेसी सम्भावना इएह अछि जे काशीनाथ झा 'किरण' एवं काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क लाटमे वा कही रोचवश रमानाथ झाक नाम एहि आयोजनमे जोड़ा गेल होअए। मुदा, एकटा बात तँ स्पष्ट अछि, संविधानक आठम अनुसूचीमे जँ मैथिली सम्मिलित नहि भेल रहैत एवं *रमानाथ झा ग्रन्थावली* प्रकाशित करबाक महत्त्वपूर्ण निर्णय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर नहि करैत एवं ओकर सम्पादक मोहन भारद्वाज नहि भेल रहितथि तँ लाटहुमे रमानाथ झा जन्मशतवार्षिकीक आयोजनक सम्भावना 'प्रतिमान' सन नवजात संस्थाक तत्त्वावधानमे सुदूर धरि दृष्टिगत नहि होइत। नियति जेहन आ' जे होअए, मुदा एक वरेण्य साहित्यकारक अवदानक चर्चा भेल, से प्रसन्नताक विषय अवश्य।

2

मिथिला भाषाक क्षेत्रमे रमानाथ झाक अवदानक प्रसंग अपन विचार रखबासँ पूर्व किछु तथ्यक उल्लेख करब आवश्यक बुझैत छी। ओ तथ्य सभ थिक, गत चारि दशकमे रमानाथ झाक अवदानकेँ तोपि देबाक निरन्तर प्रयास कोना-कोना कएल गेल अछि। किछु उदाहरण प्रस्तुत करब, से एहि हेतु जे मैथिली भाषा आ' साहित्यक वर्तमान स्थितिकेँ देखैत सुधी समाज ओहि तथ्य सभपर दृष्टिपात करथि आ' रमानाथ झाक अवदानक मूल्यांकन निरपेक्ष दृष्टिसँ स्वयं कए सकथि।

रमानाथ झा पर आरोप लगओनिहार कतेको भेलाह अछि। किन्तु, सभसँ पहिने चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क आरोपक उल्लेख करब जे ओही पदकेँ शोभित कएलनि अछि, जाहि पदपर रमानाथ झा मृत्यु पर्यन्त छलाह। ओ लिखल अछि -

आब ओहि मान्यता-प्राप्तिसँ (पटना विश्वविद्यालयक पाठ्यक्रममे मैथिलीक स्वीकृतिसँ) जतबे जे किछु आर्थिक लाभक मार्ग प्रशस्त भेलैक, से एक गुट विशेषमे जा केँ निहित भए गेल। हमरा दृष्टिसँ साहित्य-पत्रक प्रकाशन एही लाभक हेतु पूर्वहिसँ सुनियोजित छल।[1]

एहि आरोपक स्पष्ट अर्थ भेल जे सम्पादक रमानाथ झा *साहित्य-पत्र* क प्रकाशन अपना लेल अर्थ-प्राप्तिक द्वारि खोलबाक प्रयोजनसँ कएने छलाह आ' से साधित होइतहिँ प्रकाशन बन्द कए देलनि। चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क ई आरोप साहित्यिक मतभिन्नता नहि थिक। अपितु, एकरा एक वरिष्ठ साहित्यकारक चरित्रक प्रसंग, सेहो देहावसानक एक दशकक बाद, आबएबाला युगकेँ अयथार्थ सन्देश देबाक सुनियोजित प्रयास कहि सकैत छी। पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृतिक हेतु प्रयासक संगहिँ, मैथिली पाठ्यक्रम निर्धारित करबाक प्रयास सेहो आरम्भ भए गेल छल। एहि प्रसंग जे किछु तथ्य समक्ष आएल अछि, निरपेक्ष पाठक वर्गक स्वतः निष्कर्षक हेतु प्रस्तुत अछि।

1. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', *मैथिली पत्रकारिताक इतिहास*, पृ.सं. 169, 1981 ई.

अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषदक वार्षिकोत्सव मध्य स्वीकृत प्रस्ताव संख्या 9 (क) विज्ञापित करैत परिषदक तत्कालीन प्रधानमन्त्री शशिनाथ चौधरी[2] लिखने छथि -

कलकत्ता, ढ़ाका एवं पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीकेँ उच्चकक्षामे पढ़यबाक जे स्थान देल अछि, एतर्थ परिषद हुनक अनुगृहीत अछि। संग-संग परिषद निम्नलिखित साहित्य-प्रेमीगणक एक सब-कमिटी नियुक्त करैत अछि जे छओ मासक अभ्यन्तर कोर्सक उपयोगी ग्रन्थक निर्माण करय वा कराबय। उक्त सब-कमिटी मैथिली साहित्यक रक्षाक हेतु तथा परिवर्द्धनार्थ यावतो रूपेँ प्रयत्न करय ओ तदर्थ उक्त विश्वविद्यालयसँ एहि विषयक पत्राचार करय। सब-कमिटीक सदस्य - श्रीमान कुमार गंगानन्द सिंह, प्रो. हरिगोविन्द चौधरी, पण्डित बलदेव मिश्र, पण्डित जीवनाथ राय, मुंशी रघुनन्दन दास, बाबू भोलालाल दास, बाबू नरेन्द्रनाथ दास (संयोजक)।

परिषदक परीक्षा विभागक मन्त्री छलाह पण्डित जीवनाथ राय, हेड पण्डित, जिला स्कूल, लहेरियासराय। पण्डित रायक अवदानक उल्लेख करैत परिषदक तत्कालीन प्रधानमन्त्री भोलालाल दास, वर्ष 1338-40 सालक अपन प्रतिवेदनमे लिखैत छथि - *'परिषद एतबा अल्प समयमे विपुल संग्रह कए सकत तकर हमरा आशा नहि छल, किन्तु पण्डित जीवनाथ रायजीक निरन्तर सहयोगसँ जेना-तेना कार्य सम्पन्न भेल अछि। एहिमे जे किछु प्रशंसाक योग्य अछि, तकर श्रेय हुनके छैन्हि।'* परिषदक प्रधानमन्त्रीक विज्ञप्तिक अनुसार उक्त सब-कमिटीक सदस्य रमानाथ झा नहि छलाह।

दोसर आश्चर्यक गप्प थिक जे आइसँ सत्तरि वर्ष पहिने मैथिलीमे पत्रिका-प्रकाशन एक लाभकारी धन्धा छल; तथापि आइ धरि मैथिलीक एकहुटा पत्रिका अपन पएर पर ठाढ़ होएबाक क्षमता अर्जित नहि कए सकल अछि। निश्चिते ई कम आश्चर्यक बात नहि थिक। जखन कि एहि सत्तरि वर्षमे मैथिली स्कूलसँ कालेज, विश्वविद्यालय, साहित्य अकादेमी, मैथिली अकादेमी, बिहार लोकसेवा आयोग आ' आब संघ लोकसेवा आयोग धरि पहुँचि गेल अछि।

रमानाथ झा 1971 ई. मे दिवंगत भेलाह। गत चारि दशकमे मैथिलीक केन्द्र कतय-कतय रहल अछि, सूत्रधार के-के रहलाह अछि, लोकसँ छपित नहि छैक। मैथिलीमे पत्र-पत्रिका प्रकाशन जँ लाभकारी काज छल, तँ रमानाथ झाक देहावसानक वाद स्थापित केन्द्र सबसँ प्रकाशित-सम्पोषित मैथिलीक पत्र-पत्रिका किएक नहि चलल? आ' जँ मैथिलीमे पत्र-पत्रिका छापब लाभकारी छलैक तँ ओहि केन्द्र सभ द्वारा समय-समय पर सम्पादित-प्रकाशित पत्र-पत्रिका अवश्ये लाभकारी भेल होएत। एहन आरोपकर्ता सौभाग्यवश हमरालोकनिक बीच छथि, ओहि महँक किछु केन्द्रमे ओ पूर्ण सक्रिय छलाह, सहस्योद्घाटन कए सकैत छथि। एहि अवधिमे कोन-कोन आ' ककर ककर व्यक्तिगत पोथी कोर्समे लागल तथा मिथिला विश्वविद्यालय द्वारा थोकमे पोथी क्रय भेल, तकर जँ अनुसन्धान कएल जाए, तँ रमानाथ झापर आरोपक वास्तविकता स्पष्ट भए जाएत। साहित्य अकादेमीसँ मात्र एक पोथी *विद्यापति* सेहो अङरेजीमे रमानाथ झाक छपल अछि। बादक प्रतिनिधि लोकनिक लिस्ट सभक समक्ष अछि।

2. शशिनाथ चौधरी, *मिथिलामित्र*, उदय - 2, किरण - 2, 1932 ई.

काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क आरोप अछि जे *शतदल* कोर्ससँ हटा देल गेल आ' दोसर पोथी पैरबीक अभावमे नहि लागल। मधुपजीक इहो आरोप अछि जे हुनके सबहिक कविता-गीतसँ कतेको गोटे अपन जेबी भरैत छथि -

शतदल दलबन्दी दलदलमे फँसि कोर्सहुसँ गेल हटौल।
अछि ने सिनेटरसँ सम्बन्ध, न तेँ दोसर कृति आश्रय पौल
हमरे सभक गीत कवितासँ मीत कते जेबी भरि लेल
मुदा, उदासी टा हमरा हित शोषक वर्गक, से अछि खेल।[3]

बादमे काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क महाकाव्य *राधाविरह* सेहो पाठ्यक्रममे निर्धारित भेल आ' फेर हटि गेल। ताधरि रमानाथ झा मैथिली-मंचसँ तिरोहित भए गेल छलाह।

रमानाथ झाक मतक खण्डनक लेल सदिखन प्रस्तुत तेसर आरोपकर्ता डा. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क अधिकांश आरोप साहित्यिक मत-भिन्नताजन्य अछि। किछु उदाहरण सुधी समाजक समक्ष प्रस्तुत अछि -

क. मैथिली जगतमे विद्यापति गीतक पठन-पाठन आरम्भ भेल तँ स्वर्गीय रमानाथ झा एक डिग्री आरो बढ़ि गेलाह। विद्यापतिक राधाकृष्णकेँ महारानी लखिमा आ' महाराज शिवसिंह सिद्ध करबाक प्रयास कएलनि।[4]

ख. *मैथिली आलोचक (रमानाथ झा) दोहरी गुलामीक अभ्यस्त छलाह।*

ग. *जाहि कृष्णकेँ हिन्दू भगवानक पूर्णावतार मानैत अछि ताहि कृष्णकेँ एक राजामे आरोपित करब खुसामदक हद थिक। ओहि राजाक केलि-विलासक वर्णनमे राधाकृष्णक नाम जोड़ब तँ गाँजाक पुड़ियापर महात्मा गाँधीक चित्र साटबाक समान गर्हित मानल जाएत।* आरोपकर्ता फरिछबैत लिखल - *विद्यापतिक कृष्णकेँ शिवसिंह माननिहार थिका, प्रो. रमानाथ झा, रीडर, मैथिली विभाग, बिहार विश्वविद्यालय।*[5]

घ. किरणजी लिखल अछि, *शैली-निर्धारणक सन्दर्भमे रमानाथ झाक आधार ओ दृष्टिकोण संकीर्ण छल। परिषदक मनीगाछी अधिवेशनमे अपन शैलीक पुष्टि करबामे असमर्थ भइओ केँ आग्रह रखनहि रहलाह। भोलालाल दास लोकनि द्वारा निर्धारित शैलीमे कने-मने परिवर्त्तन कए, अपन शैलीक नाम देलनि। मैथिलीक उपर बपौती अधिकार प्रत्येक मैथिलकेँ छैक। अतः तर्कसँ दूर हटि, अधिकारक बलपर शैली-निर्धारण करबाक प्रयत्न मैथिलीक उन्नतिमे बाधके होएत।*[6]

---

3. काशीकान्त मिश्र 'मधुप', *चौंकि चुप्पे*, 1966 ई.
4. काञ्चीनाथ झा 'किरण', *किरण निबन्धावली*, 1990
5. काञ्चीनाथ झा 'किरण', *किरण निबन्धावली*, 1990
6. किरण', मैथिलीक व्याकरण ओ शैल : एक विचार, *रचना संग्रह*, वैदेही समिति, दरभंगा

काञ्चीनाथ झा 'किरण'क ई आरोप सब पाइ-कौड़ी विषयक नहि, वैचारिक अछि। एहि मत भिन्नताक कारण जे हो; मुदा एहिसँ चिन्तन-सरणिक विस्तार अवश्य होइत छैक। नब-नब तथ्य समक्ष अबैत अछि। नब बाटक सन्धान होइत अछि। मतभिन्नता अधलाह आ' प्रगतिगामी साहित्यिक प्रवृत्ति नहि, समाज आ' साहित्यक प्रगतिशीलताक द्योतक थिक। किन्तु, ई सत्य अछि जे किरणजी अपन मतक प्रतिपादन तथ्यपूर्वक नहि कएल अछि, रमानाथ झाक विचारकेँ कटबाक लेल लिखने छथि। मत-खण्डन सुविचारित नहि, आवेगात्मक अछि। एहिसँ कतेको ठाम विरोधाभास लक्षित होइछ आ' साहित्यिक मर्यादाक बान्ह भसिआ गेल सन लगैत अछि।

रमानाथ झा मैथिलीक अध्ययन-अध्यापनक केन्द्रमे छलाह। साहित्य अकादेमीमे आरम्भिक वर्षमे मैथिलीक गतिविधिक ओ नीति-निर्धारक छलाह। कहि सकैत छी मैथिलीक हित एवं मैथिलीक माध्यमसँ मैथिली-भाषीक हितक जे कोनो क्षेत्र तत्काल उपलब्ध छलैक, रमानाथ झा तकर केन्द्रमे छलाह। एहन लोकक विरोध अस्वाभाविक नहि छल आ' ने अछि। मुदा, उदार आ' सर्जनात्मक प्रतिभा-सम्पन्न लोकक विरोध सकारात्मक होइत छैक। सकरात्मक विरोध मूल्याधारित होइत अछि। एहन विरोधी पैघ रेखा खींचि अपन सकारात्मक विचार आ' काजसँ प्रतिमान गढ़ैत अछि। सकारात्मक विरोधक सर्वकालिक महत्त्व छैक। मुदा, ऋणात्मक व्यक्तित्वक लोक समानधर्माक सङोर कए आरोप गढ़ैत अछि। पहिने आरोपक तीर-वर्षण कए, अपन अनुकूल करबाक सभ सम्भव प्रयास करैत अछि। नहि सुतरैत देखि अपन वाक्-चातुर्यसँ कौचर्यप्रिय मैथिल समाजक मनोरंजन करैत अछि। खिधांस करबामे अपन विद्वताक उत्कर्ष देखैत अछि। रमानाथ झाक विराट व्यक्तित्वक समक्ष असफल सुतारी लोकक आशा पर तुषार-पात जखन घनीभूत होअए लागल तँ ओ सभ जीवनकालमे रमानाथ झाकेँ 'नाथ सम्प्रदाय'क अधिष्ठापक कहल। कौचर्य-कलामे अपन प्रवीणताक परिचय देल। देहावसानक बाद हिनक कपाल-क्रिया आरम्भ कएल। आ' से ओहिना जेना सोवियत रूसमे सत्तामे आएल वर्ग द्वारा 'पर्सनलिटी कल्ट'क आरोपमे अपने नेताक शवकेँ सारासँ उपारि कएल गेल छल। सोवियत रूसमे जे राजनीतिमे घटल, से रमानाथ झाक संग मैथिली साहित्यमे भेल अछि। एहि प्रसंग एक टा छोट-छीन उदाहरण विज्ञ समाजक समक्ष राखि रहल छी।

चन्दा झाकृत *मिथिला भाषा रामायण* क चारिम संस्करणक सम्पादक छथि पण्डित बलदेव मिश्र एवं प्रो. रमानाथ झा। ओहिमे भूमिकास्वरूप पण्डित बलदेव मिश्रक 'दुइ शब्द' (तीन पृष्ठ) आ' रमानाथ झाक 'क्षमा-प्रार्थना' (आधा पृष्ठ) अछि। रमानाथ झाक एतेक छोट भूमिका दुर्लभ अछि। रामायणक ई संस्करण एहि हेतु विशेष महत्त्वक अछि जे चन्दा झाक हाथक लिखल पाण्डुलिपिसँ संशोधन कए आ' पूर्व संस्करणक पाठ-भेदक उल्लेख करैत एक प्रामाणिक पाठ एहि संस्करणमे अछि। किन्तु, साहित्य अकादमी द्वारा जखन एहि रामायणक पुनर्मुद्रणक निर्णय भेल तँ सम्पादनक भार साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक तत्कालीन प्रतिनिधि स्वयं लेलनि। मूलपाठ ओहिना रहल मुदा सम्पादक महोदय आधा पृष्ठमे रमानाथ झाक लिखल 'क्षमा प्रार्थना' छाँटि देलनि। बलदेब मिश्र अकारण रमानाथ झाक संग पीसल गेलाह। जँ स्थान सीमित छलैक तँ सम्पादक तेरह पेजक अपन भूमिका छोट कए सकैत छलाह, मुदा से नहि कएल।

रमानाथ झा मंचक लोक नहि छलाह। कविता नहि लिखैत छलाह। गीत नहि गबैत छलाह। मंचपर लोकके हँसबैत-कनबैत नहि छलाह। ओ विद्वान छलाह, शास्त्रज्ञ छलाह, मैथिली भाषा-साहित्यक संग अन्य भारतीय भाषा-साहित्यक गम्भीर अध्ययन छलनि। ओहि प्रति अनुराग छलनि। हिनक प्रतिभा, पाण्डित्य आ' भाषा-साहित्यक प्रति समर्पणक समक्ष लटुआएल-दबकल लोक रमानाथ झाक विदा होइतहिँ सुरफुरा उठल। ओहिमे बेसी संख्या कविलोकनिक छल। मैथिलीमे ओही वर्गक लोकक वर्चस्व भए गेलैक। मैथिलीक अक्षर-समाजमे एहि वर्गक स्वच्छन्दता बढ़ल।

ई सर्वज्ञात अछि जे यश आ' अर्थक आकांक्षी कवि-समाजकेँ सभसँ बेसी आतंक तटस्थ समालोचकसँ होइत छनि। किरणजी एहने लोक सभकेँ देखि लिखने छल होएताह -

अशुद्ध-पशुद्ध, फूसि फटक लीखि लोककेँ ठकि परतारि अर्थ-यश कमेनिहार कवि भेल सहृदय, सज्जन आ' सत्य-असत्य, संगत-असंगत शुद्ध अशुद्धक ज्ञान करओनिहार समालोचक दुष्ट-दुर्जन! एकरे कहैत छै सपर्तिभ।[7]

रमानाथ झा एहि तथ्यसँ पूर्णतः अवगत छलाह जे कोनहु भाषाक लेल ओहि भाषामे लिखित कविता कथा, उपन्यास, नाटक आदिक, जे अभिव्यक्तिक एकटा प्रभावक माध्यम थिक, महत्त्व छैक। ओहि अभिव्यक्तिसँ सम्बद्ध भाषाक साहित्य समृद्ध होइत अछि। इहो सत्य जे भाषाक अस्तित्व साहित्येमे सुरक्षित रहैत छैक। मुदा, भाषाक विकास केवल कथा, कवितासँ सम्भव नहि अछि। भाषाक विकासक लेल अओरो किछु आवश्यक होइत छैक। ओ लिखल अछि-

मैथिली साहित्य एक तँ ओहिना एकांगी अछि, एखनहु गद्य लेखकसँ अधिक कवि भेटताह। जएह कवि, सएह कथाकार, ओएह उपन्यासो लिखताह, ओ कोनहु क्षेत्रमे सफलता भेटितहिँ अपनाकेँ महापण्डित बूझि शास्त्रहुक दाबा करताह, समालोचक भए गुण-दोषहुक विवेचन करए लगताह। [8] प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक एवं भाषा प्रबन्धक, ई. एन्नामलाइक [9] विचार सेहो एही प्रकारक अछि। ओहो मानैत छथि जे केवल कथा-कविता लिखेलासँ भाषाक विकासक गति ठमकि जाइत छैक। यश आ' अर्थक आकांक्षी कवि समाजकेँ रमानाथ झाक ई निष्पक्षता अर्घैत नहि छलनि।

भाषा आ' साहित्यक प्रचार-प्रसार अध्ययन-अध्यापन, विवेचन आ' विश्लेषणसँ तथा साहित्येतर लेखनसँ होइत छैक। भाषाक विकासक क्रम, ओकर प्राचीनता आ' सुदीर्घ साहित्यिक

7. काञ्चीनाथ झा 'किरण', समालोचना : हमर दृष्टिकोण, *इजोत,* 1960 ई.

8. रमानाथ झा, *मैथिलीक वर्तमान समस्या,* पृ. 33

9. E. Annamalai, *Goals and Strategies of Development of Indian Languages,*Ed.CIIL, Mosyre, 1998 - 'Development of creative literature is one aspect of language development. But for many department in the States in India, it is the primary programme and this distorts language development.One of the importanrt concerns of language is providing access to a wide range of information and knowledge and creation of non-literary content in the language is very crucial to provide this'.

परम्पराक रेखांकनक लेल साहित्यक अध्ययन-अध्यापन आवश्यक अछि। रमानाथ झा मैथिली भाषा आ' साहित्यक गम्भीरताक संग अध्ययन एवं अनुसन्धान कएलनि। रचना-कालक सन्दर्भमे साहित्यक विवेचन कए, ओहि कालक संस्कृति आ' समाजक विशेषतासँ मैथिली जगतकेँ परिचित कराओल। हिनक प्रयाससँ मैथिली पठन-पाठनकेँ सुदृढ़ भित्ति प्राप्त भेलैक। डा.जयकान्त मिश्र अङरेजीमे मैथिली साहित्यक इतिहास लिखि वा अन्यो ग्रन्थ अङरेजीमे लिखि मैथिली भाषा-साहित्यक प्रचार-प्रसारमे महत्त्वपूर्ण योगदान कएलनि अछि। मुदा, रमानाथ झा जाहि गम्भीरता एवं विशेषज्ञताक संग विवेचन कए, मैथिली भाषा आ' साहित्यक उपलब्धि एवं विलक्षणताक प्रसंग विस्तारसँ मैथिलीक अतिरिक्त अन्यो भाषामे अपन विचार राखल अछि, से सर्वथा श्लाघ्य आ' स्पृहनीय अछि। आब तँ ओहन अधीत विद्वान सर्वथा दुर्लभ छथि। प्रायः इएह दुर्लभता एवं मैथिली भाषा साहित्यक प्रतिमान तकबाक हिनक हार्दिक अभिलाषाकेँ देखैत रमानाथ झाक जन्मशतवार्षिकी आयोजित करबाक लेल हुनका प्रति असहज एवं कौचर्यप्रवीण वर्गक लोकहुकेँ विवश कए देने हो, तँ कोनो आश्चर्य नहि।

3

विभिन्न विश्वविद्यालयमे मैथिलीक अध्ययन-अध्यापनक स्वीकृतिक बाद सभसँ पैघ जे उपलब्धि आ' सम्मान मैथिली भाषा-भाषीकेँ भेटल, से छल साहित्य अकादेमी द्वारा मैथिलीकेँ देशक एक प्रमुख साहित्यिक भाषाक रूपमे मान्यता। संयोगवश, साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक पहिल प्रतिनिधि नियुक्त भेल छलाह रमानाथ झा। भारतक एक प्रमुख साहित्यिक भाषाक रूपमे मैथिलीक मान्यताक उपरान्त रमानाथ झाक व्यक्त विचार मैथिली भाषा आ' साहित्यक विकासक प्रसंग हुनक चिन्ताकेँ रेखांकित करैत अछि। ओ लिखैत छथि -

साहित्य अकादेमीमे मैथिलीकेँ स्थान भेटि गेल, ताहिसँ एक गोट बड़का समस्याक समाधान तँ भए गेल, परन्तु ताहि संग एक नहि, अनेक नव-नव समस्या समक्ष आएल अछि। हमरा तँ अपन भाषाकेँ आन-आन समृद्ध भाषाक समकक्ष बनएबाक अछि। यदि से नहि भेल, तँ मैथिलीक प्रतिनिधि कोन मुह लएकेँ अकादेमीक अधिवेशनमे जएताह। साहित्यक समृद्धि केहनो पैघ लोक रहथु, एक गोटासँ साध्य नहि भए सकैत अछि[10] ।

अपन भाषाकेँ अन्य भारतीय भाषाक समकक्ष अनबाक चिन्ता आ' ओहि दिशामे रमानाथ झा द्वारा कएल गेल प्रयासक मूल्यांकनसँ, निर्धारित विषय 'रमानाथ झा आ' मिथिला भाषा पर अपेक्षित प्रकाश स्वतः पड़ि जाएत, से दृष्टिमे राखि किछु बिन्दु पर रमानाथ झाक विचारक महत्त्व एवं प्रासंगिकताक चर्च प्रस्तुत अछि।

10. रमानाथ झा, *मैथिलीक वर्तमान समस्या,* पृ. 4

मिथिला भाषाक प्राचीनता

भाषाक उत्पत्ति एवं साहित्यक माध्यमेँ भाषाक अस्तित्व-विचारक दू बिन्दु अछि - भाषाक उत्पत्ति कोना होइछ। ई भाषा विज्ञानक अन्तर्गत अबैत अछि। ओकर सिद्धान्त सभ भाषा पर समान रूपेँ लागू होइत छैक एवं सभ भाषाक उत्पत्ति पर चर्च एक समान होइत अछि। भाषाक अस्तित्वक स्रोत थिक लिखित भाषा अर्थात् उपलब्ध साहित्य। कोन भाषा कतेक प्राचीन अछि, तकर निर्धारण भाषाक उपलब्ध साहित्ये पर निर्भर करैत अछि। रमानाथ झा मिथिला भाषाक प्राचीनता प्रमाणित करबाक हेतु अनेक स्रोतक अन्वेषण आ' विवेचन कएल अछि। एहि निष्कर्ष सभसँ मैथिली भाषा-साहित्यक प्राचीनता निर्विवाद रूपसँ सिद्ध भेल अछि। रमानाथ झाक विचार आ' ओहि सन्दर्भमे प्रस्तुत प्रमाण निम्नप्रकारेँ खतिआओल जाए सकैछ।

1. वाल्मीकि रामायण

महर्षि वाल्मीकिक कथन अछि जे अशोक बाटिकामे अपहृत कए राखल सीताक संग भाषाविद् हनुमानक वार्तालाप मानुषी भाषामे भेल छल[11]। ज्यो. बलदेव मिश्रक[12] विचारसँ सहमत रमानाथ झा[13] मानैत छथि जे ओ वार्तालाप विदेह जनपदक भाषामे भेल छल जे मिथिला भाषाक अस्तित्वक पहिल साक्ष्य थिक। महर्षि वाल्मीकि जाहि कोनो युगमे भेल होथि, किन्तु हुनक कृति प्राक् ऐतिहासिक अवश्य अछि। ओहि कालमे दू टा भाषा अवश्य छल होएतैक। संस्कृत, जे औखन ओही नामसँ जानल जाइत अछि, परिचित अछि आ' दोसर अछि मानुषी भाषा, जकरा लोकभाषा कहल जाइत छैक। संस्कृत केवल द्विजाति बजैत छल आ' मानुषी भाषा सभ केओ बजैत छल। ओहो मानुषी भाषा पूर्ण विकसित छलैक एवं ओहि मानुषी भाषाक दू रूप छल - साहित्यिक ओ प्राकृत। ओकर व्याकरण छलैक। ओहि व्याकरणसँ भाषाक साधुता निर्णीत होइत छल। अपशब्दक प्रयोग नहि होइत छलैक। ओहि समयमे कतेक जनपद आ' कतेक जनपदीय भाषा छल, तकर उल्लेख तँ महर्षि नहि कएने छथि, किन्तु किछु विद्वानक तर्क छनि जे हनुमान सीताक सासुर अर्थात् कोसल जनपदक भाषामे हुनकासँ वार्त्तालाप कएने छल होएताह। रमानाथ झा एहि बातक खण्डन करैत छथि। ओ मानैत छथि जे सीता अपन सासुर, कोसल जनपदक भाषा अवश्य जनैत छल होएतीह। मुदा, ओ अपन नैहर, विदेह जनपदक भाषा नहि जनैत छल होएतीह, से सम्भव नहि अछि। हनुमान सन भाषाविद् दूत सीताक किंचितो शंकाकेँ निर्मूल करबाक हेतु निश्चित रूपसँ विदेह जनपदक मानुषी भाषामे हुनकासँ गप्प करब श्रेयस्कर बुझने छल होएताह। रमानाथ झाक ई तर्क विशेष समीचीन प्रतीत होइत अछि। कोसल जनपद आ' विदेह जनपदमे सामीप्य सेहो छलैक, एवं ओहि समयमे सामीप्यक जनपद सभक मानुषी भाषामे विशेष अन्तर नहि छल होएत। तेँ, ओ मानुषी भाषा कोसल जनपदक हो, वा विदेह जनपदक, कोनो खास अन्तर नहि रखैत अछि। जँ महर्षि वाल्मीकि हनुमान आ' सीताक वार्तालापकेँ प्रथम पुरुषमे अभिलिखित कएने रहितथि तँ मैथिलीक आदिरूपक नमूना महर्षि वाल्मीकिक अमर कृतिमे हमरा सभकेँ भेटैत, रमानाथ झाक एहन स्पष्ट अभिमत अछि।

11. वाल्मीकि रामायण, सुन्दरकाण्ड, सर्ग 10, श्लोक.17-19,

12. बलदेव मिश्र, *कविवर पं. चन्दा झा,* 1948 ई. पृ.10

13. रमानाथ झा, *प्रबन्ध संग्रह,* दरभंगा प्रेस कम्पनी(प्रा.) लि. दरभंगा, 1963 ई. पृ. सं. 4

2. बुद्धवचन एवं महावीर वचनमे मिथिला भाषा

वाल्मीकि रामायणमे विदेह जनपदक भाषाक नमूना तँ उपलब्ध नहि अछि, परन्तु जे प्राचीन साहित्य उपलब्ध अछि, ताहिमे विदेह जनपदक मानुषी भाषाक आदिरूप बुद्धवचन आ' महावीर वचनमे भेटैत अछि, से रमानाथ झा मानैत छथि। गौतम बुद्ध कोसल जनपदक छलाह। हुनक भाषा कोसल जनपदक भाषा छल। कोसल जनपदक शाक्य एवं विदेहक लिच्छवीमे घनिष्ठ सम्बन्ध छलनि। बुद्धक कार्यक्षेत्र मगध छल। किन्तु, कोसल जनपद आ' विदेह जनपदमे हुनक प्रभाव कम नहि छलनि। महावंशक अनुसार बुद्धक अत्यन्त प्रिय शिष्य आनन्द विदेहक ब्राह्मण कुल उत्पन्न छलाह। *विनयपिटकक* अनुसार छान्दस भाषामे अपन वचन निबद्ध करबाक शिष्यक अनुरोधपर भगवान बुद्ध तमसा गेल छलथिन्ह एवं अपन भाषामे ओकरा प्रख्यापित करबाक अनुज्ञा देने छलाह। बौद्ध सम्प्रदाय आ' बुद्धघोषक प्रसिद्ध अकथामे स्वीय भाषाक अर्थ पाली कहल गेल अछि। भाषा वैज्ञानिक सभ पालीकेँ एक कृत्रिम भाषा मानल अछि जकर व्याप्ति बुद्धक कार्यक्षेत्रक जनपद धरि छलैक। ओहि जनपद सभक अपन भाषा छलैक एवं ओहि जनपद सभक भाषाक समन्वयसँ पाली उत्पन्न भेल मानल गेल अछि। भाषाविद् सुनीति कुमार चटर्जीक कहब अछि जे सम्राट अशोकक समयमे *बुद्धवचन* पालीमे निबद्ध भेल। अशोक-स्तम्भलेखक भाषा, जनपदीय भाषा, पाली भिन्न अछि। *बुद्धवचन,* ओहिसँ पहिने मगध जनपदक भाषामे छल, जकरा बुद्धघोष मागधी कहने छथि।

3. महावीरक वचन

जैनधर्मक प्रमुख प्रवर्तक महावीर वैदेह छलाह। हुनक मातृभाषा विदेह जनपदक भाषा छल। ओ अपन उपदेश जनपदीय भाषामे देल। छान्दस भाषा जनपदीय भाषा नहि छल, ओ द्विजातीय भाषा छल। जैनधर्मक आदिग्रन्थ जाहि भाषामे अछि, ओ अर्धमागधी कहबैत अछि। पाली अशोकक समयमे अस्तित्वमे आएल। एहि तरहेँ अर्धमागधी पालीसँ प्राचीन प्रमाणित होइत अछि। रमानाथ झाक मत अछि जे कोसल, मगध आ' विदेह - तीनू जनपद परस्पर सन्निहित छल। तीनू जनपदक भाषामे भेदक अछैतो साम्य स्वाभाविक छैक। भाषाविद् लोकनिक मत जे हो, ऐतिहासिक दृष्टिसँ इएह संगत प्रतीत होइत अछि जे वैदेह महावीरक मातृभाषा विदेह जनपदक भाषा छल जे अर्धमागधी नामसँ प्रख्यात भेल। आ' तेँ मैथिली भाषाक प्राचीन रूप महावीरक मूलवचन अर्धमागधीमे उपलब्ध रहब, रमानाथ झा मानैत छथि।

ई तँ निश्चित अछि जे वैदिक धर्मक विरोधमे जैनधर्म आ' बौद्धधर्म प्रवर्तित भेल छल। एहि हेतु ओहि दूनू धर्मक भाषा छान्दस किन्नहु नहि भए सकैत छलैक। ओ निश्चित रूपसँ जनपदीय भाषा छल। जाहि-जाहि जनपदमे हुनकालोकनिक कार्यक्षेत्र आ' प्रभाव छलनि, ओहिमे विदेह जनपदक स्थान सर्वप्रमुख छलैक।

रमानाथ झा मानैत छथि जे मूल 'बुद्धवचन'क मागधी 'बुद्धवचनेमे रहि गेल। अशोकक समयक मगध-कोसल जनपदक भाषा संस्कृतरूप पाली औखन ओही रूपमे अछि। मागधी प्राकृत मूल बुद्धवचनक मागधीसँ बहुत दूर हटि नाटकादिमे रहल तथा ओकर स्वरूप स्थिर अछि। अर्धमागधी जैन लोकनिक धार्मिक भाषा भए रहि गेल। मुदा, भाषा विकासक गति आ' प्रवृत्ति ठमकल नहि, परिस्थितिक अनुरूप जनपदीय भाषा विकसित भेल। मगध जनपदक भाषा किंवा कोसल जनपदक भाषा क्रमशः विकसित होइत गेल आ' जे सम्प्रति मगही एवं अवधी कहबैत अछि।

महावीरक मूल वचनक अर्धमागधी जैनधर्मक साहित्यिक भाषा भए रहल एवं जैनधर्मक संग देश भरिमे पसरि गेल। ओ जैनधर्मक भाषाक रूपमे जानल जाइत अछि। रमानाथ झाक अनुसार लोक बिसरि गेल जैनधर्मक भाषा विदेह जनपदक भाषा थिक। एहिठाम विचारनीय जे भाषाक विकासक गति कोसल जनपद आ' मगध जनपदक भाषाकेँ कोना प्रभावित नहि कएलक? विदेह जनपदक भाषा पर प्रभाव नहि पड़ल हो, से कोना सम्भव भेल होएत? तखन विदेह जनपदक भाषाक विकासक क्रम की भेलैक आ' कोना भेलैक, अनुमान सापेक्ष्य अछि। से एहि हेतु जे महावीरक पश्चात विदेह जनपदक भाषामे रचना उपलब्ध नहि होइत अछि। मागधी आ' शौरसैनी, गौड़ी आ' महाराष्ट्री प्राकृतक रूपमे अनेक ग्रन्थमे भेटैत छैक, किन्तु नाटकमे सेहो स्त्री वा तथाकथित नीच जातिक लोकक भाषाक रूपमे। मिथिलावासीमे आत्माभिव्यक्तिक क्षमता नहि छल अथवा अपन अनुभवकेँ प्रकट करबाक अकुलाहटि नहि छल होएतनि, से मानि लेब असंगत होएत। एहि प्रसंग रमानाथ झा मानैत छथि जे उदाहरणक अनुपलब्धि, अभावक प्रमाण नहि थिक। ओकर स्रोत अन्य प्रकारेँ ताकल जएबाक चाही। ओ विदेह जनपदक भाषाक विकासक क्रम आ' साहित्यिक कृतिक अनुपलब्धताक जे कारण सभ अनुमान कएल अछि, से निम्नलिखित अछि[14]

1. वैदिक धर्मक अनुयायी द्विजाति द्वारा छांदस भाषा, संस्कृतकेँ साहित्यिक भाषाक रूपमे स्वीकृति, आर्यावर्त्तक व्यापक क्षेत्रमे सुदूर दक्षिण धरि प्रभाव आ' ग्राह्यता, सौष्ठव एवं व्याकरणादिक नियमसँ भेल स्थिरस्वरूप।
2. जनपदीय भाषामे विभिन्नता आ' क्षेत्र विशेषधरि सम्प्रेषणीय होएब, तथा आर्यावर्त्तक स्तरधरि अपन विद्वत्ताक अभिलाषी द्वारा संस्कृतहिमे रचनाक उत्कंठा।
3. संस्कृत भए अर्थात् व्याकरणादिक नियमसँ अनुशासित पाली आ' अर्धमागधीक जनपदीय भाषासँ दूर होएब,
4. पछाति बौद्धधर्म आ' जैनधर्मक अनुयायी द्वारा सेहो संस्कृत भाषाकेँ अपन अभिव्यक्तिक माध्यम बनाओल गेल। मुदा, हुनकालोकनिक ध्यान भाषाक शुद्धता पर कम छल।
5. विदेह जनपदमे पैघ राजा वा आश्रयदाताक अभाव, जे एगारहम शताब्दी धरि अर्थात् कर्नाट राजवंशक स्थापना धरि रहल।

14. रमानाथ झा, *प्रबन्ध संग्रह,* दरभंगा प्रेस कम्पनी(प्रा.) लि. दरभंगा, 1963 ई. पृ. सं. 17-19

6. लिखबाक कठिनता, एवं
7. जलवायु।

रमानाथ झाक कहब अछि जे विकासक प्रतिकूल कारण सभक अछैतो मिथिलावासीक सर्जनात्मक प्रतिभा अवाधित रहल। आत्माभिव्यक्तिक अभिलाषा कमलनि नहि। किन्तु, से लिखित रूपमे नहि, मौखिम रूपमे। ओ कथाक रूपमे बेसी भेल। एहि हेतु एक विकसित भाषाक जे गुण सब अपेक्षित छैक, से सब मिथिला भाषामे प्रधानतया अछि। कोनो भाषामे ई गुण सभ सहसा नहि भए सकैत छैक, विशेषतः व्यंजनावृत्तिसँ पद विशेष शक्तिग्रह बिनु दीर्घ साहचर्यसँ सम्भव नहि अछि। दीर्घ साहचर्यक लेल पर्याप्त समय चाही। आ' भाषाक इएह शक्ति एवं प्रयोगक लेल अपेक्षित कालसँ प्रमाणित होइछ जे मैथिली भाषा प्राचीन अछि।

उपर्युक्त तथ्यक अतिरिक्त रमानाथ झा मिथिला भाषाक प्राचीनता एवं ओहिमे साहित्य-सर्जनाक अविच्छिन्न परम्पराक अन्वेषण आ' विवेचन सेहो कएल अछि। ओ विवेचन सभ पाँच साक्ष्य पर आधारित अछि -

1. कालिदासक *विक्रमोर्वशीयक* चतुर्थ अंकमे पावस वर्णनक एक दोहा,
2. प्राकृत पिंगलमे वर्णवृत्तक उदाहरणमे कविता,
3. नेपालसँ प्राप्त सहजपन्थी सिद्ध लोकनिक भाषा,
4. डाक वचन, एवं
5. अवहट्टमे विद्यापतिक रचना।[15]

रमानाथ झा अपन मतक प्रतिपादनक लेल कालिदासक *विक्रमोर्वशीयक* चतुर्थ अंकसँ पावस वर्णनक एक दोहा प्रस्तुत कएल अछि, जे निम्न प्रकारेँ अछि -

मइँ जाणिअ मिअलोअणि णिसिअरु कोइ हरेइ।

जाव णु णवतड़िसामलि धाराहरु बरिसेइ।

एकर मैथिली छाया एहि प्रकारेँ देल अछि -

मोञे जानिअ मृगलोचनी निशिचर कोइ हरेइ

जाब न नवतड़िश्यामली धाराधर बरिसेइ।।

एहि दोहाक मैथिली छाया उपस्थापित करैत रमानाथ झा मानैत छथि जे हलन्त शब्दक अन्तिम शब्द हल्क लोप कए **'जाव'** ओ 'तड़ि', 'यावत्' ओ 'तड़ित्' थिक, ओ से मैथिल सम्प्रदायक अनुकूल अछि। **'जानिअ', 'हरेइ','बरिसेइ'** तीनू क्रियापद शुद्ध मैथिलीक थिक।

एहि प्रसंग, प्राकृतपिंगलक धवल नामक वर्णवृत्तक अनेक उदाहरण ओ प्रस्तुत कएने छथि। ओहिमे सँ एकटा उदाहरण प्रस्तुत अछि -

15. रमानाथ झा, *प्रबन्ध संग्रह,* दरभंगा प्रेस कम्पनी(प्रा.) लि. दरभंगा, 1963 ई. पृ. सं. 42 - 51

तरुण तरणि तबइ धरणि, पवण बह खरा

लग णहि जल बड़ मरुथल जनजिवण हरा।

दिसइ चलइ हिअअ डुलइ हम इकलि बहू

घर णहि पिअ सुणहि पहिअ मन इछइ कहू।

एकर मैथिली छाया एहि प्रकारेँ देल अछि -

तरुण तरणि तबइ धरणि पवन बह खरा।

लग नहि जल बड़ मरु-थल जनजीवन-हरा।।

दिशो चलइ हिअअ डोलइ हम एकलि बहू।

घर नहि पिअ सुनिअ पथिक मन इछइ कहू।।

रमानाथ झा[16] एहि उदाहरण सभमे प्रयुक्त क्रियापद सभकेँ मैथिलीक अनुरूप मानल अछि। प्रयुक्त शब्द जेना, 'तबइ', 'खरा', 'लग', 'डुलइ', 'बहू', 'घर' ओ 'कहू' विशुद्ध मैथिलीक थिक। हिनक विचार अछि जे प्राकृत ओ अपभ्रंशक काव्यक अध्ययन कएल जाए तँ बहुत एहन रचना भेटत जे मैथिलीक प्रतीत होएत। एहि लेल ओ भाषा विज्ञानक स्फीत दृष्टि आ' परिश्रम आवश्यक मानैत छथि।

4. सहजपन्थी लोकनिक भाषा

वर्णरत्नाकर मे ज्योतिरीश्वर चौरासी सिद्धक उल्लेख कएने छथि। ओहिमे के मिथिला जनपदक छलाह आ' के नहि, तकर उल्लेख नहि अछि। यद्यपि, ओहि सम्प्रदायमे अबितहिँ ओसभ नब नामसँ ख्यात तँ भए जाइत छलाह; मुदा, भाषा आ' ओकर प्रभाव पछोड़ नहि छोड़ैत छलनि। एहि हेतु, किछु सिद्धक रचना एहन अवश्य अछि जे हुनका मिथिला जनपदक प्रमाणित करैत अछि तथा मिथिला भाषा हुनक मातृभाषा छल, से सिद्ध करैत अछि। एकर अतिरिक्त, हुनकालोकनिक कार्यक्षेत्र विक्रमशीला छल। जतएसँ सातम शताब्दीक शिलालेख मिथिलाक्षरमे भेटल अछि। उपर्युक्त विवेचनक क्रममे रमानाथ झा सरहपादक एक गीतक उल्लेख एहि निष्कर्षक संग कएने छथि जे हुनक गीतक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि निश्चित रूपसँ मिथिलाक थिक। ओ गीत निम्न प्रकारक अछि -

सिद्धिरत्थु मइ पढ़मे पढ़िअउ।

मण्ड पिबन्तेँ विसरअ एमइउ।।

मिथिलामे औखन अक्षरारम्भ एहि चारि अक्षरसँ होइत अछि, 'सिद्धिरस्तु'। ओहिसँ पूर्व एक यन्त्र जकरा 'आँजी' कहल जाइछ, लिखल जाइत अछि। लोक इहो मानैत अछि जे माँड़ पिला पर स्मरण शक्ति क्षीण होइत छैक। कुक्कुरीपाद अपन एक गीतमे लिखने छथि -

16. रमानाथ झा, *प्रबन्ध संग्रह,* दरभंगा प्रेस कम्पनी(प्रा.) लि. दरभंगा, 1963 ई. पृ. सं. 42 - 51

दिवसइ बहुड़ी कागडरेँ भाअ।

राति भइले कामरु जाअ।।

मिथिलामे एकटा प्रसिद्ध कहबी (*दिनकेँ धनी कागेँ डेराथि, राति भेलेँ धनी कामरु जाथि*)क आधार पर रमानाथ झा मानल अछि जे कुक्कुरीपाद मिथिलाक विचार-सरणि एवं वाग्धारासँ परिचित छलाह। ओना, ओ निर्णीत रूपसँ ई कहबाक स्थितिमे अपनाकेँ नहि पबैत छथि जे सिद्धलोकनिक भाषा, मिथिला भाषा छल। तथापि ऐतिहासिक दृष्टिसँ विचार कए किछु सिद्धक भाषाकेँ ओ मिथिला जनपदक भाषा अवश्य मानल अछि। आ' जाहि सिद्धक कृति न्यूनाधिक्य रूपेँ मिथिला जनपदक भाषामे नहि अछि, से एकर सदृश भाषामे अछि, रमानाथ झा मानैत छथि। रमानाथ झाक अनुसार सिद्धलोकनिक ई भाषा, जकरा ज्योतिरीश्वर अवहट्ट कहल अछि, मिथिलाक भाषा होएबाक एक गोट ई प्रमाण थिक जे एहि प्राच्य अपभ्रंश भाषामे रचनाक परम्परा अन्यथहु मिथिलामे उपलब्ध होइत अछि।

5. डाकवचन

डाकवचनक प्रचार ओना तँ सम्पूर्ण उत्तर भारतमे अछि; किन्तु, जे शास्त्रीय मान्यता मिथिलामे प्राप्त छैक, से आनठाम दुर्लभ अछि। हरिसिंहदेवक सान्धिविग्रहिक चण्डेश्वर ठाकुरक *कृत्यचिन्तामणि* अथवा ओहिसँ डेढ़-दू सए वर्ष नवीन विद्यापति ठाकुरक बालक मुद्राहस्तक हरपति ठाकुरक *व्यवहारविवेक* मे डाकवचनक प्रमाणस्वरूप उद्धृत होएब एहि बातक प्रमाण अवश्य थिक जे ताधरि मिथिलाक समाजमे ओ वचन सभ प्रसिद्धि पाबि गेल छल। ओकर कथनक सत्यतासँ लोक परिचित भए विश्वास करए लागल छल। अन्यथा, संस्कृतक पण्डित लोकभाषाक रचनाकेँ अपन ग्रन्थमे कथमपि उत्धृत नहि करितथि । रमानाथ झाक अनुसार ई एहू बातक प्रमाण अछि जे ताधरि अवहट्ट भाषामे साहित्यिक रचनाक परम्परा सेहो सुस्थिर भए गेल छलैक। मिथिलामे प्रचलित प्रमादकेँ जँ सत्य मानि लेल जाए तँ डाक गुप्तोत्तर कालीन छथि। ओ गुआरक कन्यामे उत्पन्न बराहमिहिरक पुत्र छलाह। भाषामे ओतेक प्राचीनता नहि अछि तकर कारण थिक मौखिक रूपेँ अबैत-अबैत विकृत भए जाएब।

6. अवहट्टमे विद्यापतिक रचना

कीर्तिलता मे विद्यापति जकरा 'देसिल बयना' कहल अछि, रमानाथ झाक अनुसार, से ने तँ विद्यापतिकालीन 'देसिल बयना' थिक आने ज्योतिरीश्वरकालीन 'देसिल बयना'। कोनो कालक देसिल बयना तँ ओ तकरा मानैत छथि जे ओहि जनपदक लोक ओहि समयमे बाजए। विद्यापतिक समयमे मिथिला जनपदक लोक *कीर्तिलताक* भाषा नहि बजैत छल। लोक ओ भाषा बजैत छल, जाहि भाषामे विद्यापति सहस्र गीतक रचना कएने छथि। हुनक गीतकेँ जे लोक प्रसिद्धि भेटलैक, से हुनक अवहट्टक कृतिकेँ नहि भेटल। रमानाथ झा ईहो मानैत छथि जे विद्यापतिक समय धरि मिथिला जनपदक भाषाक स्रोत अवहट्टक स्थितिसँ बहुत दूर आगाँ बढ़ि गेल छल। तखन प्रश्न उठैत अछि जे विद्यापति, जाहि अवहट्टमे रचना कएने छथि आ' जकरा ओ 'देसिल बयना' कहलनि

अछि, से की थिक? एहि स्थितिकेँ स्पष्ट करैत रमानाथ झाक कहब अछि जे विद्यापति मिथिला जनपदक प्राचीन भाषा बूझि अवहट्टमे रचना कएल। अपन देसिल बयनाक स्वरूप ओ तकरा लेलनि जे डाकक रचनामे, सहजपन्थी सिद्ध लोकनिक रचनामे आ' मिथिला जनपदक प्राचीन साहित्यिक रचनामे रूपायित छल। ओ ओहि परम्पराक द्योतक थिक जे विद्यापतिसँ शतशः वर्ष पूर्व कालिदासक *विक्रमोर्वशीयक* गीतक रूपेँ आरम्भ भए गुप्तकाल ओ गुप्तोत्तर कालमे मिथिला जनपदमे लोकानुरंजनक साहित्यमे वर्तमान छल, जे सहजपन्थी सिद्धलोकनिक दोहामे सुरक्षित अछि; डाकवचन एवं ओहने अन्यान्य लोकोपयोगी कृतिमे आइ धरि वर्तमान अछि।

रमानाथ झा ऐतिहासिक साक्ष्यक आधारपर एहि प्रवादक खण्डन कएने छथि जे मैथिली भाषाक विकासमे ब्राह्मण लोकनिक हाथ छनि। ई इतिहाससिद्ध अछि जे वैदिक धर्मक विरुद्धमे बौद्धधर्म वा जैनधर्म जन्म लेने छल तथा ओकर प्रवर्तक वा अनुयायीमे ब्राह्मणक संख्या नगण्य छलैक। ओलोकनि अपन धर्मक प्रचारक लेल जाहि भाषाक आश्रय लेलनि, से संस्कृत नहि, सम्बन्धित जनपदक भाषा छल। एहि पृष्ठभूमिमे रमानाथ झाक अभिमत अछि जे मिथिला जनभाषाक आरम्भ मुख्यतः ब्राह्मणेतर व्यक्तिक द्वारहि भेल अछि। सिद्ध लोकनिमे ब्राह्मणक संख्या नगण्य छल तथा ब्राह्मण सभ ब्राह्मणत्वक गौरवसँ संस्कृतेतर भाषामे रचना प्रायः नहि करैत छलाह। अवहट्टक रूपमे एहि भाषाक जे कोनो रचना उपलब्ध अछि, से सब मुख्यतः पण्डितक रचना नहि, ब्राह्मणक रचना नहि, साधारण जन-समाजक साहित्य थिक। यथार्थ अर्थमे लोकसाहित्य थिक, जकर रचना प्रायः डाक गोआर अथवा भुसुक राउत सदृश ब्राह्मणेतर जातिक लोकक कएल अछि।[17]

7. लिपि

मिथिला भाषाक प्राचीनताक प्रमाणमे ओकर स्वतन्त्र लिपि, तिरहुताक होएब सेहो एक महत्त्वपूर्ण घटक थिक। गुप्त साम्राज्यक कालमे राज्यक विभाग 'भुक्ति' कहबैत छल। ओहिसँ तिरभुक्ति आ' ओहिठामक लिपि तिरहुता कहाओल जाए लागल। गुप्तलिपिसँ विकसित तिरहुताक प्राचीनतम रूप सातम शताब्दीक आदित्य सेनक भागलपुर जिलाक मन्दारमे प्राप्त शिलालेखमे अछि। गयामे भेटल एगारहम शताब्दीक कतेको शिलालेखमे तिरहुता लिपिक प्रयोग अछि। म. म. हरप्रसाद शास्त्रीकेँ कोन लिपिमे लिखल *दोहाकोष* आ' *चर्यापद* नेपालमे भेटल छलनि, तकर उल्लेख ओ नहि कएने छथि। मुदा, ओहि समयक तिरहुता आ' बंगला लिपिक सादृश्यकेँ देखैत भेद लक्षित करब असम्भव अवश्य छैक। म. म. राहुल सांकृत्यायनके तिरहुतामे लिखल सिद्धलोकनिक रचना तिब्बतमे भेटल छलनि, तकर उल्लेख ओ कएने छथि। तिरहुता लिपिक दूर-दूर धरिक प्रयोगक साक्ष्य धर्मस्वामीक कृतिसँ सेहो होइत अछि। एहि तथ्यक उल्लेख करैत प्रो. राधाकृष्ण चौधरी[18] लिखल अछि जे धर्मस्वामीक आगमनक समय (कर्णाटवंशीय राजा रामसिंहदेवक शासन-काल (1234 -1236 ई.) सँ पहिनेसँ जे केओ यात्री तिब्बत वा चीनसँ बिहार वा उत्तर भारत

17. रमानाथ झा, *प्रबन्ध संग्रह*, दरभंगा प्रेस कम्पनी(प्रा.) लि. दरभंगा, 1963 ई., पृ.सं. 56.
18. राधाकृष्ण चौधरी, धर्मस्वामीक विवरणक आधारपर तेरहम शताब्दक मिथिला, *रचना संग्रह*, वैदेही

अबैत छलाह, एहि लिपिमे निपुणता प्राप्त कए लेब आवश्यक होइत छलनि। एहिसँ स्पष्ट अछि जे तिरहुता लिपिक प्रयोग दूर-दूर धरि होइत छल। ई मिथिला भाषाक प्राचीनताक संग व्याप्तिक परिचायक सेहो थिक।

मानकीकरण

रमानाथ झा मैथिली भाषाक प्राचीनता एवं ओहिमे साहित्य-सर्जनाक अविच्छिन्न परम्पराक अन्वेषण कए एहि निष्कर्षपर पहुँचल छलाह जे मिथिला भाषामे साहित्यिक रचनाक क्रम कहिओ भंग नहि भेलैक, अपितु ओ अविच्छिन्न अछि। लिखित साहित्य सभटा नहि भेटैत अछि वा सब युगक साहित्यक स्वरूप उपलब्ध नहि होइत अछि, से दोसर बात भेलैक। मुदा, जएह किछु उपलब्ध होइत अछि, सएह एक सुदीर्घ पथपरक स्मृति-चिह्न जकाँ हमरालोकनिकेँ अपन प्राचीन साहित्यिक परम्पराक दिग्दर्शन करेबाक लेल पर्याप्त अछि तथा आनन्द एवं उत्साह प्रदान करैत अछि। एहिक्रममे हुनक अभिमत अछि जे भाषा अर्जित करबाक वस्तु थिक। ओ सीखल जाइत अछि तथा अभ्याससँ भाषामे कुशलता अबैत छैक। भाषाक लेल अभ्यासक महत्त्वकेँ देखैत ओ नवीन साहित्यकार लोकनिकेँ परामर्श देल अछि जे मैथिलीमे गद्य लिखबासँ पूर्व मैथिली भाषा लिखब सीखि लेथि। ओ एहि धारणाकेँ सर्वथा भ्रामक मानल अछि जे जाहि मातृभाषामे राति-दिन बजैत छी, ओहिमे जएह लिखब, जहिना लिखब साहित्यिक भाषा होएत आ' तेँ साहित्य-सर्जना करबाक लेल ओहि भाषामे व्यवसाय करब वा ओकरा सीखब आवश्यक नहि छैक।[19]

जाहि भाषामे साहित्य-सर्जनाक एतेक सुदीर्घ अविच्छिन्न लेखन-परम्परा छैक, मानकीकरणक प्रयोजन किएक भेल, विचारनीय अछि। रमानाथ झा लेखनक क्रममे स्वयं अनुभव कएल जे मिथिला भाषामे लिखबाक कोनो आदर्श नहि अछि, नाना प्रकारक भेद अछि। लेखनक इएह अव्यवस्था हुनका मिथिला भाषाक स्वरूप निश्चित करबाक हेतु प्रेरित कएने छलनि।

मुदा, रमानाथ झासँ पूर्वहि पण्डित जीवनाथराय मैथिली लेखनमे अव्यवस्था वा जटिलताक अनुभव कएने छलाह। ओ लिखने छथि जे मिथिला भाषाक सर्वांगपूर्ण व्याकरण दिस जखन ध्यान जाइत अछि, चिन्तित होमय पड़ैत अछि। मैथिलीक स्वरूप एहन जटिल छैक और दिन-दिन भेल जाइत छैक, से व्याकरणक शिक्षा मैथिल बालककेँ देब कठिन कार्य होएत एवं भिन्न भाषा-भाषी केओ मैथिली सीखत, एकर व्याकरणक सहायतासँ, तकर तँ कोनो कथे नहि।

ई सर्वज्ञात अछि जे मानकीकरणक प्रयोजन लेखनमे अव्यवस्था भेला पर होइत छैक। पण्डित राय एवं रमानाथ झा मैथिली लेखनमे जटिलता वा अव्यवस्थाक अनुभव कएने छलाह। पण्डित राय जटिलताकेँ चिन्हलनि आ' रमानाथ झा लेखनमे अव्यवस्थाक कारणक अनुसन्धान कएलनि। पण्डित रायक अनुसार मैथिली लेखनमे जटिलता[20] तीन प्रकारक अछि -

19. अखिल भारतीय मैथिली महासम्मेलन, मैथिली गद्य विभागक अध्यक्षीय भाषण, वाराणसी
20. जीवनाथराय, मैथिलीक स्वरूप ओ लेखशैली, *मिथिला मिहिर*, 11 दिसम्बर 1915 ई.

1. स्वाभाविक,

2. दुराग्रहजन्य, एवं

3. स्वच्छन्दता प्रयोग्य।

दूनु गोटेक चिन्तामे मूल अन्तर इएह अछि जे पण्डित राय सम्भवतः विचार प्रकट कए रहि गेल छलाह आ' रमानाथ झा ओकर समाधानक प्रयास कएलनि। रमानाथ झाक अनुसार मैथिली लेखनमे अव्यवस्थाक मुख्यतः तीन टा कारण भेल -

क. तिरहुता लिपिक स्थानपर नागरी लिपि एवं मैथिलीक स्थानपर हिन्दीकेँ राज्यसत्ता,

ख. नागरी लिपिक छापाखानाक स्थापना एवं तिरहुताक काँटाक प्रचलनक हेतु संरक्षण एवं प्रोत्साहनक अभाव, तथा

ग. नागरी लिपिमे हिन्दीभाषी क्षेत्रसँ प्रकाशित मैथिली पत्र-पत्रिकापर हिन्दी पत्र-पत्रिकाक प्रभाव।

उन्नैसम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे मिथिलाक प्रशासनमे गैर-मैथिली भाषीक प्रवेश बढ़ल। पश्चिमसँ देवनागरी/उर्दू ज्ञाता हिन्दी भाषी आ' पूबसँ रोमन लिपिक ज्ञाता बंगला भाषी अएलाह। धर्मप्राण मैथिल समाजकेँ धार्मिक-साहित्यक आधारक फारसी लिपि स्वीकार नहि छलनि। हिन्दी/देवनागरी लिपि धार्मिक स्वतन्त्रतापर आघात नहि करैत छल आ' ने तकर इतिहासे छलैक। अङरेजी प्रशासन सेहो नहि चाहैत छलैक। एहि हेतु राजकार्यक भाषा की हो, एवं कोन लिपिमे लिखल जाए, प्रशासन विभाजित भए गेल छल। ई विवाद उर्दू एवं हिन्दीक बीच छलैक। महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक मातृभाषा(मैथिली) ओहि विवादमे कतहु नहि छल।[21]

एहि बीच सम्पूर्ण भारतवर्षमे राष्ट्रीयताक लहरि उठल। सामाजिक सुधारक लहरि उठल। ओहि लहरिक भाषा मुख्यतः हिन्दी छलैक। राष्ट्रीयता एवं सामाजिक सुधारक लहरिसँ मिथिला बाँचल नहि रहल। महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह ओहि राष्ट्रीय जागरणक एक प्रमुख लोक भए गेल छलाह। ओहि लहरिक प्रभावमे आबि 14 जुलाइ, 1880 केँ ओ एक आदेश[22] पारित कएल जे

21. Jata Shankar Jha, *Biography of an Indian Patriot Maharaja Lakshmishwar Singh of Darbhanga*, P.No.74, 1972. - Maharaja Lakshmishwar Singh clearly visualised the great prospect of Hindi then in its nascent stage, and gave the weight of his personal influences in favour of Hindi.He took up several measures for the promotion of its cause. It may be mentioned that the controversy was between Urdu and Hindi.The question of his mother language was not in the picture.

22. Jata Shankar Jha, Biography of an Indian Patriot Maharaja Lakshmishwar Singh of Darbhanga, P.No.74,1972.-The Hindi character and language will be introduced in all our Zila Courts. I had also given orders for the introduction of this character and language in my office very long time.
That I would give them another three months to learn it. That in November (1880) they will have to master it thoroughly and to save me from the painful necessity of pensioning or dismissing old hands (Memo No.4628, dated 20 July 1880, to all Sub-Managers). -

हुनक राज-काजमे देवनागरी लिपि एवं हिन्दी भाषाक प्रयोग कएल जाए। जे अमला तीन मासमे हिन्दी नहि सीखि लेताह, सेवामे नहि रहल देल जएतनि, सेहो आदेश भेल। प्रतीत होइछ, कम्प्यूटर साक्षर होएब जेना युगीन एवं राष्ट्रीय आवश्यकता सम्प्रति अछि, ओहिना तात्कालिक राजनीतिक परिदृश्यमे देवनागरी लिपिक प्रयोगक आवश्यकता भए गेल होएतैक।

रमानाथ झा एहि मतक छथि जे महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक एहि आदेशक मैथिली पर दीर्घकालीन प्रभाव पड़लैक। हुनक कहब अछि जे राष्ट्रीय भावनाक स्रोतमे मैथिलीक स्थान जे अद्यापि गौण अछि, तकर उत्तरदायी ओएह छथि। अपन राजमे ओ हिन्दीकेँ स्थान देल तथा पारिवारिक वा अधिकसँ अधिक सामाजिक क्षेत्रधरि मैथिलीक व्यवहारकेँ सीमित राखल। रमानाथ झाक विश्वास छल जे महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह एक प्रभावशाली लोक छलाह; चाहितथि तँ मैथिली केँ राजकार्यक भाषा स्वीकार कराए लितथि, स्कूलमे मैथिलीक शिक्षा, मैथिलीक माध्यमसँ शिक्षाक प्रबन्ध कराए सकैत छलाह।[23]

मैथिलीक प्रति मैथिल समाजक धारणा एवं मैथिलीकेँ राजकाजक भाषा बनौलासँ अङरेजी शासन-व्यवस्थाकेँ लाभ, आदिक दृष्टिसँ विचार कएल जाएब आवश्यक अछि। से एहि हेतु जे महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक उपर्युक्त आदेशसँ कतेको वर्ष पूर्व भारतक कम्पनी सरकार अपन न्यायिक आ' राजस्व विभागमे उच्चपद पर बहाली हेतु एक वा एकसँ बेसी स्थानीय भाषामे दक्षता अनिवार्य कए देने छल।[24]

रमानाथ झा वा हुनके जकाँ मातृभाषा अनुरागी अधीत विद्वान वा वर्तमान युगक आँखिसँ इतिहासक पन्ना उनटौनिहार लोकक लेल महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह सर्वशक्ति सम्पन्न छलाह। हुनक व्यक्तित्व ततेक प्रभावशाली छल जे ओ अङरेजी सरकारक प्रशासन वा शिक्षा-नीतिकेँ प्रभावित कए सकैत छलाह। ओ समस्त मिथिलावासीक प्रभुवर छलाह, तेँ जे चाहितथि कराए सकैत छलाह। किन्तु, की महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक स्थिति ओहने छल, जेहन मराठा राजालोकनिक ओहि समयमे छलनि? की कम्पनी सरकारकेँ अपन शासन-व्यवस्थाक विस्तार एवं सुदृढ़ीकरणक हेतु मिथिलाक राजासँ संघर्ष करए पड़ल छलैक? की मिथिलाक समसामयिक समाज अपन मातृभाषाक विकास आ' व्यवहारक प्रति ओहिना प्रतिबद्ध छल, जेना मराठी भाषा-भाषी राजनीतिक स्वतन्त्रताक लेल अन्तिम क्षण धरि संघर्षशील रहल छलाह। की मिथिलाक कोर्ट-कचहरीमे प्रशासनिक काज मिथिलाक्षरक माध्यमेँ होइत छलैक? एहन कोन सामाजिक, राजनीतिक वा प्रशासनिक कारण छल होएतैक जाहि कारणेँ हिन्दी आ' उर्दू पर विवाद केन्द्रित भए गेल छल, मैथिलीक कोनो स्थान नहि छल, तकरो कारण ताकल जएबाक चाही।

23. रमानाथ झा, *गद्यक प्रसंग*

24. V.A.Dahake, *Goals and Strategies of Development of Indian Languages*, P.N.35,CIIL In 1821, an order was passed by the Governor of Bombay Presidency which said 'none of the higher appointments in the judiciary or revenue departments can ever be conferred on a gentleman, who have not acquired certain proficiency in one or more of the native languages'. As the knowledge of Marathi was essential for civil servants, Marathi was taught in several institutions such as Haileybury College near London, Fort William College, Calcutta and Fort St.George College, Madras.

प्रसंगवश, हम एहिठाम कोंकणी भाषीक संघर्षक उल्लेख करब। हाल-हाल धरि ओकरो स्थिति मैथिली सदृश छलैक। कोंकणीकेँ मराठी गीरि जएबा पर छल। किन्तु, कोंकणी भाषी अपन अस्तित्वक रक्षाक हेतु कटिबद्ध भए गेलाह एवं अन्ततः ओसभ अपन भाषा, साहित्य एवं संस्कृतिक रक्षा करबाक अभियानमे सफलता पाओल। ओहि संघर्षक एक रथी रवीन्द्र केलकर[25] लिखल अछि : 'परिचितिक प्रतीक अपन भाषाकेँ समृद्ध करवाक लेल पहिने साहित्य-सर्जना करैत जाइत छलहुँ, जखन हमर भाषाकेँ बोली कहि अपमानित कएल जाए लागल तँ भाषाविज्ञानक छात्र भए जाइत गेलहुँ आ' जखन शत्रु सभ हमर भाषाकेँ समाप्त करबाक लेल एवं गोवाकेँ भारतक राजनीतिक मानचित्रसँ पोछि देबाक गम्भीर चालि चलल, तँ राजनीतिज्ञ बनि गेलहुँ।' की एहने जागृति आ' भाषा-संस्कृति चेतना एवं प्रतिबद्धता मैथिली भाषीमे छल, अछि?

दरभंगामे प्रेस

दरभंगामे छापाखानाक स्थापना ओ ओहि माध्यमेँ देवनागरी लिपिमे लिप्यन्तरित मैथिली पोथीक प्रकाशनसँ मैथिली पोथीक प्रचार - प्रसारक द्वारि खूजि गेल। लिखबामे अथवा ओकर प्रतिलिपि करबामे आ' सुरक्षित रखबामे जे असुविधा होइत छलैक, तकर परिहार भए गेलैक एवं ओहिसँ लोक आकर्षित आ' प्रोत्साहित भेल। मुदा, तकर दूरगामी प्रभाव मिथिला भाषाक ध्वनि पर पड़ल। लिपिक कारणसँ भाषाक स्वरूप कोना प्रभावित होइछ, एहि प्रसंग पण्डित जीवनाथ रायक मत अछि -

सभ भाषा सभ लिपिमे लिखल जा सकैत अछि। किन्तु देश भेदेँ कोनो कोनो अक्षरक ध्वनिमे भेद भए जाइत छैक। आओर ताहि ध्वनिभेद-सूचक समस्त संकेत सभ लिपिमे वर्तमान नहि छैक। एही कारणसँ कोनो भाषा कोनो लिपिमे लिखब सरल तथा कोनोमे कठिन होइत छैक। यथा, मैथिली भाषा मैथिली लिपिमे लिखब सरल किन्तु, देवनागरी लिपिमे वा रोमन लिपिमे कठिन।[26]

तिरहुताक काँटा नहि बनल। देवनागरीक काँटा बनल, ओहीमे मैथिली छपए लागल। परिणामतः दुष्प्रभाव पड़ैत गेल। रमानाथ झा एकर दोष फेर लक्ष्मीश्वर सिंहकेँ दैत छथि जे दरिभंगामे ओ हिन्दीक प्रेस चलबाए मैथिलीकेँ देवनागरीमे छपबाओल, मिथिलाक्षरकेँ आगाँ नहि कएल, ओकर काँटा नहि बनबाओल।[27]

---

25. R. Kelkar, Planning for the survival of Konkani., *Goals and Strategies of Deve lopment of Indian Languages*,1998, CIIL. 'Our language was the symbol of our identity and we took to writing in this language so as to serve in its progress.When our language was insulted as being only a dialect, we turned to be students of linguistics.When finally our enemies made serious attempts to wipe out the language and very place of origin, Goa from the political map of India, then we turned to be politicians'.
26. जीवनाथ राय, *मैथिलीक लेखशैली,* 1940 ई.
27. रमानाथ झा, *गद्यक प्रसंग*

मिथिलाक्षरक काँटा बनेबाक एक प्रयास बीसम शताब्दीक तेसर दशकमे भेल छल। एहि निमित्त 03 जून 1925 ई. केँ 'मिथिलाक्षर अक्षरांकन समिति'क स्थापना दरभंगामे भेलैक तथा जकर पहिल बैसार 18 जुलाइ, 1925 ई. केँ लहेरियासरायमे हरिवंश झा, मुख्तारक अध्यक्षतामे भेल छल।[28] एहि समितिक कार्य-सम्पादक पण्डित जीवनाथ राय छलाह। ओ कलकत्तासँ मिथिलाक्षरक काँटा बनबाए आनल। निर्णयमानुसार ओ टाइप सब पुस्तक भंडार, लहेरियासरायकेँ देल गेलैक। किछु पोथी मिथिलाक्षरमे छपबो कएल। जाहिमे प्रमुख अछि, पण्डित जीवनाथ रायक *मैथिली प्रथम पोथी, दुर्गा पुस्तक, सत्यनारायण पूजा* आदि। एहि बीच पुस्तक भंडार दरभंगासँ उठि पटना चल गेल। जाहिसँ ओहो प्रयास बेकार भए गेलैक। एहि प्रयास पर रमानाथ झा असन्तोष व्यक्त कएल आ' एकर दोष मैथिल पण्डित लोकनिकेँ देलनि अछि।[29]

लक्ष्मीश्वरी प्रवृत्ति

आब महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह नहि छथि। विदेशी शासन-व्यवस्था नहि अछि। लोकतन्त्रात्मक एवं लोक-कल्याणकारी राज्यमे कोनो भाषाकेँ संरक्षण एवं प्रचार-प्रसारक लेल जे कोनो सांविधिक सुविधा एवं संरक्षण अपेक्षित छैक, संविधानक आठम अनुसूचीमे मैथिलीकेँ सम्मिलित कए लेल गेलाक बाद सभटा उपलब्ध भए गेलैक अछि, तथापि मिथिलाक्षर-विरोधी निर्णय लेब, कोन मानसिकताक परिचायक थिक? वस्तुतः संविधानक आठम अनुसूचीमे मैथिली सम्मिलित भए गेलाक बाद आब कोनो प्रकारक सरकारी मान्यता शेष नहि अछि। तखन जे किछु आब शेष अछि, से थिक मैथिली भाषी समाजक दायित्वबोध। अपन भाषा, अपन लिपि एवं अपन साहित्यक विकासक लेल संकल्पित होएब, जाहिसँ राष्ट्रीय मानदण्डक अनुरूप ओ अन्य भाषा-साहित्यक संग ठठि सकए। अपन अस्तित्वक भान नीक जकाँ विभिन्न भाषा-भाषी समाजकेँ करा सकए। किन्तु, से भेल नहि अछि। जे कोनो अवसर भेटैत अछि वा भेटल छल, तकर सदुपयोग नहि कए मिथिलाक्षरक प्रतिकूल निर्णय लेल जाइत रहल अछि। आ' सेहो मैथिली भोगीवर्ग द्वारा। बिहारक सबसँ प्राचीन विश्वविद्यालयमे आरम्भहिसँ किछु अंकक मिथिलाक्षर- लेखन अनिवार्य छलैक। मिथिलाक्षर-लेखनक अनिवार्यताकेँ एक मैथिली विभागाध्यक्ष सगर्व समाप्त कए देलनि। संघलोक सेवा आयोगक परीक्षाक हेतु मैथिली पाठ्यक्रमक निर्धारणक समय किछु अंक मिथिलाक्षर-लेखनक लेल अनिवार्य कएल जाए सकैत छल; किन्तु, पाठ्यक्रम निर्माता एहि ताकमे बेसी रहि गेलाह जे कोना अपन वा अपन अपेक्षितक लिखित वा सम्पादित पोथी पाठ्यक्रममे सम्मिलित भए जाए। एहि ब्योंतमे मिथिलाक्षर पाछू छूटि गेल।

मैथिली भाषा आ' मिथिलाक संस्कृतिक समस्त प्राचीन धरोहरि मिथिलाक्षरमे अछि। कतेको विश्वविद्यालयक पाठ्यक्रमसँ मिथिलाक्षरक अनिवार्यता समाप्त भए गेलाक कारणेँ वा

---

28. *मिथिला मिहिर,* 08 अगस्त, 1925 ई.
29. रमानाथ झा, *विविध प्रबन्ध*, मैथिल पण्डित समाज ओकरा बंगलाक काटक अक्षर कहि उपेक्षा कए देल। फल भेल जे जेहो टाइप बनल से सबटा नष्ट भए गेल, ने लोकक प्रवृत्ति, ने समाजक उत्साह, ताहिपर सँ कुचेष्टा, प्रयास विफल भए गेल।

ओकर अनिवार्यता नहि रहलासँ धरोहरि सभक प्रकाशमे आएब वा ओहि पर शोधकार्य करब आब सर्वथा अवरुद्ध भए गेल अछि। एहिसँ भाषा-संस्कृतिक क्षति सुनिश्चित अछि। महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह तँ चल गेलाह; किन्तु, लक्ष्मीश्वरी प्रवृत्तिक लोक ओहिना मैथिली संसारक महाराजा बनल राजहंस पर उड़ि-उड़ि राजसुख भोगि रहल छथि। एहि सन्दर्भमे रमानाथ झाक व्यथा आ' आशावादिता द्रष्टव्य अछि -

आइ मैथिलीक प्रसंग जे बाधा भए रहल अछि तकर एक मात्र कारण थिक जे हमरालोकनि अपन लिपिकेँ त्यागि देल। भारतीय राष्ट्रीयताक हितक भावनासँ प्रेरित भए हमरालोकनि ई त्याग कएल से सब बिसरि गेल। आइ यदि मैथिली लिपि प्रचलित रहैत तँ भारतमे एकताक सूत्रमे ओहो एकटा गेँठ रहैत। हिन्दीक साम्राज्यवादक पुजेगरी लोकनि हमर उदारताकेँ दुर्बलता बूझि लेल, हमर त्यागकेँ मूर्खता मानि लेल ओ क्रमशः हमर भाषाक मूल नष्ट करबा पर लागि गेलाह, हमर जातीय सत्ता पर आघात करए लगलाह। भाग्यसँ हमर भाषा बाँचि गेल, मैथिल संस्कृति नष्ट नहि भेल, मिथिला जिबैत अछि।[30]

एम्हर ज्ञात भेल अछि जे कतोक मातृभाषा अनुरागी कम्प्यूटर ज्ञाता नवयुवक लोकनि मिथिलाक्षरक काँटा तैआर करबामे जुटल छथि, किछु सफलतो भेटलनि अछि एवं यूनीकोडमे स्थानक हेतु प्रयास चलि रहल अछि। जँ सफलता भेटि गेल तँ निश्चिते मिथिलाक्षरक प्रचार-प्रसारमे गति आबि जाएत आ' रमानाथ झाक कहब जे भाग्यसँ हमर भाषा बाँचि गेल, मैथिल संस्कृति नष्ट नहि भेल, मिथिला जिबैत अछि, सत्य भए जाएत।

मिथिला भाषापर हिन्दी पत्रकारिताक प्रभाव

जेना सामाजिक सुधारवादी आन्दोलन आ' राष्ट्रीय जागरणक लहरि मिथिलामे बाहरसँ आएल, ओहिना मैथिली भाषामे पत्रक प्रकाशन सेहो सर्वप्रथम बाहरेसँ भेल। जयपुरसँ प्रकाशित *मैथिल-हितसाधन* अल्पजीवी भेल तँ बनारससँ प्रकाशित *मिथिलामोद* बहुत दिन धरि मैथिली भाषा आ' साहित्यक समृद्धिमे लागल रहल। एहि क्षेत्रमे ओकर महत्त्वपूर्ण अवदान छैक। ई सर्वज्ञात अछि जे *मिथिलामोद* कतेको वर्ष धरि द्विभाषिक छल। दरभंगासँ शुरू भेल *मिथिला मिहिर* सेहो हिन्दी आ' मैथिलीमे छपैत छल आ' से पटनासँ साप्ताहिक रूपमे छपबासँ पूर्वधरि द्विभाषिक रहल। *मिथिला मिहिर* मे मैथिलीक रचना छपबा पर आपत्ति करैत आरासँ प्रकाशित *बिहारबन्धु* नामक हिन्दी पत्रिका अपन एक संस्करणमे लिखैत अछि -

यह जानकर हमें अत्यन्त दुख हुआ कि इस में मिथिला भाषा के भी लेख छपते हैं, यथार्थ में इससे बढ़कर दुख और आश्चर्य का विषय ही क्या होगा कि मिथिला की राजधानी मध्यस्थल और प्रधान नगर दरभंगा से निकलनेवाले मैथिलों का मुख्य-पत्र मिथिला मिहिर मे मिथिला भाषा के लेख छपते हैं।[31]

30. रमानाथ झा,

31. *बिहारबन्धु,* आरा, 2 जून 1909 ई.

म. म. मुरलीधर झा कोन विवशतावश *मिथिलामोद* हिन्दी आ' मैथिलीमे प्रकाशित करब आरम्भ कएल से तँ अनुसन्धान सापेक्ष्य अछि, किन्तु जखन हिन्दी साम्राज्यवादी सभ मैथिलीक स्वतन्त्र अस्तित्व पर प्रहार करए लगलाह तँ *मिथिलामोद* सँ हिन्दीकेँ ओ सदाक लेल बहिष्कृत कए देलनि, ई एक ऐतिहासिक तथ्य थिक। मिथिला भाषा विरोधी हिन्दी पत्रिका *बिहार बन्धु* क एहि विचारक घोर आ' मुखर विरोध पण्डित ताराचरण झा[32] कएने छलाह।

रमानाथ झा मानैत छथि जे मैथिली नवजागणरक आरम्भहिमे मिथिलाक्षरक बाट अवरुद्ध भए गेल छल। एहिसँ हिन्दीक प्रभाव बढ़ि गेलैक। हिन्दी पत्रकारिताक प्रभावसँ अनुप्राणित *मैथिल-हितसाधन एवं मिथिलामोद* ओहि प्रभावमे गति आनि देलक। परिणामतः मैथिली भाषाक प्रसंग तेहन व्यामोह भेलैक जे ओकर स्वरूप एखन धरि स्थिर नहि होअए पओलक अछि। रमानाथ झाक स्पष्ट एवं सुविचारित अभिमत अछि जे जेना दरभंगा-मधुबनीमे देवनागरी छापाखाना स्थापित भेलासँ मिथिलाक्षर लुप्त होअए लागल तहिना *मिथिलामोद* मिथिला भाषाकेँ एक नव स्वरूप देलक। अपन मन्तव्यकेँ स्पष्ट करैत ओ कहल अछि जे मैथिलीमे जे 'ऐ' ओ 'औ'क उच्चरण अछि से हिन्दीमे नहि अछि। हिन्दीमे ओ दूनू स्वर 'अए' ओ 'अओ' बाजल जाइत अछि। मैथिलीमे आ, ई ऊ, ए, ऐ, ओ, औ जतेक दीर्घ स्वर अछि, सभक उच्चारण लघु सेहो होइत अछि। ई मैथिली भाषाक विलक्षणता थिक। ई विलक्षणता प्राकृत ओ अपभ्रंशक युगसँ आबि रहल अछि। *मिथिलामोद* मिथिला भाषाक एहि विलक्षणताकेँ हटाए हिन्दीक सदृश मैथिलीक ध्वनि केँ लए मैथिलीक उपकार नहि कएल। मैथिली गद्यक क्षेत्रमे *मिथिलामोद* द्वारा कएल गेल कार्यक, भाषाक शुद्धता एवं लेखन-शैलीमे एकरूपताक कट्टर पक्षधर रमानाथ झा यद्यपि प्रशंसा कएल अछि; किन्तु, ठामहि ईहो मानैत छथि जे मैथिलीक लेखकगणकेँ मैथिली लिखबाक रीतिमे एखन पर्यन्त जे द्वैधभाव छनि, तकर बीजारोपण *मिथिलामोद* क कएल थिक। ई नहि जे *मिथिलामोद* केँ मिथिला भाषाक अहित करबाक छलैक, अपितु ओ मिथिला भाषाक मर्म नहि बूझि सकलाह। ओ हिन्दीक प्रभावमे आबि मैथिलीक उच्चारणशैली हिन्दीक अत्यन्त सदृश बनाए देल। यदि एकर विरोध नहि होइत, ओ चलि जाइत तँ कालक्रमेँ हिन्दी मैथिलीकेँ उदरस्थ कए जाइत, जे कतोक अंशमे कएनहि अछि।

जेना, आन-आन बिन्दु पर किरणजीक विचार रमानाथझाक विचारक प्रतिकूल रहैत अछि, ओहिना *मिथिलामोद* क लेखनशैलीक प्रसंग हिनक मत रमानाथ झासँ भिन्न अछि। किरणजी कहैत छथि जे मिथिला भाषा ओ साहित्यक स्वरूप निर्धारण ओ निर्माणमे *मोदक* स्थान बड़ पैघ मानल जाइत छैक। *मिथिलामोद* क सम्पादक म.म.मुरलीधर झा सन विज्ञ व्यक्ति शैली ओ व्याकरणपर बिनु विचार कएनहिँ ओतेक दिन धरि पत्रक सम्पादन करैत रहलाह, एहन विचारबो बतहपनी थिक।[33]

हिन्दी भाषा आ' हिन्दी पत्रकारिताक प्रभाव मैथिली भाषा एवं मैथिली पत्रकारिता पर नहि पड़ल, वा नहि पड़ि रहल अछि, से कहब युक्तिसंगत नहि होएत। ओहू मे जखन देवनागरी लिपि

32. *मिथिला मिहिर,* प्रकाश - 8, मंडल -1, 1909 ई.

33. काञ्चीनाथ झा 'किरण', मैथिलीक व्याकरण ओ शैली : एक विचार, *रचना संग्रह,* वैदेही समिति,

आ' ओहि लिपिक छापाखाना छैक। सम्प्रति कतेको पत्रिका मैथिलीमे छपि रहल अछि। स्थिति अवश्य उत्साहजनक अछि। किन्तु एकटा प्रश्न विचारनीय अछि, की भाषा साहित्यक विकासक लेल केवल उत्साहे-टा पर्याप्त अछि आ' कि ओहि भाषाक विकासक प्रवृत्ति एवं साहित्यिक स्थितिक ज्ञान सेहो अपेक्षित छैक। की आबहु उत्साहे टा सबसँ बेसी आवश्यक अछि कि आओरो किछु? कारण, भाषाक विकासक प्रवृत्तिक संग सम्बद्ध भाषाक साहित्यक स्थितिक ज्ञान अर्जित करब एवं सर्जनात्मक प्रतिभा सम्पन्न होएब, एक नहि, दू वस्तु भेल। अन्यथा, लेखनमे कतेक अव्यवस्था आबि जाए सकैत अछि, तकर उदाहरण सम्प्रति छपि रहल मैथिली पत्रिका सभकेँ देखि केओ अनुमान कए सकैत छी। पण्डित गोविन्द झा ठीके कहैत छथि, मैथिलीमे कलम उठेबासँ पहिने बाजब आ' लिखब सीखू। सम्पादन कला तँ ओहिसँ आगूक स्थिति थिकैक।

भाषाक मानकीकरण, भाषा विकासक एक सामान्य प्रक्रिया थिकैक। आन देशक कोन कथा, अपनो देशक कतेको भाषाक मानकीकरणक प्रयास भेल अछि। प्रक्रिया सामान्यतः दू प्रकारेँ होइत अछि - शब्द-सम्पदाक दृष्टिसँ आ' लेखनशैलीक दृष्टिसँ। शब्द-सम्पदाक स्तर पर कएल जाइत प्रयासकेँ भाषाक शुद्धीकरण सेहो कहल जाइत अछि। जेना, तमिल भाषाक भेल अछि।

तमिल शुद्धीकरणक आन्दोलन[34] संस्कृत भाषाक विरुद्ध एवं संस्कृत भाषाक शब्दक स्थानपर तमिल स्रोतक शब्दक प्रयोगक हेतु छल। तमिलक किछु साहित्यकार प्रारम्भमे एहि आन्दोलनक विरोध कएने छलाह। तथापि, ई आन्दोलन चलल आ' शब्दक प्रयोग वा शब्द-निर्माणमे अपन स्रोतक दोहनक महत्त्व बढ़ैत गेल। राजनीतिक समर्थन सेहो भेटलैक। शुद्धीकरणक एहि आन्दोलनसँ अपन भाषा आ' साहित्यक सम्मान भाव तमिल भाषा-भाषीमे कतेको गुणा बढ़ि गेल। ओ अपन भाषाक प्राचीनता एवं लेखनक अविच्छिन्न परम्परा पर गर्वोन्नत होइत गेलाह।

ओहिना कलकत्ता शहर बसला पर बंगालक समाजमे एक नब वर्गक जन्म भेलैक। सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रमे आएल परिवर्त्तनसँ बंगला भाषा प्रभावित भेल। छापाखाना आबि गेल छलैके। मानकीकरणक प्रश्न उठल तँ बंगला भाषा तीन कोटिमे बंटि गेल - साधु भाषा, चलित भाषा आ' नव चलित भाषा। रवीन्द्रनाथ ठाकुर आ' प्रमथनाथ चौधरी नव चलित भाषाक पक्षधर छलाह। नव चलित भाषाक प्रचार-प्रसार लेल *सबुज पत्र* नामक एक पत्रिका प्रमथनाथ चौधरी बाहर कएल। तेलुगुमे[35] सेहो मानकीकरणक समस्या छल। जखन तेलुगुक पठन-पाठन आरम्भ भेल तँ ई समस्या बढ़ल। ओहि समयमे तीन प्रकारक शैलीक प्रचलन छलैक - ग्रन्थिका, सरलग्रन्थिका एवं व्यवहारिका। सामाजिक सुधारक आ' आधुनिक तेलुगु साहित्यक जनक के. वीरेशलिंगम, साहित्यक विभिन्न विधामे सरलग्रन्थिका शैलीक प्रयोग कएल। अद्यावधि, इएह शैली स्कूलक पाठ्यमे प्रयोगमे अछि। एहि शैलीक प्रचारक हेतु *आंध्रभाषा-संजीविनी* नामक पत्र सेहो प्रकाशित-सम्पादित कएल। ओहिना महाराष्ट्र राज्यक स्थापना भेला पर मराठीक विकासक चिन्ता राज्य सरकारकेँ भेलैक। सर्वप्रथम भाषाक मानकीकरणक प्रश्न उठल एवं प्रयास सरकारी

34. E Annamalai,ed. *Language Movements In India,* Movement for Linguistic Purism: The case of Tamil, CIIL Mysore,1979.
35. Bh. Krishnamurti, *Language Movements in India,* Classical or Modern : A Controversy of Styles in Education in Telugu,1979.

स्तरपर भेलैक। जेँ कि पूना मराठा शक्तिक केन्द्र छल,ओहीठामक भाषाकेँ आदर्श मानि मराठीक मानकीकरण कएल गेल।

भाषाक मानकीकरणक प्रयास दू स्तरसँ सम्भव अछि - व्यक्तिगत आ' संस्थागत। तमिल आ' बंगलाक मानकीकरणक प्रयास व्यक्तिगत स्तरपर शुरू भेल छल तँ मराठीक मानकीकरण सरकारी स्तरसँ भेल। काञ्चीनाथ झा 'किरण' मानैत छथि जे मैथिलीमे मानकीकरणक प्रयास सर्वप्रथम म. म. मुरलीधर झा *मिथिलामोद* क माध्यमसँ कएलनि। हुनक विश्वास छनि जे बिना लेखन-शैलीपर विचार कएने ओ *मिथिलामोद* छापब शुरू नहि कएने होएताह। मुदा, *मोद* मे प्रयुक्त शैली ओकर सर्वेसर्वा म.म.मुरलीधर झा द्वारा निर्णीत छल कि दश गोटेक परामर्शसँ निर्धारित तथा शैली-निर्धारणक लेल कोन प्रक्रिया अपनाओल गेल छल, तकर प्रमाण स्पष्टतः उपलब्ध नहि अछि। रमानाथ झाक अनुसार म.म.परमेश्वर झा *मोद* क शैलीक विरोध कएने छलाह। ओ मानैत छथि जे म.म.मुरलीधर झा मैथिली भाषा आ' साहित्यक उन्नायक अवश्य छलाह, मैथिली भाषा-साहित्य एवं मैथिली पत्रकारिताक क्षेत्रमे हुनक योगदान ककरहुसँ कम नहि अछि; परन्तु, ओ मैथिली भाषाक विकास आ' विकासक क्रममे विभिन्न कालखण्डमे सृजित मैथिली साहित्यक क्रमबद्ध अध्ययन एवं विश्लेषण सेहो कएने छलाह, *मिथिलामोद* सँ वा अन्यहि प्रामाणिक सूत्रसँ ई सम्पुष्ट नहि होइत अछि। अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषदक तत्त्वावधानमे शैली-निर्धारणक काज सेहो शुरू भेल छल। किन्तु, जाहि प्रकारेँ रमानाथ झा मैथिली भाषाक विकासक इतिहासक क्रमबद्ध अध्ययन कएल, विभिन्न विद्वत् जनक लिखित विचार लेल एवं सामूहिक निर्णयक उपरान्त *साहित्यपत्र* क सम्पादन-प्रकाशन कएल, तकर तुलना बंगलाक *सबुज पत्र* वा तेलुगुक *आंध्रभाषा संजीवनी* सँ कएल जाए सकैत अछि।

मैथिली भाषाक मानकीकरणक प्रसंग रमानाथ झाक की मनसा छलनि, से प्रस्तुत करबासँ पहिने हम मैथिलीक दू महारथीक विचार अपने लोकनिक समक्ष राखब, से एहि हेतु जे आब जखन उच्चतम सरकारी मान्यता मैथिलीकेँ प्राप्त भए गेलैक अछि, हुनकालोकनिक विचारक तथ्यातथ्यता आ' उपादेयताक विवेचन अपेक्षित छैक।

अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषदक तत्त्वावधानमे शैली-निर्धारणक जे प्रयास भेल ओहिसँ भोलालाल दास स्वयं सम्बद्ध छलाह एवं नेतृत्व करैत छलाह। किन्तु, बादमे हुनक सक्रियता कमि गेलनि। कारणक अन्वेषण एवं विवेचन एहिठाम हमर प्रतिपाद्य नहि अछि। किन्तु ओ कोनो ने कोनो कारणेँ एहि विचारक अवश्य भए गेल छलाह जे पहिने मिथिला भाषाक अधिकसँ अधिक प्रयोग हो, शैली तँ अपने स्थिर भए जाइत छैक।[36]

काञ्चीनाथ झा 'किरण' एहि मतक छलाह जे *पहिने अपन-अपन शक्ति मैथिलीकेँ उचित स्थानपर पहुँचेबामे लगाओल जाए। केन्द्र एकरा आठम अनुसूचीमे सम्मिलित करए। प्रान्तक अन्तर्गत शिक्षा-शासन विभागमे उचित स्थान पाबय। तखन उदार एवं पक्षपात रहित दृष्टिकोणसँ शैलीक निर्धारण हो।* ओ ईहो कहैत छथि जे अङरेजी अपन देशक रानी छलि, अछि; संसार-

36. भोलालाल दास, सम्पादकीय, *भारती,* वर्ष-1, अंक-11 एवं 12

व्यापी-व्यापारी कुबेरक मातृभाषा अछि; आर्थिक लाभक कारणेँ अङरेज जाति एक स्थिर शैलीकेँ राखब आवश्यक बुझलक, अतएव अङरेजीक संग मैथिलीक तुलना करब बतहपनी थिक।[37]

रमानाथ झा मानैत छथि जे मिथिला भाषा आजुक भाषा नहि थिक। जकर स्वरूप कालक्रमेँ स्थिर होएत। छओ सए वर्षसँ लिखल जाइत परम्परा एम्हर आबि एहि पचास वर्षमे हिन्दीक प्रभावसँ भ्रष्ट भेल जाइत अछि। लिपि पहिने गेल, आब भाषाक स्वरूप नष्ट होएबा पर अछि। भाषा एक गोटाक थिकैक नहि जे सभ व्यक्ति सभ रंगक लिखत, तखन भाषा रहत नहि।[38]

काञ्चीनाथ झा 'किरण' मैथिली भाषाक मानकीकरणक प्रश्नकेँ सामाजिक उपयोगिता एवं सरकारी मान्यतासँ जोड़ि देखैत छथि। भाषा निश्चिते सामाजिक सम्पत्ति थिक। एहिसँ सामाजिक उपयोगिताक पूर्ति होइत छैक। भाषाक माध्यमसँ समाजक ज्ञानक वृद्धि होइत अछि। ओ 1956 ई. मे संविधानक आठम अनुसूचीमे मैथिलीक स्वीकृतिक गप्प उठौने छलाह। ओ उचित स्थान आब मैथिली प्राप्त कए लेलक अछि। हुनक ई कहब, जे शासकक भाषा नहि अछि, जे व्यापारक भाषा नहि अछि, तकरा लेल भाषाक अनुशासन आ' भाषायिक नियम-कानूनक महत्त्व नहि छैक, ओहि भाषामे अव्यवस्था बनल रहैक, मानकीकरणक प्रयास नहि कएल जाए समीचीन नहि, अपितु विसंगतिपूर्ण अछि।

एकहि पदकेँ अनेक प्रकारसँ लिखल जाएब आ' एकहि ध्वनिक लेल भिन्न-भिन्न वर्णक प्रयोगकेँ रमानाथ झा मैथिली लिखबामे अव्यवस्था मानैत कहैत छथि जे एहिसँ जए गोट लेखक, तए रूपक भाषा भए जाएत। लेखनमे एहन अव्यवस्थाक आधारपर वर्तमान भारतीय भाषा सबहिक समाजमे मैथिलीकेँ प्रतिष्ठित देखब कठिन अछि; संगहि ई कहब जे हमर भाषा पुरान साहित्यिक ओ व्यवस्थित अछि, लोक स्वीकार नहि करत। 'एखन जे जहिना लिखैत छथि, लिखए दिऔन्ह, कालक्रमेँ भाषाक स्वरूप स्वयं स्थिर भए जाएत', कहब रमानाथ झाक अनुसार युक्तिपूर्ण नहि अछि, अपितु ई प्रमाणित करब थिक जे हमरालोकनि एखन लिखब सीखहि लगलहुँ अछि, पूर्वक लिखबाक परम्परा हमरालोकनिकेँ नहि अछि? ओ कहैत छथि जे एही नीतिक दुष्परिणामस्वरूप मैथिली लिखबामे दिन-दिन अव्यवस्था बढ़ैत अछि।

'किछु गोटेक ई कहब अछि जे जहिना बजैत छी तहिना लिखब।' एहि प्रसंग रमानाथ झाक अभिमत अछि जे नेना 'काका'केँ 'टाटा' कहैत अछि तेँ ओकर काका'केँ 'टाटा' लिखल जाए। ककरहु ककरहु 'र'क उच्चारण नहि होइत छैक आ 'र' केँ 'ल' कहैत अछि तेँ 'राम'केँ 'लाम' कहत तँ की ओ लिखबो सएह करओ। एहन स्वतन्त्रताक एहन आग्रही अपन आचरणसँ सिद्ध करैत अछि जे मैथिली भाषा नहि थिक, भाषा होएबाक जे पहिल धर्म थिकैक स्वरूपक व्यवस्था, से एहिमे नहि अछि।[39]

मैथिली लेखनमे आएल अव्यवस्थाक प्रसंग पण्डित गोविन्द झाक विचार किछु भिन्न अछि। ओ आजुक परम्परा भंजनी प्रवृत्तिकेँ एहि अव्यवस्थाक कारण मानैत लिखल अछि जे आजुक

37. काञ्चीनाथ झा 'किरण', मैथिलीक व्याकरण ओ शैल : एक विचार, *रचना संग्रह,*

38. रमानाथ झा, *इजोत,* 1960 ई.

39. रमानाथ झा, मधुबनीक छात्रसँ, *विविध प्रबन्ध*, पृ.सं. 86

परम्परा भंजनी प्रवृत्ति बड़ आयासेँ बान्हल ओहि पुरान घरकेँ मानू धाराशायी करबा पर लागल अछि। की समाज, की संस्कृति, की भाषा सर्वत्र दीर्घकालीन परिमार्जन, परिष्किरण ओ परिपोषणसँ जे स्तरीयता प्राप्त भेल छल, आइ तकर भारी अवमूल्यन भए गेल अछि आ' स्वेच्छाचार बढ़ैत गेल अछि। पण्डितक लेखनीसँ बहराएल भाषा निकृष्ट मानल जाइत अछि, निरक्षरक मुहसँ बहराएल भाषा श्रेष्ठ। एहि वैचारिक क्रान्तिक प्रभावमे पड़ि मैथिलीक बहुतो नबतुरिया लेखक ई मानि बैसलाह अछि जे सर्वसाधारणक मुहसँ जेना सुनैत छी, तहिना लिखब शुद्ध थिक। एहि धारणाक कारणेँ मैथिलीक वर्तनीमे जे किछु एकरूपता आएल छल, सेहो ध्वस्त भए रहल अछि। स्वच्छन्दतावादी लोकनिकेँ ई बुझबाक चाहिअनि जे उच्चारणक अनुरूप लिखब कोनो प्रचलित लिपिमे नहि छैक।[40]

भाषाक विकासमे सदिखन दू टा बल काज करैत अछि - एकटा प्राचीनताक रक्षाक संग विकासक पक्षधर होइत अछि तँ दोसर लोकप्रियताकेँ महत्त्व दैत अछि। लोक-शक्तिक विकासक बाद एकटा तेसर बल सेहो सक्रिय भेल अछि। ओ थिक भाषहुक क्षेत्रमे सामाजिक न्यायक महत्त्व-प्रतिपादन द्वारा अपन स्थान सुरक्षित करबाक प्रयास। भाषा सामाजिक सम्पत्ति थिक एवं एहिसँ समाजक प्रयोजन-सिद्धि होइत छैक। प्रयोजन-सिद्धिक लेल जाहि भाषाक प्रयोग लोक करैत अछि तकरा गोविन्द झा[41] दू कोटिमे राखल अछि - औपचारिक व्यवहारमे उच्चस्तरक एवं अनौपचारिक व्यवहारमे निम्न स्तरक। ओ मैथिल समाजकेँ द्विवाचिक (Diglossic) मानैत छथि। सामाजिक न्याय एवं भाषाक स्तरीयताकेँ भिन्न बात मानैत ओ एहि भ्रमक खण्डन कएल अछि जे तथाकथित उच्चवर्गक लोक उच्चस्तरक आ' तथाकथित निम्नवर्गक लोक निम्नस्तरक भाषाक प्रयोग करैत अछि। ओ मानैत छथि, जेना शिक्षाक विकासक संग लोकक परिधान क्रमशः मानक भेल जाइत छैक, ओहिना भाषा-प्रयोगक स्थिति सेहो अछि।

विभिन्न भाषाक विकासक इतिहास एहि तथ्यक साक्ष्यी अछि जे प्रत्येक भाषाक एक केन्द्रीय स्वरूप होइत छैक। ओएह मानकीकरणक आधार बनैत अछि। रमानाथ झा सेहो एक केन्द्रीय भाषाक पक्षमे छथि। किन्तु मिथिला भाषाक विकास आ' प्रचार-प्रसारक लेल मिथिलाक विभिन्न क्षेत्रमे बाजल जाइत बोलीमे साहित्य-सर्जनाक आदर सेहो करैत छथि। ओ लिखल अछि जे केन्द्रीय भाषाक संग आंचलिक भाषाक सह-अस्तित्व केवल वांछनीय टा नहि, आवश्यक सेहो अछि। ओ ओहि दिनक स्वप्न देखैत छथि जखन पूर्वीय मैथिली, पश्चिमी मैथिली, दक्षिणी मैथिली, नेपाली मैथिली सबहिक पृथक-पृथक कोष बनत, व्याकरणक विशेष नियमक अनुगमन कएल जाएत, से भिन्न-भिन्न भाषामे रचना कएले पर सम्भव होएत। ओहीसँ भाषामे प्रयोग सौष्ठव अओतैक।

रमानाथ झाक अपेक्षा छनि जे मिथिलाक भिन्न-भिन्न अंचलक लोक अपनहि भाषामे बाजथि, अपनहि भाषामे लिखथि, एहिमे किछु तँ हुनको लोकनिकेँ स्वयं उत्साहक प्रयोजन छनि, धैर्यक प्रयोजन छनि, सभसँ विशेष आत्मविश्वासक प्रयोजन छनि, परन्तु संगहि संग, जे केन्द्रीय

40. गोविन्द झा, *घर बाहर,* पटना, जनवरी-मार्च, 2005

41. गोविन्द झा, *अनुचिन्तन,* 2010, पृ.सं.106

मिथिलाक कहबैत छथि, ओ ऐतिहासिक कारणसँ अपना भाषाकेँ विशुद्ध मिथिलाक भाषा मानैत छथि, अनकहु मानए कहैत छथिन्ह, तनिकहु कर्त्तव्य छनि जे मिथिला भाषाक जे भिन्न-भिन्न विभाषा छैक, जकरा बोली कहैत छिऐक, तकर अस्तित्व, स्वीकार कए ओकरा सभकेँ मैथिलीक अंग मानि ली, ओ तखन ओकर बजनिहारकेँ ई गौरव अनुभव करए दिऐक जे हमरहु लोकनि मिथिला भाषा सएह बजैत छी, मिथिला भाषाभाषी छी। कोनो बोलीकेँ यदि हमरा लोकनि अपभ्रष्ट कहबैक तँ ओहिमे हीनताक भाव आबि जएतैक। भाषाक एकरूपताक कट्टर पक्षपाती होइतहुँ रमानाथ झा भाषाक विभेद स्वीकार करबामे संकोच नहि करैत छथि। ओ मानैत छथि जे भाषाक विभेद आ' भाषाक शुद्धता दू वस्तु थिक। आ' तेँ जाहि विभेदमे लिखल जाए, ओ शुद्ध अवश्य हो। आजुक युगमे केओ अपनाकेँ हीन स्वीकार करत, तकर आशा करब व्यर्थ थिक।[42] आजुक बहुभाषी एवं बहुसांस्कृतिक समाजमे समन्वय आ' सम्मानक महत्त्व छैक, एहि तथ्य केँ समाज-भाषा विशेषज्ञ डी.पी. पटनायक[43] सेहो मानैत छथि।

पूर्वक अपेक्षा मैथिलीक प्रयोगक प्रक्षेत्रमे बृद्धि भेल अछि। प्रयोगक नब-नब प्रक्षेत्र बनि रहल अछि। एहिसँ विभिन्न प्रक्षेत्रमे कार्यरत लोक आ' विशेषज्ञक मिथिला-भाषाक व्यवहारक प्रति आकर्षण स्वाभाविक अछि। एहना स्थितिमे भाषाक मानकीकरणक महत्त्व विभिन्न प्रक्षेत्रमे कार्यरत लोकक प्रयोजन सिद्धिक निमित्त तँ अछिए राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भाषा-समुदायमे समुचित प्रतिष्ठाक हेतु सेहो आवश्यक अछि। एहिसँ बोलीगत विपथन (Dialectal aberration), भाषिक उग्रता (Language Chauvinism) एवं वैषम्य (Skewness) समाप्त होइत छैक। संगहि, कोनहु-कोनहु क्षेत्रमे भाषाक सम्यक विकास एककेँ पकड़ि एवं दोसरकेँ छोड़ि रखलासँ सम्भव नहि छैक। अविच्छिन्न परम्पराक गरिमा आ' लोकप्रियताक समन्वयेसँ भाषा आ' ओहि भाषा-भाषीक मर्यादाक रक्षा भए सकैत अछि।

एताबता, मैथिली भाषाक लेखनमे अव्यवस्थाक मुख्यतः तीनटा कारण भेल। इएह कारण रमानाथ झाकेँ मानकीकरणक हेतु प्रेरित कएने छल होएतनि। भाषा वैज्ञानिक वा मैथिली भाषाक विकासक दृष्टिसँ हुनक विचार युक्तिसंगत होइतो किछु क्षेत्रमे ओकर पर्याप्त विरोध भेलैक, औखन क्षेत्र आ' वर्ग विशेषक भाषा कहि मुखर भए विरोध कएनिहारक अभाव नहि अछि। हमरा जनैत ओ विरोध मिथिला भाषाक प्रकृति तथा विकास वा भाषावैज्ञानिक स्तरपर कम अछि, अपितु रमानाथ झाक विरोधी द्वारा पसारल भ्रम-जाल, मिथिलाक सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति, मैथिलीक माध्यमेँ शिक्षाक अभाव एवं मैथिलीक प्रकृतिक अनभिज्ञताक कारणेँ बेसी अछि।

---

42. रमानाथ झा, मैथिलीक वर्तमान समस्या।
43. D.P.Pattanayak, *Goals and Strategies of Development of Indian Languages*- Language unites as well as differentiates human groups.Therefore, language planning must project language variations and languages to be in complementary relations rather than in adversary relation. It is the non-recognition of variations that leads to language conflict and social discord. 1998, CIIL.

अनुसन्धान

भाषाक विकासमे भाषाक प्राचीनता आ' मानकीकरणक प्रशासकीय प्रयोजनमे भाषाक उपयोगक अतिरिक्त जाहि दू काजक महत्त्व सर्वाधिक्य अछि, से थिक - भाषाक क्षेत्रमे अनुसन्धान आ' पठन-पाठन। मिथिला भाषाक विकासमे वा कही मिथिलाक सांस्कृतिक उत्कर्षकेँ प्रकाशमे अनबाक हेतु रमानाथ झा दरभंगा राज लाइब्रेरी अबितहिँ अनुसन्धान कार्यमे दत्तचित्त भए गेल छलाह आ' से काज आजीवन करैत रहलाह। हुनक अनुसन्धानक क्षेत्र मुख्यतः पाँच टा छल-

1. हस्तलेखक संग्रह,
2. पाली बौद्ध साहित्यक अध्ययन,
3. धर्मशास्त्र, ज्योतिष ओ तन्त्रक अनुशीलन,
4. विद्यापति साहित्यक अनुशीलन, विवेचन आ' अनुसन्धान, एवं
5. पंजी प्रबन्ध।

ओ अपने तँ अनुसन्धान काजमे लागल रहिते छलाह, जिज्ञासु अनुसन्धानकर्ताक दल सेहो तैआर कएल। एकर फलस्वरूप मैथिली भाषा आ' साहित्यक क्षेत्रमे महत्त्वपूर्ण तथ्य सब प्रकाशमे आएल एवं मैथिली भाषा आ' साहित्य सर्जनाक सुदीर्घ परम्परासँ अक्षर जगत परिचित भेल। पंजीप्रबन्धक माध्यमसँ मैथिलीक कतेको प्राचीन कविक काल आ' परिचय-निर्धारणमे सुविधा भेलैक।

पाठ्य ग्रन्थक निर्माण

मैथिली भाषा आ' साहित्यसँ छात्र वर्गकेँ परिचित करेबाक हेतु रमानाथ झा मुख्यतः चारि प्रकारक योजनाक कार्यान्वयन कएल -

1. उत्कृष्ट विद्वान द्वारा प्रेरणापूर्वक उपादेय ग्रन्थ लिखाएब,
2. मैथिली प्रेमी मेधावी छात्रलोकनिकेँ मैथिली साहित्य दिस निरन्तर प्रोत्साहन देब,
3. मधुकरवृत्या सत्साहित्य मधुकणक संकलन, आ'
4. मैथिलीक विकासार्थ ग्रन्थ प्रकाशनक संग व्याख्यान आदि द्वारा प्रचार।

विश्वविद्यालयक छात्रक हेतु पाठ्यग्रन्थक निमार्णमे ओ एक कविक रचनाक स्थानपर विभिन्न कविक रचनाक संकलन उचित मानैत छलाह। हुनक कहब छल जे एक कविक रचना कतबो उत्कृष्ट हो, विषय वा शिल्पक विविधताक परिचय छात्रकेँ नहि होइत छैक। कविता चयनमे ओ प्राचीनतासँ अधिक महत्त्व नवीनताकेँ देल।

4

भाषा प्रबन्धन

प्रयोजन एवं क्षेत्रक अनुरूप प्रबन्धन शास्त्र वा सिद्धान्त विकसित भेल अछि। तेँ क्षेत्र- विशेषक विकासक अवधारणा विभिन्न प्रकारक अछि। राष्ट्रीय विकासक लेल जे आवश्यक अछि, से भाषाक विकासक लेल उपयुक्त नहि होएत। यूनेस्को विकासकेँ समग्रतामे देखैत अछि। ओ मानैत अछि जे विभिन्न संसाधनक विकास अन्तरावलम्बित अछि तथा सामाजिक स्थितिसँ निरपेक्ष रहि विकास सम्भव नहि अछि। ओ ईहो मानैत अछि जे समाजक विकासक लेल अपन प्राथमिकता निर्धारित करैत अछि। जेना भारत सरकार निम्नलिखित बिन्दुपर भाषाक विकास केन्द्रित करैत अछि-

1. शिक्षण एवं सन्दर्भ सामग्रीक विकास, 2. विभिन्न स्तरक पाठकक लेल विभिन्न स्तरक पाठ्य सामग्रीक प्रकाशन, 3. तकनीकी शब्दावलीक निर्माण, 4. अनुवाद, 5. सम्प्रेषण आधारित भाषा शिक्षण, 6. तकनीकी प्रयोग एवं सूचना संग्रहण, तथा 7. उपर्युक्त कार्यक सम्पादन हेतु श्रमशक्तिक विकास।

मुदा, भाषावैज्ञानिक भाषाक विकासक प्रबन्ध किछु भिन्न प्रकारेँ करए चाहैत छथि। भाषा प्रबन्धक क्षेत्रमे दू भाषा वैज्ञानिकक, आइनार हाउगेन (Einar Haugen) तथा चार्ल्स ए. फर्गुसन (Charles A.Ferguson)क सिद्धान्त बेसी मान्य अछि। आइनार हाउगेन भाषाक विकासक प्रबन्ध चारि चरणमे मानैत छथि -

1. भाषाक विविध स्वरूपसँ मानक स्वरूपक चयन (Selection of Norm)
2. ओहि स्वरूपक वर्तनी स्थिर करब (Codification of Form),
3. प्रयोगक विस्तार करब (Elaboration of Function), तथा
4. ओहि मानक स्वरूपकेँ जनग्राह्य बनाएब।

एहिमे पहिल आ' दोसर मानक स्वरूपसँ तथा तेसर आ' चारिम प्रयोगसँ सम्बन्धित अछि। ओहिना पहिल आ' चारिम समाजसँ सम्बन्धित अछि तथा दोसर आ' तेसर भाषासँ सम्बन्धित अछि। चार्ल्स ए. फर्गुसनक अनुसार भाषा-प्रबन्धनक लेल तीन टा चरण अछि -

1. उपयुक्त लिपिक चयन वा सृजन, आ' वर्तनीक निर्धारण
2. मानकीकरण
3. आधुनीकीकरण

भाषा प्रबन्ध एक नब शास्त्र थिक। एहिमे दू विषय मुख्य अछि। पहिल ई जे भाषाक प्रयोग विविध क्षेत्रमे कोना नीक जकाँ कएल जाए। एकर पारिभाषिक नाम थिक भाषा-नियोजन। दोसर विषय थिक भाषाक इष्टतम स्वरूपक निर्धारण, जे मानकीकरण कहबैत अछि। मानकीकरणक अन्तर्गत वर्णविन्यास (Spelling), शब्द स्वरूप (Word form) व्याकरण इत्यादिमे एकरूपता आनब तथा विभिन्न विभाषाक बीच सामंजस्य स्थापित करब अछि।

जानि नहि, रमानाथ झा एहि शास्त्रक कोनो पोथी पढ़ने छलाह वा नहि। अधिक सम्भव 'नहि'

तकरे, किएक तँ हुनक जीवनकालमे ई शास्त्र गर्भावस्थामे छल। एहना स्थितिमे ई अवश्य विस्मयजनक थिक जे मैथिलीक हेतु ओ जे किछु सोचलनि आ' जे किछु कए पओलनि, से सभटा हालहिमे रूपायित भाषा प्रबन्ध प्रक्रियाक अनुरूप देखि पड़ैत अछि।

रमानाथ झा जे भाषा विषयक कार्यकलापक वर्णन कएल अछि, से सभटा ओ लगभग ओहीक्रममे सम्पन्न कएने छथि जे हुनक उत्तरकालमे एहि विषयक प्रख्यात विद्वानलोकनि द्वारा निर्धारित भेल अछि। हम आइनर हाउगेनक भाषा प्रबन्ध सिद्धान्तक चर्च कएने छी। आब देखल जाए रमानाथ झा कोना निर्धारित चारू चरणक प्रयोग मिथिला भाषाक विकासक लेल कएल अछि।

ज्ञातव्य जे चार्ल्स ए. फर्गुसनक अनुसार पहिल चरण थिक भाषाकेँ लिपिमे बान्हब, जे काज हमरालोकनिक पूर्वज सुदूर अतीतहिमे कए गेल छथि, तेँ रमानाथ झा अपन काज द्वितीय चरण अर्थात् मानकीकरणसँ आरम्भ कएल। एहिमे पहिल काज छल वर्तनीक निरूपण आ' दोसर छल व्याकरण आओर कोषक स्वरूप-निर्धारण। पहिल काज ओ स्वयं कएल। दोसर काज अनकासँ कराओल। ई काज आदर्शात्मक व्याकरण द्वारा होइत छैक। ओ महावैयाकरण दीनबन्धु झाक *मिथिलाभाषा विद्योतन* केँ एहि दृष्टिसँ उपादेय बूझि प्रकाशित कराओल। एही क्रममे उक्त आदर्श रूपी *भाषाक उद्भव ओ विकास* पण्डित गोविन्द झासँ लिखाओल जाहिसँ भाषाक ओहि स्वरूपकेँ परम्परा-प्राप्त बूझि लोक आदर करए। अग्रिम चरण भेल ओहि मानकीकृत भाषाकेँ विभिन्न क्षेत्रमे प्रयोगमे आनब। एहि काजमे सरकारक नीति आ' समाजक मानसिकता प्रबल बाधक छल। तथापि, सरकारक कृपासँ शिक्षा आ' साहित्यमे ओहि मानकीकृत भाषाक प्रयोगक अवकाश छलैक। रमानाथ झा *साहित्य-पत्र* चलाए आ' शिक्षामे पाठ्यपुस्तक प्रकाशित कए, एकर प्रयोग चलाओल। भाषा-नियोजनक चारिम चरण थिक जनताक बीच ओहि मानक स्वरूपकेँ ग्राह्य बनाएब। एहि सन्दर्भमे रमानाथ झाकेँ कतेक प्रबल विरोध भेलनि, तकर चर्च पहिने कए गेल छी, दोहराएब आवश्यक नहि अछि। एहि प्रकारक विरोधक प्रतिकार ओ पछाति स्थानीय आ' वर्गीय विभेद सभक प्रति आदरभाव प्रकट कए, कएलनि। ज्ञातव्य जे फर्गुसन साहेब1959 ई. मे वक्ताक स्तरभेदेँ भाषाक स्तर विभेदक विशद विवेचन कएल आ' एहि स्थितिक नाम पड़ल बहुवाचिकता, डाइग्लॉसिआ (Diglossia)। ई बहुभाषिकता (Multilingualism) सँ भिन्न अवधारणा थिक। एहिमे अनेक भाषाक नहि, एके भाषाक स्तर-भेदसँ अनेक स्वरूप रहैत अछि आ' से वर्गीय हो वा क्षेत्रीय। रमानाथ झा मैथिली मध्य बहुवाचिकताकेँ स्वीकार कएलनि। ततबे नहि, सभ स्तरक/प्रभेदक भाषाक निःसंकोच प्रयोग करबाक आ' ओहिमे साहित्य-सर्जनाक हेतु प्रेरणा सेहो दैत रहलाह। एहि बहुवाचिकताकेँ सकारि रमानाथ झा मानकीकरणक विरोधकेँ बहुत दूर धरि शान्त कएलनि।।

2006



प्रत्यालोचक किरणजी

काञ्चीनाथ झा 'किरण'क प्रत्यालोचकीय दृष्टिक विवेचन तीन प्रकारसँ कए सकैत छी -

1. समाजक प्रत्यालोचन,

2. साहित्यमे अभिव्यक्त प्रत्यालोचकीय दृष्टि, तथा

3. मैथिली साहित्यक प्रत्यालोचन।

समाजक आलोचना लिखिते रूपमे हो, आवश्यक नहि अछि। श्रोता समुदाय पढ़ले-लिखल होथि, सेहो आवश्यक नहि अछि। शिक्षित-अशिक्षित, साक्षर-निरक्षर सभ केओ समाजक आलोचक भए सकैत अछि। ई आलोचना सामान्यतः सामाजिक विषमता, प्रशासनिक अक्षमता, राजनीतिक भ्रष्टाचार, सांस्कृतिक आक्रमण आदि पर केन्द्रित रहैत अछि। ई आलोचना व्यक्तिगत सम्पर्क आ' भाषणक माध्यमसँ समक्ष अबैत अछि। श्रोतापर एकर स्थायी प्रभाव पड़ैत छैक। एहि अलिखित आलोचनामे लोकक विचार आ' मान्यताकेँ मोड़ि देबाक अद्‌भुत क्षमता रहैत अछि। स्वाधीनता आन्दोलनक समय देशक शीर्षस्थ नेतालोकनि आलोचनाक एही माध्यमेँ अङरेजी शासन-व्यवस्थाक विरुद्ध जनमानस तैआर करबामे सफल भेल छलाह।

किरणजी, समाजक एक संवेदनशील ओ प्रगतिशील विचारक एवं जागरूक लोक छलाह। समाजक धुकधुकी अकानबाक क्षमता छलनि। समाजमे सर्वत्र असमानता, अशिक्षा, भूख, अभाव, रोग-शोक, शोषण एवं अत्याचार व्याप्त छलैक। मिथिलामे प्रतिवर्ष अबैत बाढ़िमे भसिआइत लोकक व्यथा हुनका देखल-भोगल छलनि। सामाजिक कुरीति, अन्धविश्वास, धार्मिक पाखंड, आडम्बर, जाति-वर्णक आधार पर लोककेँ खण्ड-खण्डमे बाँटि, अपन काज सुतारबामे माहिर समाजक किछु लोकक चक्रचालिक साक्षात अनुभव छलनि।

समाजक सभ वर्गक लोकक लेल सुलभ किरणजीक व्यवहारमे आत्मीय संस्पर्श एवं विचारमे स्पष्टता आ' प्रखरता छल। लोकक समक्ष अपन विचार निर्भीकतापूर्वक रखबाक अपूर्व कौशल छलनि। ओ अपनाकेँ सदिखन सत्ताक विरोधमे राखि सामान्यजनक सुख-सुविधाक चिन्ता सहानुभूतिपूर्वक करैत छलाह। एहि गुणसँ हुनक व्यक्तित्वमे एक विलक्षण चुम्बकीय आकर्षण विकसित भए गेल छल। एकबेर जे सम्पर्कमे आएल, हुनक आलोचकीय दृष्टिसँ बिना प्रभावित भेने नहि रहि सकैत छल। किरणजीक एहि आलोचनासँ लोकमे सामाजिक कुरीतिपर प्रहारक क्षमता विकसित भेलैक आ' मैथिली भाषा-साहित्यक प्रचार-प्रसारक प्रति सामान्य मैथिलक प्रतिबद्धता बढ़ल। किरणजीक महान आकर्षक व्यक्तित्वसँ अन्ततः समाज लाभान्वित भेल।

किरणजीक साहित्यमे प्रत्यालोचकीय दृष्टि

एक संवेदनशील रचनाकार समाजमे जे किछु अनुभव करैत अछि, एनमेन ओहिना अभिव्यंजित नहि कए लैत अछि। व्यक्तित्वक अनुसार ओ अनुभव संश्लेषित भए अभिव्यंजित होइत अछि।

व्यक्तित्वक निर्माणमे जे तत्त्व सभ प्रभावक होइत अछि, ओहिमे प्रमुख अछि, समाज, परिवेश आ' अध्ययन-चिन्तन। ओहीसँ दृष्टि सम्पन्न एवं विकसित होइत अछि। एहि हिसाबेँ रचनाकारक तीन कोटि भेल।

1. पहिल भेल अपन युगमे रहितो युगातीत रहब। समाजमे प्रवाहित धारा-अन्तर्धाराक प्रभावसँ सर्वथा निर्लिप्त रहब। कोनो हरहर खट-खट नहि। 'ने ऊधोक लेना आ' ने माधोक देना'। ई स्थिति रचनाकारक आलोचकीय दृष्टिकेँ अतीतगामी बनाए दैत अछि।

2. दोसर कोटिक रचनाकार युगीन बसात देखि, अपन बाट निर्धारित करैत छथि। जखन जेहन मंच, तेहने आचरण, तेहने विचार आ' तेहने लेखन। ककरोसँ कोनो झंझटि नहि, कोनो विरोध नहि। सत्ता बदलल, सत्ताक केन्द्र बदलल तँ ओहो बदलि जाइत छथि। सरकारक पसीन हुनको पसीन। जँ सत्ताकेँ अभावग्रस्त आ' भूखल लोकक छटपटाएब, कुहरब पसीन तँ हुनको रचनामे अभावग्रस्त आ' भूखल लोकक छटपटाएब एवं कुहरब भेटत। जँ अनकर कानब आ' अनकर टेटरपर हँसब-हँसाएब पसीन, तँ ओ सएह गुणताह। ई प्रवृत्ति सामाजिक सरोकारक दिससँ आँखि मूनि लेब थिक। किरणजी लेखकक एहि प्रवृत्तिक घोर विरोधी छलाह आ' प्रहारमे धखाइत नहि छलाह। चाटुकारितापूर्ण रचनासँ विमुख होएबाक लेल रचनाकारसँ हुनक अनुरोधक इएह कारण थिक –

आनक कानब खसब देखि कय, हृदयहीन, जे बिहुँसय हरखय
तै मानव दानव समाजकेँ, कविता लीखि सुधारह।
कवि हओ, नहि कवि नाम हँसाबह। [1]

3. तेसर कोटिक रचनाकार समाजमे व्याप्त विषमता, भूख, अभाव, रोग-शोक, धार्मिक आडम्बर आ' अन्धविश्वास आदि देखैत अछि। ओ अनुभव करैत अछि जे समस्त वेद-पुराण, धर्मशास्त्र, बाइबिल, कुरान, मानव मानवक बीच विभेद उत्पन्न करैत अछि। ई वर्चस्व स्थापनाक एक माध्यमक थिक। एकटा महान भ्रम-जाल थिक, जाहिमे फँसि लोक छटपटाए लगैत अछि। छटपटाइत-छटपटाइत निष्प्राण भए जाइत अछि। तेसर कोटिक रचनाकार एहि वर्गक लोकक प्रति सहानुभूति रखैत, स्वर दैत अछि। ओ एक सचेत विपक्षीक भूमिकामे अपनाकेँ सदिखन बनौने रहैत, सामाजिक विषमता आ' धार्मिक अन्धविश्वासक अनुकूल व्यवस्थाक मुखर विरोध करैत रहैछ। एहिसँ सत्ताक आँखि पर चढ़ि गेलोसँ ओ विचलित नहि होइत अछि एवं विरोधक स्वर मद्धिम नहि होइत अछि। डा. कञ्चीनाथ झा 'किरण' एही कोटिक मैथिलीक साहित्यकार छथि।

आलोचना की थिक, एहि बिन्दु पर किरणजीक आलोचना-साहित्यमे कतोक ठाम प्रकाश पड़ल अछि। हुनक मतेँ आलोचना थिक तीक्ष्ण दृष्टिक परिणति। एहि दृष्टिक विकास गुण-दोषक विवेचन-शक्तिसँ सम्भव होइत अछि। सामाजिक क्षेत्रक अनुभवसँ पुष्ट होइत अछि। ओ मानैत छथि जे समाजमे वर्तमान बलवान लोकक हाथेँ एक सर्वशक्ति सम्पन्न मूर्ति गढ़ल गेल अछि। ओएह मूर्ति सभटा सामाजिक विकृति, सामाजिक असमानता, अन्धविश्वास आ' आडम्बरक कारण

1. काञ्चीनाथ झा 'किरण' *कतेक दिनक बाद*, पृ.सं.4

थिक। ओही नामपर सभटा खेल होइत अछि। किरणजीक साहित्यमे ई आलोचकीय-दृष्टि सुलभ अछि। किछु उदाहरण प्रस्तुत अछि।

कर्मकाण्ड आ' धार्मिक अन्धविश्वास

किरणजीक दृष्टिमे सभसँ महत्त्वपूर्ण अछि मनुष्य, हाड़-मांसक मनुष्य। गोर, कारी, लाल, पीअर, श्याम - सभ चामक मनुष्य एक थिक। सभ धरती माताक सन्तान थिक। सहोदर थिक। ओ मानैत छथि, धनपतिक नगर अलकापुरीक निर्माण शोषणसँ आ' शोषणक लेल भेल अछि। ओही अलकापुरीक रक्षाकवच थिक भवितव्य, कर्मफल, लिखलाहा, लोक-परलोक, अवतारवाद आदि। धनिकक पापक झाँपन लेल पूर्वजन्मक कथा गढ़ल गेल अछि। गाछ-वृक्ष, जीव-जन्तु आ' पाषाण खण्डक महत्त्व पर्यावरणक रक्षाक हेतु अवश्य अछि। मुदा, ओहिमे देवत्वक आरोपन तथा जाति आ' वर्णक आधारपर मनुष्यकेँ अधम, हेय आ'अस्पृश्य मानब अनुचित अछि। ओ मानैत छथि जे समाजमे एक दक्षिणाकामी वर्ग सक्रिय अछि। ई दक्षिणाकामी वर्ग देवताक पेशकार जकाँ पाषाण खण्डक कानमे किछु कहि, दुखीजनसँ दक्षिणा धराए लैत अछि। एहि प्रकारेँ ई दक्षिणाकामी वर्ग दुखे कातर लोककेँ परतारैत अछि। अपन एहि मतक प्रतिपादन किरणजी क्लान्त पराशरक मुहसँ अपरिचित वनवासी वृद्धाक प्रति 'माता'क सम्बोधनसँ कएल अछि। मानव मात्रक सेवाक लेल सदिखन तैआर वनवासी, वृद्धा, एक अपरिचित मुहसँ 'माता' सम्बोधन पर उपरागक मुद्रामे पराशरकेँ कहैत छनि -'हम अहाँक माइ कोना भए सकैत छी, ओ बाभनि छली, दगलाहा बाछा पर चढ़ि स्वर्ग चल गेल छथि' -

अहाँक माइ छली बाभनि, कयने हेबनि सराध अहाँ
दुधगरि गाय, छत्ता, जुत्ता सोनाक मुरूत, बढ़ियाँ बिछौन उसरग क' देने हेबनि संग
दगलाहा बाछा पर चढ़ि गेल हेती सरग। जाति वर्ण गोत्र-पाँजि।[2]

गाङोक तारुण्य आ' आकर्षक हाव-भाव पर काम विमोहित पराशर अपन कुल-गौरव आ' पैघत्वक डोर फेंकैत छथि -

'गाङो! धर्मशास्त्र हमही छी रचैत
सब जातिक कन्याक संग विवाह करबाक ब्राह्मणकेँअधिकार छैक
रतिक समयमे नहि लगैत छैक छूति-तूति।'[3]

तँ पराशरक मधुरवाणी पर गाङो रिझाइत नहि अछि। ओकर प्रतिक्रियामे भय वा आतंक नहि छैक–

वाभन बिआहत सब वरन, अपन गरमी टा झाड़ि लेत
गाङोकेँ छूतहर जकाँ ओंघराय देत।[4]

सत्यवती थम्हैत नहि अछि। ओ विज्ञानसम्मत तथ्य मुनिश्रेष्ठक समक्ष राखि, छगुन्तामे दए दैत छनि-

मुनिजी ! गुँहार गौसारो खेतमे रोपल,
खेतक कारन नइ बनैए मड़ुआ, गम्हरि जनेर
मुदा, अहाँ आउरक सन्तान खेतक कारन
बनि जाइए अछोप, राड़।[5]

2. किरण, *पराशर,* पृ.सं. 20, 3. ओएह, पृ.सं. 46, 4. पृ.सं. 34, 5. ओएह, पृ.सं. 48

किरणजीक परिसरमे मूल, गोत्र, पाँजि आ' श्रेणीक समक्ष व्यक्तिगत गुण आ' विद्वता गौण बूझल जाइत छल। तकर हुनका व्यक्तिगत अनुभव रहल होएतनि आ' सम्भवतः तकर पराभव भोगने छल होएताह। ओहि सामाजिक विकृति आ' विषमताक आलोचना पूर्ण गम्भीरता एवं तीव्रताक संग *पराशर* एवं हुनक साहित्यमे प्रतिध्वनित अछि।

मैथिली साहित्यक प्रत्यालोचक किरणजी

आलोचक किरणजीक दू रूपक चर्च कएलहुँ अछि। ओ थिक मूलतः किरणजीक कारयित्री एवं भावयित्री प्रतिभाक समन्वित रूप। किन्तु, विचारनीय अछि भावयित्री प्रतिभाक क्षेत्रमे हुनक अवदानक समीक्षा। ओ बरोबरि कहैत-बजैत छलाह, *हमर वेसी समय आ' ऊर्जा तँ मैथिली आन्दोलन आ' मैथिलीक संग बेसीसँ बेसी लोककेँ जोड़बामे बीति गेल। पलखति कहाँ छल जे साहित्य रचितहुँ।*

एकर प्रतिकूल पण्डित गोविन्द झा[6] कहैत छथि - *संस्था आ' आयोजनसँ हम सदा कात रहलहुँ। संस्था समय आ' ऊर्जा बहुत खाइत छैक। हमर सरोकार काजे धरि रहल।* तात्पर्य जे किरणजीक सामाजिक सक्रियताक क्षेत्र विशाल छल आ' तेँ गुणात्मक रूपमे हुनक रचना जतेक महत्त्वपूर्ण हो, परिणाममे बेसी नहि अछि। ओ अपन रचनाक प्रकाशन-संस्कारक प्रति उत्सुक छलाह, सेहो नहि कहि सकैत छी।

आधुनिक कालक युग-प्रवर्तक : किरणजीक विचार

रमानाथ झा चन्दा झाकेँ कविताक प्राचीन परम्पराकेँ छोड़ि एक गोट नव मार्गक अनुसरणकर्ताक रूपमे देखि मैथिली कविताक क्षेत्रमे नव युगक प्रवर्तक मानल अछि[7]। किरणजी रमानाथ झाक विचारसँ सहमत नहि छथि। ओ ई प्रतिष्ठा अकाली कवि फतूर लालकेँ देल अछि। किरणजीक अनुसार मैथिली भाषाकेँ स्वतन्त्र भाषा सिद्ध करबाक हेतु चन्दा झा तेहन कोनो निस्सन प्रयास नहि कएलनि। गो-ग्रास जकाँ किछु-किछु दए देबाक परम्परा जे ज्योतिरीश्वर शुरू कएने छलाह, तकरे ओ निर्वाह कएल। किरणजीक मानब अछि जे दरभंगा महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह, रमेश्वर सिंह सनक प्रतिभाशाली व्यक्ति उपलब्ध रहथिन, महाराजक परम विश्वासी प्रमुख आफिसर विन्ध्यनाथ झाक संग मैत्री छलनि। तथापि, घरमे बैसल कोनहुना रामायण, किछु महेशवानी लीखि कँ सन्तुष्ट रहि गेलाह। संगहि, हिन्दीअहुकेँ धेनहिँ रहलाह। ने मैथिलीक स्वतन्त्र सत्ताक स्थापनाक लेल महाराजक ध्यान आकृष्ट कएलनि आ' ने बंगसाहित्य परिषदक सदृश संस्थाक आयोजन कएल। हुनक हिन्दी रचनासँ तँ सिद्ध होइत अछि जे अपन मातृभाषाक महत्त्वक दिस हुनक ध्यानो नहि गेल छलनि।[8]

6. प्रो. आनन्द मिश्र, प्रधान सम्पादक, *गोविन्दझा : अर्चा ओ चर्चा,* 1997, पृ.सं.16
7. रमानाथ झा, *प्रबन्ध संग्रह,* पृ. सं. 199
8. *किरण समग्र,* मैथिली साहित्यक आधुनिकताक आरम्भ, 128

चन्दा झा लिखित प्रचुर मात्रामे साहित्य प्रकाशित भए सुधी पाठकक समक्ष आबि गेल अछि। यदि ओहि रचना सभकेँ किछु कालक लेल कात कए, मैथिली भाषा आ' साहित्यक क्षेत्रमे चन्दा झाक अवदानक लेखा-जोखा कएल जाए, तैओ किरणजीक मन्तव्य समीचीन आ' तथ्यपरक नहि अछि। ई वास्तविकता थिक जे चन्दा झा मिथिलामे घूमि-घूमि विद्यापतिक गीतक संकलन कएल, जकर उपयोग पछाति नगेन्द्रनाथ गुप्तक संकलनमे भेल। चन्दा झा गोविन्द दासक गीतक संकलन कएल जे डा. अमरनाथ झा सम्पादित कए केँ छपबाओल। चन्दा झा मिथिलाक इतिहासक संकलन कएल। कहल जाइछ जे म. म. परमेश्वर झाक *मिथिलातत्त्व विमर्श* मे ओही सामग्रीक उपयोग भेल अछि। विद्यापतिक हाथक लिखल *भागवत* केँ चन्दा झा ताकि अनलनि। चन्दाझा साहेब रामदासक रचनाक संग्रह कएल। चन्दा झाक प्रेरणासँ दरभंगामे एक 'मिथिला अनुसन्धान समिति'क स्थापना भेल, जकर प्राण छलाह चेतनाथ झा एवं सचिव, केशी मिश्र। जँ एतेक मौलिक काज कएनिहारकेँ मातृभाषा विमुखक संज्ञा देल जाए, तँ मातृभाषाक उत्थानक लेल के काज कएलनि, ताकब बड़ कठिन भए जाएत। कहि सकैत छी, एहि तरहक विचार राखब अवदानकेँ मोन नहि राखब थिक। चन्दा झाक समय मिथिलाक राजनीतिक आ' सामाजिक स्थितिक अवलोकन करैत रमानाथ झाक कहब अछि जे कवीश्वरकेँ सहायता आ' प्रोत्साहन भेटल रहितनि तँ मिथिलाक स्वरूप आइ दोसर रंगक रहैत। कमसँ कम मैथिली स्वीकृति तँ ताही दिन भए गेल रहैत आ' जेना हिन्दी हमरा लोकनिक उपर लादि देल गेल, से धरि नहिञे होइत[9]।

फतूर लालक रचनाकेँ मैथिली क्षेत्रमे युग प्रवर्तक मानबाक पक्षमे किरण जीक तर्क अछि जे फतूर लालक 1281 सालक[10] अकालक वर्णनमे सामाजिक जीवनक यथार्थ चित्रण अछि। ओहिमे लोकक व्यथा प्रतिबिम्बित अछि, एवं प्रशासनिक अक्षमता एवं सामाजिक विषमता सरल शब्दावलीमे वर्णित अछि। एहि ऐतिहासिक काव्यक रचना कए जे बाट ओ देखौलनि, तकरा यदि मैथिल पण्डित अपनबितथि तँ निर्विवाद रूपेँ मैथिली भाषा साहित्यक आइ दोसर रूप रहैत। ओ दोसर रूप की रहैत तकरा किरणजीक निम्न मन्तव्यमे ताकल जाए सकैत अछि। ओ लिखल अछि महाकवि सुमनजी जखन पढ़य लगैत छथि -

'शिव की सकितथि विष पचाय यदि लितथि न माथे।

जैतथि सिन्धु सुखाय वाडवानलहिक हाथेँ ..।'

तँ सनातनी सभ झूमय लगैत छथि, आ' बाह रे कवि! वाह रे कवि! हुनक मुहसँ अनायासे बहरा जाइछ। मुदा, हमरा दुख होइत अछि, हुनक असाधारण कवित्व शक्तिकेँ असंगत कथाक प्रतिपादनमे खर्च होइत देखि।[11]

किरणजीक एहि मन्तव्यमे दू टा महत्त्वपूर्ण बिन्दु अछि - अपन भाषा-साहित्यक प्रति सम्पूर्ण समर्पण आ' युगीन सामाजिक जीवनक अभिव्यक्तिक अनिवार्यता। कवित्व शक्तिए पर्याप्त नहि अछि, विषय-वस्तु सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। बिना लोक कल्याणकारी विषय-वस्तुक साहित्य कलाबाजी

9. रमानाथ झा, *प्रबन्ध संग्रह,* पृ.सं. 178

10. जॉर्ज अब्राहम ग्रिअर्सन, *मैथिली क्रेस्टोमेथी*

11. किरण, समालोचनाः हमर दृष्टिकोण, *इजोत,* 1960 ई.

थिक। युग-जीवनसँ फराक एवं असम्पृक्त रचनामे सहितक भाव कोना सम्भव होएत? साहित्यक स्रोत थिक समाज आ' समाजेक लेल ओ रचल जाइछ। समाज थिक मानव समूह। आ' तँ जाहि रचनाक माध्यम मनुष्य नहि अछि, मनुष्यक राग-विराग, आशा-आकांक्षा अभिव्यंजित नहि अछि, शोषणसँ मुक्तिक प्रयास नहि अछि, से कवित्व शक्तिक अपव्यय थिक। एकहि संग अनेक द्वारि पर हाजिरी देबाक अपेक्षा एकठाम केन्द्रित रहि अपन सम्पूर्ण प्रतिभा आ' ऊर्जाक संग सक्रिय रहब निश्चित रूपसँ वेसी महत्त्वपूर्ण एवं प्रेरणादायक मानल जाइछ। ओ कवीश्वर चन्दा झाक समयमे सेहो छल आ' औखन ओतबे प्रासंगिक अछि। कवीश्वर चन्दा झाक प्रति किरणजीक विचार समीचीन नहि, हुनक अवदानकेँ ओछ करब थिक।

मैथिली साहित्यक आलोचना : मैथिल आँखि

मैथिल आँखि की थिक एवं आन आँखिसँ कोन दृष्टिमे फूट अछि। एहि क्रममे तीन टा बिन्दु विचारनीय अछि –

1. विद्यापति मात्र एक कवि नहि, ओ मैथिली भाषा-साहित्य एवं संस्कृतिक प्रतीक छथि,
2. मैथिली साहित्यकेँ मैथिल आँखिसँ देखबाक कोन प्रयोजन अछि, तथा
3. मैथिल आँखि की थिक?

ई मैथिल आँखि निश्चित रूपसँ *'नयन ने तिरपित भेल'* एवं *'श्वेत श्याम रतनार झुकि झुकि पड़त, जेहि चितवत एकबार'* नहि थिक। ई थिक भाषा-साहित्य एवं संस्कृति पर क्रमशः भेल आघात, सिंहासनारूढ़ होइत भिन्न संस्कृति एवं आक्रान्ताक घनीभूत होइत उपेक्षाभाव आ' मिथिलाक गौरवशाली एवं जीवन-प्रदायिनी संस्कृतिक अस्तित्वकेँ समाप्त करबाक षड्यन्त्रसँ रक्षाक हेतु उपजल क्षेत्रीय चेतना। एही षड्यन्त्रक कारणेँ विद्यापतिक भाषा मैथिली, हिन्दीक बोली बना देल गेल छल एवं विद्यापति हिन्दीक कवि। हिन्दी साहित्यक पण्डित सभ साधारणतया ओही क्षेत्रक लोक सभ थिकाह, जाहि क्षेत्रक लोक सभ विदेशी तुर्क आ' मोगलक शास्त्रकेँ सुदृढ़े नहि कएल, अपितु ओकर विस्तारो हुनक सभक सहयोगसँ भेल छल। तेँ एक मात्र लक्ष्य भए गेल मैथिली भाषा एवं मैथिल संस्कृतिकेँ पीबि, मिथिलाक लोककेँ छिन्नमूल कए देब। क्षेत्रक संग संस्कृतिपर अधिकार कए, शासन-व्यवस्थाकेँ स्थायित्व प्रदान करब। अपन विस्तारवादी नीतिक कार्यान्वयन करब। भाषा आ' संस्कृति, जे आत्मबल आ' आत्मविश्वासक स्रोत थिक, तकरो तेनाकेँ सोँखि लेब, जाहिसँ चट्टी पड़ि जाए। किरणजी एकरा गुलामी नजरि[12] कहलनि अछि। गुलामी नजरिमे पराजित राष्ट्रक सभ किछु तुच्छ अछि, सभ किछु हेय बूझल जाइछ एवं अनन्तकालसँ अर्जित समस्त ज्ञान-राशि बेकार आ' अकाजक अछि। विकासक मार्गक ओ सभ बोझ अछि। तेँ, जतेक जल्दी त्यागि देब, ततेक लाभकर।

किरणजी मानल अछि जे शंकराचार्यक मत संसार मिथ्या थिक, सत्य केवल ब्रह्म थिक; मिथिलावासीकेँ ई विचार जीवनक प्रति उदासीन बनेबामे प्रेरक भेल। एहिसँ मैथिल समाजमे श्रमसँ

12. *किरण निबन्धावली,* विद्यापतिक राधाकृष्णक तीन रूप, 1990, पृ.सं. 6

पलायन, श्रमक अवहेलना एवं श्रमक महत्त्वकेँ गौण बुझबाक प्रवृत्ति बढ़ल। जीवनक प्रति उदासीनता आ' श्रमक अवहेलनासँ लोकक कष्ट बढ़लैक। लोक-परलोक, स्वर्ग-मोक्षक कल्पित धारणा पुष्ट भेलैक। घर-घराड़ी बेचि दक्षिणा देबाक लेल विकल लोक दागल बाछा पर चढ़ि परलोक गमनक आकांक्षी बनि गेल।

ई वास्तविकता थिक जे भाषा-साहित्य, संस्कृति आ' क्षेत्रक प्रति आत्मीयभाव एवं संलग्नता रहलेपर संरक्षण एवं प्रचार-प्रसारक बोध जगैत छैक। किरणजी कहैत छथि जे मिथिलामे मैथिल आँखिक अपेक्षा गुलामी नजरि बेसी सचेष्ट छल। बंकिम बाबू अँखिगर छलाह। हुनक आँखिसँ बंगला भाषा-साहित्य एवं संस्कृतिमे एक चोखगर आँखि विकसित भेल। आ' तकर भारतीय राजनीति पर दूरगामी प्रभाव पड़लैक। मिथिला एवं बंगालमे प्रगाढ़ एवं सुदीर्घ सांस्कृतिक सम्बन्ध छल, तथापि चन्दा झाक आँखिमे ओ विशेषता नहि आबि सकल।

किरणजी मानैत छथि जे जाहि दृष्टिसँ बंकिम बाबू लोकनि बंग-साहित्यकेँ समृद्ध करबाक प्रयास आरम्भ कएल, ओही दृष्टिकेँ बादमे पकड़ि लेने छल *मिथिलामोद*। ओ सामाजिक विषमता पर निरन्तर प्रहारक संग समाजक विभिन्न समस्या पर विचार करैत छल। मैथिली भाषा-साहित्यक विकासमे *मोद* क योगदान महत्त्वपूर्ण अछि। मुदा, एहिक्रममे हुनक खौंझ सेहो भेटैत अछि। बेसी काल प्रहारक केन्द्रमे रहैत छल मैथिल महासभा आ' ओकर सम्पोषक। किन्तु, ई मिथिलाक सांस्कृतिक परिचयक एक महत्त्वपूर्ण घटक मिथिलाक्षरक संरक्षण आ' प्रचार-प्रसारक प्रति *मिथिलामोद* किएक उदासीन छल, चिन्ताक विषय अछि। इहो सत्य अछि जे कतेको वर्ष धरि *मिथिलामोद* मे हिन्दीक प्रधानता छलैक। तेँ, किरणजीक ई कहब जे *मिथिलामोद* बंकिम बाबूक दृष्टिकेँ पकड़ि लेने छल, भाषा-प्रयोग एवं निष्ठाक दृष्टिसँ पूर्णतः सत्य नहि अछि। मैथिल आँखिक अभाव देखि एकठाम किरणजी लिखल अछि - 'मिथिला मैथिलत्वक कट्टर दुश्मनक भाषा पढ़िकेँ विद्वान भेल, मैथिलोक आँखि प्रायः मैथिलक आँखि नहि रहैत छलनि'। मैथिल आँखिकेँ फरिछबैत ओ कहैत छथि -

मैथिल आँखि थिक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यमे साहित्यकेँ देखब, मैथिलीक घरमे जमि कए बैसल आन भाषा-गीतकेँ उखाड़ि फेकब, अपन भाषाक मधुरिमासँ समाजकेँ मोहित कए बसमे राखब।

किरणजीक मत अछि जे मैथिल संस्कृति विरोधी तत्त्व सभ अनेको प्रकारक कथा गढ़लक अछि। ओहीमे एक अछि सीता-निर्वासनक कथा। एकरा ओ कल्पित मानैत मिथिलाक सांस्कृतिक विशेषता एवं मिथिलामे लोकप्रिय प्रजातान्त्रिक व्यवस्थाक विरोधी द्वारा गढ़ल एवं प्रचारित कहल अछि। मिथिलामे राजतन्त्र नहि, मिथिलामे प्रजातान्त्रिक शासन-व्यवस्था छलैक। मिथिलाक लोक राजाक दास नहि छल। राजा मिथिलाक लोकक प्रतिनिधि छलाह। एहि तथ्यक उद्घाटन सीता द्वारा अवश्मेध यज्ञक अवसर पर राजा रामक समक्ष कराओल अछि।

मिथिलाक लोक नहि थिकनि राजाक दास
स्वाधीनमना लोकक प्रतिनिधि थिकाह मिथिलेश। [13]

इएह रहस्योद्घाटन सीताक लेल काल भए गेलनि। मिथिलाक एहि यथार्थकेँ कोसलपति राम सहि

13. काञ्चीनाथ झा 'किरण', *पराशर,* पृ. सं.13

नहि सकलाह आ' तकर दण्ड भोगलनि सीता। सीताक निर्वासनक जे कोनो कारण रहल हो, किन्तु किरणजीक आँखि तीक्ष्ण मैथिल आँखिक प्रतिनिधित्व करैत अछि, से सर्वथा सत्य ।

मैथिल आँखिक सन्दर्भमे किरणजी मैथिलीक शब्द समाजपर[14] विस्तारसँ विचार कएल अछि। ओ लिखल अछि - *मैथिलीक पाणिनि, महावैयाकरण दीनबन्धु झा 'मिथिला भाषा विद्योतन'मे संस्कृतक शब्दकेँ मैथिली भाषाक अंग मानल अछि। परन्तु प्रो. रमानाथ झा मिथिला भाषा प्रकाशमे संस्कृतक शब्दकेँ मैथिलीक शब्दे नहि मानैत छथि। मैथिली भाषाक छात्रक समक्ष विचित्र प्रश्न उपस्थित छैक, एक दिशि ओ अपन पाठ्य पुस्तकमे संस्कृत शब्द ठूँसल-कोँचल पबैत अछि, प्रश्नमे पवित्र, पावक, नायक आदिक सन्धिविच्छेद करब रहैत छैक*।

एहि प्रसंग किरणजीक कहब अछि जे संस्कृत शब्द, मैथिली शब्द-समाजक सदस्य बनिओ कँ अपन मैथिलक मौलिक रीति-रेबाज राखलेँ अछि। ओ रीति-रेबाज मैथिली भाषाक रीति-रेबाज थिक। संस्कृत समास मध्य सन्धि मैथिलीक विषय थिक। सम्पर्कक प्रभाव अनिवार्य अछि। आर्य-अनार्य मूलतः भिन्न रहितो आ' बहुतो दिन धरि शत्रुभावपूर्ण रहितो सर्वथा पृथक नहि रहि सकल। ओ एक दोसरासँ प्रभावित भेल। यवन वा अङरेजक आचार-विचार भेष-भूषासँ एतयक कोन जातिक समाज अप्रभावित अछि ?

हमरा जनैत भाषाक उत्पति आ' विकास तथा अंगीकृत होएब तथा प्रयोग एक विषय नहि थिक। पण्डित दीनबन्धु झा प्रयोगक दृष्टिसँ संस्कृत भाषाक शब्दकेँ मैथिली मानल अछि एवं प्रो. रमानाथ झा व्युत्पत्तिक दृष्टिसँ संस्कृत भाषाक शब्दकेँ मैथिली नहि मानल अछि। किरणजी सामाजिक जीवनमे मूल, गोत्र एवं पाँजिक विरोधी छलाह। सभ तरहक चामक लोककेँ एकहि मानैत छलाह। प्रायः ओही आँखिसँ शब्दक प्रयोग आ' शब्दक व्युत्पत्तिकेँओ देखि लेलनि अछि। आइ-काल्हि सभ सांस्कृतिक क्षेत्रक लोक पैंट पहिरैत अछि, अपन उपयोग हेतु अपन नापसँ लोक सिआबैत अछि, तेँ कहबैक पैंट हमरे खेतक थिक, से उचित नहि होएत।

किरणजी मानैत छथि ई जे संश्लेषणक युग थिक। हिन्दू, मुसलमान, ब्राह्मण आ' शूद्र मध्य वैवाहिक सम्बन्धकेँ प्रोत्साहन देल जाए रहल अछि। एकर प्रभाव भाषापर सेहो पड़तैक आ' वस्तुतः भाषा पर संश्लेषणक प्रभाव बहुत पहिनेसँ पड़ि रहल अछि। जेना पैरवीकार, गरीबनाथ आदि । एकठाम किरणजी मैथिलीक घरमे जमिकेँ बैसल आन भाषाक गीतकेँ उखाड़ि फेंकब, अपन भाषाक मधुरिमासँ समाजकेँ मोहित कए बसमे राखब मैथिल आँखि मानल अछि, तँ दोसर ठाम ओ भाषा-सांस्कृतिक संश्लेषणक स्थितिकेँ ऐतिहासिक अनिवार्यता कहल अछि। ई स्पष्टतः विरोधाभास थिक। ई विरोधाभास रमानाथझाक विचारक खण्डनक प्रति हुनक प्रवृत्तिक परिचायक थिक।

आलोचनाक प्रयोजन : किरणजीक विचार

जेना बैंकमे ओवर ड्राफ्रट आ' सूदिक अर्जन पर खाताधारीक वित्तीय स्थितिक मूल्यांकन होइत छैक, ओहिना किरणजी गुण-दोषक आधार पर साहित्यिक कृतिक मूल्यांकनक पक्षपाती छथि। हुनक कहब अछि जे गुण-दोषेक आधार पर समाजमे लोकक स्वीकार्यता बढ़ैत वा घटैत छैक।

14. काञ्चीनाथ झा 'किरण', मैथिलीक शब्द समाज, *अ. भा. मैथिली साहित्य परिषद पत्रिका,* 1962

ओएह स्थिति साहित्योक संग छैक। एहि हेतु किरणजीक स्पष्ट मत अछि जे साहित्यिक रचनामे गुण-दोषक विवेचन हो, ई नहि जे केवल गुणकेँ ग्रहण कए लेल जाए, जेना हंस दूध टा पीबि लैछ एवं पानि छोड़ि दैत अछि। अपितु गुण-दोषक विवेचनक लेल तँ आओरो चोखगर आँखि चाही। ईश्वरक सृष्टि संसारक लक्ष्य अछि नाश। एहि सृष्टिमे रोग-शोक, भूख, अभाव आ' असमानता भरल छैक। जँ लोकक आलोचनाक प्रभाव ईश्वर पर पड़ैत तँ विश्व दुखमय नहि रहैत । मुदा, मनुष्यक सृष्टि, साहित्यक लक्ष्य नाश नहि, निर्माण छैक। मनुष्यक एक समाज छैक। ओकरे हितक लेल साहित्य-सर्जना होइत अछि। तेँ साहित्यमे स-हितक भाव अछि । बिना आलोचनाक समाज दोषमुक्त नहि भए सकैत अछि।

किरणजी मानैत छथि जे साहित्यिक आलोचनाक लेल चोखगर आँखि आवश्यक अछि। एही चोखगर आँखिक लेल कविलोकनि आलोचककेँ खलक उपाधि देने छलाह। आ' अपन कृतिक आरम्भमे खलक वन्दनाक परिपाटी शुरू कएल। एहि मनोवृत्तिकेँ राजदरबारक युगक देन मानैत कहैत छथि जे राज दरबारक युगमे कविलोकनि आलोचकसँ भयभीत रहैत छलाह। से एहि हेतु जे राजदरबारमे ओ दोष-दर्शन नहि करा देथि । दोषयुक्त रचना पर कवि राज्यसम्मान आ' राज्याश्रयसँ च्युत भए जाइत छलाह। इएह थिक किरणजीक नजरिमे खलत्वक रहस्य। आलोचनाक निष्पक्षता आ' आलोचकक निर्भीकताक प्रसंग किरणजी लिखल अछि -

अशुद्ध फूसि फटक लीखि लोककेँ ठकि परतारि अर्थ-यश कमेनिहार कवि भेल सहृदय,सज्जन आ' सत्य-असत्य, संगत-असंगत, शुद्ध-अशुद्धक ज्ञान करौनिहार समालोचक भेलाह दुष्ट दुर्जन। एकरे कहैत छै सपरतिब। आजुक आलोचक यदि एहन गारि किरियाकेँ गुदानय लागत तँ समाजक बौद्धिक स्तरकेँ के उठा सकत? [15]

किरणजी प्रतिपादित मैथिल आँखिमे ऐतिहासिकता एक आवश्यक घटक अछि। ओ मानैत छथि जे मूल्यांकनक लेल ऐतिहासिक दृष्टि आवश्यक अछि। ऐतिहासिक दृष्टिक अभावमे रचनाक काल आ' निहितार्थक उद्‌घाटन सम्भव नहि अछि। विद्यापतिक परिवेशक प्रसंग किरण जी लिखने छथि, *विद्यापति जाहि समयमे भेल छलाह, से कहि सकैत छी, अभूतपूर्व छल। देशक राजनीतिक स्वाधीनताक संग-संग धर्म आ' सभ्यता सेहो जा रहल छल। विदेशी तुरूकक अत्याचारसँ लोक ग्रस्त छल। तुरूक देशक राजा भए जाएत तँ धर्मो चल जाएत, ई शंका सभक मनकेँ आच्छन्न कएने छलैक। राजतन्त्रमे शासनक प्रति साधारण जनता निरपेक्ष-उदासीन रहैत अछि। मुदा धर्म तँ ओकर जीवनक अंग भेल रहैछ, तेँधर्मपर आघात असह्य होइत छैक।*[16]

आजुक युगमे राष्ट्रीयता जतबे महत्त्वक अछि, ताहूसँ अधिक महत्त्वक विषय छल हुनक युगमे हिन्दुत्वक प्रति प्रेम। अथवा कहि सकैत छी जे विद्यापतिक युगमे हिन्दुत्वे राष्ट्रीयता छल, भारतीयता छल, भारत छल।[17] एही दृष्टिसँ किरणजी कविशेखर ज्योतिरीश्वर, कविकोकिल विद्यापति, गोविन्द दास आदिक अवदानक विवेचन कएने छथि। एही हेतु हिनक विवेचनमे नवता

15. काञ्चीनाथ झा 'किरण', समालोचना, हमर दृष्टिकोण, *इजोत,* 1960 ई.
16. *किरण निबन्धावली,* 1990, पृ.सं. 2 । 17. *ओएह* पृ.सं. 7

आ' विशेषताक दर्शन होइत अछि। किन्तु हिनकहि रचनाकेँ एक फरमामे कसि विराटताकेँ 'वाद'मे सीमाबद्ध करबाक प्रयास किछु गोटे करैत छथि। यद्यपि, कोन प्रकारक सामाजिक राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्यमे किरणजी *चन्द्रग्रहण* क रचना कएल तकर पर्याप्त संकेत पोथीमे अछि। रचनाक ऐतिहासिकतासँ विमुख भए अथवा रचनाक कालकेँ ध्यानमे बिना रखने अपन विचारधाराक अनुकूल विश्लेषित करब, किरणजीक नजरिमे पक्षधरता थिक। *चन्द्रग्रहणक* प्रसंग कुलानन्द मिश्र लिखल अछि - *हम तँ ओहि गुण्डाक मुसलमान होएब नितान्त संयोगक बात मानैत छी, आ' हम बूझैत छी जे एहने मानलासँ किरणजीक रचनाकारक प्रगतिशील सोचपर प्रश्न चिह्नकेँटारल जा सकैछ*[18]।

ककरो मानला वा नहि माललाक प्रश्न नहि अछि। प्रश्न अछि जे किरणजीक रचनामे व्यक्त विचारक विवेचन सहृदयतापूर्वक कएल जएबाक चाही, ने ओ एक भक्त जकाँ कएल जाए आ' ने अपन मतवादकेँ किरणजी पर आरोपित करैत कएल जाए। कहबाक तात्पर्य जे किरणजीक रचनामे व्यक्त विचार प्रगतिशील अछि, की प्रगति विरोधी, से टारबाक विषय नहि थिक। ओकर स्पष्ट विवेचन तटस्थतापूर्वक कएल जएबाक चाही। अपन धारणाक अनुकूल अथवा अपन फरमामे कसि देखबाक प्रवृत्तिक जकर किरणजी विरोधी छलाह, जकरा ओ पक्षधरता मानल अछि, कुलानन्द मिश्रक ई टारब सएह भेल।

नव स्थापना

मान्यता सामाजिक हो वा साहित्यिक, किरणजीक प्रतिपादन शैली आ' विचारमे अपन विशेषता अवश्य रहत। ओ विशेषता थिक पारम्परिक मान्यताक खण्डन कए, कृति विशेषक गुणवत्ता आ' महत्त्वक प्रसंग नव स्थापना। किरणीक दृष्टिमे कवि कोकिल विद्यापति शाक्त, शैव, वैष्णव कविए नहि छलाह, ओ मिथिलाक स्वाधीनताकामी सेनानीक अग्रिम पंक्तिक विजेता-योद्धा सेहो छलाह। मिथिला आक्रान्त छल। मिथिलाक सांस्कृतिक उत्कर्ष धूलि धूसरित होएबा पर छलैक। तेहन विकालमे विद्यापति अपन गीतक माध्यमसँ समाजकेँ जगौलनि एवं लोकक टुटैत मनोबलकेँ उठौलनि। विद्यापति अपन रसमय गीतक माध्यमेँ लोककेँ मनबैत रहलाह- यौवन अस्थिर अछि, संसार क्षणभंगुर अछि, अवसर फेर नहि अबैत छैक, कीर्ति टासँ लोक अमर होइत अछि, परवस जुनि होइत जाउ, आदि -

न थिर यौवन, न थिर जीव, न थिर एह संसार,
गेले अवसर पुनु न पाबिअ किरिति अमर सार।
आ' परवस जनु हो हमर पिआरा।[19]

प्राण पिआराक परवस होएब एवं *किरति अमर सार स्त्री'*क मोह जालमे फँसब नहि थिक। अपितु ओ थिक, मिथिलाकेँ पराधीनतासँ रक्षा करबाक लेल कान्तासम्मित उपदेश।

18. कुलानन्द मिश्र, *काञ्चीनाथ झा 'किरण'*, पृ.61, साहित्य अकादमी
19. काञ्चीनाथ झा 'किरण', गोविन्ददास, शृंगारिक कवि, विद्यापति नहि, *वैदेही,* जून, 1966

किरणजीक दोसर स्थापना थिक ज्योतिरीश्वर कृत *वर्णरत्नाकरकेँ* काव्य ग्रन्थ मानब। एहि मतक प्रतिपादन ओ अपन शोधप्रबन्ध *वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन* मे विस्तारसँ कएल अछि। सर्वप्रथम किरणजी ज्योतिरीश्वरक मूल, गोत्र पाँजि आ' श्रेणी फरिछौलनि अछि। यद्यपि, एहि फरिछौटक प्रतिपाद्य विषयसँ कोनो लागि नहि छैक। ओ लिखल अछि -

डा. श्री चटर्जीक भूमिकाञे तँ एहि ग्रन्थक पठन-पाठनक आधार रहल, तेँ सभ मानि लेलन्हि जे 'वर्णरत्नाकर' काव्य ग्रन्थ नहि, काव्योपयोगी ग्रन्थ थिक। डा. श्रीचटर्जीक ध्यान एहि दिशि नहि गेल जे वर्णरत्नाकर कोन समयमे लिखल गेल आ' ककरा निमित्त लिखल गेल। मैथिली भाषाक काव्य ओ संगीतक संग ओ सुपरिचित नहि छथि। 'स्व. बबुआ जी मिश्रो लोककाव्यसँ दूरे रहथि, तेँ ओलोकनि 'वर्णरत्नाकर'क गीतात्मकताकेँ नहि पकड़ि सकलाह।[20]

वर्णरत्नाकर केँ गद्य ग्रन्थक मान्यताक सन्दर्भमे विद्वान आ' भाषाशास्त्री सभक मत अछि जे ज्योतिरीश्वरसँ करीब हजार वर्ष पूर्वसँ पद्य/संगीतमय रचनाक परम्परा मिथिलामे छल। भाषाक विकसित स्थितिक द्योतक थिक गद्य-रचना। किरणजीक स्थापना मैथिलीक एहि विकासक स्थितिक खण्डन करैत अछि।

एहि प्रसंग रमानाथ झाक विचार द्रष्टव्य अछि। ओ लिखल अछि - *विशेष रूपसँ पद्यक प्रचार छल, जे तत्कालीन संगीतक आधार छल, परन्तु गद्यक सेहो रचना होइत छल, जे गाओल जाइत छल।*

वर्णरत्नाकर क प्रसंग किरणजीक स्पष्ट अभिमत अछि जे ओ मिथिलाक भूमिसँ स्वयंजात सलहेसक गीत जातिक वस्तु थिक। छन्दशास्त्रक अनुसार एहिमे कोनो छन्द नहि अछि। कविशेखर जानिएकेँ ओकर आश्रय नहि लेलनि। हुनक आगूमे तँ अनपढ़, निरक्षर समाज छल, ओकर रुचि, ओकर क्षमताकेँ देखि रचना करय बैसल छलाह। सलहेसक गीत केओ ककरो घोषबैत नहि छैक। एक मुखसँ दोसर मुखमे स्वतः प्रवाहित होइत, नहि जानि कहिआसँ प्रवहमान अछि [21] ।

वर्णरत्नाकर कोन लक्ष्यसँ लिखल गेल तकरा स्पष्ट करैत रमानाथ झा लिखने छथि - *एकर उद्देश्य वर्णनक चमत्कार प्रदर्शन छल तथा ओकर निर्माण भेल छल भाषाक कवि लोकनिक हेतु, भाट लोकनिक हेतु, कथक लोकनिक हेतु।*[22] एहि तथ्यकेँ स्पष्ट करैत ओ लिखैत छथि -

अवहट्ट रूपमे एहि भाषाक जे कोनो रचना उपलब्ध अछि से सब मुख्यतः पण्डितक रचना नहि, ब्राह्मणक रचना नहि, साधारण जनसमाजक साहित्य थिक, यथार्थमे लोकसाहित्य थिक, जकर रचना प्रायः डाक गोआर अथवा भुसुक राउत सदृश ब्राह्मणेत्तर जातिक कएल थिक।[23]

20. काञ्चीनाथ झा 'किरण', *वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन*, पृ. सं. 77
21. काञ्चीनाथ झा 'किरण', *वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन*, पृ. सं. 107
22. काञ्चीनाथ झा 'किरण', *वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन*, पृ. सं. 113
23. रमानाथ झा, *प्रबन्ध संग्रह*, पृ.सं. 41

किरणजीक ई स्थापना खण्डन-मण्डनक विषय भए सकैत अछि, मुदा ई धरि तँ निश्चित जे ओ शिष्ट साहित्यसँ पैघ स्थान लोकसाहित्यकेँ देल अछि।

आलोचनाक प्रेरणा

किरणजी लिखल अछि जे 1956 ई.क विद्यापति स्मृति महोत्सवक अवसर पर भट्टपुराक सभामे 'फकड़ा' शब्द हमर मस्तिष्कमे अशान्ति उत्पन्न करैत डेरा जमा लेलक (फकड़ा [24])। फकड़ा पर पं. गोविन्द झाक एक लेख[25] सेहो प्रकाशित अछि। एक शब्द मात्रक उच्चारणसँ मस्तिष्कमे अशान्ति उत्पन्न भए जाएब आ' ओहि पर अनुसन्धान कए विस्तारसँ विचार करैत अपन पक्ष प्रमाण सहित तर्कपूर्ण शैलीमे सुधी समाजक समक्ष राखब, असाधारण संवेदनशीलता एवं प्रतिभाक द्योतक थिक।

किन्तु, एकटा प्रश्न उठैत अछि, की कोनो व्यक्तिसँ सुनला पर वा अन्य व्यक्तिक लिखल पढ़ले पर एक संवेदनशील रचनाकारक भावयित्री वा सर्जनात्मक प्रतिभा जगैत छैक आ' ओ अपन मतक प्रतिपादन करैत अछि ? की एहन लेखन प्रतिक्रियावादिता नहि थिक ? की एक लेखकक सर्जनात्मक प्रतिभाकेँ ई सीमाबद्ध नहि कए दैत अछि ?

आलोचनाक कारण आ' प्रासंगिकता विभिन्न भए सकैछ अछि। एकहि स्थिति वा घटना पर संवेदनशील रचनाकारक प्रतिक्रिया विभिन्न प्रकारक भए सकैछ। ई रचनाकारक व्यक्तित्वमे अन्तरक कारणेँ सम्भव अछि। अपन हृदयक भाव ओ विचारकेँ व्यक्त करबाक हेतु सतत व्याकुल संवेदनशील लोक चाहैत अछि जे व्यक्त विचार एवं विषयक उपस्थापन यदि ओकर मनोनुकूल होइतैक तँ उत्तम। अन्यथा, ओहो ओहि प्रसंग अपन विचारक अभिव्यक्ति करैत अछि। एवंक्रमेँ एक विचारक स्थान पर भिन्न-भिन्न विचार लोकक समक्ष उपस्थित भेल करैत छैक। अपन अनुकूल विचारकेँ लोक मानि लैत अछि आ' जे नहि सोहाइत छैक, ताहि पर टीका टिप्पणी करब प्रारम्भ कए दैत अछि। आलोचना-प्रक्रियाकेँ एहि प्रकारसँ फरिछबैत प्रो.आनन्द मिश्रक कहब अछि जे पारिभाषिक शब्दावलीमे इएह थिक आलोचना-प्रत्यालोचना।[26]

अपन आलेखक आरम्भमे हम प्रत्यालोचक किरणजीक तीन रूपक चर्चा कएने छी, ओहिना साहित्यिक आलोचनाक कारण वा प्रेरणाक मोटा-मोटी तीन बिन्दु अछि -

1. व्यापक अनुभव आ' चिन्तनक आधारपर आलोचना - ई शास्त्रीय वा सैद्धान्तिक आलोचना थिक।
2. मूल कृतिक अवगाहनक उपरान्त कृति विशेष वा प्रवृत्ति विशेषक आलोचना, एवं
3. मूल कृतिक प्रसंग पूर्वमे व्यक्त अन्य व्यक्तिक विचारसँ सहमति-असहमतिजन्य आलोचना।

24. काञ्चीनाथ झा 'किरण', फकड़ा, *वैदेही,* 1961
25. गोविन्द झा, *रचना संग्रह,* भाग-1, *वैदेही समिति,* 1956 ई.
26. प्रो. आनन्द मिश्र, आलोचनाक प्रासंगिकता, *अखियासल,* डा. रमानन्द झा 'रमण', 1995 ई.

किरणजीक आलोचना साहित्यक अवलोकनसँ स्पष्ट अछि जे ओ रचनाक साक्षात् सम्पर्कसँ उद्भूत् आलोचना नहि थिक। ओ पहिल दू कोटिमे नहि अबैत अछि। ओ अन्य विद्वान द्वारा मैथिली भाषा-साहित्यक प्रसंग समय-समयपर व्यक्त विचारक प्रतिक्रयामे अछि। अतएव, किरणजीक आलोचना साहित्य, आलोचनाक आलोचना अर्थात् प्रत्यालोचना थिक। आलोचनाक आलोचना एक शाश्वत प्रक्रिया अछि। भाषा-साहित्ये नहि, समाजक जीवन्तताक लक्षण सेहो थिक। तेँ विचारनीय आ' महत्त्वपूर्ण ई अछि जे पूर्व प्रतिपादित विचारक खण्डनक क्रममे भेल स्थापना कतेक मूल्यवान अछि। वर्तमान समाजपर ओकर केहन प्रभाव पड़ैत छैक आ' भविष्यक लेल ओहिमे व्यक्त विचार कतेक उपादेय अछि।

किरणजीक व्यक्तित्वक विशेषता थिक सत्ताक विरोध आ' ओहि केन्द्र सभसँ सम्पोषित विचारक खण्डन। ओ व्यक्ति भाषा-साहित्यक शीर्षस्थ पुरुष होथि वा सामाजिक सत्ताक केन्द्र, कोनो अन्तर नहि रहैत छल। रमानाथ झाक विचारक प्रति किरणजीक तीव्र प्रतिक्रियाक सम्भवतः इएह कारण थिक। से ततेक तीव्र अछि जेना रमानाथ झासँ अकथ्य कथा कहा गेल होनि। तथापि, एहि प्रतिक्रिया सभकेँ ऋणात्मक कहब उपयुक्त नहि अछि, मैथिली भाषा-साहित्यक विकासक लेल सकारात्मक अछि, सएह मानब समीचीन होएत। एहि सन्दर्भमे किछु उदाहरण प्रस्तुत अछि।

रमानाथ झा[27] विद्यापतिक शिवसिंह विषयक अपन निबन्धमे विमान बिहारी मजुदारक मतक उल्लेख करैत मजुमदारक संग्रहक विद्यापतिक गीत तथा *कीर्तिपताका* सँ सिद्ध करैत छथि *- राजा शिव सिंह निश्चय विभूतिमान छलाह, श्रीमान छलाह, ऊर्जिततम छलाह। हुनका 'प्रत्यक्षदेव' कहब आर्य जातिक राजत्वभावनाक अनुकूल बुझबाक चाही, प्रतिकूल तँ कहिओ नहि, विरुद्ध ओ नहिञे भेल। ओ तखन एहि 'केलि कल्पतरु', 'रायनि मह रसमन्ता', 'सकल कला अवलम्ब', 'पुहुवी नव पंचवाने' शिवसिंहकेँ यदि कोनो देवताक अवतार कहबाक भेल, हुनक चरितक समता कोनहु देवताक लीलासँ देखेबाक भेल तँ कृष्णसँ विशेष संगत दोसर कोन देवता भए सकैत छलाह।*

रमानाथ झा अपन तर्क आ' तथ्यक आधार पर अपन विचार रखने छलाह। किन्तु, किरणजी साहित्येतर तर्क प्रस्तुत करैत लिखल। हिनक मत अछि जे हिन्दी जगतमे विद्यापतिक गीत समस्त मनुष्यक शृंगार-खेल छल। मैथिलीक पठन-पाठन आरम्भ भेलापर विद्यापतिक राधा-कृष्णकेँ महारानी लखिमा आ' राजा शिव सिंह सिद्ध कएल जाए लागल। एहि प्रसंग किरणजीक प्रतिक्रिया अछि जे जँ केओ महिसकेँ गदहा मानत तँ तकर आन की करतैक?

मैथिली आलोचक (रमानाथ झा) दोहरी गुलामीमे अभ्यस्त छलाह। एक मोगल-अङरेज, दोसर ओकर सभक एजेन्ट स्थानीय जमीन्दार। अङरेजक विरुद्ध जे स्वाधीनता संग्राम चलल से स्पर्शो धरि नहि कए सकलनि। देश स्वाधीनो भए गेल तथापि जमीन्दारेकेँ प्रभु मानैत अएलाह। आत्मा कछमछयबो नहि कएलनि, से पहिल स्वाधीनताक उद्घोष कएनिहार विद्यापतिक राधाकृष्णकेँ लखिमा शिवसिंह मानथि सेह स्वाभाविक।[28]

27. रमानाथ झा, *प्रबन्ध संग्रह,* विद्यापतिक शिवसिंह,, पृ.सं.126

28. काञ्चीनाथ झा 'किरण', विद्यापतिक राधाकृष्णक तीन रूप किएक?

अपन मतक प्रतिकूल विचार देखि किरणजी आवेगमे आबि एतेक तीव्र प्रतिक्रिया तँ व्यक्त कए देलनि, किन्तु दोसर ठाम ओ तकर अप्रत्यक्ष समर्थन करैत सेहो भेटैत छथि।

विद्यापतिक प्रसंग किरणजी लिखने छथि जे ओ प्रगतिशील विचारक छलाह। राधाकृष्णक प्रेम-वर्णन बड़ दूरदर्शितासँ कएलनि। मुदा, दृढ़ मूल संस्कारकेँ सर्वथा हटा नहि सकलाह। हुनक नायक-नायिका समुद्रक कमल जकाँ काल्पनिके छलनि। नहि तँ राजदरबारक ऊँच जातिक चित्र, हुनक मस्तिष्कमे मिथिलाक व्यापक रूप आबहि नहि देलकनि। संस्कृत-साहित्यक प्रभावसँ राजदरबारी हुनको संस्कार बनले रहि गेल। विद्यापतिक गीतक अनुसार मिथिलामे एकोटा कारी कन्या नहि छलि, सभ छलि गोरि, अतत्तह गोरि। गोरिए टा नहि। धनकानिओं खूब छलथिन, हुनक नायिका। ओ सोना-मणि-मुक्ताक गहनासँ छारल रहैत छलीह। चानन-कस्तुरी लेपल रहैत छलनि। मस्तो तेहन छलथिन, जेहन धनीक घरक खायल-पीयल देह। पढलि-लिखलि कामशास्त्रकेँ जननिहारि, गमैक लोककेँ ओ घृणाक दृष्टिसँ देखैत छथि। एहन सोनसनि गोरि, हीरा मोतीक हार पहिरने पढ़लि-लिखलि ह्ष्ट-पुष्ट कय टा माउगि छलि होएत मिथिलामे? विषयो एकेटा, स्त्री-पुरुषक आकर्षण सम्बन्धी। जेना हुनका समयमे पराधीनता, अत्याचार, अभाव आदि किछु छले नहि। जखन कि हुनका समयमे पाठानक आक्रमण वारम्वार भए रहल छल। देश अत्याचार आ' आतंकसँ पस्त छल होएत।[29] ई आश्चर्यक विषय थिक जे देश-प्रेमी संघर्षशील महाराज शिवसिंहक महामन्त्री विदेशी यवन-शासनक विरुद्ध सांस्कृतिक युद्धक नेताक रूपमे विद्यापतिक मूल्यांकन कएनिहार किरणजी कोना एहि रूपमे विद्यापतिक गीतमे निरूपित राधा कृष्णकेँ देखल अछि। रमानाथ झा द्वारा विद्यापतिक राधा-कृष्णकेँ राजा-रानी मानबाक प्रकारान्तरसँ किरणजी द्वारा ई स्वीकृतिए थिक।

किरणजीक आलोचना-साहित्य आलोचनाक आलोचना अर्थात् प्रत्यालोचना थिक। मुदा, एहिसँ ओकर महत्त्व कम नहि होइत छैक। ई समाजक वैचारिक गतिशीलताक प्रमाण थिक। प्रत्येक युगक अपन समस्या होइत छैक, आशा-आकांक्षा पृथक होइत छैक। ओकर समाधानक बाट पृथक् होइत छैक। एहि लेल पारम्परिक विचारधारा आ' मान्यतापर पुनर्विचार एवं मूल्यांकनक प्रयोजन होइत रहैत छैक। किरणजीक आलोचना साहित्यमे ई विशेषता सुलभ अछि। ओ नव दृष्टिसँ साहित्यकेँ देखबाक बोध जगबैत अछि। परवर्ती पीढ़ीक समक्ष वैचारिक विकल्पक द्वारि खोलैत अछि।

ई लोकतन्त्रक युग थिक। लोकक महत्ता सर्वोपरि अछि। लोक भेल सामान्यजन, सामान्यजन अर्थात् बहुसंख्यक। बहुसंख्यकक साहित्य, शिष्टजनक साहित्यसँ भिन्न अछि। किरणजी समाजक एहि स्थितिसँ पूर्णतः परिचित छलाह। ओ लोककेँ महत्त्व देल अछि। त्रासद जीवनसँ बाहर आबि सुख-समृद्धिमय जीवन-यापन लेल आत्मबलक संचार कराओल एवं मुक्ति-चेतनाकेँ जगेबाक प्रयास कएल। एहि लेल आवश्यक छल, जड़तापर प्रहार, सत्ताक केन्द्रपर प्रहार, सत्ताक समर्थक-घटकपर प्रहार एवं दलित-उपेक्षितकेँ अपन रचनाक केन्द्रमे राखि प्रतिष्ठित करब आ' महत्त्व देब। कहि सकैत छी, किरणजी प्रत्येक बिन्दुपर एक सचेत प्रतिपक्षीक रूपमे ठाढ़ भेल भेटैत छथि, जे समाजक सम्यक विकासक लेल सर्वथा आवश्यक अछि।

29. काञ्चीनाथ झा 'किरण', फकड़ा, *वैदेही,* 1961 एवं *किरण निबन्धावली*

काश्चीनाथ झा 'किरण'क साहित्य पर आ' विशेषतः हुनक आलोचना-साहित्यक प्रसंग लिखबाक क्रममे हमरा एकटा दुर्घटना मोन पड़ि गेल अछि। हिनक कथा साहित्यपर हमर एक लेख 'किरणजीक कथामे प्रगतिशीलता' छपल छल[30]। एही माध्यमेँ हुनक कथा 'धर्मरत्नाकर' क चर्च पहिले-पहिल भेल छलैक। हमर लेख पढ़ि ओ कहने छलाह -'स्वतन्त्र रूपसँ हमर कथा पर पहिले बेर विस्तारसँ लिखल गेल अछि।' तकर किछु समयक बाद पटनासँ प्रकाशित *माटिपानि* क प्रवेशांकमे किरणजीक भेंटवार्ता छपल छल। ओहिमे व्यक्त कतेको विचार इतिहास-सम्मत नहि छलैक। हमर पाठकीय प्रतिक्रिया प्रकाशित भेल।[31] डा. दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क पत्रमे[32] हमर विचारक समर्थन छल। हम तँ मात्र वैचारिक मत-भिन्नताक साहित्यिक अधिकारक उपयोग कएने छलहुँ। आ' ई कल्पनो नहि छल जे एक पाठकीय पत्र कोनो सापेक्षिक पाठकक भीतर भूचाल उठा सकैत अछि। हम ताकल जाए लागल छलहुँ। गाम अएलापर पूर्वहि जकाँ भेंट करए किरणजीक गामपर गेलहुँ।

27. रमानाथ झा, *प्रबन्ध संग्रह,* विद्यापतिक शिवसिंह,, पृ.सं.126

30. रमानन्द झा 'रमण', *मिथिला मिहिर,* 1977 ई.

31. *माटिपानि,* पटना अक्टूबर, 1983 ई. '...आदरणीय किरणजी *मोद* क किछु अंक देने छथि, ओहिमे सम्पादक मंडलक उल्लेख नहि छैक। प्रधान सम्पादक उपेन्द्र झा, एम.ए., एल.एल.बी. छथि। व्यवस्थापक एवं प्रकाशक काश्चीनाथ झा 'किरण' छथि। तेँ ई निर्मूल अछि जे *मोद* मे कोनो सम्पादक मण्डल छल तथा ओहिमे पं. आनन्द झा छलाह। ई भिन्न बात जे पं. आनन्द झाक रचना नियमित रूपेँ ओहिमे प्रकाशित होइत छल।

साक्षात्कारमे कहल गेल अछि जे लक्ष्मीपति सिंह आ' गंगापति सिंह हिन्दीमे लिखैत छलाह। किन्तु वस्तु-स्थिति ई अछि जे ओ लोकनि मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दीअहुमे लिखैत छलाह। केवल हिन्दीमे नहि। लगैछ एहि ऐतिहासिक तथ्यकेँ सायास छोड़ि देल गेल अछि। ओना गंगापति सिंह एवं लक्ष्मीपति सिंह एकबतारी नहि छथि, ने अवस्थामे आ' ने लेखनमे। गंगापति सिंहक कतेको महत्त्वपूर्ण रचना उपलब्ध अछि। ई रचना सभ मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि थिक। उदाहरण अछि हिनक विद्वतापूर्ण आलोचनात्मक निबन्ध 'मैथिली साहित्य'(*मिथिला मिहिर,* 28 जनबरी, 1916 ई.) जे क्रमशः चारि अंकमे प्रकाशित भेल अछि। *सुशीला* हिनक बहुचर्चित उपन्यास थिक। गंगापति सिंह आ' प्रो. हरिमोहन झा कतेको पाठ्यग्रन्थक संकलन-सम्पादन कएने छथि। कलकत्ता वि.वि.मे गंगापति सिंह मैथिलीक प्राध्यापक छलाह, से सर्वज्ञाते अछि। एहि प्रसंग कुमार गंगानन्द सिंह स्पष्टतः लिखने छथि - फलतः वि. वि. मे दू टा व्याख्याता नियुक्त भेलाह आ' मैथिलीकेँ मैट्रिकसँ एम.ए. परीक्षाधरि स्थान भेटलैक। ई व्याख्याता छलाह पं. खुद्दी झा एवं बाबू गंगापति सिंह साहेब। (अ. भा. प्राच्य विद्या सम्मेलन, चौदहम अधिवेशन, अध्यक्षीय भाषण)। आगू ओ लिखने छथि- 'पं. खुद्दी झाक बाद ज्योतिषाचार्य पं. बबुआजी मिश्र कलकत्ता वि.वि.मे मैथिलीक अध्यापन अत्यन्त योग्यतासँ कैलन्हि'। एहिसँ इहो निर्मूल भए जाइछ जे पं. काशीनाथझा (किरणजीक अग्रज) कलकत्ता वि.वि. मे मैथिलीक व्याख्याता छलाह। लक्ष्मीपति सिंहक अवदान ककरहुसँ नुकाएल नहि अछि। तखन हिन्दीमे लिखैत छलाह, से कहि कोन लक्ष्यक पूर्ति होइत अछि?'

32. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', *माटिपानि,* दिसम्बर,1983- *अपने लोकनिक साक्षात्कारक विवरण लिखबाक शैली आक्रामक होइत अछि। लगैत अछि जेना व्यक्ति विशेषसँ इन्टरभ्यू नहि लैत होइऐन्हि, परीक्षा लैत होइऐन्हि। उत्कृष्ट पत्रकारिता शिष्टताक परित्याग नहि करैत अछि आओर ने साहित्यकार केँ अपमानित कएलासँ कोनो साहित्य गौरवान्वित होइत अछि।*

ओ लोहनारोड स्टेशनक बाहर एक दोकानपर लोक सभसँ आवेष्ठित छलाह। देखितहिँ एक सज्जन तमतमाइत हमरा दिस लपकलाह आ' कहलनि- 'अहीं केँ तँ हम तकै छलहुँ'।

कहबाक तात्पर्य जे आलोचना वा प्रत्यालोचना अभिनन्दन पत्र नहि थिक, आवश्यक नहि छैक जे ओ प्रीतिकरे हो। ऐतिहासिक घटना ओ तथ्यक प्रस्तुति स्मरणसँ नहि, ऐतिहासिक साक्ष्यक आधारहि पर प्रभावकारी होइत अछि। व्यक्त विचारकेँ सप्रमाण खण्डित करब वा वैमत्य राखब अवमानना नहि थिक। हमरा जनैत स्थापित मान्यताक प्रतिपक्षमे सदिखन अपन विचार रखबामे प्रवीण आचार्य परमानन्दन शास्त्री आ' किरणजीसँ बढ़ि एहि युगमे प्रायः केओ तेसर नहि भेलाह अछि। एहि सन्दर्भमे किरणजी स्वयं लिखने छथि -

आलोचनाक बेरमे समान विचार रहने पक्षपातेक सम्भावना। दोमस तखन जतेक कवि ततेक आलोचक चाही, से असंगते टा नहि असम्भवो। सहृदयक अर्थ स्नेहशीलो रखने पक्षपाते होएत। समालोचककेँ निष्पक्ष तथा मोह-ममताहीन होएब आवश्यक।[33]

एहि बिन्दु पर किरणजीक विचार आचार्य रमानाथ झाक विचारसँ संयोगवश मेल खाइत अछि। रमानाथ झा [34] लिखैत छथि -

साहित्यक क्षेत्रमे पक्षपात हेय बूझल जाइत अछि। अपन मित्रक कृतिकेँ आकाश चढ़ाए देव, अपन विरोधीक कृतिकेँ गर्हित देखाएब साहित्यिक महामाप थिक। इएह थिक गोधियाँवादी आलोचना। गोधियाँवाद तत्काल अपन मित्र-मण्डलीमे जतेक प्रियपात्र आ' चर्चित भए जाथि। किन्तु कालान्तरमे जखन धूरामाटि बैसि जाइत छैक तँ वास्तविकताक परिचय सुधीपाठक समुदायकेँ स्वतः भए जाइत छनि। प्रायः एहने सन्दर्भमे आचार्य रमानाथ झा लिखने छल होएताह–*मैथिली जगतमे सम्प्रति की स्थिति अछि, से बजलेँ काल्हिए बिहाड़ि उठि जाएत।*

प्रत्यालोचक किरणजी अपन बात-विचारसँ, अपन लेखनसँ अपन व्यवहारसँ आ' समाजक परिप्रेक्षमे साहित्यक मूल्यांकनक बाट प्रशस्त करबामे सफल भेलाह अछि। एहिसँ साहित्यालोचनक एक नवदृष्टि विकसित भेल अछि। मैथिल समाज आ' मैथिली भाषा साहित्यक क्षेत्रमे ई हुनक महत्त्वपूर्ण अवदान थिक।



33. काश्चीनाथ झा 'किरण', समालोचना : हमर दृष्टिकोण, *इजोत,* 1960 ई.

34. रमानाथ झा, *इजोत,* 1960 ई.

अपेक्षितारय छोड़ि, उपेक्षितक आँखिसँ *कन्यादान* पढ़ल जाए

*कन्यादान*क समाप्ति एक प्रश्नसँ होइत अछि - एकर उत्तरदायी के[1]? अर्थात् बुच्चीदाइक चुप्पीसँ आहत सी. सी. मिश्रक जंगला बाटे कूदि राता-राति पड़ेबाक उत्तरदायी के ?

- बुच्ची दाइ?
- बुच्चीदाइक माए-बाप आ' सर कुटुम्ब?
- बुच्ची दाइक समाज?

जँ समाज दोषी तँ प्रश्न अछि, की हरिमोहन झा समाजक धुकधुकीकेँ सम्पूर्णतामे अकानि सकल छलाह? जाहि सामाजिक स्थितिक चित्रण ओ *कन्यादान* मे कएने छथि, से समकालीन समाजक वास्तविक स्थितिक चित्र प्रस्तुत करैत अछि? *कन्यादान* क प्रकाशनसँ पहिने प्रकाशित मैथिली उपन्यासमे चित्रित समाजसँ ओ आगुक डेग थिक कि पाठककेँ आर पाछु लए जाइत अछि? ओ जाहि कालक रचना थिक, वा हरिमोहन झा जाहि युगक उपजा थिकाह, हुनक शिक्षा-दीक्षा जाहि प्रकारेँ आ' जाहि प्रणालीमे भेल छलनि, ओहि समयमे हुनक समकालीन अन्य भारतीय भाषाक रचनाकार की लिखैत छलाह? की लिखि गेल छथि? ओहि तुलनामे हरिमोहन झाक उपन्यासमे चित्रित समाजक धुकधुकी कतेक व्यापक एवं स्पष्ट अछि? कतेक यथार्थ अछि? एहि सभ बिन्दु पर विचार अपेक्षिते नहि, आब आवश्यको अछि।

बंकिमचन्द्रकेँ रसोगुल्ला प्रिय छलनि कि मेघनाक हिलसा, फकीर मोहन सेनापति हाजिर जवाबी छलाह कि विहुँसि उत्तर देनिहार, कवीश्वर चन्दा झाक गला सुकोमल छलनि कि टाँस, से सुनौनिहार आब केओ नहि छथि। ओहिना जखन ओहन केओ नहि रहताह, जे हरिमोहन झाकेँ देखने-सुनने छथि, केवल हरिमोहन झाक रचना रहत, तखन हुनकहु अवदानक मूल्यांकनक एक मात्र आधार उपलब्ध रचने टा होएत। आ' ओहि आधारे पर हरिमोहन झाक साहित्यक मूल्यांकन आबए बाला युगक पाठक द्वारा कएल जाएत। अपन गुणबत्ताक आधारपर हुनक साहित्य कालजयी रचना बनि सकत। से तखनहि सम्भव अछि, जँ अपेक्षितारय छोड़ि उपेक्षितक आँखिसँ हरिमोहन झाक रचना पढ़ल जाए।

हरिमोहन झाक साहित्यक पाठकक तीन टा श्रेणी अछि -

1. जे हरिमोहन झाक साहित्य मनोरंजनक लेल पढैत अछि। समय काटब लक्ष्य रहैत छनि, मूल्यांकन करब नहि। साहित्यमे मनोरंजक तत्त्व रहब आवश्यक अछि, साहित्यक ओ विशेषता थिकैक। मुदा, सभ किछु ओएह नहि थिक।
2. दोसर वर्गक पाठक हरिमोहन झाक साहित्यकेँ *हनुमान चालीसा* बूझि पढ़ैत अछि। एहि वर्गमे बेसी ओहन लोक छथि, जनिका हरिमोहन झाक सान्निध्य प्राप्त छलनि वा हुनक अपेक्षितसँ अपेक्षितारय छनि।

3. तेसर वर्गक पाठक हरिमोहन झाक साहित्यकेँ समाज-कथा बूझि पढ़ैत अछि।

जेना रामकथाक भक्तकेँ मनोनुकूले टा पसीन पड़ैत छनि, कनिको प्रतिकूल विचार आ' तर्क पर तामस होइत छनि, ओहिना हरिमोहन झाक साहित्यकेँ समाज कथा जकाँ पढ़ि विवेचनपर *हनूमान चालीसा* बूझि पढ़निहार पाठककेँ तामस होइत छनि। एहि कोटिक पाठकमे पहिल स्थान पर छथि मोहन भारद्वाज। ओ तत्काल कहि देताह- *हरिमोहन झा सन नामी-गिरामी लेखकक प्रति ई उपेक्षा-भाव थिक, जनिका कन्यादान मे हास्य भेटैत छनि, ओ कुटिल मानसिकतासँ प्रेरित भए यथार्थक अपलाप करैत छथि। ओ स्वभावक सुधंगपनासँ शापग्रस्त छथि।*'[1] अर्थात् मोहन भारद्वाजक अनुसार हरिमोहनभक्त भए, हरिमोहन झाक साहित्यक पाठ, रामायण वा हनुमान चालीसा जकाँ कएल जाए। ओ साहित्य जकाँ नहि पढ़ल जाए। समाज-कथा जकाँ नहि गूनल जाए।

आइ धरि ई मानल जाइत रहल अछि जे बंगालमे नवजागरणक अग्रदूत भेलाह, राजा राममोहन राय आ' ईश्वरचन्द्र विद्यासागर। किन्तु, गत शताब्दीमे नवका पीढ़ीक इतिहासकार द्वारा भेल शोधकार्य, उपलब्ध सामग्री आ' इतिहासक कएल गेल व्याख्याक अनुसार हुनकालोकनिकेँ नवजागरणक अग्रदूत मानबा पर प्रश्न चेन्ह लागि गेल अछि।[2] किन्तु, बंगालमे एकरा एक सामान्य बात मानि मत-भिन्नता कहल गेल अछि। मैथिलीमे प्रतिकूल विचार लोककेँ अरघैत नहि छैक। हम जे कहैत छी, हम जे जनैत छी, सएह टा सत्य, सएह टा तर्कसंगत, सएह टा यथार्थ अछि।

हरिमोहन झाक बाल्यकालमे मिथिलाक सामान्य लोकक समक्ष तीनटा दारुण समस्या छलैक-

1. भूख, अभाव, रोग, शोक, शोषण, प्रतारण एवं उत्पीड़न,
2. राष्ट्रीय स्वाधीनता प्राप्तिक उत्कट अभिलाषा, तथा
3. विभिन्न प्रकारक सामाजिक दुर्गुणसँ मुक्तिक चिन्ता।

समाजक बेसी लोक भूखल, रोगग्रस्त एवं अभावग्रस्त छल। प्रतिवर्ष बाढ़िमे भसिआइत छल, अकाल आ' महामारीमे बिलाइत छल। प्राकृतिक प्रकोप भोगैत रहबाक लेल अभिशप्त छल। सुविधा-प्राप्त वर्गक लोकक समक्ष समाजक एहि वर्गक लोकक मोल नहि छलैक। ओकरा प्रति सहानुभूति नहि छलैक। समाजक एहि वर्गक लोकक व्यथा-कथा रचनाकारक संवेदनाकेँ भूस्पर्श नहि करैत छलनि, जखन कि ओकर परम्परा छलैक आ' कतेको वर्ष पूर्व कवीश्वर चन्दा झा लिखि गेल छलाह -

---

1. मोहन भारद्वाज, *एकल पाठ*, पृ.सं. 14
2. Satish Poduwal, Ed. *Refiguring Culture*, Sahitya Akademi, 1998 -The new historians (Ashok Sen, Ranjt Guha, and Sumit Sarkar) pointed out that the ideas of social reform held by these leaders (Raja Ram Mohun Roy and Ishwarchandra Vidyasagar) of "renaissance" did not move an inch beyond the confines of colonial economic and political conditions. Indeed, their attempts at reform were premised the supposedly progressive character of British rule in India; the limits of that colonial rule also set the limits to their agenda of social reform.The leaders of the "renaissance" did not raise any questions about the conditions of power in colonial India.On the contrary, they depend on that very power structure to bring about social progress. Their attempt was doomed to failure.

न्यायक भवन कचहरी नाम,
सब अन्याय भरल तेहिठाम,

मरीच भाव अन्न भेट, से जनेर गोट।
उपायहीन लोकके ँ सुखाय गेल भोट।[4]
आदि.

विदेशी शासकसँ अपन मातृभूमिकेँ मुक्त करबाक आन्दोलन क्रमशः तीव्र आ' व्यापक भए रहल छल। मिथिलांचलक लोक ओकर महत्त्वसँ अपरिचित नहि छलाह। स्वाधीनताकामी चेतना कूटि-कूटि कए भरल छलनि। तथापि, एहि बातक प्रयोजन छलैक जे रचनाकार अपन लेखनीसँ जन-जनमे राष्ट्रीय-चेतनाक आगि सुनगाबथि। स्वाधीनता संग्रामक आगिकेँ विदेशी सरकारक लेल पसाही बनाकेँ लहका देथि।

तेसर समस्या सेहो जड़िआएल छलैक। अशिक्षाक घोर अन्हरिया चारूकात व्याप्त छल। सामाजिक आडम्वर, धार्मिक अन्धविश्वास तथा वैवाहिक समस्यासँ स्थिति दयनीय भए गेल छलैक। राष्ट्रीय स्तरपर प्रवाहित सामाजिक मुक्तिधारा एवं सुधारवादी अन्दोलनक किरण मिथिलांचलहुमे फूटि, क्रमशः पसरि रहल छल। तेसर समस्याक प्रसंग लिखब अथवा बाजब बेसी सुविधाजनक छलैक। शासकक कोपभाजन बनबाक भय सेहो ओहिमे नहि छलैक। स्वाधीनता आन्दोलनक प्रसंग लिखबाक वा बजबाक स्पष्ट अर्थ होइत छल अङरेजी सरकारक आँखि पर चढ़ि जाएब, प्राप्त अथवा प्रत्याशित सुविधासँ वंचित भए जाएब। राष्ट्रीय मुक्तिधारामे अवगाहनक हेतु बेसी साहस, त्याग एवं धैर्यक अपेक्षा छलैक। ओहि समयक मैथिलीक अधिकांश रचनाकारक परिचय आ' सान्निध्य राजा-रजबाड़ा अथवा एहन लोक सभसँ छलनि जे अङरेजी शासन-व्यवस्थाक प्रियपात्र छलाह। अपन सामीप्य आ' सम्पर्कके ँ देखैत ओसभ कंटाह बाट नहि धएलनि। सामाजिक सुधारवादी धारा निरापद छल, ओहीमे नहाइत आ' चुभकैत रहि गेलाह। हरिमोहन झाक साहित्य पहिल आ' दोसर कोटिमे नहि, तेसर कोटिमे अबैत अछि। अर्थात् विभिन्न प्रकारक सामाजिक दुर्गुणसँ मुक्तिक चिन्तासँ प्रेरित भए हरिमोहन झा साहित्य-सर्जना शुरू कएल।

हरिमोहन झाक समयमे समाज अनेक प्रकारक समस्यासँ ग्रस्त छल। ओकर पोर-पोरमे दुर्गुण सभ सोहरल छलैक। ओहि सभ दुर्गुणक चर्च एहिठाम हमर प्रतिपाद्य नहि अछि। हमर प्रतिपाद्य केन्द्रित अछि, हरिमोहन झाक उपन्यासमे स्त्री-शिक्षाक स्थितिक विवेचन आ' सेहो हुनक पिता जनार्दन झा 'जनसीदन'क उपन्यासकेँ समक्ष रखैत। हरिमोहन झा नारी-जातिक समुचित अभ्युत्थानक मार्गमे पाँच टा महाव्याधि मानैत छथि। ओ पाँचो महाव्याधि[5] थिक -

---

4. *चन्द्रपद्यावली,*
5. हरिमोहन झा, *कन्यादान,* जनसीदन प्रकाशन

1. अँखि मुन्ना प्रथा,
2. अकाल प्रसव,
3. दिनचर्यामे अव्यवस्था,
4. व्यायामक अभाव, तथा
5. मिथ्या संकोच।

एहि सभ व्याधिक कारण अशिक्षा थिक। उन्नैसम शताब्दीक अन्तिम पहरमे राष्ट्रीय स्तर पर चलल सुधारवादी आन्दोलनक प्रभाव जखन मिथिला धरि पहुँचल तँ एहूठाम स्त्री-शिक्षाक पक्ष-विपक्षमे पर्याप्त विमर्श भेल। एकर पर्याप्त साक्ष्य ओहि कालक पत्र-पत्रिकामे अछि। किन्तु बहुलांश विचारक हुनकालोकनिके ँ स्कूल वा पाठशाला पठेबाक पक्षमे नहि छलाह। ई पक्ष ततेक सबल छलैक जे डा. सर गंगानाथ झा सन लोक आ' सेहो इलाहाबादमे रहैत अपन बेटी-पुतहुक लेल डेरहि पर पढ़ौनीक व्यवस्था कएलनि। तैओ आद्या झा (1923 - 28.08.1991) अपन अध्यवसाय आ' परिश्रमसँ 'पदमश्री'सँ अलंकृत भेनिहारि पहिल मैथिलानी बनि गेलीह।

मैथिलीक आरम्भिक उपन्यासकार जनार्दन झा 'जनसीदन', रासबिहारी लाल दास, पुण्यानन्द झा अपन-अपन उपन्यासमे समाजमे होइत परिवर्त्तनक स्वरके ँ चिन्हलनि। चीन्हि स्वर देलनि। हरिमोहन झाक पिता जनसीदन जीक यशोदा[6] ओतेक शिक्षित अछि जे रामायण बाँचि लैत अछि। रास बिहारी लाल दासक *सुमति*[7] बिलटल घरकेँ सम्हारि लैत अछि। आ' पुण्यानन्द झाक योगमाया[8] अपने तँ पढ़िते अछि, अपन सखी-बहिनपाकेँ सेहो पढ़बाक लेल प्रेरित करैत अछि। पुलकित मिश्रक *मोहिनी मोहनक* मोहिनी[9] पूर्वरागक स्थितिमे मोहनकेँ पत्र लिखि मनक भाव प्रकट करैत अछि। जनसीदनजीक दोसर उपन्यास *पुनर्विवाह* क नारी [10] पात्र पएरक आंगुरसँ माटि पर नाम लिखि लैत अछि। एहि प्रकारेँ ई ऐतिहासिक तथ्य थिक जे हरिमोहन झाक *कन्यादान* सँ पूर्वक मैथिली उपन्यासमे नारी-पात्र निरक्षर नहि, साक्षर छलीह। जे युग चेतनाक प्रभाव थिक। *कन्यादान* क कतेको वर्ष वाद आ' ओही उपन्याससँ प्रभावित-अनुप्राणित चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क लुखीदाइ [11] मुनचुन केँ वचन दैत छथि - *जतबा हम जनैत छी ततबा बहिनपोकेँ सिखा देबैक। ताहिसँ बेशी जिनगी भरि हिनका संग रहतनि, जेहन चाहताह, बना लेताह।'* किन्तु, समाजमे स्त्री-शिक्षाक प्रति उठल डेगक पदध्वनि *कन्यादान* मे हरिमोहन झा धरि नहि पहुँचि सकल। पूर्ववर्ती उपन्यासकार द्वारा उठौल गेल डेगसँ आगाँ नहि बढ़ल।

---

6. जनसीदन, *निर्दयीसासु* आ *पुनर्विवाह,* (सं.) रमानन्द झा 'रमण', हरिनन्दन सिंह स्मारक निधि
7. रासबिहारी लाल दास, *सुमति* (सं.) डा.रमानन्द झा 'रमण',
8. पुण्यानन्द झा, *मिथिला दर्पण (* सं.) डा.रमानन्द झा 'रमण'
9. पुलकित मिश्र, *मोहिनी मोहन,*
10. जनसीदन, *निर्दयीसासु* आ *पुनर्विवाह,* (सं.) रमानन्द झा 'रमण', हरिनन्दनसिंह स्मारक निधि,
11. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', *बिदागरी*

हरिमोहन झा *कन्यादान* क समर्पण समाजक किछु विशिष्ट वर्गकेँ कएने छथि। ओहिमे एक अछि, जे समाज सुखी दाम्पत्य जीवनक लेल पति-पत्नीक बौद्धिक धरातलक एकरूपता पर विचार नहि करैत अछि। चतुर्थीक राति पत्नी बुच्चीदाइसँ अपन एको प्रश्नक उत्तर नहि पाबि भग्नमनोरथ चण्डीचरण मिश्र पत्र लिखि रातिएमे पड़ा जाइत छथि। ओ लिखैत छथि -

जिस अभागिनी लड़की के साथ मेरा वैवाहिक नाटक किया गया है, उसको कह दीजिएगा कि वह अपने को कुमारी ही समझें और अबसे भी शिक्षित बनने की चेष्टा करे। जिस दिन वह अपने को मेरे योग्य बना सकेगी उसी दिन उसके साथ मेरा सच्चा विवाह होगा। यदि वह ऐसा करने मे असमर्थ हो तो उसीके अनुरूप किसी वर के हाथ सौंप दीजिएगा।[12]

स्पष्ट अछि, सभटा दोष बुच्ची दाइक थिकैक। ओएह नहि पढ़लक अछि। माए-बाप तँ ओकरा स्कूल पठबैत छलथिन, ओ भागि-भागि अबैत छलि।

सी. सी. मिश्रकेँ मिथिलाक समाजक कोनो परिचय नहि छनि। अतेक धरि जे भाषा, जे लोककेँ जोड़ैत छैक, से मैथिली ओ बाजि नहि सकैत छथि। एहन पात्रक सर्जना के कएलक? बुच्ची दाइ? ई सत्य जे मिथिलामे स्त्री-शिक्षाक घोर अभाव छल। ई कल्पना नहि यथार्थ छलैक। सी. सी. मिश्र अपढ़ नहि छलाह, बनारसमे पढ़ैत छलाह। ओ एहि यथार्थकेँ बिना बुझने-सुझने की सोचि परम विदुषी सर्वकला निपुण, विश्वक अद्यतन राजनीतिक गतिविधिसँ पूर्णतः परिचित, प्रगल्भा पत्नीक रूप गढ़ि विवाहक हेतु प्रस्थान कए गेलाह? पात्रक चरित्रगत ई दुर्बलता थिक। एकरा कहबैक मैन्यूफैकचरिंग डिफेक्ट।

एहि सन्दर्भमे हम *कन्यादान*सँ कतेको वर्ष पहिने प्रकाशित *मिथिला दर्पण*क योगानन्दक विचार, जे अङरेजी माध्यमसँ वनारसहिमे शिक्षा ग्रहण करैत अछि, प्रस्तुत करब। संयोग एहन जे सी. सी. मिश्र सेहो बनारसमे पढ़ैत छथि। अर्थात् जाहि ठामसँ पुण्यानन्द झा अपन उपन्यासक योगमायाक लेल वर अनैत छथि, ओही ठामसँ हरिमोहन झा बुचियाक लेल सी. सी. मिश्रकेँ ताकि आनल अछि। ई एक विलक्षण साम्य दूनू उपन्यासमे अछि। साम्य तँ औरो अछि, मुदा से सम्प्रति प्रतिपाद्य नहि।

मिथिलामे स्त्री-शिक्षाक की हाल छल, तकर पूर्ण परिचय पुण्यानन्द झाकेँ छलनि। से विवाहक प्रस्ताव पर योगानन्दक विचारसँ स्पष्ट होइत अछि। योगानन्द विचारैत अछि - *विदुषी कन्या की कतहुसँ खसैत छैक, बनौनहि बनैत छैक। उचित थिक जे विवाह करी। एखन पढ़ैबहुक समय अछि।*[13] योगानन्द योगमायाक रूप-गुण, शिक्षा, धूआ-काठी आदिक प्रसंग आश्वस्त भेलहि पर विवाहक हेतु सहमत भेल छथि। ई पूर्णतः व्यावहारिक अछि। किन्तु सी.सी मिश्र अन्यदेशीय बालाक रूप-गुण आ' चापल्यक आदर्श-छवि मनमे राखि अपरिचित समाजमे आएल छलाह। से पूरा नहि भेला पर विवाहोपरान्त अपन नव-विवाहिताकेँ त्यागि एवं श्वसुर-कुलकेँ समाजक समक्ष नत-सिर कए भागि जाइत छथि। इहो थिकैक मैन्यूफैकचरिंग डिफेक्ट। योगमाया दशौतिक प्रात हाथमे

12. हरिमोहन झा, *कन्यादान,* जनसीदन प्रकाशन,

13. पुण्यानन्द झा, *मिथिला दर्पण,* (सं.) डा.रमानन्द झा'रमण', 2003

सिन्दुर लगा पाँचो आंगुर वरक चद्दरिपर पीठ दिश उगाय, मैथिल संस्कृतिक अनुकूल विधि-व्यवहारसँ मोम बनल योगानन्दकेँ विदा करैत अछि। किन्तु, मिथिलाक संस्कृति आ' विधि-व्यवहारसँ सर्वथा अपरिचित सी. सी. मिश्र पड़ा जाइत छथि। एहिठाम एकटा प्रश्न उठैत अछि, अबोधक अपंगताक दोषी अबोध स्वयं की ओकर माए-बाप, सर-कुटुम्ब आ' समाज? अपंगताक हेतु अपंगकेँ लांछित करब, दूसब आ' हँसीक पात्र बनाएब मानवीय गरिमाक अनुकूल कि प्रतिकूल? योगमाया पढ़लि लिखल अछि तँ अपन पिताक खातिर। *मिथिला दर्पण* क एक अभिशप्त नारी-पात्र कहैत अछि -

आहि! हमरालोकनिक कोन दोष? इहो तँ माइए बापक दोष। योगकेँ पिता पढ़ौलथिन्ह। तेँ, योग पढ़लन्हि, हमरालोकनिकेँ लोक कलंकी...........इः हमरहु सभके क्यो पढ़बिते? [14]

स्त्री समाजक भीतर जे औनाहटि छलैक, अपन त्रासद स्थितिसँ उबरबाक जे कछमछी छलैक आ' जे तरेतर भीजबैत सतरंजीक पानि जकाँ तत्कालीन समाजमे पसरि रहल छल, तकर अनुगंज *कन्यादान* मे नहि अछि।

कन्यादान क लेखनक समय प्रो. हरिमोहन झाक आदर्श, पिता जनसीदन जीक नारी-शिक्षाक प्रसंग विचार आ' साहित्य छल। जनसीदन जीक लेल नारी शिक्षाक अर्थ छल साक्षर करब। जाहिसँ ओ अपन नाम गाम लिखि सकय, बेर पर रामायण बाँचि सकय। पतिकेँ दू आखर लिखि पठाए सकए, बस! समय-समय पर पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित जनसीदनक लेख आदि तथा उपन्यास *निर्दयी सासु* एवं *पुनर्विवाह* एकर प्रमाण अछि। प्रो. हरिमोहन झा, यद्यपि अन्य जातिमे प्रचलित स्त्री-शिक्षाक स्थितिसँ अवगत छलाह, स्कूल-कालेजमे पढ़ैत देखैत छलाह, पाश्चात्य रूप परिधानमे फटाफट हिन्दी आ' अङरेजी बजैत सुनि मुग्ध होइत छलाह। तथापि, ओ एहन पात्रक सर्जना कएल जे निरक्षर अछि। जखन कि जनसीदन जी साक्षर नारी-पात्रक सर्जना कए समाजक समक्ष अनुकरणक लेल एक आदर्श प्रस्तुत कएलनि। आ' हरिमोहन झाक आदर्श भेलाह निरपराध पत्नीकेँ छोड़ि पड़ायबाला सी. सी. मिश्र। कहल जाइत छैक फ्रांसीसी क्रान्तिक पृष्ठभूमि ओहि देशक साहित्यकार तैआर कएने छलाह। से जँ सी. सी. मिश्रक व्यवहारसँ प्रभावित भए मिथिलाक किछुओ नवयुवक सामाजिक यथार्थकेँ बिना जनने हुनक पदचिह्न पर डेग उठौने रहितथि तँ अनुमान कए सकैत छी, कतेक पैघ सामाजिक अनर्थ भए गेल रहैत।

जनसीदनजी हरिसिंहदेवी व्यवस्थाक पक्षधर नहि छलाह। किन्तु, ओ मैथिल समाजमे प्रचलित वैवाहिक विधि-व्यवहारक उपेक्षा नहि कएल। ओ एहि सामाजिक यथार्थसँ पूर्णतः भिज्ञ छलाह जे सम्बन्ध समान स्तरक लोक वा परिवारमे होएब नीक। दू अपरिचित प्राणीकेँ एक सूत्रमे बान्हि रखबामे धन-सम्पतिसँ बेसी भाषा एवं संस्कृतिक महत्त्व छैक। जनसीदनजीक *निर्दयीसासु* क ज्योतिषी वरक कुल-मूलक परिचय लए, वरक बाप-पित्तीक स्वीकृति एवं पंजीकारक सम्मतिसँ अपन साक्षर कन्याक कथा स्थिर करैत छथि। किन्तु *कन्यादान*क बुचिआ लेल सी. सी. मिश्र सन छिन्नमूल वर ताकल जाइत अछि। जकरा ने अपन कुल-खूँटमे केओ छैक आ' ने मिथिलाक भाषा, संस्कृति एवं विधि-व्यवहारक कनिको छूति छैक। *कन्यादान निर्दयी सासु* सँ कमसँ कम पन्द्रह वर्ष

14. पुण्यानन्द झा, *मिथिला दर्पण,* (सं). डा. रमानन्द झा'रमण', 2003,

बाद लिखल गेल होएत। एहि पन्द्रह वर्षमे शिक्षाक विकास आ' प्रचार-प्रसार अवश्य भेल। सामाजिक जीवनमे परिवर्त्तन आएल। किन्तु बुचिआ लेल धनसन। कहि सकैत छी, सामाजिक जीवनमे होइत परिवर्त्तनक धुक-धुकीकेँ जतेक जनसीदनजीक उपन्यास सभमे अकानल गेल अछि, *कन्यादान* मे नहि अछि। हरिमोहन झासँ समाजक ई अपेक्षा छलैक जे *निर्दयी सासु*क यशोदा, *कन्यादान* क बुचिआक माध्यमसँ किछु बाजैत। मुदा, ओ पटिआ जकाँ नूरिआएल रहि गेल।

अन्तमे, एक टा आर विचारनीय बात। बुचिआ पटिआ जकाँ नूरिआएल किएक रहि गेल? की तकर कारण ओकर वयस छलैक? की तकर कारण ओकर अशिक्षा छलैक? ध्यान देबाक थिक जे सम्पूर्ण उपन्यासमे सी. सी. मिश्र हिन्दी छोड़ि आन कोनो भाषा नहि बजैत छथि। बुचिआ एक तँ पढ़लि लिखल नहि अछि, छेटगर सेहो नहि अछि। गामसँ कहिओ बाहर गेल छल, तकरो कोनो चर्च उपन्यासमे नहि अछि। ओ इहो नहि जनैत छल होएत जे घर-आङनमे ओ जे भाषा बजैत अछि, ताहिसँ भिन्न कोनो भाषा होइतो छैक। एक अबोध ग्रामीणबालासँ सी.सी मिश्र धराधर अपरिचित भाषा, हिन्दीमे प्रश्न पुछैत गेलाह। भाषा लोकक मनोभावक अभिव्यक्ति थिक। भाषहिसँ दूरत्व बढ़ैत छैक वा अपनत्व प्रगाढ़ होइत छैक। एहन अपनत्वहीन एवं अभावात्मक स्थितिमे चुप्पीक अतिरिक्त बुचिआक समक्ष दोसर कोन विकल्प छल होएतैक ?

एकर उत्तरदायी के ?

2008



अनालोचित कवि लक्ष्मीपति सिंह

लक्ष्मीपति सिंहक (1907-1979) साहित्य-सर्जनाक प्रसंग श्यामानन्द झा[1] लिखने छथि जे स्कूल जीवनमे केवल हिन्दीमे रुचि छलनि। कॉलेज अएला पर हिन्दी, अङरेजी आ' संस्कृतमे रुचि भेलनि। कॉलेज मैगजिनमे अङरेजीमे रचना प्रकाशित होइत छलनि। संस्कृतमे श्लोक बनबैत छलाह। कालेज जीवनमे *माया* नामक एक विशाल उपन्यास लिखल। संस्कृतक ग्रन्थ *स्वप्नवासवदत्तक* हिन्दी नाट्य रूपान्तरण कएल। *सोहराव वध'* नामक हिन्दी खण्ड काव्य आदि रचल। किन्तु बी.ए. पास कएलाक बाद अङरेजीमे लिखबासँ किछु विरुचि भए गेलनि। ओकर स्थान मैथिली लए लेलक। 1929 ई. सँ हिन्दी एवं मैथिलीमे कथा, कविता एवं विवेचनात्मक रचना दरभंगाराजसँ संचालित *मिथिला मिहिर* नामक हिन्दी-मैथिली साप्ताहिकमे सैकड़हुक संख्यामे (1939 ई. धरि) प्रकाशित भेलनि।

लक्ष्मीपति सिंहक पिता हिमपति सिंह लिखित एक कथा 'पद्‌मिनी' *मिथिला मिहिर*(09 दिसम्बर, 1933 ई.) मे प्रकाशित अछि। ओहिमे लक्ष्मीपति सिंहक फुटकर रचना संग्रह *कविताकुञ्ज* सँ एक कविता 'गोराक मृत्यु पर बादलक उक्ति' उद्धृत छैक। आनोठाम प्रकाशित कविताक संग स्रोतक रूपमे *कविताकुञ्ज क* उल्लेख भेटल अछि। किन्तु ओ प्रकाशित नहि भए सकल। एहि प्रकारेँ लक्ष्मीपति सिंहक समस्त कविता पत्र-पत्रिकामे छिड़िआएल अछि। ओहिमेसँ किछु मात्रे झोड़ि सकलहुँ आ' तेँ ई जनितहुँ जे हमर अध्ययनक आधार हुनक विशाल काव्य-संसार नहि भए सकल, ई मात्र एक विनम्र प्रयास थिक।

काव्य-सर्जनाक क्षेत्रमे लक्ष्मीपति सिंहक प्रवेशक समय मैथिली कविताक मूलतः दू धारा छलैक– कविताक राग-ताल निबद्धता एवं लोकानुरंजनक हेतु कविताक गायन। कवि लोकनिमे पौराणिक कथा वा आख्यान-उपाख्यानक आधार पर कविता लिखबाक प्रति विशेष आकर्षण रहैत छलनि। लक्ष्मीपति सिंह अपवाद नहि छलाह। हुनक स्वीकारोक्ति अछि जे प्रारम्भमे नओ सूत्र योजना (मैथिल महासभा द्वारा प्रस्तावित) एवं पौराणिक कथाक आधार पर कविता लिखल, किन्तु कालक्रमेँ एवं स्थिति विशेषक अनुरोधसँ मिथिला, मैथिल एवं मैथिली सम्बन्धी तथा कालान्तरमे ओहि विषय सूचीक अतिरिक्त अन्यान्यहु विषय पर मैथिलीमे रचना कएल।[2] *'सत्यव्रतोपाख्यान* (*मिथिला मिहिर,* 1934 ई.) खण्डकाव्य एही परम्पराक रचना थिक। *पुरुष परीक्षा* क एक कथाक आधार पर सृजित *सुबुद्धि कथा*[3] एही कोटिमे अबैत अछि।

लक्ष्मीपति सिंह लिखने छथि जे देशक राजनीतिसँ वैचारिक वा भावनात्मक रूपसँ कतहुसँ अपनाकेँ ओ नहि जोड़लनि आ' ने कोनहु राजनीतिक नेतासँ राजनीतिक सम्बन्धे स्थापित कएल। यद्यपि, हुनक परिवारक एक सदस्य बाबू जानकीनन्दन सिंह स्वतन्त्रता सेनानीक संग मिथिला राज्य निर्माणक अग्रगणी आन्दोलनकर्ता छलाह। किन्तु, हिनक कविता वा अन्ये विधाक उपलब्ध रचना,

1. श्यामानन्द झा, *चारु चरितमाला,* (सं.) लक्ष्मीपति सिंह, 1939, अजमेर
2. लक्ष्मीपति सिंह, हमर साहित्यिक यात्रा, *मिथिला दर्शन,* विशेषांक, 1960
3. लक्ष्मीपति सिंह, सुबुद्धि कथा," *मैथिल बन्धु,* अजमेर, मार्च, 1961

प्रबल राष्ट्रीय चेतनाक उद्घाटन करैत अछि। हमरा जनैत तकर कारण रहल होएत सामाजिक जीवनक विविध स्तरपर लक्ष्मीपति सिंहक सक्रियता, अध्ययनशीलता एवं राष्ट्रीय मंच पर घटैत घटनाक प्रति संवेदनशीलता। ई ध्यान देबाक थिक जे लक्ष्मीपति सिंहक कालेज जीवन मुजफ्फरपुरमे व्यतीत भेल छलनि, जे खुदीराम बोसक बलिदानसँ स्वाधीनताकामी चेतनाक केन्द्र बनल छल। हुनक समतुरिया सरदार भगत सिंह (28 सितम्बर, 1907–23 मार्च, 1931)क फाँसीसँ सम्पूर्ण युवाभारत दलमलित भए गेल छलैक। भारतीय राजनीतिक क्षितिजपर महात्मा गाँधीक आगमनक संग युवावर्ग तँ सहजहि, सम्पूर्ण चेतन भारतीय समाज कमोबेश प्रभावित होअए लागल। भारतक राजनीतिक इतिहासमे वर्ष 1930 अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सेहो अछि। एही वर्ष गणतन्त्र दिवसक रूपमे 26 जनवरी घोषित भेल। नमक सत्याग्रह एवं सविनय अवज्ञा आन्दोलन आदि चलल। एहि घटना सभसँ स्वाधीनता आन्दोलनमे आओरो प्रखरता आएल। भारतवासीक संलग्नता द्विगुणित होइत गेल। भारतीय संस्कृति एवं इतिहासक छात्र लक्ष्मीपति सिंह वैदिक सन्देश 'आउ हम सब मिलि स्वराज्यक यत्न करी'क अर्थ बुझैत छलाह आ' राष्ट्रीय स्तरपर घटैत घटनाकेँ गुनैत छलाह। ओही युवामानसक अभिव्यक्ति लक्ष्मीपति सिंहक पहिल उपलब्ध कविता 'गोराक मृत्यु पर बादलक उक्ति'मे भेल अछि। बादल महारानी पद्मिनीसँ कहैत अछि -

वीर पड़ल चिर शयन मध्य
छथि अन्यायी अरि के दलमे
ऐ नरसिंह पराक्रम
रणमे अपन लखाय
मानव लीला संवरण
कयलन्हि वीर कहाय।[4]

1935 मे गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट पारित भेल छल। एहिसँ किछु संवैधानिक सुधार भेलैक। विधायिका एवं स्थानीय निकायक शासन-व्यवस्थामे भारतीय नागरिकक सहभागिताक हेतु पहिल बेर निर्वाचन भेलैक। पूर्ण स्वाधीनता प्राप्तिक दिशामे ई सुधार एक सफल धाप मानल जाए लागल छल। ओही उल्लासमय मानसिकताक कविता थिक 'शरदागम'। एहिमे कवि प्राकृतिक उपादानक प्रतीकात्मक प्रयोग अभिप्रेतक प्रभावक अभिव्यक्तिक लेल कएल अछि -

पावस कयल पयान, निरखि शरदागम
नभ थल बनल सुभव्य पथिक मन भावन।।
दिनकर प्रिय अति भेल, विमल शशि सुन्दर।
मनु भए गेल पराजित विवश पुरन्दर।।[5]

प्रत्यक्षतः प्रकृति वर्णन लगैत एहि कविताक पंक्ति '*पावस कएल पयान निरखि शरदागम, मनु भए गेल पराजित, विवश पुरन्दर, नूतन बरख सुधवाहक, खञ्जन आएल* एवं *जग भरि शश्य सुशोभित, सुरपुर जीतल* आदि मे 'पावस' (अङरेजी शासन व्यवस्था), 'शरदागम' (भदबारिक समाप्ति पर लोकक उल्लास) 'विवश पुरन्दर' (जन आक्रोशक समक्ष इन्द्र, अङरेज सरकारक पराजय), एवं नूतन बरख, खञ्जन, आदि ओहि कालक भारतीय जनमानसक आशा आ' उल्लासक प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति थिक। देशक तत्कालीन परिस्थितिकेँ ध्यानमे रखलासँ 'शरदागम'क व्यंग्यार्थ स्पष्ट भए जाइछ।

4. हिमपति सिंह, 'पद्मिनी', *मिथिला मिहिर,* 09 दिसम्बर, 1933 ई.

5. लक्ष्मीपति सिंह, शरदागम, *भारती,* मैथिली मासिक, दड़िभङ्गा, नवम्बर, 1937

मिथिलाक सुदीर्घ समन्वयवादी सांस्कृतिक परम्परामे लक्ष्मीपति सिंहकेँ प्रगाढ़ आस्था छलनि। ओहिमे ओ अमित ऊर्जा-स्रोत देखैत छलाह। किन्तु पाश्चात्य सभ्यताक चाक-चिक्यमे भारतवासीक अपन संस्कृतिक प्रति अनुरक्ति भांसय लागल छल। विराट सांस्कृतिक मूल्यमे ह्राससँ व्यथित लक्ष्मीपति सिंहक अनेक कवितामे प्राकृतिक उपादानक माध्यमेँ एहि विषयक चिन्ता व्यक्त भेल अछि। 'पछबा' शीर्षक कविताक किछु पंक्ति प्रस्तुत अछि -

आएल पछवा सू-सू बहैत।
धुराक संग हू-हू करैत।
फागुनसँ आगू भए बढ़ैछ,
बनि दैत चैत मे जनु अबैछ।
.....
सभ आमक टिकुला झाँटि गेल,
पाकल खाइक सब आशा गेल।
कइएक गाम सुड्डाह लेल,
हिनकहि अछि पूरक नोंत देल।।[6]

चैत-बैसाखमे उठैत पछबा अपना संग नाना प्रकारक रोग-व्याधि अनैत अछि। अँखि उट्ठी नेनहिकेँ नहि, समर्थहुकेँ कुहरा दैत अछि। अगिलग्गीसँ टोलक टोल सुड्डाह होइत अछि। आमक टुकिला झाड़ि आम चोभबाक लोकक आशापर तुषारपात कए दैत अछि। ई पछबा पाश्चात्य भाषा आ' संस्कृतिक धुक्कड़ थिक जकर प्रभावमे पड़ि भारतीय भाषा एवं संस्कृति रोगग्रस्त भए रहल अछि। आमक टिकुलाक झड़ब थिक, भारतीय भाषाक शब्द-सम्पदाक विलुप्ति। सभ प्रकारक सरकारी संरक्षण आ' सुविधा रहितहुँ व्यावहारिक जीवनमे भारतीय भाषाक प्रयोगक प्रति युवावर्गक अभिरुचिमे कमी एही पछबाक प्रभाव थिक। ओहिना पाश्चात्य प्रवाहमे भारतीय संस्कृतिक तत्त्व सभ अलोपित भए रहल अछि। सांस्कृतिक उपनिवेशवादक प्रतिनिधिक रूपमे नोंत पूरबाक भार एही पछबाकेँ भेटलैक अछि। 'नोंत पूरब' विशेष सांस्कृतिक सन्दर्भमे प्रयोग होइत अछि। सांस्कृतिक सन्दर्भक शब्दक प्रयोग, लक्ष्मीपति सिंहक काव्य-भाषाक विलक्षणता थिक।

स्वाधीनता प्राप्तिक एक सप्ताहक अभ्यन्तरहि लक्ष्मीपति सिंहक *श्रद्धाञ्जलि* शीर्षक कविता प्रकाशित भेल छल, जे निम्न प्रकारेँ अछि -

विजन विपिन घन गरजल कुहु निशि काटल हे

6. लक्ष्मीपति सिंह, पछबा, *मैथिल बन्धु,* वर्ष 18, मइ जून 1957 ई.

साधल प्रलय समाधि हलाहल चाटल हे
जननि रुधिर बलि देल धरणि तल पाटल हे
कलिक कुटिल कनसार हवन हवि बाँटल हे
बनि परतन्त्र स्वतन्त्रक मन्त्र उचारल हे
न्यास कएल अनुलोम विलोम विचारल हे
वामन बलि भृगु नीति त्रिविध गति धारल हे
मिथिलहु जननिक सङ्ग नियति अबधारल हे।
बीतल सविध अमाव्रत पुनि पह फाटल हे
टुटइत जननिक पाश तदपि तन काटल हे
लक्ष्मीपतिक गहन गति! मलहम साटल हे
छुटत जननि ब्रण व्याधि, जुटत तन काटल हे। [7]

प्रस्तुत कविताक शब्द-विन्यास गस्सल एवं सन्तुलित अछि। स्वाधीनता प्राप्तिक उपरान्त भारतक लोक-भावनाक एहिमे प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति अछि, जेना - स्वतन्त्रता प्राप्तिसँ भारतवासीमे प्रसन्नताक लहरिक उठब, (*बीतल सविध अमाव्रत पुनि पह फाटल हे*) एवं असंख्य स्वतन्त्रता सेनानीक यातना (*विपिन घन गरजल कुहु निशि काटल हे, साधल प्रलय समाधि हलाहल चाटल हे, जननि रुधिर बलि देल धरणि तल पाटल हे,*) आदि। यद्यपि, अङरेज सरकार एकसँ एक कठोर दण्डविधान बनाए एवं नाना प्रकारक षड्यन्त्र रचि ओ प्रलोभन दए, भारतवासीकेँ आतंकित एवं विरत करबाक चालि चलैत छल, मुदा सफलता नहि भेटलैक (*बनि परतन्त्र, स्वतन्त्रक मन्त्र उचारल हे*)। ओहि अभियानमे मिथिला पाछू नहि छलैक (*मिथिलहु जननिक सङ्ग नियति अबधारल हे*)। स्वतन्त्रता प्राप्तिक आनन्द एवं उल्लासक क्षणमे एकटा दुखद घटना घटल, देशक विभाजन। सम्पूर्ण भारत एहि विभाजनसँ पीड़ित छल। चतुर्दिक् गम्भीर विषाद पसरि गेल छलैक (*टुटइत जननिक पाश तदपि तन काटल हे*), तथापि एकटा आशा छलैक जे कटल अंग जुटि जाएत (*छुटत जननि ब्रण व्याधि, जुटत तन काटल हे*।) कविक ई श्रद्धाञ्जलि कोनो एक व्यक्तिक प्रति नहि, अपितु ओहि समस्त स्वतन्त्रता सेनानीक प्रति अछि जे मातृभूमिक बलिवेदी पर अपन सर्वस्व अर्पित कए देने छलाह। निश्चित रूपसँ ई कविक उदात्त राष्ट्रीय चेतनाक संग संवेदनशीलताक परिचायक थिक। लक्ष्मीपति सिंहक ई उदात्त राष्ट्रीय चेतना *श्रीचामुण्डा* एवं *पञ्चवटी* उपन्यासमे सेहो प्रखर रूपमे अछि। अन्तर मात्र छैक जे *श्रीचामुण्डा* मे सांस्कृतिक-ऐतिहासिक चेतना अछि एवं *पञ्चवटी* मे स्वाधीनता आन्दोलनक अनुगुंज।

लक्ष्मीपति सिंहक लेल कविता मनोरंजनक साधन नहि, पाठक-श्रोताक मानसिक उन्नयनक एक प्रबल कारक छल। कविसँ हुनक अपेक्षा अछि जे कालक पग-चापकेँ अकानि एहन काव्य सर्जना करथि जाहिसँ विषमहु परिस्थिति, लोकक अनुकूल भए जाए। ओ लिखल अछि -

उठू कवि, बैसल छी की मौन अहाँ?
लखियौ विप्लव जग बीच।

7. लक्ष्मीपति सिंह, मिथिला मिहिर, 21अगस्त, 1947

उठू दावानल ससरल आबि रहल,
अछि दूरहि आब लगीच। [8]

'भारत छोड़ो आन्दोलन'(1942 ई.)क परिप्रेक्षमे लिखित एहि कवितामे उद्बोधित करैत लिखल अछि - *जानि कर्त्तव्य उठू कविराज! कलमकेँ दय तरुआरिक धार*। महाकवि यात्री 'कविक स्वप्न' कवितामे कविकेँ ललकारल - *तोहर मोन दौगैत छह कोठाक दिस* आ' लक्ष्मीपति सिंह लिखल - *तजू आबहु कवि! स्वप्नक राज रचाओल बहुत नायिका भेद। सुनाओल बहुतो रसमय गीत, सिखाओल जग कएँ नव रसवेद*। ओहिना डा.काञ्चीनाथ झा 'किरण' लिखल अछि -

आनक कानब खसब देखि कय
हृदयहीन, जे बिहुँसय हरखय
तै मानव दानव समाजकेँ
कविता लीखि सुधारह।
कवि हओ, नहि कवि नाम हँसाबह। [9]

उन्नैसम शताब्दीक अन्तिम पहर आ' बीसम शताब्दीक प्रथम दशकमे जखन राष्ट्रीयताक बसात बहल तँ अखिल भारतीय राष्ट्रीयताक अन्तर्गतहि मैथिल उपराष्ट्रीयता विकसित एवं सुदृढ़ होइत रहल। एही उपराष्ट्रीयताक अन्तर्गत अखिल भारतीय मैथिल महासभाक नवसूत्री योजनाक अनेक सूत्र, यथा, मिथिला, मैथिल एवं मैथिलीक हित-रक्षा आदि अबैत छल। मिथिलाक लोक आ' संस्कृति जकर अपन निजत्व छैक, जाहि उत्कर्षक आधार पर भारतक अन्य भौगोलिक वा सांस्कृतिक क्षेत्रसँ ओ पृथक् एवं विशिष्ट सांस्कृतिक एकाइक रूपमे अदौसँ परिगणित होइत अछि, तकर रक्षाक प्रति चेतना जगाएब कविकर्मक प्रमुख तत्त्व भए गेल। मातृभूमिक प्राकृतिक सुषमा आ' निवासीक सांस्कृतिक उत्कर्ष, एहि प्रकारेँ अभिव्यंजित होअए लागल जे वर्तमानक संग भविष्यहुमे उद्बोधन क्षमतासँ परिपूरित रहए। ओकर ज्योति मलीन नहि होइक। एहि प्रकारक रचनामे सामान्यतः दू प्रकारक स्थितिक वर्णन भेटैत अछि - प्राकृतिक सुषमा, सांस्कृतिक उत्कर्ष एवं ओकर विभिन्न घटकक विशिष्टता तथा उलहन-उपराग। लक्ष्मीपति सिंहक अनेक कवितामे मिथिलाक स्वर्णिम अतीतक वर्णन आ' गौरवबोधक संग अधिकार एवं संरक्षण-चिन्ताक स्वर मुखर आ' प्रखर अछि - एहिमे बेसी उलहन-उपराग जनकतनया जानकीक प्रति अछि।

बिसरब नहि अधिकार अपन ।
बरु लगउक ककरो तीते!
अपन मैथिली बिसरि सकत नहि
दुइ करोड़ जन जीते!
बल दे! मिथिले! जय दे! [10]

मिथिलाक अत्युच्च प्राचीन सांस्कृतिक उत्कर्ष, ओहि स्थितिसँ पतन एवं पुनः ओ स्थान प्राप्त

8. लक्ष्मीपति सिंह, प्रबोधन, *मिथिला मिहिर,* दड़िभङ्गा, मार्च 1943 ई.
9. काञ्चीनाथ झा 'किरण' *कतेक दिनक बाद,* पृ.सं. 4
10. लक्ष्मीपति सिंह, *मिथिला,* दरभंगा, 15 दिसम्बर, 1952 ई.

करबाक शक्ति मैथिलजनकेँ प्राप्त होनि, तदर्थ कवि जनक तनया मैथिलीसँ निवेदन कएल अछि -

सीते समाधि तजि, त्यागी प्रमाद,
पुनि आबी सशक्ति असिते!
देखी स्व-भूमि जग कएँ दी जनाय
पुनि की कए सकैछ वनिते।।[11]

ज्ञात वा अज्ञात रूपेँ भेल त्रुटिक क्षमा-याचनाक संग कवि जानकीसँ अपन नैहरक अधोगतिक निवारणक हेतु अवतार लेबाक प्रार्थना करैत छथि। कविक विश्वास छनि, नारी-शक्तिक जागरणसँ ओहि दुष्कृति सबहक अन्त सहजतासँ सम्भव होएत, जतए पुरुष वर्ग सफल नहि होइत छथि। *दी जनाए पुनि की कए सकैछ वनिते,* मे ओही पौराणिक सत्यक उद्‌घाटन भेल अछि।

तिरहुत कएल मसान, पुरुष पतिआओलि हे।
कति पुनि असुर बनाय, सलिल अँचबाओलि हे।
तजिअ भभटपन अम्ब! बहुत नचबाओलि हे।
सहज सुवासिनि नेहु बिसरि किय पाओलि हे।[12]

एहिठाम प्रयुक्त 'भभटपन' शब्द विशेष अर्थ-व्यंजक अछि। भभटपनमे वास्तविक अनिच्छा नहि रहैछ, अनिच्छा प्रदर्शनक नाटकीयता रहैछ जकर अन्त मान-मनौअलिसँ वा अनुनय-विनयसँ होइत अछि। एहिमे कविक ई विश्वास व्यक्त भेल अछि जे जनकतनया जानकीक प्रतापसँ शीघ्रहि मिथिलाक सांस्कृतिक पतनक गति उर्ध्वमुखी भए जाएत।

लक्ष्मीपति सिंह मानैत छथि जे विद्यापति-जयन्ती मिथिलाक सांस्कृतिक जागरणक प्रतीक भए गेल अछि। अखिल भारतीय स्तरपर निवासी-प्रवासी मैथिल उत्साहपूर्वक आयोजित कए, अपन सांस्कृतिक चेतना एवं संस्कृतिक संरक्षणक प्रति अपन दायित्वबोधक परिचय दैत छथि। एहि अवसर पर जे कोनो सांस्कृतिक कार्यक्रम वा प्रकाशन होइत छैक, मिथिलाक संस्कृति आ' भाषा-साहित्यक प्रचार एवं प्रसारमे सार्थक आ' महत्त्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह करैत अछि। एहि क्रममे किछु स्वार्थी तत्त्व सेहो सन्हिया जाइत अछि जे आयोजनकेँ सत्ताक निकट पहुँचबाक सोपान बूझि अपन काज सुतारबामे लागि जाइत अछि। ओ लिखल अछि जे एहन-एहन स्वार्थी तत्त्वक किरदानीसँ अपेक्षित लाभसँ वंचित मैथिल समाज, हँसीक पात्र सेहो बनि जाइत अछि-

नाम अहाँक रटि करइत छी केवल निज गान।
किन्तु शिथिल लखि तिरहुति कएँ हँसइत अछि आन।[13]

लक्ष्मीपति सिंहक 'विचित्र स्वप्न' शीर्षक कवितामे काव्य-रूढ़िक प्रयोग भेल अछि। कविकोकिल अपन जयन्तीक अवसरपर आयोजक द्वारा अपन नाम बेचल जाइत देखि झूरझमान भए जाइत

10. लक्ष्मीपति सिंह, *मिथिला,* दरभंगा, 15 दिसम्बर, 1952 ई.
12. लक्ष्मीपति सिंह, *मिथिला,* दड़िभङ्गा,15 दिसम्बर,1952
13. ओएह

छथि। हुनक प्रतिक्रिया अछि जे हुनक नाम (विद्यापतिक) रटनहि की लाभ जँ मिथिलामे जागरण नहि हो -

नाम हमर रटनहि कहु की फल पड़लि रहति मिथिले यदि कलबल?
ई कहि कवि संग बिलएला, नयन खुजल चित कातर भएला।[14]

लक्ष्मीपति सिंहक बाल्यकालमे अनेक प्रकारक सामाजिक कुरीति पसरल छल। ओहि सामाजिक कुरीतिमे बहुविवाह, अनमेल विवाह, आ' बाल विवाह सम्पूर्ण समाजकेँ ग्रसित कए लेने छलैक। स्त्री शिक्षाक अभाव अनेकहु सामाजिक रोगक कारण बनि एक स्वस्थ समाजकेँ पूर्णतः कज्जी कए देने छल। एकर भयंकरताकेँ देखि मैथिल महासभाकेँ अपन नओ सूत्री योजनामे विवाहादि सामाजिक दोष निवारणकेँ सम्मिलित करए पड़ल छलैक। एहि सामाजिक कुरीतिपर विभिन्न विधामे आ' विभिन्न दृष्टिसँ पर्याप्त लिखाएल अछि। ई मैथिलीक साहित्यकारक सामाजिक दायित्वबोधक परिचायक थिक। चारि वर्षक अवस्थामे विवाह, सात वर्षक अवस्थामे सासुरवास आ' ज्ञान-प्राणसँ पूर्वहि वैधव्य। तदुपरान्त, सामाजिक एवं पारिवारिक उपेक्षासँ नरक बनल कतेको बाल-विधवाक जीवनकेँ ओ निकटसँ देखने छलाह। ओ अनुभव कएल जे एक विधवाक संग मनुष्यवत् व्यवहार नहि होइत अछि। ओकरो जीवाक अधिकार छैक, से लोक नहि मानैत अछि। हुनक 'विधवा विलाप' शीर्षक कवितामे विधवाक दैन्यक हृदयविदारक वर्णन अछि -

सासु अलच्छी कहि-कहि झाँटथि नहिरहु अछि ठामे।
सूप महक भाटा भए गेलहुँ, धरम बचत केहि ठामे।।
धर्म जानि निज करथि समाजो जखन हमर अपमाने।
तखन हमर सन विधवा सभकेँ छनि मुइनहि कल्याने।[15]

मिथिलाक समाजमे ई समस्या ततेक दारुण छल जे किनसाइते कोनो युगसचेत मैथिलीक कविक कलम एहि समस्या दिस नहि गेल हो। महाकवि यात्रीक 'विलाप' तथा 'बूढ़बर' शीर्षक कवितामे समाजक एही दुर्गुण पर प्रहार अछि-

इहो जीवन कोनो जीवन थीक। एहिसँ कुकुर बिलाड़िए नीक।[16]

लक्ष्मीपति सिंहक पंक्ति *सूप महक भाटा भए गेलहुँ, धरम बचत केहि ठामे। शनिक दृष्टिसँ ताकि रहल छथि हमरा सब सभठामे* तथा यात्रीक *केहेन केहेन ठोप चानन कैनिहार* एकहि सामाजिक विकृतिक शब्दान्तरेँ अभिव्यक्ति थिक।

देशक स्वाधीनताक पूर्व नेतालोकनि स्वाधीन भारतक जे सपना देखौने छलाह आ' लोक जेना दैहिक, दैविक एवं भौतिक तापसँ मुक्त भए पूर्ण सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साम्प्रदायिक सौहार्द एवं सामंजस्यक संग विकासक लेल आशान्वित भेल छल, से सपना सत्ता प्राप्तिक संग क्रमशः तिरोहित होइत गेलैक। भ्रष्टाचार आ' सम्बन्धवादक लत्ती शासन-व्यवस्थाक पोर-पोरमे सोहरि गेल।

14. लक्ष्मीपति सिंह, विचित्र स्वप्न, *मिथिला दर्शन,* अगस्त, 1955 ई.
15. लक्ष्मीपति सिंह, विधवा विलाप, *भारती,* जून-जुलाइ, 1937 ई.
16. यात्री, *चित्रा,* विलाप (1941)

ओकर निरन्तर होइत विकराल रूप लोककेँ मशीनक एक पूर्जा बना देलक। संवेदनहीनता सामाजिक जीवनक ऊष्माकेँ सोँखि लेलक। स्वाधीन भारतक राजनीतिक, सामाजिक आर्थिक आदि स्थिति एवं ओहिमे काहि कटैत जनताक दैन्य एवं विवशताक अभिव्यक्ति, लक्ष्मीपति सिंहक कवितामे प्रहारात्मक क्षमताक संग अछि।

कचरि जे रहल आइ भए आगु
कियेक ताकत के पाछू दीन?
पड़ल छी निश्चल भेंड़ समान
हमर मेमिआएब आनक खेल।
बनल झुटकी पर्वत चढि कान,
अपन परिशक्ति बिसरि सब गेल।
हमर लए सोनित अपने भाइ,
खेलाइछ हँसि-हँसि फागुक रंग।
हमर सुख शान्तिक सम्वत आइ
जरय धह-धह की तखन उमंग? [17]

एहिमे निराशा अछि; अविश्वास अछि; असन्तोष अछि; अपने लोक द्वारा कएल गेल विश्वासघातसँ आहत आत्माक हाहाकार अछि। *हमर मेमिआएब आनक खेल* तथा *हमर लए सोनित अपने भाइ, खेलाइछ हँसि-हँसि फागुक रंग* तकरहि अभिव्यक्ति थिक। स्पष्टतः मिथिलाक लोकक ई दैन्य लोककृत अछि, दैवकृत नहि।

मिथिलाक दैन्यक दोसर कारण दैवकृत अछि। दैवकृत विपदासँ कतेको बेर मिथिलाक विकासक महल धराशायी भेल अछि। दैवकृत विपदाक हृदय विदारक वर्णन फतूरी लालक 'कवित्त अकाली'मे अछि। सामान्य लोकक कोन कथा, समृद्धशाली लोक सभ सेहो गहना-गुड़िया, थारी-बाटी आ' माधवसिंघी (एक विशेष प्रकारक चानीक सुवर्णा जे महाराज माधव सिंह गढ़बौने छलाह) बेचवाक वा बन्धक रखबाक लेल वाध्य भए गेल छलाह। मिथिलाक वर्णन करैत कवीश्वर चन्दा झा लिखने छथि - *नदीमातृक क्षेत्र सुन्दर*। से नदीक मातृक मिथिला बाढ़िक विनाश लीलामे प्रतिवर्ष भसिअएबाक लेल अभिशप्त अछि। रोगग्रस्त भेल अछि। घर-आङन छोड़ि जी-जान लए लोक पलायन कएलक अछि। मिथिलाक ओही महाराज माधव सिंहक सन्तान लक्ष्मीपति सिंहकेँ भूकम्प एवं बाढ़िक भीषण प्रकोप सहय पड़लनि। अनिच्छापूर्वक गाम छोड़लनि। आ' प्रायः इएह कारण थिक जे विभिन्न विधाक हिनक रचनामे बाढ़िक विनाश-लीला एवं कोशीक बाढ़ि जनित मानवीय त्रासदीक वर्णन भेटैत अछि। कोशीक बाढ़िक विनाश लीलाक प्रसंग लिखल अछि -

मुदा ताहू पर घावक नोन
बनलि कमला कोसी घर पैसि
दबकि मिथिला चिनवारक कोन
कनै छथि कंपइत थर-थर बैसि

17. लक्ष्मीपति सिंह, *मिथिला,* दरभंगा 20 मार्च, 1953 ई.

असह अभिनव अछि हमर वसन्त
चतुर दिशि केवल कास पटेर
बनैया घोड़परासक जेर।[18]

ताहू पर घावक नोनसँ तात्पर्य लोककृत त्रासदीक बाद दैवकृत विपदाक प्रभाव अछि। कोशीक बाढ़िक विभीषिका ततेक भयावह छलैक जे साक्षात् प्रभाव-क्षेत्रसँ फराको रहनिहार लोक ओहि मानवीय त्रासदीकेँ अपन सर्जनात्मक अभिव्यक्तिक विषय-वस्तु बनाओल। महाकवि यात्री 'कौशिकीक धार'(1943 ई.) शीर्षक कवितामे बाढ़ि जनित मानवीय त्रासदीकेँ स्वर दैत लिखल -

कतहु रहल ने शेष/ आरि धुरक रेख
लै गेली बहाय सभक/ खेत ओ पथार
कौशिकीक धार। [19]

कोशीक बाढ़िसँ कलम बाग उपटि गेल। फूल-पात दुर्लभ भए गेल। जाहिठाम कोकिल कूहकैत छल, ततय मच्छड़ घन-घन करैत अछि। जाहि ठाम मलयानिल सिहकैत छल, ततय मजरल कौशिकीक जल-मल बहैत अछि। मिथिलाक लेल वसन्त इतिहासक गप्प थिक -

मधुपक मशक, पटेर काश बन कएल कुसुम बन अन्त।
मलयानिल मजरल कौशिकि जल मल लए बहए दिगन्त।
प्रलयानल उपहास करए कहि 'तिरहुत विगत वसन्त। माधवि! [20]

समाजमे भूख अछि, अभाव अछि, रोग अछि, शोक अछि, घर-आङन छोड़ि पलायनक विवशता अछि। ई सभ स्थिति अकारण नहि अछि। ओहि पर सँ मिथिलाक भाषा एवं संस्कृतिक प्रति उपेक्षा-भाव पोसि प्रहार करबाक प्रवृत्ति व्याप्त अछि। क्षेत्रकेँ अविकसित रखबाक षड्यन्त्र रचाइत अछि। ई सब होइत अछि सत्तामे बैसि सुखोपभोग करैत लोकक सऽह पर। सत्ताधारीक एहि तर- घट्टीसँ परिचित लक्ष्मीपति सिंह ओहि वर्गक विरोधमे सामान्यजनक प्रतिरोधी स्वरकेँ मुखर करबाक हेतु जे मानसिकता चाही, तकर निर्माणक लेल दू प्रकारक बाटक अनुसरण कएल अछि। पहिने ओ स्थितिक वर्णन करैत छथि। मानवीय त्रासक वर्णनसँ पाठक आ' श्रोताक ध्यान आकृष्ट होइत अछि। सहानुभूति जगैत छैक। कारुणिक स्थितिक नियन्ताक प्रति अनास्था होइत छैक। अविश्वास होइत छैक। अनास्था आ' अविश्वास आक्रोशक कारण बनैत अछि। आक्रोशमे व्याप्ति अएलासँ ओ विरोधक स्वरूप ग्रहण कए लैत अछि।

दोसर मार्ग अछि, उपेक्षापूर्ण वर्तमान एवं गौरवशाली परम्पराक चित्रण कए पाठकक हृदयक तारकेँ प्रकम्पित कए देब। मानसिक हीनावस्थासँ उबरबाक लेल प्राचीन गौरवशाली परम्पराक बेरि-बेरि स्मरण कराएब। एहिसँ सत्ताक विरोधक लेल साहस होइत छैक। *बहुत सहि चुकलहुँ लातक दाव, जरब नहि डाहब बनि कंसार, छीनत जे अधिकार हमर/ ओ सहज गरल घट पीते'* तथा *पुनि स्वतन्त्र भारत सुनि पाओत, अपन विदेहक गीते!* आदि एही भावक अभिव्यक्ति थिक -

18. लक्ष्मीपति सिंह, *मिथिला,* दरभंगा 20 मार्च,1953 ई.
19. यात्री, *चित्रा,* कौशिकीक धार
20. लक्ष्मीपति सिंह, *मिथिला,* दरभंगा 20 मार्च, 1953 ई.

तखन की हमरे जीवन भार?
सहब नहि तोषण-शोषण आब
बहुत किछु देखल हम संसार।
बहुत सहि चुकलहुँ लातक दाव
जरब नहि डाहब बनि कंसार। [21]

लक्ष्मीपति सिंह सहज छलाह; सरल छलाह; परिचित-अपरिचित सभक प्रति समान आदर-भाव छलनि; सभक प्रति समानरूपेँ स्नेह-वर्षण करैत रहैत छलाह। ने ओ ककरहु पक्षमे छलाह; ने विपक्षमे छलाह; वस्तुतः ओ छलाह व्यक्ति वा समूह-निरपेक्ष। एकहि टा पक्ष छलनि आ' से छल मैथिली आ' मिथिलाक संस्कृति। एही दृष्टि वा पक्षधरतासँ ओ निःस्वार्थभावेँ मैथिली भाषा-साहित्य एवं मिथिलाक सांस्कृतिक सम्पदाक संरक्षण एवं प्रचारमे आजीवन सक्रिय रहलाह। मुदा, ई निरपेक्षता लोकके ँ अखरैत छैक। परिणामतः जीवनकालमे तँ सहजहि, मृत्यूपरान्तहु मैथिलीक प्रभावी साहित्यकार समुदाय लक्ष्मीपति सिंहक प्रति अनुदार बनल रहलाह। एहिमे समकालीन, समतुरिआ आ' अनुज - तीनू प्रकारक साहित्यकार छथि।

लक्ष्मीपति सिंह मैथिलीमे ऐतिहासिक उपन्यास लेखनक श्रीगणेश कएल, लक्ष्मीपति सिंह कोशीक विभीषिकाके ँआधार बनाय मैथिलीमे राष्ट्रीय चेतनासँ अनुगुंजित उपन्यास लिखल, लक्ष्मीपति सिंह पूर्णतः हिन्दीक पत्रिकामे मैथिलीमे लिखल रचनाक प्रकाशन करबाओल, लक्ष्मीपति सिंह प्रवासी मैथिलके ँमैथिलीक शिक्षण हेतु हिन्दीमे मैथिलीक व्याकरण लिखल, लक्ष्मीपति सिंह प्रवासी मैथिलकेँ अपन पूर्वजक भाषा एवं संस्कृतिसँ अद्यतन करैत रहबाक प्रयास आजीवन करैत रहलाह, लक्ष्मीपति सिंह मैथिल पण्डितक अवदानक अनुसन्धान कए, पोथी लिखि मैथिल समाज केँ गौरव-बोधक लेल सामग्री उपलब्ध कराओल, लक्ष्मीपति सिंह पँाच दशक धरि साहित्यक विभिन्न विधामे सर्जनाशील रहि मैथिली भाषा-साहित्यक संबर्द्धन कएल, मुदा ई सौभाग्य नहि भेलनि जे एकहु टा अपन प्रकाशित पोथी देखि सकथि।



21. लक्ष्मीपति सिंह, *मिथिला,* दरभंगा 20 मार्च, 1953 ई.

यात्रीक भाषा : शब्दचयन एवं शब्दनिर्माण

साहित्य-सर्जना सामान्य भाषामे नहि होइत अछि। साहित्यिक भाषा सामान्य भाषासँ भिन्न रहैत अछि। एकर अर्थ ई नहि जे साहित्यिक भाषाक शब्दावली भिन्न होइत अछि; व्याकरण भिन्न होइत अछि; आ' प्रयुक्त शब्दक व्युत्पति भिन्न होइत अछि। तखन भाषाक जे पँाचटा आधारभूत सामग्री ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य एवं अर्थ छैक, तकर प्रयोग भिन्न प्रकारेँ अवश्य होइत छैक। एहि तत्त्व सभक भिन्न प्रकारेँ प्रयोगक कारण अछि जे साहित्यमे असामान्य अनुभूति अभिव्यंजित रहैत अछि आ' असामान्य अनुभूतिक अभिव्यक्तिक लेल भाषा सेहो असामान्य चाही। रचनाकार अपन प्रतिभाक आ' अभ्यासक बलपर अपन साहित्यक भाषा गढ़ैत छथि जाहिमे प्रयोक्ताक व्यक्तित्व झलकैत रहैत अछि। से देखितहिँ बोधगर पाठक कहि देताह जे ई मधुपजीक रचना थिक आ' ई यात्रीजीक रचना थिकनि।

एक कुशल एवं संवेदनशील रचनाकार सामान्य भाषाकेँ चारि प्रकारेँ साहित्यिक भाषामे परिवर्त्तन कए, भाषामे सौन्दर्य उत्पन्न कए दैत छथि। ओ थिक -

1. चयन,
2. विचलन,
3. समानान्तरता, एवं
4. अप्रस्तुत विधन।

एहि दृष्टिसँ यात्रीक काव्य-भाषाक विवेचनक प्रयास अछि।

चयन

चयन भेल बांछब। समानार्थक शब्दमेसँ सर्वाधिक उपयुक्त शब्दकेँ बीछि अभिप्रेतक प्रभावक अभिव्यक्तिक हेतु प्रयोग करब। जेना एक टा क्रियापद अछि 'भोजन करब'। ई एकटा काज भेल। एहि काजक हेतु 'भोजन करब', 'खाएब', 'हूरब', 'ठूँसब', 'गीरब' आदि क्रियापदक प्रयोग प्रसंगानुकल होइत अछि। केओ कहैछ, 'बाबू परसल अछि'। एहिमे सूचना आ' आदरभाव दूनू अछि। 'ठूँसि लिअ' वा 'हूरि लिअ' सँ पेट भरबाक काज अवश्य पूर्ण भए जाएत। मुदा, एहिमे वक्ताक भाव, आदरास्पद नहि, हेयार्थी अछि। ई वक्ताक विभिन्न मनोदशा एवं भावक द्योतन करैछ। जँ कोनो आदरास्पद व्यक्ति वा पाहुनकेँ 'भोजन कए लेल जाओ'क स्थान पर 'हूरि लेल जाओ' कहल जाए तँ परिणाम निश्चिते अनर्थकारी भए जाएत। एक टा दोसर उदाहरण अछि। पानि आ' जल पर्यायवाची शब्द थिक। पानि रोगीकेँ डाक्टर चढ़बैत छथि आ' जलसँ देवी-देवताक अभिषेक होइत अछि। अतएव, शब्द चयनक महत्त्व साहित्यहिमे नहि, दैनिक जीवनमे सेहो अत्यधिक अछि। प्रायः एही हेतु अङरेजीक प्रसिद्ध कवि कार्लाइल कहने छल होएताह जे सर्वोत्तम शब्दक सर्वोत्तम क्रम काव्य थिक। उपयुक्त शब्दक चयनहिसँ रचनाकारक भावक सम्प्रेषण ठीक-ठीक सम्भव अछि। ई चयन अनेकहु प्रकारक भए सकैत अछि, जाहिमे प्रमुख अछि, शब्दचयन, रूपचयन, वाक्यचयन, अर्थचयन आदि।

साहित्यमे शब्दचयनक दू स्रोत अछि- देशी आ' अनदेशी। देशी आ' अनदेशी स्रोतक अनेक उपविभाजन कएल गेल अछि। अनदेशी स्रोतक उपयोग ऋणग्रहण कहबैत अदि। अनदेशी स्रोतसँ तात्पर्य ओहि भाषासँ अछि, जकर प्रकृति, प्रवृत्ति, उत्पति आ' विकास मैथिलीसँ फूट छैक, भलहिं राजनीतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक वा सामरिक कारणेँ ओकर किछु शब्दक प्रयोग होइत आबि रहल हो।

यात्रीक शब्दचयन

यात्रीक साहित्यमे दूनू स्रोतक शब्दक प्रयोग भेल अछि। कोन शब्द कोन स्थानपर बेसी अर्थाभिव्यंजक एवं प्रभावोत्पादक होएत, से रचनाकारक चयन क्षमता पर निर्भर करैत छथि। कविकोकिल विद्यापतिक एक पाँती अछि - *तातल सैकत वारि बिन्दु सम, सुत मित रमणि समाजे'* एहिठाम जतेक अर्थव्यंजक आ' प्रभावशाली 'वारि' शब्द अछि ततेक समीचीन अर्थाभिव्यंजक 'जल' वा 'नीर' नहि होएत। उपयुक्त शब्दक चयनक अनेकहु आधारपर सम्भव अछि। ओहिमे प्रमुख आधार अछि - युगीन प्रवृत्ति, छन्दक आवश्यकता, ध्वनिसाम्य द्वारा लयात्मकता, व्युत्पत्ति, प्रकरण-सार्थकता, प्रस्तुति समानता, विरोधमूलकता, अंचल विशेषसँ सम्बन्ध, शैलीक आवश्यकता, बहुप्रयोगक स्थान पर नूतनता एवं असामान्यता आदि। पात्रक चरित्रक अनुरूप शब्दक चयनसँ अभिप्रेत सम्प्रेषण स्पष्ट एवं प्रभावक होइत अछि।

यात्रीक एक कविताक पाँती अछि - *अहिना यदि रहला बइसल नाभिपद्मसम्भूत अपरोजक विधाता।*[1] क्षीरसागरमे विष्णु निद्रालीन छथि। हुनक नाभिसँ निकलल कमलपर ब्रह्मा बैसल छथि। त्रिदेव-ब्रह्मा, विष्णु एवं महेशमे ब्रह्मा सृष्टिकर्ता मानल गेल छथि। 'नाभिपद्मसम्भूत विधाता'क चारित्रिक विशेषताक द्योतनक लेल यात्री 'अपरोजक' शब्दक प्रयोग कएल अछि। अपरोजक 'अप्रयोजक'क तद्भव रूप थिक। मैथिलीमे एकर पर्याय अपाटक, अपचेष्ट, अक्षम, बेलूरि आदि अछि। ओ उक्त शब्दक स्थान पर अन्यहि तत्सम शब्द जकाँ अप्रयोजकक प्रयोग कए सकैत छलाह। अपरोजकक समानार्थी अन्य देशी शब्दक प्रयोग सेहो कए सकैत छलाह। मुदा, से नहि कए अपरोजक शब्दक प्रयोग कएल अछि। तकर कारण अछि अपरोजक शब्दक अर्थव्यंजकता, बेलूरि लोकक लेल एहि शब्दक प्रयोग-प्राचुर्य। ई व्यंजकता एकर समानार्थी शब्दमे नहि छैक। अपाटक एवं बेलूरि 'नाभिपद्मम्भूत विधाता'क लेल अपरोजक शब्दक प्रयोगसँ सम्प्रेषणमे विलक्षणता आबि गेल। विलक्षण एवं उपयुक्त शब्दक चयनसँ अर्थप्रक्षेपण क्षिप्र एवं अचूक भेल अछि। यात्रीक शब्द चयन-क्षमताक दोसर उदाहरण अछि -

माथ पर ऊत्तुंग खोपा
तपोवनी स्टाइलमे बान्हल
आ' ताहिमे लपेटल चम्पा फूलक माला
गए नूनू!
ककर ककर प्राण लेबही तों आइ?

1. यात्री, *पत्रहीन नग्न गाछ,* 1967, पृ. सं. 64

हमर कोंढ़ करेज कपइए
थर थर थर थर, थर थर थर थर
वयोवृद्ध तटस्थ तपस्वी लोकनिक
अहिना दलकल हेतइन छाती।[2]

शरीरमे सभसँ उपर माथ। ओहि माथ पर खोपा। तखन तँ खोपे कहलासँ उपर होएबाक बोध स्वतः भए जाइछ। मुदा यात्री खोपाक आकार आ' विशेषताकेँ दर्शेबाक लेल 'ऊत्तुंग' शब्दक प्रयोग कएल अछि। महाकवि जयशंकर प्रसाद *कामायनी* मे 'ऊत्तुंग शिखर'क प्रयोग कएने छथि (*हिमगिरि के ऊत्तुंग शिखर पर बैठ शिला की शीतल छाह। एक पुरुष भींगे नयनो से देख रहा था प्रलय-प्रवाह*)। एहि तरह एक बिम्बक निर्माण यात्री सेहो कएने छथि -

हिमधवल तुंगशृंग
बइसल छथि एहि पर पद्मासन लगओने!
नेत्र छन्हि अर्धनिमीलित
विराजित ठामहि गौरी गिरिकन्या।[3]

शब्दहुक अपन अभिव्यंजकता एवं संस्कृति होइत छैक। से 'ऊत्तुंग'मे सेहो अछि। एहि शब्दक उच्चारणसँ एकहि संग अनेक अर्थ एवं ओकर गाम्भीर्यक बोध होइत अछि। ई अनुरणनात्मक (घनघनाहटि) सेहो अछि। खोपा ऊत्तुंगे टा नहि छैक, ओ तपोवनी स्टाइलमे बान्हल सेहो छैक। 'स्टाइल' जे अनदेशी शब्द थिक, तकर गुण-दर्शनक लेल 'तपोवनी' शब्द गढ़ल अछि। अनदेशी आ' देशी शब्दक सुन्दर संयोग कएल अछि। एहिना 'स्कूटरवाहिनी', 'रेलवल्लभ' आदि शब्द गढ़ने छथि। ई हिनक काव्यभाषामे नव स्वाद दैत अछि। कविकोकिल विद्यापति सद्यःस्नाताक सौन्दर्यक वर्णनक क्रममे लिखल अछि-*मुनिहुक मानस मनमथ जाग*। प्रायः तेहने सन प्रभावक बोध, तपोवनी स्टाइलमे बान्हल ऊत्तुंग खोपामे चम्पा फूलक लपेटल माला देखि वयोवृद्ध तटस्थ तपस्वी लोकनिक छाती 'दलकल' सँ होइत छैक। दलकब थिक भीतरसँ कम्पन, उधकब, फाटब। ई शब्द सभ दलकबक समानार्थी तँ भेल, मुदा जे अर्थव्यंजकता, गतिक बोध एवं प्रभाव दलकब शब्दक प्रयोगसँ भेल अछि, से व्यंजकता एकर पर्यायवाची शब्दमे नहि छैक। ई विलक्षण शब्दचयन क्षमताक परिचायक कहि सकैत छी। कहि सकैत छी, एहि कलामे यात्री पारंगत छथि।

हमरालोकनि जनैत छी जे सामान्य भाषा सन्दर्भात्मक एवं साहित्यिक भाषा भावोदबोधक होइत अछि। सन्दर्भात्मक भाषा बाहरी अर्थ दैत अछि जे कोशार्थ अथवा अभिधेयार्थ होइत अछि। किन्तु साहित्यिक भाषा आन्तरिक सन्देश दैत अछि। साहित्यिक भाषाक लक्ष्यार्थ, व्यंग्यार्थ, एवं बिम्बार्थ, पाठकक लेल अर्थक अनन्त कोशक द्वार खोलि दैत अछि। पाठक अपन समृद्ध कल्पना आ' क्षमताक आश्रय लैत अर्थक अनुसन्धान एवं भावक आस्वादन करैत अछि। यात्री सामान्य भाषाकेँ साहित्यिक भाषा बनेबाक क्रममे पौराणिक पात्रक ठामठाम सेहो पर्याप्त प्रयोग कएलनि अछि। एहि सन्दर्भमे एक दू टा उदाहरण प्रस्तुत अछि।

2. यात्री, *पत्रहीन नग्न गाछ,1967,* पृ. सं. 57
3. यात्री, *पत्रहीन नग्न गाछ,* 1967, पृ.सं. 62

गौरी पहिरथि फाटल नूआ,
छन्हि कर्महिमे लागल भूआ,
कार्तिक-गणेश छथि गीड़ि रहल
उसिनल अगवे अल्हुआक पात। [4]

गौरी, कार्तिक एवं गणेश पौराणिक पात्र छथि। भारतीय जनमानसमे हिनका सभकेँ देवत्व प्राप्त छनि। देवाधिदेव महादेवक पत्नी, गिरिसुता गौरी फाटल नूआ पहिरथि तथा हुनक पुत्रद्वय कार्तिक आ' गणेश अभावमे अगबे अल्हुआक उसिनल पातसँ अपन-अपन क्षुधाकेँ शान्त करथि, अविश्वसनीय एवं कल्पनातीत अछि। किन्तु यात्री एहि तीनू पौराणिक पात्रक प्रयोग वर्तमान कालक अभावग्रस्त समाजक लोकक प्रतीकक रूपमे कएल अछि। ई कोश स्वीकृत अर्थसँ भिन्न अर्थक बोध करबैत अछि। एकटा दोसर उदाहरण प्रस्तुत अछि–

अँहँ अँहँ नहि चाहिअइन, नहि चाहिअइन
पद्मासना लक्ष्मीकेँ सखा-पात
लगइ छनि हुनका बड्ड बेश अपन बज्र-बहीर कोखि
सृष्टिक आदिमे उएह छली
प्राचार्या परिवार नियोजन विद्याक। [5]

हालहिमे छपल एक सर्वेक्षण-रिपोर्टक अनुसार सम्पन्न परिवारमे सन्तानक संख्या यत्नपूर्वक न्यूनतम रखबाक प्रवृत्ति देखल गेल अछि। लक्ष्य जे आर्थिक साम्राज्यक विभाजन नहि हो। धार्मिक-पौराणिक मान्यताक अनुसार लक्ष्मी सुख-समृद्धिक अधिष्ठात्री देवी थिकथि। ओ कोना चाहतीह अपन आर्थिक साम्राज्यक बंटबारा? तेँ सखा-पात नहि चाहिअनि। यात्री लक्ष्मीकेँ परिवार नियोजन विद्यालयक प्राचार्या कहल अछि जे कोश स्वीकृत अर्थसँ भिन्न सन्दर्भ एवं अर्थमे प्रयोग थिक।

भारतीय शब्दावलीमे (आचार्य दण्डी, *काव्यदर्पण*) सामान्य भाषाकेँ 'स्वभावोक्ति' एवं काव्यभाषाकेँ 'अतिशयोक्ति' कहल गेल अछि। स्वभावोक्तिक तीन प्रमुख लक्षण अछि - वस्तुक साक्षात अथवा यथावत् रूपक प्रदर्शन करब, जातिगुण क्रिया, द्रव्य आदिक नैसर्गिक रूपमे वर्णन तथा सामान्यतः शास्त्रमे प्रयोग। एकरा साधरण, सामान्य एवं स्वाभाविक उक्ति सेहो कहल जाइत अछि। अतिशयोक्तिक अर्थग्रहण स्वभावोक्तिक विपरीत अछि। ई वस्तुक उत्कर्षक वर्णन भेल। भामह जखन कहैत छथि जे 'अतिशयोक्ति' लोक-मार्यादाक उल्लंघन थिक तँ ओ प्रचलित अर्थसँ भिन्न अर्थक प्रतीति होएबाक संकेत दैत अछि। पाश्चात्य साहित्यमे सेहो काव्यभाषाकेँ 'असामान्य' (अरस्तू) होएब कहल गेल अछि। ई यात्री द्वारा गौरी, कार्तिक, गणेश वा लक्ष्मी शब्दक भेल प्रयोगसँ स्पष्ट अछि। एहिमे शब्दक अर्थ विस्तारे नहि, नव सन्दर्भक प्रयोग कए, नव अर्थ भरल गेल अछि।

---

4. यात्री, *पत्रहीन नग्न गाछ,* 1967, पृ. सं. 22
5. यात्री, *पत्रहीन नग्न गाछ,* 1967, पृ. सं. 60

यात्रीक शब्दचयनक ई क्षमता कविते टा नहि, गद्यमे सेहो ओहिना भेटैत अछि। किछु उदाहरण प्रस्तुत अछि -

1. जयप्रकाश नारायण, श्रीकृष्ण सिंह, कृष्णबल्लभ सहाय...तीनू गोटे हालहिमे जनताक समक्ष 'नेती धोती' कएने छथि.... मुदा एहि त्वंचाहंचसँ रउदीसँ झरकइत धनहर बाधकेँ की? भनहि अधिकांश खेतिहर लोकनि अउखन निरक्षरे छथि? (*मिथिला दर्शन,* सितम्बर,1959)

2. चीन-भारत मैत्रीक पाँतरमे दराड़ि नहि पड़उक, तदर्थ पुरश्चरण एहि दूनू देशमे आरम्भ भए गेल अछि....धनकुबेरक शंख (समाचारपत्र) मुदा प्रतिकूले ध्वनि करइत अछि।' (*मिथिला दर्शन* अक्टूबर,1960)

3. राजकुमारी मागरिट (एलिजाबेथक सहोदरा) कोनो युवक फोटोग्राफरकेँ अपन हृदयदान कएने छथि। पहिने चित्तपर केओ चढ़ितहि नहि रहइन... स्वजन-परिजनकेँ होइत छलनि जे आब आजीवन अ-विवाहिते रहली! अन्ततः लन्दनवासी एक गोटे सामान्य फोटोग्राफर एहि राजकुमारीक मानस-मीनकेँ अपन बंसीमे बझओलक अछि! इंगलैंडक पत्रपत्रिका सबहिमे मत्स्यवेधक ई सु-समाचार बेश फलका-फलकाकेँ प्रकाशित कएल गेल अछि। (*मिथिला दर्शन,* मार्च,1960)

नेती-धोती, त्वंचाहंच, समाचारपत्रक लेल धनकुबेरक शंख, मानस-मीन, मत्स्यवेधक सु-समाचारक फलका-फलकाकेँ प्रकाशन आदि प्रयोग अपूर्व सौन्दर्यक सृष्टि करैत अछि।

विचलन

प्रत्येक भाषाक अपन व्याकरणिक नियम होइत अछि। सामान्य भाषा व्याकरणिक नियमक पालन करैत अछि। साहित्यिक भाषा लेल सदिखन सम्भव नहि होइत अछि जे ओ कठोर व्याकरणिक नियमक पालन करैत चलय। रचनाकार अपन अनुभूतिक प्रभावक अभिव्यक्तिक लेल नव-नव साहित्यिक उपादानक सन्धान करैत अछि। पुरान आ' खिआएल उपादानकेँ खराजि चमकाबैत अछि। पुरान आ' खिआएल शब्दक प्रयोगकेँ त्यागि नबका बाटक सन्धाने थिक विचलन। भारतीय साहित्य शास्त्रमे कहल गेल अछि -'निरंकुशाः कवयः'। ई विचलनेक सन्दर्भमे अछि। हाथीकेँ वशमे रखबाक हेतु महौथ अंकुशक प्रयोग करैत अछि। कवि हाथी नहि थिकथि। हुनक अनुपयुक्त शब्द-प्रयोगसँ जानमाल नष्ट नहि होइत अछि। तखन अंकुशक प्रयोगक एक मात्र अभिप्राय अछि, भाषाक व्याकरणिक नियमक उल्लंघनकेँ शास्त्रीय अनुमति प्राप्त होएब। भारतीय साहित्यशास्त्रमे एक वक्रोक्ति सम्प्रदाय सेहो अछि। सामान्य भाषाक उक्ति सोझ होइत अछि आ' साहित्यिक भाषाक उक्ति वक्र अर्थात् व्याकरणिक नियमक पूर्णतः पालन नहि होएब। मुदा, ई सर्वथा आवश्यक जे विचलन अहेतुक, चौंकेबाक लेल नहि, सहेतुक होएबाक चाही। विचलनसँ अभिव्यक्ति बासि-तेबासि नहि रहैछ, टटका भए जाइत अछि। अभिव्यक्तिमे वक्रतासँ पारम्परिक अर्थक स्थान पर नव अर्थक बोध होइत छैक। विचलन भाषाक सभ उपादानमे सम्भव अछि। तेँ विचलनक अनेक भेद-प्रभेद होइत छैक। यात्रीक काव्य भाषामे विचलनक पर्याप्त एवं सटीक प्रयोग भेल अछि। एहिसँ भाषामे आएल सौन्दर्य एवं अर्थाभिव्यक्तिक तह-तहक आस्वादनक लेल किछु उदाहरण प्रस्तुत अछि -

1. *बेत्रेक अन्न भऽ रहल आँट नेना-भुटका।*[6]

व्याकरणक अनुसार वाक्य संरचना - नेना-भुटका अन्न बेत्रेक आँट भऽ रहल।

2. *पाथर भेलाह तोँ सरिपहुँ बाबा बैदनाथ।*[7]

व्याकरणक अनुसार वाक्य संरचना - बाबा बैदनाथ! तोँ सरिपहुँ पाथर भेलाह।

3. *पघिलओ नीक जकाँ सनातन आस्था।* [8]

व्याकरणक अनुसार वाक्य संरचना - सनातन आस्था नीक जकाँ पघिलओ।

4. *पाकओ नीक जकाँ चेतन कुम्हारक नबका वासन।* [9]

व्याकरणक अनुसार वाक्य संरचना - चेतन कुम्हारक नबका वासन नीक जकाँ पाकओ।

उपर्युक्त पहिल उदाहरणमे 'बेत्रेक अन्न', दोसरमे 'पाथर भेलाह', तेसरमे 'पघिलओ नीक जकाँ एवं चारिमिमे 'पाकओ नीक जकाँ' पर बल देबाक हेतु व्याकरणिक नियमक उल्लंघन भेल अछि। अन्यथा भाषामे ओ व्यंजकता नहि अबैत, जे सम्प्रति पाठक अनुभव करैत छथि।

समानान्तरता

रेखागणितमे समानान्तर रेखा होइत अछि। समानान्तर चतुर्भुज होइत अछि। प्रायः ओहीसँ संकेत ग्रहण कए पाश्चात्य शैलीवैज्ञानिक भाषाशिल्पक सन्दर्भमे Parellelismक परिकल्पना कएलनि अछि। एकरहि पर्याय थिक समानान्तरता। जेना समान अन्तर पर अवस्थित चतुर्भुजक भुजा सभ एक प्रकारक सौन्दर्यक सृष्टि करैत अछि, ओहिना भाषामे सामानान्तरता सौन्दर्यक संग अर्थक प्रभावक अभिव्यक्तिमे सहायक होइत अछि। साहित्यिक भाषामे समानान्तरताक अर्थ भेल कोनो रचनामे समान अथवा विरोधी भाषिक एकाइक समानान्तर प्रयोग। अर्थात् समान अथवा विरोधी भाषिक एकाइक एक वा अधिक बेर आवृत्ति। ई समानान्तरता कवितामे बेसी होइत अछि। मुदा, गद्य रचनहुमे समानान्तरतासँ लय अथवा प्रवाहक सृष्टि सम्भव अछि। कोनहु बात पर बल देबाक हेतु वा विरोधकेँ रेखांकित करबाक हेतु समानान्तरताक प्रयोग होइत अछि। ई प्रयोग मूलतः दू आधार पर होइछ - समानता-असमानताक आधार तथा भाषिक एकाइक आधार पर। शैलीविज्ञानमे पुनः एहि दूनूक उपविभाजन कएल गेल अछि। मुदा, विस्तारमे नहि जाए यात्रीक काव्य भाषामे सामानान्तरताक प्रयोगसँ आएल भाषिक सौन्दर्य एवं ओहिसँ संघनित अर्थक प्रक्षेपणक किछु उदाहरण प्रस्तुत अछिः -

क. *हे निरभ्र आकाश*
हे धूसर आकाश
हे भारल आकाश
हे धीपल आकाश

6. यात्री, *पत्रहीन नग्न गाछ,* 1967,
7. यात्री, *पत्रहीन नग्न गाछ,* 1967,
8. यात्री, *पत्रहीन नग्न गाछ,* 1967,
9. यात्री, *पत्रहीन नग्न गाछ,* 1967,

हे तानल आकाश
हे समसाएल आकाश। [10]

ख. *शिशु कंकाल*
तरुण कंकाल
वृद्ध कंकाल
कंकाल वृद्धाक
कंकाल तरुणीक
कंकाल ननकिरबीक
फड़िच्छ चमड़ीबला कंकाल.
कारी चमड़ीबला कंकाल .... ।[11]

पहिल उदाहरणमे 'हे' एवं 'आकाश'क आवृत्ति अछि। आकाशक विशेषताकेँ 'निरभ्र (शान्त), धूसर (माटिक गर्दा सन रंगबाला, बिहरौन), भारल (पानिमे भिजाकेँ आँचपर सुखाओल), धीपल (तप्पत, गर्म), तानल (खिंचल, पसारल) एवं समसमाएल (उष्णताहीन, सुखाएल नहि, कनि-कनि भीजलसन) शब्दक प्रयोग अछि। ई आकाशक अवस्थामे होइत परिवर्त्तनकेँ देखबैत अछि। दोसर उदाहरणमे 'कंकाल' शब्दक आवृत्ति भेल अछि। ई कंकाल एक वर्गक नहि थिक, शिशुसँ लएकेँ रेलक दोबगली धूरामिश्रित दाना बिछैत कंकालक संग जेठक दुपहरिआमे जरैत कंकाल धरिक कथा कहैत अछि। एक टा अन्य उदाहरण अछि *मामा आँखि मुनि लेलथिन* -

मामा पिल्ला पोसलनि
मामा कार ड्राइभ कयनाइ सिखलनि
मामा मेट्रिकमे तीन खेप फेल कयलनि
मामा समर्थ भेलाह
मामा टेबुल टेनिसक टुर्नामेंट जितलनि
मामा दोसर बियाह कयलनि
मामा तेसर बियाह कयलनि
मामा राजनीतिमे प्रवेश कयलनि
मामा एलेक्शन हारि गेलाह
मामाकेँ डायबिटीज भऽ गेलनि
मामा आँखि मुनि लेलथिन
मामा दू लाखक कर्ज छोड़ि गेलथिन।[12]

एहिठाम 'मामा' शब्दक आवृत्ति भेल अछि। परन्तु, प्रत्येक आवृत्तिमे मामाक विभिन्न स्वभाव

10. यात्री, *पत्रहीन नग्न गाछ,* 1967, पृ. सं.15
11. यात्री, *पत्रहीन नग्न गाछ,* 1967, पृ. सं. 20
12. *मिथिला मिहिर,* 23 सितम्बर, 1973 ई.

एवं प्रकृतिक उद्‌घाटन होइत गेल अछि। आ' अन्तमे मामा जखन आँखि मूनि लैत छथि तँ हुनक सन्ततिपर दू लाखक कर्ज रहैत छनि।

अप्रस्तुत विधान

साहित्यिक वर्णनक दू पक्ष अछि - प्रस्तुत एवं अप्रस्तुत। प्रस्तुत भेल वर्ण्य विषय जकर वर्णन कएल जाइछ। जेना खेत चौकोर अछि। खेत भेल वर्ण्य विषय अर्थात् प्रस्तुत। जे प्रस्तुत नहि अछि से थिक अप्रस्तुत। यात्रीक पाँती अछि -

ठारि ठारिमे, पोर-पोरमे फुटलइ कौँढ़िक गुच्छा
सूतल मुनिगा हँसल भभा क' ....
टुस्सा पर टुस्सा हुलकइ छइ। [13]

एहिमे मुनिगा भेल प्रस्तुत एवं ओकर भभाकेँ हँसब (फुलाएब) भेल अप्रस्तुत। ई एक प्रकारक साहित्यिक अर्थात् शैलीय उपकरण थिक। कुशल शब्दशिल्पी एकर प्रयोग वर्ण्य विषयक वर्णनमे सौन्दर्य आ' प्रभावकता उत्पन्न करबाक हेतु करैत छथि। अप्रस्तुत विधानक आधार थिक सादृश्य एवं साधर्म्य। सादृश्यमे रूप आ' आकारमे समानता होइत अछि। साधर्म्यमे धर्म, गुण वा क्रियाक समानता रहैत छैक। मुदा सर्वथा आवश्यक छैक जे सादृश्य औचित्यपूर्ण, सौन्दर्यमय एवं सूक्ष्म अर्थव्यंजक रहय। साम्य औचित्यपूर्ण रहले पर भावोदबोधन एवं सौन्दर्यबोधन भए सकैत अछि। जँ से नहि भेल तँ ओ चमत्कार भए केँ रहि जाइछ। यात्रीक काव्यमे प्रयुक्त अप्रस्तुत विधानसँ भाषामे सौन्दर्य तँ अछिए, भावोदबोधन सेहो सहज एवं त्वरित होइत अछि।

चिबा चिबाकेँ आमक मज्जर
कोइली सूर पिजाबए
भन भन भन मधुमाछी भनकए
चिपचिप करइछ दूबि। [14]

कोइली आमक मज्जर चिबाचिबाकेँ अपन सुर पिजा रहल अछि। आमक मज्जर पर मधुमाछी भनभना रहल अछि तथा मधुआएल मज्जरक खसलासँ दूभि चिपचिप कए रहल अछि। एहिमे कोइली प्रस्तुत अछि, मज्जर प्रस्तुत अछि मुदा, कोइली द्वारा आमक मज्जरकेँ चिबाचिबा अपन 'सुर पिजाएब' अप्रस्तुत अछि। एहि कवितामे कविक ऐन्द्रिय संवेदना सेहो अपन प्रखरतम रूपमे द्रष्टव्य अछि। गतिबिम्ब विधानक कारणेँ मोटर इमेजरीक ई एक उत्कृष्ट उदाहरण सेहो थिक।

आन्हर जिनगी
शान्ति-सुन्दरी केर नरम आङुरक स्पर्शसँ
बिहुँसि रहल अछि!

13. यात्री, *पत्रहीन नग्न गाछ,* 1967, पृ. सं. 31
14. यात्री, *पत्रहीन नग्न गाछ,* 1967, पृ. सं. 32

खण्ड सफलताकेर सलच्छा सिहकी
ओकर गत्र-गत्रमे
टटका स्पन्दन भरि देलकइए। [15]

यात्रीक कवितामे जेना प्रस्तुत लेल अप्रस्तुतक विधान अछि, ओहिना अप्रस्तुतक लेल प्रस्तुतक विधान सेहो अछि। उपर्युक्त पाँतीमे प्रयुक्त 'आन्हर जिनगी' एवं 'शान्ति-सुन्दरी' दूनू अप्रस्तुत अछि। आन्हर जिनगी द्वारा शान्ति-सुन्दरीक आङुरक स्पर्श एवं टटका स्पन्दन भरबक प्रयोग कए अप्रस्तुतक मानवीकरण सेहो भेल अछि। एहिठाम प्रयुक्त शब्दावली 'नरम आङुरक स्पर्श', 'बिहुँसब', 'सिहकी' आ' 'गत्र-गत्रमे टटका स्पन्दन'सँ यात्रीक ऐन्द्रिय संवेदनाक प्रखरताक बोध होइत अछि।

यात्रीक काव्यभाषाक सबसँ बेसी उल्लेखनीय तथा चमत्कृत करएबाला विशेषता थिक देशी शब्द-सम्पदाक अजस्र स्रोतक सफल प्रयोग। मिथिलाक व्यावहारिक जीवनसँ लए सांस्कृतिक-पौराणिक क्षेत्र धरि परिव्याप्त शब्द-सम्पदाक प्रयोग प्रसंगानुसार पूर्ण कुशलताक संग भेल अछि। अर्थगुम्फनक लेल कतेको ठाम सम्पूर्ण वाक्यमे तत्सम शब्दक प्रयोग अछि, मुदा बीचमे देशज शब्द तेना गोभल भेटैछ जे पाठक बिना चकित भेने नहि रहैत छथि। शब्दचयन एवं शब्दनिर्माणक ई विलक्षण कौशल मैथिलीक अन्य कविमे दुर्लभ अछि।

यात्री[16] कहने छथि जे प्रत्येक भाषाक अपन भूगोल होइत छैक। सम्बद्ध भाषाक लेखक केँ अपन भाषाक भूगोलक पूर्ण परिचय आवश्ययक अछि। अन्यथा, ओहन रचनाकारक काव्यभाषामे भावोदबोधक तत्त्वक अभाव रहत। से यात्रीक शब्द-सम्पदाक स्रोत एवं तकर प्रयोग देखि प्रतीत होइछ, जेना हुनका मिथिला भाषाक भूगोलक बीत-बीतक सुपरिचय होनि। एहि अन्तरक आस्वादन अन्य कविक रचनाक समक्ष यात्रीक रचनाकेँ राखि केओ स्वतः अनुभव कए सकैत छी।



15. यात्री, *पत्रहीन नग्न गाछ,* 1967, पृ. सं. 83
16. डा. रमानन्द झा 'रमण', *भेंटघांट,* टेमी के दागत?, 1998, पृ.सं. 49

मनमोहन झाक कथाक अनालोचित पक्ष

अश्रुकण क अमर कथाकार मनमोहन झाक(जन्म 11 अक्टूबर,1918 ई.) आकस्मिक निधन नवासी वर्षक अवस्थामे 05 मइ, 2009 केँ भए गेलनि। ओकर ठीक दशमा दिन, अर्थात 14 मइ, 2009 केँ *राजलक्ष्मी : एक भाव चित्र* क लेखिका एवं हुनक पत्नी तूलिका झा (जन्म 1924 ई) सेहो पंचत्वमे लीन भए गेलीह। पटना विश्वविद्यालयसँ 1941 ई. मे बी.ए एवं 1943 ई मे बी. एल (प्रथम श्रेणी) कएलाक बाद किछु दिन ओ ओकालत कएलनि। किन्तु से छोड़ि गामहिक लक्ष्मीश्वर एकेडमीमे 1950 ई. मे शिक्षक बनि गेलाह। एक यशस्वी शिक्षकक रूपमे 1980 ई. मे सेवानिवृत्त भेलाह। ओ सरिसबक विद्यापति गोष्ठी एवं मैथिली प्रकाशन समितिक सक्रिय सदस्य एवं संस्थापकमे प्रमुख छलाह।

मनमोहन झाक प्रमुख प्रकाशित कृतिमे *अश्रुकण* (1948), *वीरभोग्या* (1991), *गंगापुत्र* (2005) आ' *मिथिलाक निशापुरमे* (2005) आदि अछि। किछु सम्पादित कृति सेहो छनि। मैथिलीक कथाक विकासमे मनमोहन झाक कथा अपन कारुण्यधाराक लेल ख्यात अछि। करुणाक कारण अछि प्रेम, आकर्षण एवं बिछोह। लोकक हृदयक ई भाव सर्वजनीन अछि; कालातीत अछि; जाति, धर्म, सम्प्रदाय एवं देशकाल निरपेक्ष अछि। ई करुणा दू हृदयक टुटल तारकेँ जोड़ि झंकृत करैत अछि। मनमोहन झा अपन कथाक भावभूमि मनुष्यक एही करुणाकेँ बनाओल। पहिल कथा संग्रहक नामो राखल तदनुकूल *अश्रुकण*। हिनक कथाक प्रसंग कहल जाइछ जे ओ बंगला कथाक कारुण्यधारासँ अनुप्राणित अछि।

किन्तु मनमोहन झाक कथाक जे पक्ष सर्वथा अनालोचित अछि, से थिक राष्ट्रीयता एवं उपराष्ट्रीयता अर्थात् भारतीय राष्ट्रीयता एवं मैथिल उपराष्ट्रीयता। हिनक कथाक पात्र राष्ट्र प्रेममे आकण्ठ निमग्न अछि। ई राष्ट्र प्रेम भौगोलिक अखण्डता पर प्रहार एवं सांस्कृतिक सम्पदाक रक्षा लेल आत्मोत्सर्ग धरि परिव्याप्त अछि। पटना सचिवालय पर सँ यूनियन जैक उतारि, तिरंगा फहरेबाक क्रममे 1942 ई. मे अङरेजी सरकारक वर्वरता एवं नृशंस हत्याक पृष्ठभूमिमे लिखित कथा अछि *आहत आत्मा* । अङरेज सरकारक गोलीसँ आहत एहि कथाक पात्र नरेन्द्र बाबूक प्रबल विश्वास छनि जे एहि बेरक बाजी हुनके (भारतवासीक) थिकैन्ह। ओ कहैत छथि - *ई आगि जे अखिल भारतमे सुनगि रहल अछि, से विदेशी शासनक दमनवृष्टिसँ नहि मिझएतैक।* ओ अपन एक मात्र कन्याक विवाह क्रान्तिकारी भास्करसँ करेबाक विचार रखैत छथि। आ' कहैत छथि जँ बाँचि जाएब तँ उषाकेँ तेहन राजनीतिक शिक्षा दिआएब जे भारतक नारीमे ई अग्रगण्य कहाओत। ई प्रथम मैथिलानी होएत जे नायडूक(प्रायः सरोजिनी नायडू) समकक्षता पाओत। एहिना पाकिस्तानी आक्रमणक पृष्ठभूमिमे *वीरभोग्या* लिखल गेल अछि। ताजमहल निर्माणक समय उजाड़ल गेल यमुना कातक किसानक सन्ततिक नववधू इजोरिया रातुक निशीथमे धारक ओहि पार चमकैत ताजमहलक दिश इंगित करैत पतिसँ अनेको प्रश्न करैत अछि। आ' जखन ओ प्रौढ़ासँ बृद्धा भए मृत्युक सन्निकट पहुँचि जाइछ तँ पतिसँ कहैत अछि- *इएह ताजमहल हमरा रुग्ण बनौलक। यमुनाक धारामे एकरे प्रतिबिम्ब देखि-देखि हमरा अपन दारिद्रय तथा दुख स्मरण होइत रहल। हम यदि मरि जाए तँ हमरा अपन खेतमे डाहि देब आ' हमर देहक छाउर ओहि खेतमे मिला देबैक।*

मैथिल राष्ट्रीयताक भावभूमि पर लिखित मनमोहन झाक प्रसिद्ध कथा अछि सप्तपदी (*वीरभोग्या*), मीनाक्षी (*गंगापुत्र*), एक पत्र : एक प्रेरणा' आदि। मिथिलाक स्वायत्तताक विरुद्ध षड्यन्त्रमे लीन छद्मवेशी पतिक मिथिलाक प्रति अनिष्ठापूर्ण चालि पर अपन प्रेम आ' समर्पणक बलिक लेल तैआर महाश्वेता पतिसँ निधोख कहैत अछि - *देशद्रोहक प्रायश्चित कए, अहाँ बंग देशक भोतिआएल सैन्यक संहार करबामे मिथिलाक सैन्यक सहायता करू। आए हमरा संग जे तीन डेग बाँचल रहि गेल छल, से तीनू डेग देशक सेवा दिश बढ़ाउ। बंग वाहिनी दिश नहि, मिथिलाक सैन्य शिविर दिश।* एहिना महाराज मिथिसँ लए नान्यदेव धरि जे मिथिलाक उज्ज्वल इतिहास छैक, तकरा विध्वंस करबाक बल्लाल सेनक लक्ष्यकेँ देखि मीनाक्षी मिथिलाक सांस्कृतिक सम्पदाक रक्षाक हेतु अपन प्रेमक आहूति दए दैत अछि। ओ अपन क्षीण वाणीमे कहैत छनि - *युवराज, अहाँ कोरमे हमर अन्तिम क्षण यथार्थमे हमरा आकाश उठा देलक अछि। परन्तु, मिथिलाक संस्कृतिक रक्षा तँ ओहूसँ अधिक उठल छैक।*

गंगामे डूबि प्राणान्त करबाक हेतु चलल विफल मनोरथी, बाटमे आन्ध्रक लोकक हृदयक हार रामुलुक प्राणत्यागक समाचारसँ प्रेरित भए प्रेमिकाकेँ पत्र लिखैत अछि -

आब हम मगधमे जाकेँ नहि मरब, मिथिलामे जाकेँ मरब। हमर मृत्यु गंगामे कूदिकेँ निरर्थक नहि होएत। सार्थकताक भित्ति पर हमर मृत्यु मिथिलाक माटि, मिथिलाक संस्कृति, मिथिलाक भाषाक लेल कोनो कारागारक बन्द कोठलीमे हो, वा कोनो राजभक्त पुलिसक गोलीसँ मरब हम अवश्य।

मनमोहन झाक कथाक ई पक्ष सर्वथा अनालोचित अछि।



मैथिली पत्रकारिताक विकासमे प्रवासीक योगदान

पत्र-पत्रिका थिक पाठ्य सामग्री। पत्रकारिता थिक निर्धारित लक्ष्यक अनुरूप पाठ्य सामग्री परसबाक दृष्टि, कौशल। दूनू अन्तरावलम्बित अछि। प्रजातान्त्रिक युगमे वाक् स्वातन्त्र्य आ' सूचना पएबाक अधिकारक प्रति चेतना बढ़ल अछि। पत्र-पत्रिकाक मारक-प्रभावक क्षमतासँ अवगत आजुक समाजमे पत्रकारिता एक व्यवसाय आ' आजीविकाक माध्यमक रूपमे विकसित एवं प्रतिस्थापित भेल अछि। एहि विकासमे दूटा महत्त्वपूर्ण नियामक तत्त्व छैक। पहिल अछि, लाभप्रदता। से एहि हेतु जे पत्रकारिता मात्र दृष्टिदान वा श्रमदान नहि रहि, अर्थ, प्रतिष्ठा, देशक राजनीतिकेँ प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपेँ प्रभावित करबाक क्षमता अर्जनक साधनक अमित स्रोत बनि गेल अछि। दोसर अछि, नियमित प्रकाशनक लेल सांस्थानिक, वित्तीय एवं प्रबन्धकीय सम्पोषणक प्रयोजन। आजीविका, व्यावसायिकता एवं सांस्थानिक सम्पोषणक दृष्टिसँ अपवाद छोड़ि मैथिलीमे पत्रिका नहि छपल अछि, तखन पत्रकारिता कथी पर होएत। पत्रकारिताक विकास आ' पत्रकारक निर्माणमे सभसँ महत्त्वपूर्ण भूमिका छैक, दैनिक पत्रक। एहि क्षेत्रमे सेहो अपवादे भेटत, निरन्तरता नहि छैक। मैथिल पत्रकार आ' मैथिली पत्रकारिता - दू पृथक् वस्तु थिक, एकठाम नहि सानल जएबाक चाही। एहि दृष्टिसँ मैथिलीमे पत्रकारिता नहि भेल अछि, प्रवासीक योगदानक प्रश्न नहि उठैत अछि। तखन प्रश्न अछि, गत सए वर्षमे जे किछु भेल अछि से की एक कौतुक थिक आ' कि पत्रकारिता। मैथिली भाषा, साहित्य संस्कृति, समाज एवं देशकेँ ध्यानमे राखि विकास तथा संरक्षणक लेल समाजक क्षमता एवं साधन सम्पन्न मातृभाषानुरागीक प्रयास दृष्टि सम्पन्न मैथिली पत्रकारिताक परिचायक थिक कि क्षमता आ' संसाधनक प्रदर्शन, विचारनीय अछि।

मैथिली पत्रकारिताक विकासमे प्रवासीक योगदानक सन्दर्भमे दोसर विचारनीय बिन्दु अछि प्रवासी (Non-Resident)क निर्धारण। प्रवासी (Non-Resident) आ' निवासी (Resident)क सम्बन्ध देशक संग छैक। देश थिक सार्वभौम एवं निश्चित भू-भागक एक राजनीतिक एकाइ। विदेशी मुद्रा विनिमयन अधिनियम (FEMA), 2000 प्रवासी आ' निवासीकेँ मोटा-मोटी फुटबैत कहैत अछि जे वर्षमे कमसँ कम एक सए अस्सी दिन देशसँ (भारतसँ) बाहर रहथि वा देशसँ बाहर जीविकापन्न होथि, प्रवासी भारतीय (NRI-Non Resident Indian) छथि। की एहिना प्रवासी मैथिलक (Non-Resident Maithils) निर्धारण कए मैथिली पत्रकारिताक विकासमे हुनक योगदानक आकलन कएल जाए ? एहि कोटिक मैथिल द्वारा एम्हर आबि एक-आध पत्रिका कहिओ काल छपल अछि, किन्तु नाम मात्रेक मैथिली देखबाक अवसर भेटत। पत्रिकाक प्रकाशनक लेल पूजीक प्रयोजन होइत छैक। विदेशी पूजी निवेशक पर्याप्त महत्त्व अछि। किन्तु मैथिली पत्रिकाक प्रकाशनमे आ' प्रकारान्तरसँ मैथिली पत्रकारिताक समृद्धिक हेतु प्रवासी भारतीय मैथिलक सहयोग प्राप्त भेल हो, तकर उदाहरण नहि अछि। देशक मैथिलीक पत्रकारिताक विकासमे प्रवासीक योगदानक निर्धारण कएल जाए तँ मात्र नेपालसँ प्रकाशित मैथिली पत्रिका आ' पत्रकारिताक हिसाब करए पड़त। मुदा, विदेशी मुद्रा विनिमयन अधिनियम

(FEMA)मे सेहो नेपाल आ' भूटानकेँ विशेष दर्जा आ' सुविधा प्राप्त छैक। तखन भारतीय क्षेत्रक मैथिली भाषी आ' नेपालक मैथिली भाषीक बीच जे भौगोलिक सन्निकटता तथा युग-युगसँ अविच्छिन्न सुदीर्घ सांस्कृतिक एकसूत्रता छैक, से देखैत विदेशी मानव सर्वथा असांस्कृतिक होएत। भलहि सरकारी गैर-सरकारी लाभ-सुविधाक बखरा-बाँटक समय दू देशक प्रश्न उठाकेँ सांस्कृतिक सम्बन्ध एवं एकसूत्रता गौण कए देल जाइत हो।

कवीश्वर चन्दा झा मिथिलाक चौहद्दीक निर्धारण कएल। जॉर्ज ग्रिअर्सन भाषिक मानचित्र प्रस्तुत कएल। एहि हिसाबेँ पटना सेहो प्रवासे भेल। 'केओ जेतै हांजीपुर केओ जेतै पटना'। मैथिली साहित्यमे ठामठाम भेटैत अछि -'तिरहुत सन नहि दोसर देश' वा 'परम प्रिय पावन मिथिला देश'। ई सभ भावात्मक उद्‌बोधन थिक। एहिसँ प्रवासी निवासीक निर्धारण नहि कए सकैत छी। एहिमे सभसँ भिन्न एक सांस्कृतिक मिथिला अछि। ओ ठामठाम चहचह करैत अछि। सांस्कृतिक मिथिलाक इएह चहचही मैथिली भाषा-साहित्य, संस्कृति आ' मिथिलांचलक समग्र विकासक लेल चिन्ता करैत आएल अछि। ओ चिन्तना जखन आ' जतय संघनित भेल अछि, विद्यापतिक ध्वजा फहरैत अछि, सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होइत अछि आ' दीर्घकालिक एवं प्रगाढ़ भेला पर सामान्य लोककेँ आकर्षित एवं उत्प्रेरित करबाक हेतु पत्र-पत्रिकाक माध्यमेँ ओ प्रस्फुटित होइत अछि।

मैथिली पत्रकारितामे प्रवासीक योगदानक आकलनक लेल, के प्रवासी तकर निर्धारणक आवश्यकताकेँ देखैत अविच्छिन्न भौगोलिक एवं सांस्कृतिक निरन्तरता आ' पसरल सांस्कृतिक मिथिलाक सघनताक आधार पर बिहार, झारखंड सहित एवं नेपाल तराइकेँ छोड़ि शेष स्थानसँ प्रकाशित मैथिली पत्रिकाक माध्यमसँ भेल पत्रिकारिताकेँ प्रवासीक योगदानक रूपमे आकलन कए सकैत छी। आकलन लेल दू टा कालखंड अछि - स्वाधीनतापूर्व आ' स्वाधीनता काल। स्वाधीतापूर्व जयपुर, बनारस, अलीगढ़ अजमेर, आगरा आदि एवं स्वाधीनता कालमे कलकता, इलाहाबाद, दिल्ली, गुआहाटी, मुम्बई, काठमांडू आदि स्थानसँ पत्रिका छपल अछि। ओहि सभ स्थानसँ कोन-कोन पत्रिका छपल वा की-की छपल, तकर इतिवृत्ति प्रस्तुत नहि कए, प्रभावक संक्षिप्त आकलन प्रस्तुत अछि।

मैथिलीक पहिल पत्रिका *मैथिल-हितसाधन* जयपुरसँ छपल। दोसर पत्रिका *मिथिलामोद* वनारससँ छपल। तदुपरान्त, दरभंगासँ *मिथिला मिहिर* छपब प्रारम्भ भेल। एहिसँ स्पष्ट अछि जे मैथिली पत्रिका वा पत्रकारिताक प्रेरणाभूमि प्रवास अछि आ' प्रवासी छथि।

पत्रकारिता एक दृष्टि थिक। ई निश्चित लक्ष्य एवं निष्पक्षतापूर्वक पाठ्य-सामग्री परसबाक कौशल थिक। ई दृष्टि विकासशील एवं परिवर्त्तनशील अछि। कारण अछि, युगीन प्रयोजन आ' लेखकीय व्यक्तित्व। उन्नैसम शताब्दीक अन्तिम पहरमे प्रखर भेल सुधारवादी आन्दोलनक प्रभाव सभसँ पहिने आ' बेसी प्रवासी मैथिल पण्डितवर्ग पर पड़ल। दूनू पत्रिकाक सम्पादक विद्यावाचस्पति मधुसूदन ओझा आ' म.म. मुरलीधर झाक दृष्टि समाजोन्मुखी छल। मिथिलामे व्याप्त सामाजिक दुर्गुण, धार्मिक अन्धविश्वास, शिक्षाक क्षेत्रमे व्याप्त अगतिकता आ' मातृभाषाक विकास एवं

संरक्षणक चिन्ता प्रबल छलनि एवं मिथिलाक विभिन्न प्रकारक समस्याසँ अवगत छलाह। राष्ट्रीय स्तर पर चलि रहल सुधारवादी सामाजिक आन्दोलनसँ लोकक मानसिकतामे होइत परिवर्त्तनक द्रष्टा छलाह। विकासक बाट कोना प्रशस्त भए सकैछ, तकर साक्षात परिचय आ' ज्ञान छलनि। दूनू पत्रिका सामाजिक उत्थान एवं प्रयोजन सिद्धिक हेतु एक स्वतन्त्र आ' निर्भीक मंच भए गेल। इएह सामाजिक दृष्टि ओहि कालक पत्रकारिताक मुख्य लक्ष्य छलैक।

पत्रकारितामे लेखकक प्रखर आ' निर्भीक व्यक्तित्वक महत्त्व अछि। व्यक्तित्वमे निर्भीकताक अभावक मुख्य कारण थिक आर्थिक निर्भरता एवं असुरक्षाक बोध। विद्यावाचस्पति मधुसूदन ओझा आ' म.म. मुरलीधर झा मिथिलाक तात्कालीन सत्ताक केन्द्र दरभंगा पर आश्रित नहि छलाह। ओ जतए कार्यरत छलाह वा निवास करैत छलाह, तकरा वा ओहिठामक लोककेँ मिथिलासँ कोनो मतलब नहि छलैक। एहि लेल दूनू पत्रिका मिथिलाक सामाजिक व्यवस्था एवं सत्ताशीलवर्गक काजक गुण-दोषक विवेचन निर्भीकता एवं स्पष्टवादिताक संग करैत पाठकक मानसिक धरातलक उन्नयन करैत रहलाह। इएह निर्भीकता एवं स्पष्टवादिता पत्रकारिताक उत्कर्ष एवं मानदण्डक आधार थिक। एही गुणक अभावमे सत्ताक झुनझुना पर लुब्ध पत्रकार एकभगाह भए विवेककेँ तिलांजलि दए दैत अछि। *मैथिल हितसाधन* सामाजिक शिक्षाक महत्त्वक प्रसंग लिखैत अछि -

सर्वप्रथम मिथिलामे शिक्षाक आवश्यकता छैक। ओना तँ अनेक मैथिल शिशु शीघ्रबोध, सारस्वत वा कारिकावलीक पोथी हथियबितहिँ छथि, परन्तु तादृश शिक्षा वर्तमान कालमे पर्याप्त नहि भए सकै अछि...उच्च शिक्षा पओलहुँ उत्तर मैथिल लोकनि वांचव, लिखब, हिसाब (Readfing, Writing, Arithmatics) सन आवश्यक विषयमे अपटु छथि - एहना स्थितिमे लिखब पढ़ब, गणित, भूगोल, इतिहास आदि सामाजिक शिक्षाक मिथिलामे नितान्त आवश्यकता अछि।[1]

पत्रकारिता मात्र वर्तमानक समीक्षा नहि थिक, ओहिमे जनमानसकेँ प्रभावित करबाक अपार क्षमता छैक। पत्रकारिताक एहि क्षमतासँ परिचित *मैथिल-हितसाधन* पारम्परिक शिक्षासँ समाजमे आएल जड़ता आ' बढ़ल अपटुता पर प्रहार करैत अछि। सामाजिक शिक्षाक महत्त्व एवं उपयोगिताक प्रतिपादन करैत अछि। शिक्षाकेँ मात्र उच्चज्ञान एवं शास्त्रार्थमे जय-पराजयक आधार मानबाक पक्षपातीक खिधांसक परवाहि नहि करैत अछि। सामाजिक शिक्षाक खिधांसकेँ 'हा हा ही ही लल्लो चप्पो'क संज्ञा दए अपन बाट एवं सिद्धान्त पर अडिग रहल। ई निर्भीकताक परिचायक थिक। मिथिलाक समाजक उन्नयन जकाँ मैथिली भाषा-साहित्यक विकासक चिन्ता छलैक। पहिले पहिल ओही पत्रिकामे पोथीक प्रकाशन प्रारम्भ भेल। ई परम्परा क्रमशः विकसित आ' प्रशस्त भेल अछि।

मैथिल-हितसाधन यद्यपि किछु वर्ष धरि प्रवासी आ' निवासी - दूनू वर्गक मैथिलकेँ अपन मातृभूमि आ' मातृभाषाक विकास एवं प्रचार-प्रसारक चेतना जगाकेँ अस्त भए गेल, किन्तु प्रवाससँ प्रकाशित समस्त पत्रिकामे दीर्घजीवी *मिथिलामोद* सामाजिक विषमता आ' दुर्गुण, सामयिक समस्या,

1. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', *मैथिली पत्रकारिताक इतिहास*, उद्धृत, पृ. 32

नारी शिक्षाक प्रयोजनीयता, समुद्र यात्रा वर्जनीय वा नहि, मिथिलाक समग्र विकासक लेल मैथिलक सीमा-विस्तार, सामाजिक संगठनक गतिविधि एवं अन्तर्विरोध आ' नीति पर प्रहार करैत रहल। मैथिली पत्रकारिताक एहि व्यापक दृष्टिक किछु उदाहरण प्रस्तुत अछि -

कतेको एहन महापुरुष छथि जनिका आइ-काल्हिक राजविद्याक गंधो नहि, अपन संस्कृत विद्याक कथा कोन! प्रायः सोझसाझ अपन हस्ताक्षर मात्र पौरुष।[2]

क्षेत्र एवं भाषाक विकासक लेल एकता आवश्यक अछि। एकर घोर अभाव छल आ' औखन अछि। एहि प्रसंग *मोद* लिखैत अछि -

एक देश, एक प्रगन्ना, एक गाम, एक जाति ओ एक घरमे रहि जतेक हमरा सबहिँ अपन अपन ऐक्यरज्जुकेँ तोड़बाक उद्योगमे यत्नपर रहैत छी, विचार करू जँ ताहि रूपेँ अपना लोकनिक हट्टा बरदो डोरी तोड़ि सिंहतौड़ौअलिमे लागल रहै तँ आइ सभहिँ पंच अन्न-अन्न कय भुकि मरी।[3]

मिथिलामे 'आलस्यदेव'क बढ़ैत उपासकक संख्यासँ चिन्तित *मोद* व्यंग्य करैत अछि -

निरुद्योगी आलसी आ' अहंकारी हमरा सभहिँ पूर्व पुरुषहुक अर्जल गाछी, बाँस, खेत इत्यादि सभकेँ नष्ट कय भाङ बूटी, कुण्डी, सोंटा झुलबैत गामे गाम बौआइत फिरैत छी। एही आँखिये देशोन्नति देखब?

एहिना समाचारपत्र ओ मासिक पत्रक आवश्यकतापर बल दैत अछि - *एहिसँ सर्वसाधारणमे स्वकर्त्तव्यक ज्ञानक विकास यादृश होइत अछि तादृश अन्य उपायसँ होएब दुष्कर।*[4] ओहिना राजा महाराजा आदि वर्गक अङरेज भक्ति पर प्रहार करैत अछि, *राजा, महाराजा बहादुर बाबू बबुआन प्रभृति श्रीमान महोदय काँ गौरांग राजपुरुष लोकनिक तोषामोदसँ अवकाश नहि, तखन एहि दिशि के ताकै?*

मिथिलामोद सामाजिक विषयक संग साहित्य-निर्माणक अजस्र प्रेरणा-स्रोत बनल। भाषा-चिन्ता आ' साहित्य-सर्जना पत्रकारिताक अंग छलैक। मैथिलीमे पोथीक धारावाहिक प्रकाशन, कथा, कविता उपन्यास निबन्ध, समाचार-विचार लेखनकेँ व्यापक बनाओल। मैथिली पत्रकारिताक क्षेत्रमे *मिथिला मोद*क अवदानक प्रसंग बाबू लक्ष्मीपति सिंह लिखल अछि -

विभिन्न विधाक प्रौढ़ साहित्यिक रचना, निर्भीक आलोचना एवं गम्भीर सम्पादकीय मन्तव्यक प्रसादातेँ मोद किछुए दिनमे समस्त मैथिल जगत पर अपन प्रभाव जमाए देने छल।[5]

मैथिल-हितसाधन आ' *मिथिलामोद*क अतिरिक्त प्रवाससँ प्रकाशित मैथिल प्रभा (अजमेर,

2. *मिथिला मोद*, उद्‌गार-3, सन् 1313 साल
3. *मिथिला मोद*, उदगार-3, सन 1313 साल
4. *मिथिलामोद* उद्‌गार- 39, सन् 1317 साल
5. *मैथिली साहित्यक रूपरेखा*, चेतना समिति

आगरा), *मैथिल प्रभाकर* (अलीगढ़), *मैथिल बन्धु* (अजमेर) आदि द्विभाषिक (हिन्दी-मैथिली) छल तथा एकर मूल लक्ष्य छलैक कतेको पीढ़ीसँ प्रवासी भेल मिथिला मूलक लोककेँ मैथिलीक शिक्षा दैत मिथिलाक सांस्कृतिक गरिमाक परिचय कराएब। ई सभ भावात्मक सम्बन्धक पक्षधर आ' प्रचारक छल।

स्वाधीनतासँ पूर्व प्रकाशित मैथिली पत्रिकाक पाठ्य सामग्री देखि स्पष्ट अछि जे ओहि समयमे मैथिली पत्रकारिताक समक्ष मिथिलाक सामाजिक सुधार आ' मैथिली भाषा-साहित्यक सम्बर्धन मुख्य लक्ष्य छलैक। *मैथिल-हितसाधन* क अस्त एवं *मिथिलामोदक* प्रकाशन अनियमित भए गेला पर मैथिलीमे पत्रिकाक आवश्यकता बेसी अनुभव कएल गेल। मिथिलासँ प्रकाशित पत्रिका *मिथिला मिहिर, मिथिला, श्रीमैथिली, मिथिलामित्र, भारती, विभूति* आदि मैथिली भाषाक सम्बर्धन एवं सामाजिक सुधारकेँ अपन लक्ष्य बनौने रहल। किन्तु, सामाजिक वा सांगठनिक विसंगति एवं अन्तर्विरोध पर प्रहारमे जाहि निर्भीकता आ' स्पष्टवादिताक दर्शन ओहि दूनू पत्रिकामे होइत अछि, एहि सभमे खटकैत अछि। हमरा जनैत तकर मूल कारण थिक, सम्पादकक व्यक्तित्व पर सामाजिक एवं राजनीतिक सत्ताक प्रभाव एवं सामीप्य।

राष्ट्रीय स्वाधीनताक प्राप्तिक संग सामाजिक आ' राजनीतिक परिदृश्यमे परिवर्त्तन भेल। पहिने पण्डित लोकनिक प्रवासन होइत छल। बेसी काल पश्चिम प्रान्तक राज-राजवाड़ा वा ओहि वर्ग द्वारा स्थापित सम्पोषित संस्कृत विद्यालय/कॉलेजमे अध्यापन कार्य करैत छलाह। ओ सभ ढ़हि-ढ़नमना गेल। स्वाधीनताक उपरान्तो प्रवासनक प्रयोजन आजीविकाक लेल रहलैक। मुदा, लक्ष्य शिक्षण संस्थान नहि, सरकारी गैर-सरकारी कार्यालयक चाकरी भए गेलैक। केन्द्र भेल पूर्वी भारतक शहर कलकत्ता। भाषाक आधार पर राज्यक पुनर्गठन एवं संविधानक आठम अनुसूचीमे मैथिलीक स्थान नहि रहलासँ मैथिली पत्रकारितामे सामाजिक जागरणक स्थान पर भाषा आन्दोलन एवं साहित्यक सम्बर्धनाकेँ प्राथमिकता भेटि गेलैक। कलकत्तासँ प्रकाशित भेल *मिथिला दर्शन* एकर उदाहरण थिक। कलकत्तहिँसँ प्रकाशित *देसकोस* साहित्यक आधिपत्यकेँ तोड़ि मैथिली पत्रकारिताकेँ पुनः सामाजिक, राजनीतिक आ' विचार- विवेचन दिस मोड़ि पाठकक मानसिकता आ' रुचिमे परिवर्त्तन अनबाक प्रयास कएल। किन्तु, ओहि प्रयासक दुर्भाग्यपूर्ण अन्त साहित्यिक विशेषांकक रूपमे भए गेलैक। गत किछु वर्षमे दिल्ली, हैदराबाद, इलाहाबाद, गुआहाटी, मुम्बइ आदि स्थानसँ नयनाभिराम पत्रिकाक प्रकाशन भेल अछि। मुदा, उपजीव्य साहित्ये अछि। विभिन्न प्रकारक सामाजिक समस्याक प्रसंग चिन्तन कम भेटैत अछि। ई भिन्न बात जे साहित्यहुमे समाजे रहैत अछि। परंच, इहो यथार्थ जे साहित्यक माध्यमेँ समाजकेँ बुझबाक क्षमता कम लोकमे होइत छैक। एहिसँ पाठकक संख्या प्रभावित भेल अछि।

अद्यावधि, मैथिलीमे जे पत्र-पत्रिका छपल अछि, ओकर जड़िमे छथि मैथिली प्रेमी, मैथिलीक साहित्यकार आ' मैथिलीक मान्यता एवं विकासक लेल तत्पर मातृभाषानुरागी। सम्प्रति एही क्षेत्रमे प्रकाशक, सम्पादक आ' लेखककेँ अपन परिचय आ' बाँहि पूजेबाक गुंजाइशो छनि। इएह कारण थिक जे मिथिलाक *सन्धान* मे उठल डेग कथा/कथाकार पर केन्द्रित विशेषांकमे सम्पुटित भए जाइत अछि।

प्रजातन्त्रक चारिम खाम्हक रूपमे मान्य पत्रकारिताक क्षेत्र-विस्तारसँ विशेषज्ञताक महत्त्व बढ़ल अछि। विभिन्न क्षेत्रक लेल विभिन्न प्रकारक पत्र-पत्रिका आ' तदनुरूप विशेषज्ञ पत्रकार। ओहूमे समाचार-विचार प्रधान पत्रिकाक महत्त्व बेसी अछि। राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रमे घटैत घटना पर तीक्ष्ण दृष्टि रखैत विश्लेषणोन्मुखी पत्रकारिताक महत्त्व सर्वोपरि अछि।

मैथिलीमे पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन व्यवसाय नहि भेल अछि। एहि क्षेत्रमे पूजी निवेशक साहस कोनो उद्यमीकेँ नहि छनि। आजीविकाक बाट प्रशस्त नहि छैक। आजीविकाक अभावसँ पत्रकारिताक ज्ञेत्रमे आकर्षण न्यूनतम छैक। स्वतन्त्र आ' निर्भीक भए दिन प्रतिदिन घटैत घटना पर नजरि राखि प्रतिभाशाली विश्लेषणकर्ता पत्रकारक निर्माणक पृष्ठभूमि अनुर्वर अछि। तखन समुन्नत भाषाक पत्र-पत्रिका, पत्रकार आ' पत्रकारिताक मैथिली पत्र-पत्रिका वा पत्रकारितासँ तुलना करब कोना समीचीन होएत।

जँ पत्रकारिताक अर्थ आजीविकासँ जोड़ि नहि देखल जाए, जँ पत्रकारिताक अर्थ मात्र दैनिक पत्रमे लिखब छपब नहि हो, जँ पत्र-पत्रिकाक अर्थ व्यवसाय आ' कोनो व्यवसायी प्रकाशनगृहक नयनाभिराम प्रकाशन नहि हो, जँ पत्रकारिताक अर्थ मात्र साहित्येतर लेखनसँ नहि हो, तँ मैथिली पत्रकारिताक सुदीर्घ परम्परा छैक। आ' एहि परम्पराक श्रीगणेश आ' प्रचार प्रसारमे प्रवासी मैथिलक योगदान सभसँ बेसी अछि। मैथिली पत्रकारिताक आरम्भ मिथिलामे सामाजिक शिक्षाक विकास एवं मैथिली भाषा-साहित्यक समुन्नयनक महत्त लक्ष्यसँ भेल छल। एहि क्षेत्रमे निरन्तर विकास भेल अछि। सफलता भेटल अछि। एहि उपलब्धि सभमे प्रवासीक योगदान महत्त्वपूर्ण अछि। सम्प्रति जेना केन्द्र परिधिकेँ आलोकित आ' निर्देशित करैत अछि, ओहिना सांस्कृतिक मिथिला, मैथिली पत्रकारिताकेँ प्रकाशमान आ' सम्पुष्ट कए रहल अछि। ओहिना सांस्कृतिक मिथिला, मैथिली पत्रकारिताकेँ बहुमुखी, व्यापक एवं दृष्टि सम्पन्न कए रहल अछि।



मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री

जागरण, संगठन, सामाजिक दायित्वबोध आ' समन्वित राष्ट्रीय-दृष्टिक विकासक अनेक बाट अछि। ओहि बाटमे प्रमुख अछि, स्वर्णिम अतीतक पराक्रमी व्यक्तिक अवदानक परिचय द्वारा लोक केँ उत्प्रेरित करब। मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहास पराक्रमी महापुरुषक गौरव-गाथासँ परिपूर्ण अछि। गाथा-पुरुषक विषयमे जनबाक अनेक स्रोत अछि। ओ स्रोत सभ लिखित आ' अलिखित दूनू अछि। जे लिखित अछि तकरा पढ़ल-लिखल लोक पढ़ि-पढ़ि सामाजिक बोधसँ अभिभूत होइत रहलाह अछि आ' जे लिखल नहि जाए सकल, से लोककंठहिक माध्यमे आइ धरि सुरक्षित रहि प्रेरणाक अजस्र स्रोत प्रवाहित करैत आबि रहल अछि। एहिठाम चर्चाक विषय समाजक ओहने पराक्रमी लोकक प्रेरणादायी व्यक्तित्व एवं अलिखित गौरव-गाथा अछि। ओहिमे सँ एम्हर आबि किछु लिपिबद्ध भेल अछि। लिपिबद्ध करबाक प्रयास भए रहल अछि। बेसी काज असम्बद्ध वर्गक लोकक द्वारा भेल अछि। शिक्षाक विकासक उपरान्त सम्बद्ध वर्गक लोकहुक द्वारा लोकगाथाक संकलनक काज प्रारम्भ भेल अछि। ओहीमे सँ एक अछि दीनाभद्री लोकगाथा। एहि लोकगाथाक नायक पराक्रमी भ्रातृद्वय दीना आ' भद्री छथि।

दीनाभद्रीक आधार-स्रोत

दीनाभद्रीक अध्ययन विवेचनक मूलस्रोत जॉर्ज अब्राहम ग्रिअर्सनक संकलन एवं प्रकाशन Selected Specimen of the Bihari Languages -The Maithili Dialect (Z.D.M.G.,1885, Germany) थिक। ओकर प्रकाशनक बादहि मैथिलीक एहि लोकगाथाक परिचय अक्षर जगतकेँ भेलनि एवं अध्ययनक मार्ग प्रशस्त भेलैक। राष्ट्रीय वा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर जतय कतहु दीनाभद्रीक चर्च भेल अछि, तकर आधारभूत सामग्री ग्रिअर्सन संकलित इएह पाठ थिक। राजेश्वर झा[1], डा. वीरेन्द्रनाथ झा[2], डा.रामदेव झा[3] आ' डा.योगानन्द झा[4] आदि जे सब दीनाभद्री लोकगाथा पर छिटफुट लिखल अछि, तकर आधार-स्रोत व्यक्तिगत संकलन थिकनि। ओ संकलित अंश की थिक, केहन अछि, से बिना प्रकाशित कएने ओहि पर लिखैत जाइत गेलाह अछि। एहिसँ प्रतिपादित विषयक तथ्यातथ्यता पर विचार सम्भव नहि अछि। संगहि, एहि बिन्दु पर सभ केओ मौन छथि जे जॉर्ज ग्रियर्सनक पाठ आ' हुनक संकलित पाठमे की अन्तर छैक। एकर स्पष्ट अर्थ भेल जे ग्रिअर्सनक संकलन-सम्पादनसँ ओ सब अपरिचित छलाह। डा. महेन्द्रनारायण राम एवं डा. फूलो पासवान तँ आँखि मूनि लिखि देलनि अछि–

1. राजेश्वर झा, *मिथिला मिहिर,* 22 सितम्बर, 1974.
2. वीरेन्द्रनाथ झा, *मैथिली लोक महाकाव्यक आलोचनात्मक अध्ययन,*1987 (अप्रकाशित शोधप्रबन्ध, ल.ना.मि.वि.वि, दरभंगा)
3. रामदेव झा - *मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य,* 2002,
4. योगानन्द झा - *लोकसाहित्य ओ शब्द सम्पदा,* 2007

'दीनाभद्री लोकगाथा पर बहुत गोटे विद्वान काज केलनि अछि, मुदा आइ धरि एकर मूल गाथा संग्रह नहि प्रकाशित भए सकल अछि'।[5]

ई इतिहास सम्मत नहि अछि। ग्रिअर्सनक अवदानकेँ बिसरि जाएब थिक। प्रो.राधाकृष्ण चौधरी जार्ज ग्रिअर्सनक अवदानकेँ रेखांकित करैत लिखल अछि जे मिथिलाक लोकसाहित्यक क्षेत्रमे डा.ग्रिअर्सन महत्त्वपूर्ण अवदान अछि।[6]

मैथिलीक प्रमुख लोकगाथा

डा. वीरेन्द्रनाथ झा अपन शोधप्रबन्धमे जाहि नओ गोट मैथिलीक लोक महाकाव्यक उल्लेख कएल अछि, से निम्नलिखित अछि - 1. दीनाभद्री, 2. दुलरा दयाल, 3. नइका बनिजारा, 4. विहुला, 5. रूइया रणपाल, 6. लवहरि-कुशहरि, 7. लोरिक, 8. विजय मल्ल एवं 9. सलहेस।

एहिमे विजय मल्ल मैथिलीक नहि, सम्भवतः भोजपुरीक लोकगाथा थिक। इहो डा.जॉर्ज ए. ग्रिअर्सन द्वारा अनूदित एवं संकलित अछि। एकर प्रकाशन मनबोधक *हरिवंश* क अनुवाद एवं *Twenty-one Vaishnav Hymns* क संग एसियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगालक जॅार्नलमे भेल अछि।[7] एहि प्रसंग डा. ग्रिअर्सनक मतकेँ सम्पुष्ट करैत डा. आशा गुप्त लिखल अछि जे भौगोलिक दृष्टिसँ अवश्य विजै मलक कथा पटना-गयाक सीमापर स्थित दायापुर पारवती नामक स्थानसँ सम्पृक्त एवं तेली जातिमे बहुप्रचलित कहल गेल अछि।[8]

लोकगाथाक विषय-वस्तु

लोकगाथा सभमे मिथिलाक विभिन्न जातिक उत्पीड़न एवं ओहि उत्पीड़नसँ उद्धारकक पराक्रमक जयघोष अछि। ओ नायक सभ पराक्रमी जातीय नेताक रूपमे मान्यता पाबि स्मरणीय एवं पूज्य भए गेल छथि। ई लोकगाथा सभ कहिआसँ अस्तित्वमे अछि? एकर रचना के कएलनि? हुनक काल की थिक? से सभटा अज्ञात एवं अस्पष्ट अछि। परंच, एहि लोकगाथा सभमे ई तथ्य अवश्य संकेतित अछि जे समाजमे विषमता छलैक, शोषण आ' उत्पीड़न छलैक। ओही बीचसँ एक

5. महेन्द्रनारायण राम/डा. फूलो पासवान, *दीनाभद्री लोकगाथा साहित्य,* 2007, साहित्य अकादमी
6. पूर्वांचलीय लोक साहित्य, चेतना समिति, 1973. पृ.सं. 13, A Study of the Maithili Folk Literature, Dr. Grierson was the pioneer in bringing to light the folk literature of Mithila through his publications, viz. *Bihar Peasant Life, Maithili Chrestomathy. Dinabhadrik Git and Nebarak Git* etc.
7. *Journal of the Asiatic Society of Bengal*, Vol.LIII, Part- I, page No.95, 1884. The accompanying poem is an excellent example of the pure Eastern Bhojpuri dialect spoken in the district of Shahabad. its grammar is fully described in Part II of my Grammars of the Bihari dialects published by the Government of Bengal.It is also interesting as showing vividly the manners and customs of a district famous for its fighting men.-
8. आशा गुप्त, *जॉर्ज अब्राहम ग्रिअर्सन और बिहारी भाषा-साहित्य,* 1970

जातीय बाहुबलीक जन्म होइत छलैक जे अपन पराक्रमक बल पर जातीय अस्मिताक रक्षा करैत छल। शोषक वर्गक विरोधमे तनि केँ ठाढ़ भए जाइत छल (*आजू मारबै तँ मारत,धमियाइनि, मनुसवा नहिं लेब। दीनाभद्री बड़ सहाय*)। समय-समय पर विद्रोहक आगि लहकैत रहैत छल। ओ सभ अपन-अपन जातिक प्रतिष्ठा आ' जातीय व्यवस्थाकेँ अक्षुण्ण रखबाक हेतु आजीवन सक्रिय एवं सतर्क रहैत छलाह। ओही जातीय नायक सभ पर जातिक प्रतिष्ठा, उन्नति एवं अवनति आदिक सभ छार-भार निर्भर रहैत छल। एहि जातीय भावनाक विकास एकपक्षीय नहि भेल। जातिक लोक हुनका अपन उद्धारक एवं संरक्षक मानैत आदर एवं सम्मानक पद दैत रहल। हुनक शौर्य एवं पराक्रमकेँ गाबि-गाबि प्रेरणा ग्रहण करैत रहल। जातीय नायकक शौर्य एवं पराक्रमक गौरवगाथाक संक्रमण मौखिक होइत छलैक जे कालक्रमेँ लोकगाथाक प्रतिष्ठा पाबि गेल।

जातीय नेताक महत्त्व लोकतन्त्रहुक युगमे समाप्त नहि भेल अछि। केवल जातिक परिभाषा बदलि गेल अछि। एकर प्रबल उदाहरण अछि प्रत्येक राजनीतिक दल द्वारा चुनाओमे जाति विशेषक लोककेँ उक्त जाति बहुल क्षेत्रसँ लड़बाक हेतु पार्टीक टिकट देबाक चालि। तथापि, लोकगाथाक जातीय नायक एवं वर्तमान युगक जातीय नेतामे एक महत्त्वपूर्ण अन्तर अछि। लोकगाथाक जातीय नायकक जीवनक लक्ष्य मूल्याधारित समाज-सेवा छल। जातिक तात्पर्य निश्चित भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं भाषिक क्षेत्रक लोक होइत छलैक। तात्कालिक राजनीतिक लाभक हेतु सम्प्रति जेना विभिन्न भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं भाषिक क्षेत्रक लोक एक मंचस्थ भए जाइत छथि, से स्थिति सम्भवतः नहि छलैक।

गाथा नायकक परिचय एवं लोकगाथाक विषय-वस्तुक अनुसार *दीनाभद्री* मे मुसहर, *दुलरा दयाल* मे गोँढ़ि, *नइका बनिजारा* मे वैश्य, *लोरिक*मे अहीर, *सलहेस* मे दुसाध, *बिहुला* मे बनिञा जातिक गौरव गाथा अछि। आन्हु जे कोनो लोकगाथा प्रकाशित वा चर्चित अछि ओ जातीय नायकेक गाथा थिक। कहि सकैत छी सभ लोकगाथाक विषय-वस्तु जाति आधारित अछि। परंच, लवहरि-कुशहरि केँ कोनो जातिक जातीय लोकगाथा मानब उपयुक्त नहि होएत। तखन ई अवश्य जे मलाह जातिक कंठमे सुरक्षित लवहरि-कुशहरिक रचयिता मलाह जातिक प्रतिभा सम्पन्न कोनो व्यक्ति अवश्य छल होएताह।

दोसर जे बिन्दु एहि लोकगाथा सभक सन्दर्भमे महत्त्वपूर्ण अछि, से थिक दैविक शक्तिक स्थान पर लोकशक्तिक प्रतिष्ठापन। एहि लोकगाथाक नायकक प्रेम पराक्रम एवं शौर्यक उद्‌घोष अलौकिकताक संग भेल अछि। किछुमे देवत्वक प्रतिष्ठा सेहो भए गेल छैक। *दुलरा-दयालक* मानसिंहक राजगद्‌दी प्राप्त करबाक कथा, बिहुला द्वारा अपन पतिकेँ जिअएबाक कथा, लोरिक द्वारा हरबा-बरबाक पराजयक कथा तथा सलहेस एवं दौना मालिनक प्रेम कथामे अलौकिकता आ' शौर्यकेँ विशिष्टता प्राप्त अछि। देवत्व प्राप्त करबाक दृष्टिसँ सलहेस, दीनाभद्री आ' बिहुलाक गाथा विशेष उल्लेखनीय अछि। दुसाध द्वारा सलहेस, मुसहर द्वारा दीनाभद्री एवं बनिञा द्वारा बिहुला लोकगाथाक नायककेँ देवत्व प्राप्त छनि। समस्त लोकगाथा नायक प्रधान अछि, अपवाद अछि बिहुला लोक गाथा। एहि तीनू लोकगाथामे सलहेस एवं दीनाभद्रीक अपेक्षा बिहुलाक क्षेत्र सीमित अछि। मुदा, व्यापक क्षेत्र एवं उपलब्ध लोकगाथामे विशाल आकारक होइतो लोरिककेँ अहीर जातिमे देवत्व प्राप्त नहि छनि।

मैथिलीक एहि लोकगाथा सभमे कतेको प्रकारक साम्य भेटैत अछि। ई साम्य सभ थिक घटना साम्य, कथानक साम्य, नाम साम्य आ' लोकनायकक दृष्टि एवं पराक्रममे साम्य। कतेको लोकगाथामे सलहेस एवं बाघेसरी छथि। दूनूमे पहिने विरोध आ' पछाति मेलसँ दुष्टक नाश होइत अछि। एकरा शैव(शैलेश) एवं शाक्त(बाघेश्वरी/सिंहवाहिनी) मतवादीक विवाद एवं वर्चस्वक सन्दर्भमे सेहो देखल जाए सकैछ। भारतीय संस्कृतिमे जे समन्वय अछि, तकरो ई उदाहरण थिक। साम्यक किछु उदाहरण प्रस्तुत अछि।

दीनाभद्री जोरावर सिंहकेँ परास्त कए चैन होइत अछि तँ लोरिक हरबा-बरबाकेँ पराजित करैत अछि। दीनाभद्रीमे हिरिया तमोलिन आ' जिरिया लोहारिन एवं लोरिकमे चनैन परकिया नायिका अछि। दीनाभद्रीमे फोटरा नामक गीदर एवं नइका बनिजारामे तिलंगा बाछा अपन करामात देखबैत अछि। लोरिकमे सनिका-मनिका आ' सलहेसमे कारीकान्त नामक भागिन छथि जे सहायक होइत छथिन। अंकक समानता तँ सभ लोकगाथामे भेटत। रचनात्मक स्तरपर सुमिरन ओ बन्हन सेहो प्रायः सभ लोक गाथामे अछि।

दीनाभद्रीक विभिन्न पाठ

गीत दीनाभद्री क दू पाठ उपलब्ध अछि। ग्रिअर्सन संकलित गीत दीनाभद्री एवं *दीनाभद्री लोक गाथा साहित्य* मे अनेकहु बिन्दु पर अन्तर अछि। दूनूक विषय-वस्तुमे अन्तर अछि, गाथा संयोजनमे अन्तर अछि, प्रयुक्त शब्दावलीमे अन्तर अछि तथा पात्रक काज आ' प्रभावमे अन्तर अछि। एहि अन्तरक कारण छैक जे दूनू गोटेक स्रोत दू कालखण्डक कथा-वाचक छथि। जाहिमे कमसँ कम सवा सए वर्षक जेठाए-छोटाए छैक। अपन संकलनक प्रसंग ग्रियर्सन लिखने छथि जे नेपाल तराइक घुमन्तू दल द्वारा छओ वर्ष पूर्व जेना सुनल ओहिना लिखल गेल अछि। ई मिथिलाक उत्तर भागमे बड़ लोकप्रिय अछि तथा उच्चरित भाषाक नीक उदाहरण थिक।[9]

ई अन्तर अस्वाभाविक नहि कहल जाए सकैछ। कारण, जे लोचकता लोकगाथाक विशेषता थिकैक। जा धरि ओ लोककंठमे रहैत अछि, वाचकक पात्रता, स्थान, काल एवं प्रस्तुतिक ढ़ंग एवं श्रोता समुदायकेँ बान्हि रखबाक हेतु ओहिमे किछु-किछु परिवर्त्तन होइत रहैत छैक। लोकगाथाक ई लोचकता विशेषता थिकैक। आ' लोचकता समाप्त होइतहिं ओ अप्रासंगिक भए जाइत अछि।[10]

9. Selected Specimen of the Bihari Language, *ZDMG.* Vol. 39, page No. 617,1885 - The following two songs are published exactly as they were taken down from the mouths of two itinerant singers in the Nepal Tarai about six years ago.They are very popular throughout nothern Mithila and are excellent examples of the spoken dialect of that portion of the country
10. Komal Kothari, *Narrative* : A Seminar, Tales : Oral Tales, Sahitya Akademi,1990- They (oral tales) change their contours so much that their social relevance is ever alive. If the grid of an oral tale does not have the capacity to sustain or imbide the new, then it meets its death without leaving any trace.

एहिठाम जार्ज ग्रियर्सनक *गीत दीनाभद्री* एवं *दीनाभद्री लोक गाथा साहित्य* मे भेटल किछु अन्तरक दिस सुधी पाठकक ध्यान आकृष्ट करए चाहब। *गीत दीनाभद्री* मे सात अध्याय अछि एवं *दीनाभद्री लोक गाथा साहित्य* मे तेरह अध्याय अछि। *गीत दीनाभद्री* मे फोटरा गीदरक हाथसँ दीनाभद्री मारल जाइत छथि तँ दोसरमे बाघेसरी मारैत छथिन्ह। *गीत दीनाभद्री* मे बगहाक ताहिर मीयाँक कथा अछि। गुलामी जट ताहिर मियाँक लोक अछि। अपमानित भेला पर फोटरा गीदरक रूप धारण कएकेँ दीनाभद्री गुलामी जटकेँ परास्त करैत छथि। मुदा, दीनाभद्रीक पराक्रम देखि एवं परिचय पाबि गुलामी जट क्षमा-प्रार्थी होइत अछि। दीना एवं भद्रीकेँ सहयोगक वचन दैत अछि। लिखल अछि -

छरपिकैँ फोटरा गीदर गुलामी जट कै धैलक
चटि धैलक पटि दे मारलक, बान्हलक पछुआड़ि धै कै
गोड़ लगैत छी, पैँयाँ परैत छी, एहि नहिँ जनली अहाँ भद्री छी।[11]

दीनाभद्री लोकगाथा साहित्य मे गुलामी जट मक्का मदीनाक वासी थिक एवं दीनाभद्री मकेश्वरनाथक पूजा अर्चना करैत छथि। एकर अतिरिक्त हिन्दू एवं इस्लाम धर्मक चर्चा सेहो होइत अछि। पहिल संकलनमे दीनाभद्रीकेँसलहेसक सहायता प्राप्त होइत छनि तँ दोसरमे योगमल किरातीकेँओ सहायता लेल आह्‌वान करैत छथि। पहिल संकलनमे दीनाभद्रीक परकिया नायिका हिरिया तमोलिन एवं जिरिया लोहारिन अछि। दोसर संकलनमे नहि अछि। ग्रिअर्सनक गीत दीनाभद्रीक अन्त जोरावर सिंहक मृत्युक संग होइत अछि। दोसरमे दीनाभद्री स्वयं घूमि-घूमि अपन पराक्रमक प्रसंग लोकसँ जानय चाहैत छथि। गहवर बना केँ पूजा करबाक आदेश दैत छथिन्ह। ओ इहो आदेश दैत छथिन्ह जे गहवरमे हुनक एक कात बाघेसरी आ' दोसर कात योगमल किरातक स्थापना कए पूजा कएल जाए। पहिलमे महफा पर जाइत हिरिया तमोलिन एवं जिरिया लोहारिनक डोलीकेँ जोरावर सिंह छेकि लैत अछि तँ गुलामी जट एवं जोरावर सिंहक बीच कुश्ती होइत अछि। दीनाभद्रीक संकेत पाबि ओ जोरावर सिंहकेँ पटकि दैत छथि। जोरावर सिंह मारल जाइत अछि-

जोरावर सिङ्घ के गुलामी जट मारलक बाँसक ओधि लगाय।
चटि दै भद्री देलक बान्हि कनौली गरद उठि गेल।
कनौली मेँ जोरावर सिङ्घ राजपूत मारल गेल, दीनाभद्री बैरी भेल
कनौली मेँ जोरावर सिङ्घ राजपूत मारल गेल दीनाभद्री सौँ। [12]

मुदा, दोसरमे कहलो पर दीनाभद्री जोरावर सिंहक अखारा लगसँ नहि हटैत छथि। अन्ततः मलयुद्ध होइत अछि। दीनाभद्रीक आह्‌वान पर हुनक कायामे योगमल किराती प्रवेश कए जाइत छथिन्ह तँ ओ जोरावर सिंहकेँ पटकि हत्या करबामे समर्थ होइत छथि। *दीनाभद्री लोकगाथा साहित्य*

11. *Z.D.M.G.*, Selected Specimen of the Bihari Languages - The Maithili Dialect, 1885 Page No. 651
12. *Z.D.M.G.*, Selected Specimen of the Bihari Languages-The Maithili Dialect, 1885 Page No. 652

मे दीनाभद्रीकेँ अङरेजी भाषाक ज्ञान सेहो छनि। भद्री कहैत अछि - *भैया से हम आर्डर नेने रहीतियै तऽ एकरा मारि के हम सारा बना दीतीये (76)।* [13]

गत सबा सए वर्षमे सामाजिक परिवेश बदलि गेल अछि। देशक राजनीतिक परिदृश्य बदलि गेल अछि। सामाजिक चिन्तन एवं सरोकारकेँ प्रभावित करए बाला घटक सब बदलि गेल अछि। एहि सभसँ गाथा गायकक दृष्टि, चिन्तन, विचारधारा एवं भाषा प्रभावित भेल अछि। तकर पर्याप्त एवं स्पष्ट उदाहरण गीत दीनाभद्रीक दूनू पाठक तुलनासँ समक्ष अबैत अछि। अङरेजक समयमे आ'अङरेजक द्वारा संकलित-प्रकाशित दीनाभद्री लोकगाथामे अरबी-फारसीक किछु शब्दक दर्शन होइत अछि। अङरेजी भाषाक शब्दक प्रयोग नहि भेटैत अछि। मुदा, विदेशी शासन-व्यवस्थाक समाप्तिक बाद दीनाभद्री अङरेजीक शब्दक प्रयोग करए लगैत छथि। दीनाभद्री आदेश नहि, आर्डर दैत छथि।

डा.रामदेव झा एवं डा.योगानन्द झाक निबन्धक स्रोत प्रायः एकहि थिक। प्रतिपादन-शैली एवं दृष्टिमे जे अन्तर हो। मगहक हंसराज एवं वंशराजक उल्लेख दूनूमे भेटत। दीनाभद्री ओहि दूनूकेँ मल्लयुद्धमे पराजित करैत छथि। अन्तमे दूनू भाइ जगन्नाथपुरी जाइत छथि। जगन्नाथजीक कृपासँ प्रेत योनिसँ मुक्त भए तिरहुत घूमि अबैत छथि, जतय भुइञा बाबाक रूपमे हुनक पूजा होअए लगैत अछि।

पाठभेद वा क्षेपक कथा सम्बन्धी एहि विवृत्तिक तात्पर्य जे दीनाभद्रीक अध्ययन कोन पाठक आधार लोक करए। ककरा दीनाभद्री लोकगाथाक प्रमाणिक पाठ मानल जाए। कृतिक समीक्षा लिखित पाठक आधार पर होइत अछि एवं आबयबाला समयमे ओ विवेचन-सामग्री बनैत रहैत अछि। मुदा, मूल पाठकेँ बिना समक्ष अनने ई प्रदर्शित करबाक प्रयास भेल अछि जे एहिसँ पहिने ककरो किछु ज्ञात नहि छलैक। ई साहित्यिक अराजकाता थिकैक। एहि अराजकताक कारण थिक नकारात्मक दृष्टि। ई स्थिति भाषा-साहित्यक स्वस्थ विवेचनक लेल साधक अछि, से नहि कहि सकैत छी।

गीत दीनाभद्रीमे कालजयी तत्त्व

दीनाभद्री लोकगाथा लोकक कंठमे एक पुश्तसँ दोसर पुश्त धरि अदौकालसँ संक्रमित होइत आइ धरि सुरक्षित अछि। इएह दीनाभद्री लोकगाथाक कालजेय होएबाक सबसँ पैघ प्रमाण थिकैक। अन्यथा, कहिआ ने कालक्रोड़मे ओ विलीन भए गेल रहैत। *गीत दीनाभद्री* मे प्रेरणाक अजस्र एवं बहुआयामी स्रोत अनुस्यूत अछि। ओ न्यायक पक्षधर अछि, अन्याय, अत्याचार एवं शोषणक विरोध करैछ। । सामाजिक दुर्गुण एवं विकृतिसँ संघर्ष करबाक प्रेरणा दैत अछि। लोकक स्वाभिमान एवं प्रतिष्ठा पर आघातक रक्षाक हेतु आत्मबल जगबैत अछि। व्यक्तिगत लाभ-हानि, एवं सुख-सुविधाक त्याग एवं सामाजिक प्रतिष्ठा, आदर-सम्मानक हेतु संघर्षक लेल लोककेँ तैआर करैत अछि। वैदिक ऋषिक वचनक अनुसार ओहि जीवन-मूल्यक महत्त्व छैक जे कुलक लेल शरीर, गामक लेल कुल,

13. महेन्द्रनारायण राम / फूलो पासवान, *दीनाभद्री लोकगाथा साहित्य*, 2007, साहित्य अकादमी

जनपदक लेल गाम एवं आत्माक लेल पृथ्वीकेँ त्याग करबाक प्रेरणा दैत हो। दीनाभद्री लोकगाथाक नायक दीनाराम आ' भद्रीक चरित्र लोकोपकारिताक एक सर्वोत्तम उदाहरण थिक। एहि लोकगाथाक नायकद्वयक लोककामी आचरण एवं संघर्षक किछु उदाहरण प्रस्तुत अछि।

दीनाभद्री निर्धन अछि, भौतिक सुख-सुविधा प्राप्त नहि छैक। अपन बाहुबल पर विश्वास रखनिहार दीना आ' भद्री स्वाभिमानी अछि। जखन गामक शक्ति-सम्पन्न व्यक्ति धामी ई कहैत अछि जे परोपट्टाक आन-आन लोक ओकर खेतमे काज करब गछि लेलक आ' ओहो दूनू भाए ओकर जन बनि खेतमे काज करौक तँ ओ सब प्रलोभनमे नहि अबैत अछि (*सब के देबो ँ हम चारि सेर बोनि दीना भद्री के देबौ पसेरि भरि बोनि*)। दीनाभद्री साहसपूर्वक एवं स्पष्टताक संग अस्वीकार करैत, कहि दैत अछि -

कबहुँ न. कैल खुरपी कोदारक बोनि,
कहियो न. जानिऔ, हो धामी, पँचा उधार
हरिन सूगर मारि जोगिया कैल गुजरान।
बोलै लागल धामी, साजै लागल मधुरि जवाब।[14]

समाजमे शोषण व्याप्त छलैक। शोषक आ' अत्याचारीक नजरिमे गरीबक मान-मर्यादाक कोनो मोल नहि छल। प्रभुत्व सम्पन्न लोक ककरो घर-आङनमे घूसि गरीबक बहु-बेटीक मान-मर्दन कए सकैत छल। प्रायः एहनहि सामाजिक स्थितिमे कहबी बनि गेल होएत, 'गरीबक बहु सबहक भौजी'। धामीक आपत्तिजनक व्यवहारक विरोध दीनाभद्रीक माए निरसो दृढ़ताक संग करैत अछि। निरसोक एहि विरोधमे ओकर आत्मबल अनुगुंजित छैक। समाजक एक दबल-कुचल वर्गक एक महिलाक ई निर्भीकता असामान्ये नहि, प्रेरणादायक घटना थिक।

कौन गरू परलौं हो धामी, बड़ भोरे छेँकल दुआर
अपन बहु बेटी रखलन्हि घर सुताय
हमर बेटी पुतहु देखलन्हि नाँगट उघार।[15]

दीनाभद्री अपन यात्राक क्रममे ताहिर मीयाँक हबेलीक पुछारी करैत अछि। ताहिर मीयाँ केहन एकवाली आ' आतंकी छल जे ओकर नामेसँ धीयापूता सेहो डेराइत छैक। ओसभ दीनाभद्रीकेँ चेतबैत अछि -

रे बटोहिया, ताहिर मीयाँ गामक गुमस्ता छैक, ओकर नामे

केओ ने बाट बटोही धरैत अछि। [16]

ओही ताहिर मीयाँक चरवाह अछि गुलामी जट। गुलामी जट अपन मालिकक सह पर समाजक निर्बल लोककेँ उत्पीड़ित एवं अपमानित करैत अछि। अकारण लोककेँ अपमानित करबाक अभ्यासी गुलामी जट दीनाभद्रीक अपमान सेहो कए दैत अछि। मुदा तकर फल ओकरा

14. *Z.D.M.G.* Selected Specimen of the Bihari Languages,The Maithili Dialect,1885 P.No.637
15. *Z.D.M.G.* Selected Specimen of the Bihari Languages,The Maithili Dialect,1885 P.No.636
16. *Z.D.M.G.* Selected Specimen of the Bihari Languages,The Maithili Dialect,1885 P.No.650

तुरत्ते भेटि जाइत छैक। दीनाभद्रीक पराक्रमक समक्ष गुलामी जट ठठि नहि सकल, पराजित भए गेल। तेसर उदाहरण अछि जोराबर सिंह सन दुराचारी, समाज विरोधी एवं शोषकक प्रतिकार एवं अन्त। एहि प्रसंग डा.जयकान्त मिश्र विस्तारसँ लिखल अछि।[17]

एहिठाम देखबाक थिक जे दीनाभद्री समाजविरोधी, अत्याचारी आ' दुराचारीक विरोध एवं प्रतिकार कोना करैत अछि। तेसर बेर जखन फोटरा गीदर दीनारामकेँ पटकि हत्या कए दैत अछि आ' अलक्षित रूपेँ सलहेस भद्रीकेँ गाम घूमि जएबाक परामर्श दैत छथि तँ भद्री हुनक परामर्श केँ स्वीकारि, निधोख भए कहैत अछि - जेना जेठ भाए मुइलाह तहिना हम्हु मरब। अर्थात् अन्यायीक समक्ष आत्मसमर्पण नहि कए, जीवनक अन्तिम क्षण धरि संघर्षत करैत रहबाक प्रेरणा दैत अछि।

मरब दूनू भाइ कटैया
जाहि मुँहे ँ धैलक फोटरा गीदर जेठ भाइ के
ताहि मुँहेँ धरौ हमरा के।[18]

इएह एकजुटता एवं भ्रातृप्रेम दीनाभद्रीकेँ समाजमे दीन दुखीजनक विरुद्ध व्याप्त शोषण, अत्याचार, दुराचारक प्रतिकारक शक्ति प्रदान करैत अछि। कहि सकैत छी दुराचारीकेँ पराजित करबाक रणनीतिक सफलताक कारण इएह भ्रातृप्रेम आ' एकजुटता थिक।

ताहिर मीयाँक चरबाह गुलामी जटकेँ जखन ई परिचय भेटि जाइत छैक जे दीनाभद्री दीन-दुखी तथा पीड़ितक सहायक, पक्षधर एवं ओकरहि वर्गक लोक थिकैक, दीनाभद्रीक सहयोगी भए जोरावर सिंह सन दुराचारीक अन्तमे सहायक होइत अछि। समान लक्ष्यक प्राप्तिक हेतु जातीय समीकरणक उदाहरण *गीत दीनाभद्री* मे उपलब्ध अछि।

दीना आ' भद्री प्रबल इच्छाशक्तिक लोकगाथा नायक थिक। ओ एक बेर जे निर्णय कए लैत अछि, पाछू नहि हटैत अछि। एकर उदाहरण अछि बहोरन मामा द्वारा अपशगुन उचारब आ' आखेटक हेतु जंगल नहि जएबाक परामर्श देब -

i) कहियो ने देखल गेहुमनक फेंच पर खंजन फहराइत
ii) बादिल कागा बोलैत अछि मरन मरन
iii) आन दिन भरि छावा उतरलहु पार, आजू देखैत छी अगम अथाह।
iv) आजू कटैया देखैऔक बड़ भेयाओन।

मुसाहु बनिञाक अकारण अपमानजनक आचरण पर भद्री दीनासँ 'भागमति' तीर खैंचि मारबाक आज्ञा मंगैत अछि। किन्तु दीना भद्रीकेँ बहुत तामस नहि करबाक परामर्श दैत अछि। ओ कहैत छैक जे बिनु अपराधेँ गरदनिञा देलक अछि जे अपमान थिक किन्तु हमरालोकनि बलप्रयोग

17. J.K.Mishra,*The Folk Literature of Mithila* , In the last chapter Gulami Jata helps them to conquer Jorabar Singh, a Rajput, who used to enjoy all new brides first when he dares to attack the marriage march of the spirits of Dina and Bhadri.
18. *Z.D.M.G.*, Selected Specimen of the Bihari Languages - The Maithili Dialect, 1885 P.No.641.

नहि कए, एहि अपमानक लेल पंचमे नालिस करी एवं पंचसँ निसाफक लेल अनुरोध करिअनि। दीनाक व्यक्तित्वक ई पक्ष मिथिलाक समाजमे अदौकालसँ प्रचलित पंचायती प्रणालीक प्रचलन एवं ओहिमे आस्थाक परिचायक थिक। ई मिथिलामे आ' मिथिलाक लोकगाथहुमे प्रगाढ़ लोकतन्त्रात्मक मूल्यक महत्त्वक स्वीकार्यता दिस इंगित करैत अछि (पृ.सं. 645)।

रमानाथ झा[19] मिथिलाक समान भाषा, समान संस्कृति ओ समान भौगोलिक क्षेत्रक निवासी केँ मैथिल जातिक संज्ञा देल अछि। एहि जातिक साहित्यक एक महत्त्वपूर्ण विशेषता मानैत छथि गीतात्मकता। ई गीतात्मकता मिथिला-जनपद-भाषामे अत्यन्त प्राचीन कालहिसँ प्रवहमान अछि। ओ मानैत छथि जे मैथिल जातिक भावाभिव्यक्ति आदिअहिसँ एही गीत सबहिक द्वारा होइत आएल अछि। से जहिना मिथिलाक देशी साहित्य विद्यापतिक पश्चात् गीतमय छैक, तहिना ओहिसँ पूर्वहु। दीनाभद्री सेहो मैथिल संस्कृतिक अनुरूप गीतात्मक अछि। ओ मैथिल संस्कृतिकेँ प्रतिनिधित्व करैत अछि एवं मैथिल संस्कृतिक अभिन्न धरोहरि थिक।

शिक्षित वर्गक लोक अपन शिक्षित पाठकक लेल जाहि साहित्यक सर्जना कएल तकर नाम राखल शिष्ट साहित्य। तदनुकूल साहित्य सिद्धान्तक निरूपण कएलनि एवं नायकत्वक लेल राजकुल सम्भूत होएब आवश्यक भए गेलैक। ई सिद्धान्त ततेक रूढ़ भए गेल जे तथाकथित शिष्ट साहित्यक कोनो नायक तथाकथित दलित समाजसँ नहि लेल जाए सकैत छलाह। ई प्रवृत्ति लोकशक्तिक उदय धरि मैथिली साहित्यकेँ आच्छन्न कएने रहल अछि।

किन्तु लोकशक्तिक प्रतिष्ठापनक उपरान्त जे राजनीतिक एवं सामाजिक परिदृश्य अछि आ' जाहि प्रकारक चेतनाक बसात बहि रहल अछि, ओहिमे एकर महत्त्व नहि छैक जे दलित-महादलित जातिसँ भिन्न जाति-वर्गक साहित्यकार दलित-महादलित जातिक संवेदना एवं भूख, अभाव, असन्तोष आ' पीड़ाक चित्रण कतेक प्रखरतासँ करैत छथि वा तथाकथित उच्चवर्गक साहित्यकार सामान्तवादी एवं शोषणोन्मुखी मनोवृत्ति पर कतेक निर्मम प्रहार करैत छथि। प्रश्न छैक आ' वास्तविकता अछि जे दलित-महादलित समाजक लोक अपन कथा-व्यथा स्वयं कहबाक लेल एवं नायक-महानायक गढ़बाक लेल तैआर भए गेल छथि। संगहि, ओ प्रत्येक आयोजित साहित्यिक चर्चा वा लेखनक अवसरमे अपन सहभागिता सेहो सुनिश्चित करए चाहैत अछि।[20]

---

19. रमानाथ झा, विविध प्रबन्ध
20. K.Satyanarayan, *Re-figuring Culture* Dalitism: A Critique of Telugu Literature, Sahitya Akademi, 2005. It does matter how secular you are, the place now has to go to dalits and just as there must be place for dalit characters, there must also be place for dalit writers.They would not like the upper caste writers to write about dalits and about literature today. Even if you write a critique of upper class/caste life, dalits are not bothered about that. I think, these questions (like whose work should now gain a place and be discussed in public) seem to be more the issue than which upper caste writer wrote about or for dalits.

एहि अभियानमे विभिन्न लोकगाथाक महानायक एक आदर्श रूपमे भासमान छथि। तकर कारण अछि जे लोकसाहित्यक नायक वा महानायक दलित, पीड़ित एवं शोषित समाजक छथि। नायक वा महानायक बनबाक लेल जे चारित्रिक गुण चाही, जे पात्रता चाही, जे शौर्य चाही, जे पराक्रम चाही, सभ विशेषता दलित समाजक लोकहुमे वर्तमान छैक। उदाहरण छथि दीनाभद्री लोकगाथाक महानायक एवं देवत्व प्राप्त दीनाराम आ' भद्री। लोक गाथाक एहन-एहन चरित्र साहित्यिक-राजनीतिक क्षेत्र (पोलिटिकल स्पेस) निर्धारणमे सेहो सहायक भए रहल अछि।



मैथिली कथाक विकास : किछु नव तथ्य

मानव भावाभिव्यक्तिक दू टा महत्त्वपूर्ण माध्यम अछि - गीत आ' कथा। कथामे लोक अपन वा अपन समाजक छवि देखैत अछि। विषाद एवं यन्त्रणा देखैत अछि, आशा-आकांक्षा देखैत अछि, हँसब आ' बाजब देखैत अछि। गीत गाबि आ' सुनि लोक आनन्द विभोर होइत अछि। सुख- दुख बिसरैत अछि। तबधल मोन जुड़ाइत छैक। गीत आ' कथाक इएह लोकानुरंजकता लोककेँ अनादि कालसँ आकर्षित करैत आएल अछि।

जेना, गीत गाएब एक कला थिक, ओहिना कथा गढ़ब आ' सुनाएब सेहो एक कला थिक। लोकानुरंजनक एहि कलाक चलनिसारि कहिआसँ छैक, अनुमान करब कठिन। मुदा, ज्योतिरीश्वर ठाकुरक समयधरि 'कथाकौशल' चौंसठि कलामे अवश्य प्रतिष्ठापित भए गेल छल[1]। एहिठाम ध्यान देबाक थिक जे ज्योतिरीश्वर सोझे कथाक उल्लेख नहि कए कथाकौशलक उल्लेख कएलनि अछि। अर्थात् कथा भिन्न एवं कथाकौशल भिन्न बस्तु भेल। कथा विषय-वस्तुसँ सम्बद्ध भेल तँ कथाकौशल कथन-भंगिमा थिक अर्थात् कथा कोना प्रस्तुत कएल जाए जाहिसँ श्रोता बान्हल रहथि। कथन भंगिमामे दू टा तत्त्व महत्त्वपूर्ण अछि - भाषा एवं वाचन-भंगिमा। दूनू मिलि प्रभाव उत्पन्न करैत अछि। मुदा, जतए मात्र वाचन होइत अछि, वाचकक आंगिक क्रिया एवं स्वरक आरोह-अवरोह सेहो प्रभाव उत्पन्न करबामे पूर्ण सहायक होइत छैक। किन्तु, जतए वाचिक-व्यापार नहि होइत अछि, शाब्दिक व्यापार एक मात्र माध्यम रहैत अछि, भाषाक स्थान महत्त्वपूर्ण भए जाइत छैक। भावक अभिव्यक्तिक इएह प्रभावक रीति वा कथन-भंगिमा कथाकौशल थिक।

कथाकौशलक महत्त्व जेना लिखित साहित्यक लेल अछि, तहिना जे कथा वाचिक परम्परामे अछि एवं एक कंठसँ दोसर कंठमे युग-युगसँ संक्रमित होइत आएल अछि, ताहू लेल कम महत्त्वक नहि अछि। ओहुना अपन परिवेशक साक्षात्कार, प्रतिक्रिया, अनुभव एवं प्राप्त अनुभवक कलात्मक अभिव्यक्ति, शिक्षित व्यक्ति वा वर्गक मरौसी सम्पति नहि थिकैक। सामाजिक प्राणीक एहि चारित्रिक विशेषताक कारणेँ कथाकौशलक प्रदर्शन समाजक दू वर्ग द्वारा अपन-अपन वर्गक आस्वाद धरातलक अनुरूप लोकानुरंजनक हेतु होअए लागल छल होएत। जे वर्ग पढ़ल लिखल छल, से शिष्टवर्ग कहौलक। पढ़बा-लिखबामे सक्षम वर्गकेँ जे नीक लगलैक लिखि लेलक। लिखि-लिखि संकलित करैत गेल। आ' जे वर्ग अशिक्षित छल, ओहि वर्गक प्रतिभाशाली एवं कल्पनाशील व्यक्ति द्वारा अनुभूत, गढ़ल गेल वा जे गढ़ाइत जाइत रहल, ओहि वर्गक सदस्यक एक कंठसँ दोसर कंठमे सक्रमित होइत रहल। शास्त्रीय शब्दावलीमे इएह कहौलक शिष्टकथा एवं लोककथा। एहि प्रकारेँ समाजमे प्रचलित जे कथा संकलित भए लिखित रूपमे सुरक्षित भए गेल *गाथासप्तशती* एवं *वृहत्कथाक* रूपमे सम्प्रति उपलब्ध एवं ख्यात अछि। ओहिना जाहि प्रचलित कथा अथवा वाचकक कल्पनाशीलतासँ सृजित कथामे भगवान बुद्धक नाम एवं सन्देश अनुस्यूत भए कालान्तरमे लिपिबद्ध भए गेल, *जातक कथा* क नामे उपलब्ध एवं ख्यात अछि। लिपिबद्ध कथाक भाषा एवं शिल्प स्थिर भए गेल। परन्तु, वाचिक परम्पराक कथाक विषय-वस्तु तँ सामान्यतः ओएह रहल, मुदा, वाचकक

1. *वर्णरत्नाकर,* अथ चतुःषष्ठिकलावर्णना, पृष्ठ सं. 21

समय, परिवेश एवं व्यक्तित्वक छाप पड़ैत ओ गतिशील बनल रहल। ई गतिशीलता ओकर आकर्षणकेँ समाप्त नहि होअए देलक।

रमानाथ झा मिथिलामे लोकानुरंजनक हेतु शिष्टकथा एवं लोककथाक कथावाचनक सुदीर्घ परम्पराक अतिरिक्त एक तेसर प्रकारक कथाक प्रचलन मानल अछि। ओ मानैत छथि जे मिथिलामे जतेक व्रत अथवा पावनि अछि, सभमे ओकर कथाक चालि छैक जे एहि जातिक साहित्यिक परम्पराक सूचक थिक। रमानाथ झाक अनुसार ओहिमे सँ किछु अखिल भारतीय स्तर पर ख्यात आ' किछु मिथिला जनपदमे प्रचलित अछि। एहि सन्दर्भमे 'मधुश्रावणी' एवं 'सपता विपता'क कथा जे एहि जनपदक भाषामे अछि, उदाहरणस्वरूप चर्च कएलनि अछि। हिनक स्पष्ट मान्यता अछि जे कोनहु पावनिक कथाक साहित्यिक मूल्यांकन कएल जाए तँ ओहि कथामे कथाक सभटा गुण भेटैत अछि।[2] एहि प्रकारेँ कहि सकैत छी जे मिथिलामे तीन कोटिक कथाक प्रचलनक सुदीर्घ परम्परा अछि -

1. शिष्टवर्ग द्वारा कहल, संकलित वा लिखित कथा,
2. एक कंठसँ दोसर कंठमे संक्रमित कथा जे लोककथाक नामे ख्यात अछि, तथा
3. व्रत पावनि-तिहारक कथा।

जेना, अन्य-अन्य क्षेत्रमे विकास होइत गेल छैक, ओहिना कथाक विकास सेहो भेल अछि। डा. जयकान्त मिश्र[3] मैथिली कथा विकासक तीन स्रोत मानल अछि -

1. संस्कृत कथा साहित्यक अनुवाद एवं ओहि पर आधारित कथा,
2. संस्कृत कथा साहित्यक विषय-वस्तुक आधार पर लिखित कथा, एवं
3. संस्कृत आख्यान-उपाख्यान आदिक शैलीमे स्वतन्त्र विषय-वस्तुक आधारपर लिखित कथा।

एहिठाम ध्यान देबाक थिक जे जखन ज्योतिरीश्वरक समयमे मैथिल समाजमे कथा-वाचनक प्रचलन छलैक एवं चौंसठि कलामे कथाकौशल परिगणित छल, तखन संस्कृत कथा-साहित्यक अनुवाद एवं ओहिपर आधारित कथा वा अन्ये शेष दू कारणेँ मैथिली कथाक विकास मानब कतेक ऐतिहासिक एवं औचित्यपूर्ण अछि? एहिसँ निष्पन्न होइछ ज्योतिरीश्वरक बाद लोकानुरंजनक ई साधन समाप्त भए गेलैक? मैथिलक जीवनमे लोकानुरंजनक हेतु प्रयुक्त हास्य-व्यंग्यक महत्त्व नहि रहल? किन्तु एकर कोनो प्रमाण नहि अछि जे सुख-समृद्धि वा प्रसन्नताक प्रदर्शन अथवा परोक्ष सत्ताक प्रीत्यर्थ प्रचलनमे आएल वा 'शिवेतर क्षतये'क प्रयोजनार्थ सृजित पावनि-तिहारक अनुष्ठान एवं तत्सम्बन्धी कथावाचनक प्रथा मिथिलाक सामाजिक जीवनसँ उठि गेल। अतएव, मैथिलक जनजीवनमे लोकानुरंजन लेल अदौसँ प्रयुक्त माध्यम हास्य-व्यंग्यक अविच्छिन्न परम्परा एवं मैथिली कथा-साहित्यमे ओकर उपलब्धि पर दृष्टिपात करब आवश्यक अछि।

2. रमानाथ झा, *प्रबन्ध संग्रह*

3. जयकान्त मिश्र, History of Maithili Literature Vol. II, Page No. 29-31

कथा-वाचनक मुख्य प्रयोजन छल लोकानुरंजन। अर्थात् लोकानुरंजकता कथाक प्रमुख विशेषता भेल। साहित्यक अनेक प्रयोजनमे 'शिवेतर क्षतये' सेहो एक प्रयोजन अछि। अर्थात् अशिवक क्षति कए शिवक प्रतिष्ठापन, लोकक मंगल कामना करब। मनोरंजक तत्त्वक संग लोकमंगलकारी तत्त्वक सम्मिलनसँ स्थायी प्रभाव सुगम विधिसँ उत्पन्न होइत अछि। कथाक माध्यमसँ विघटनकारी तत्त्व पर प्रहार एवं तकर निराकरण सहज एवं सुलभ होइत अछि। जेँ कि श्रोतावर्ग एक मानसिक धरातलक नहि रहैत छलाह, तेँ विषय-वस्तुक विविधताक संगहिं ओ अनेक दिशामे विकसित होइत गेल। ओहि वाचिक परम्पराकेँ डा.जयकान्त मिश्र[4] गुणात्मक एवं विषय-वस्तुक आधार पर अनेक खलमे राखल अछि। मिथिलाक जनजीवनमे व्रतकथा एवं हास्य-व्यंग्य कथाक महत्त्व अदौसँ बेसी रहल अछि। भाषा आ' शिल्पक दृष्टिसँ ओहि परम्पराक परिचय हेतु कातिक व्रतकथाक किछु अंश एहिठाम प्रस्तुत अछि।

राही गेलन्हि पाएर जाँतए। कहलकन्हि, महतमानि सब अइपन दैए, हम कोना के दिअ? कहलथीन, उखरिये कूट ग, कठोतिए घोर ग। पोन डुबा डुबा सोंसे आङन दे गठ। ता राति भीजल। लक्ष्मी कहलथीन, एतेक मेहनति सभ कएलक अछि। देखू के आदर कएलक अछि। कङुरिया लगलथीन। सभक आङन पान खेलनि। कहलथीन, कने हमरो आङन देखने जइऐक। राहीक पोनचौक देखि क नाराएनकें हँसी लागि गेलन्हि कि लछमी बिगड़ि गेलथीन, जे एतेक अङना पान खएलहुँ, मखान खएलहुँ कतहु हँसिये नहि लागल। ओ राहीक अङना किऐक हँसी लागल। तखन नाराएनकें तामस भेलन्हि - जएँ चंचला नारि छी तएँ तेलिआ सुरिआ घर वास करैछी, जे अहाँकें दवा क राखत तकरा घर रहब जे नहि दवा क राखत तकरा घर अहाँ नहि रहब। फेर घुमला-फिरला प्रसन्न भेलथीन्ह। अहाँ वर मांगू। हम कोन वर मांगव, हम उएह पर मंगैछी जे अहाँक नाओँ तर रहय हमर नाओँ उपर। [5]

एहि व्रतकथामे स्त्री-पुरुष वा पति पत्नीक स्वाभाविक नोंक-झोंक, मान मनौअलि, राग-उपराग, सहज एवं सरल भाषामे व्यक्त भेल अछि। आङन नीपबाक क्रममे स्त्रीक (राहीक) नितम्बक भीजल नूआ केँ (पोनचौक) देखि पुरुषक (नारायणक) हँसब, ओहिपर पत्नीक बिगड़ब एवं बिदकब स्त्री-पुरुषक स्वाभाविक मानसिकताक अभिव्यक्ति थिक। डा. जयकान्त मिश्रक कथन[6] छनि जे ई व्रतकथा सभ कमोवेश सम्पूर्ण मिथिलाक गामघरमे समान रूपसँ एकहि प्रकारेँ फुदकैत एवं आन्तरिक लययुक्त भाषामे कहल जाइत अछि। के कहैत छथि आ' ककरा सम्बोधित अछि, तकर संकेत

4. J. K. Mishra, *Introduction to Folk Literature of Mithila*, Vol.II, 1951
5. Do
6. Do -These Vratkathas are recited in a such language which is more or less the same in a majority of the villages in Mithila. They are full of idiomatic turns of expresssions. The speed of the narratives is brisk and extremely pleasant to ear.There are internal rhythmes and frequent alliterations, elliptical short practical matter of-fact marked by the absence of honorific forms. This dialogues are given contineously without any marks of names of speakers anywhere. This makes them lively and charming when recited.

वाचकक कथन-भंगिमासँ बुझल जाए सकैछ। एहि व्रतकथा सभक लक्ष्य आदर्श जीवन-मूल्यक अनुसरण थिक। ओहि लेल प्रेरणा देब थिक।[7]

मैथिल समाजमे लोकानुरंजनक हेतु हास्य व्यंग्यक प्रयोगक सुदीर्घ परम्पराक पुष्टि *वर्णरत्नाकर* मे कुटिनी वर्णन[8] (वर्ष सए तीनि भितर वएस. पाण्डुर भञुह. शङ्खावदात केश.शङ्कुलित तवच. उन्नति शिरा. निर्म्मांस काय. भाङल कपोल. झलल दाँत...सतीहुक सत्यभाँग. कुलबधहु कुटिलाकर. कुटनी देषु। यद्यपि सुखाएल सरोव(र) अइसन शरीर भए गेलइक तहु दशा रेखटीय अज्जन शरी/र न (हा) 3 अइसनि परजाति प्राणहारिणी कुटनी देषु।') सँ सेहो होइत अछि। ओहिना *धूर्तसमागम* मे जाहि प्रकारेँ ज्योतिरीश्वर पात्रक निर्माण कए सामाजिक विकृति पर व्यंग्य कएने छथि अथवा कविकोकिल विद्यापतिक *पुरुषपरीक्षा* क विभिन्न कथामे (जेना 'अलस कथा') मे हास्य-व्यंग्य अछि, मैथिल-जीवनमे हास्य-व्यंग्यक महत्त्वक सुदीर्घ परम्पराक परिचायक थिक। प्रो. जयदेव मिश्रक ई निष्पति तथ्याधारित अछि जे हमरा लोकनिक साहित्यमे जखन मिथिलाक चर्च होइत अछि, एहिठामक निवासीक समृद्धि एवं विनोदी प्रवृत्तिक वर्णन सेहो होइत अछि। ओ तँ इहो मानैत छथि जे जतय खेतक उपजा स्वयं जानकी भए सकैत छथि, ततैक निवासी लोकनिक जीवन विनोदपूर्ण होएब स्वाभाविके थिक।[9]

प्रो.भक्तिनाथ सिंह ठाकुर मैथिल जीवनक एहि पारम्परिक विशेषताकेँ स्वीकारि लिखल अछि जे मैथिल-जीवनमे हास्यक प्रधानता कोनो नब बस्तु नहि थिक, अपितु पुरान अछि। एहि सन्दर्भमे ओ मिथिलाक पूर्ण प्रसिद्ध हास्यक प्रतिमूर्ति गोनू झाक *गोनू विनोद*केँ पहिल कथासंग्रह मानल अछि जे हास्य प्रधान छोट-छोट सामाजिक कथाक संग्रह थिक[10]।

रमानाथ झा पाँजीक आधारपर गोनू झाक कालक निर्धारण कए हुनका राजा शिवसिंहक समकालीन मानल अछि। ओहिना डा. जयकान्त मिश्र गोनू झाकेँ ऐतिहासिक पुरुष मानैत हुनक कथाक विशेषताकेँ रेखांकित कएल अछि।[11]

मैथिल जीवनक ई विलक्षणता अद्यपर्यन्त विद्यमान अछि एवं लोककेँ लोकानुरंजनक एहि

7. A.Poddar, ed. *Indian Literature*, Indian Instutute of Advane Study, Simla,1972 P.No.150 - Such Vratkathas however, are not many, but in all of them these are intensively human situations both mirthful and tragic, which enrich the emotional and sensuous life of people. They are not merely interesting tales told as folktales but more they are rich incentives to follow noble ideas and values of life.
8. *वर्णरत्नाकर,* पृ. सं. 28
9. जयदेव मिश्र, मिथिलाक हास्य साहित्य, *विवेचना,* 1954, वैदेही समिति, दरभंगा
10. भक्तिनाथ सिंहठाकुर, *विवेचना,*1954, वैदेही, समिति, दरभंगा
11. J. K. Mishra, *Introduction to Folk Literature of Mithila.* Vol.II, 1951, P.No.39 - But the greatest number of humourous stories are embodid incycle of stories which centre round Gonu Jha. It is possible to say this figure was a historical one and flourished some six centuries ago.

माध्यमसँ पूर्ववत् आकर्षण छैक। उदाहरण अछि वैद्यनाथ मिश्र 'विद्यासिन्धु एवं प्रो. हरिमोहन झाक कथा। प्रो. हरिमोहन झाक साहित्यमे लोकनुरंजनक ई तत्त्व जँ एतेक प्रचुर मात्रामे नहि रहैत तँ सम्प्रति जे व्याप्ति हुनक कथा-साहित्यकेँ प्राप्त छैक आ' ओहि मनोवृत्तिक सन्तुष्टिक लेल जेना प्रो. झाक कथा साहित्य ताकल जाइत अछि, से प्रायः सम्भव नहि होइत।

एहि विवृत्तिक तात्पर्य जे मैथिली कथाक विकास उन्नैसम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे आबि एकबैक भए गेल, से नहि। कमसँ कम ज्योतिरीश्वरक समयमे ई तँ निश्चित रूपसँ छले। अन्यथा, ओ कथाकौशलक परिगणना एक कलाक रूपमे नहि कएने रहितथि। सम्प्रति उपलब्ध नहि अछि, तकर अर्थ ई कदापि नहि जे ओ छले नहि। मैथिलीक कतेको बहुमूल्य साहित्य एवं सांस्कृतिक सम्पदा कालक्रमेँ विनष्ट होइत गेल, जकर अस्तित्वमे होएबाक सूचना आन-आन स्रोत सभसँ होइत छैक। विनष्ट होएबाक कारणक अनुसंधान आ' वर्गीकरणक उपरान्त रमानाथ झा एहि निष्कर्ष पर पहुँचलाह अछि जे विनष्टिक तीन टा प्रमुख्य कारण भेल -

1. लेखनक असुविधा। ओएहटा लिखल जाइत छल जे अत्यावश्यक छलैक। लोकानुरंजनक साधनक रूपमे मान्य कथाकौशल वैयक्तिक गुण बूझल जाइत छल। कला-कौशल एक कला तँ छल मुदा शास्त्रीयता प्राप्त नहि छलैक।

2. मिथिलामे राज्याश्रयक अभाव छल। जे व्यक्ति एहि कलामे कुशल रहलो होएताह, अन्यत्र राज्याश्रित भए अपन कला-कौशलसँ यश आ' अर्थ अर्जित कए गाम घूमि अबैत छलाह। देशान्तरमे अपन भाषामे कथा-कौशल प्रदर्शनक गुंजाइश नहि छलनि।

3. तेसर कारण थिक, मिथिलाक जलवायु एवं प्रतिवर्ष अबैत बाढ़ि एवं ओहिमे ढ़हैत ढनमनाइत घर आ' अग्निदेवक लपेटमे भस्म होइत पोथी पतरा। जे किछु बाँचि गेल सौभग्य बूझल जएबाक चाही।

कहि सकैत छी, मिथिलामे कथा वाचनक सुदीर्घ परम्परा अछि। समय एवं समाजक प्रयोजनक अनुरूप ओकर विषय-वस्तु, भाषा शैली एवं कथन-भंगिमामे परिवर्त्तन भेल अछि। मुदा, जखन लोकानुरंजनक संग साहित्यक ओहि विधाकेँ आधुनिक कालमे शास्त्रीय मान्यता प्राप्त भेलैक तँ ओहि पर शास्त्रीय दृष्टिसँ विचारक प्रयोजन अनुभव कएल जाए लागल। साहित्यिक रचना पर शास्त्रीय दृष्टिसँ विचारक लेल सबसँ पहिने चाही लिखित सामग्री, कंठगत रहब पर्याप्त नहि अछि।

उन्नैसम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे मिथिलामे अङरेजी शिक्षाक प्रचार-पसार होअए लागल। राष्ट्रीय स्तर पर बहैत सुधारवादी आन्दोलन एवं राष्ट्रीय राजनीतिक चेतनाक बसात मिथिला धरि पहुँचल। ओहिसँ अपन भाषा-साहित्य एवं संस्कृतिक प्रति अनुरागमे वृद्धि भेलैक। संचार-साधन एवं मुद्रण-सुविधासँ लोक लाभान्वित भेल। दरभंगामे छापाखाना खूजल तँ देवनागरी लिपिमे प्रकाशित मैथिलीक किछु पोथी पहिले पहिल सुधीसमाजक समक्ष आएल। ओहिमे विद्यापतिक *पुरुषपरीक्षा* क कवीश्वर चन्दा झाकृत मैथिली अनुवाद सेहो एक छल। हाथसँ लिखि-लिखि अपन भाषा-साहित्य एवं संस्कृतिकेँ सुरक्षित रखैत आएल समाजक समक्ष ई एकटा अद्‌भुत घटना छलैक। आ' प्रायः इएह कारण थिक जे मैथिलीक कथाक विकासक चर्चाक क्रममे डा. जयकान्त मिश्र जाहि

तीन स्रोतक उल्लेख कएल अछि, ओहिमे प्रथम स्थान पर संस्कृत कथा-साहित्यक अनुवाद अथवा ओहि पर आधारित कथा सभ अछि।

कवीश्वर चन्दा झा असामान्य प्रतिभाक मातृभाषा अनुरागी साहित्यकार, संस्कृतिप्रेमी एवं संरक्षक विद्वान छलाह। मिथिलाक साहित्य-कला सम्पोषक एवं विद्यानुरागी सामाजिक सत्ताक केन्द्र सभसँ हुनका प्रगाढ़ सम्बन्ध छलनि। ओहिठाम आदर-सम्मान छलनि। परिणामतः मिथिलामे कथाकौशलक सुदीर्घ परम्पराक अछैतो मैथिली कथा पर शास्त्रीय रूपमे चर्चा प्रारम्भ भेला पर मुद्रित रूपमे सुलभ *पुरुषपरीक्षा* क अनुवादकेँ मैथिली कथाक विकासक प्रस्थान बिन्दु घोषित कए देल गेल।

कथा साहित्यक प्रति प्रबुद्धजनक दृष्टि उपेक्षापूर्ण छल। एहि तथ्यक पुष्टि बुच्चीदाइ लोकनि केँ सम्बोधित प्रो. उमानाथ झाक *रेखाचित्र* क (1950 ई.) 'आहे माहे' सँ होइत अछि। प्रश्न अछि जे ओ आहेमाहे बुच्चीदाइकेँ सम्बोधित किएक कएल? ई सम्बोधन सायास अछि वा अनायास? वस्तुतः ई सम्बोधन अनायास नहि अछि, सायास अछि। बुच्चीदाइ (*कन्यादान*, प्रो.हरिमोहन झा) माने मिथिलाक अबोध एवं नीरक्षर कन्याक प्रतीक, जकर मानसिक धरातल अविकसित रहैत छैक। जे हकौआँक नामसँ डेराइत अछि। बाबी-नानीक मुहेँ खीस्सा सुनैत-सुनैत जकर आँखि लागि जाइत छैक। अर्थात् मैथिली कथा शिक्षित बोधगर लोकक पढ़बाक योग्य नहि बूझल जाइत छल। तखन मैथिली कथा-साहित्य साहित्य-शास्त्रीय विचारक कोटिमे आबि कोना सकैत छल?

आब जखन सुधी समाजक समक्ष मैथिली कथा-साहित्यक पर्याप्त पाठ्य सामग्री आबि गेल अछि। साहित्य मूल्यांकनक वैज्ञानिक दृष्टि विकसित भेलैक अछि। केवल भावनाक आधार पर नहि, वास्तविकताक आधार पर, गुण-अवगुणक आधार पर, कलात्मक सौन्दर्य एवं वैशिष्ट्यक आधार पर साहित्यक मूल्यांकन होअए लागल अछि। ई बात जे *पुरुषपरीक्षा* क अनुवादक आधार पर मैथिली कथाक विकास भेल अछि, अरघैत नहि छैक।

पुरुषपरीक्षा क मैथिली अनुवादकेँ मैथिली कथा-लेखनक प्रेरणा-स्रोत मानबाक औचित्य पर तीन प्रकारेँ विचार कए सकैत छी -

क. *पुरुषपरीक्षा* क अनुवादक प्रचार-प्रसार,

ख. अनुवादक प्रभावशीलता, एवं

ग. प्रभावित लोकक वर्ग।

कवीश्वर चन्दा झाक अनुवाद छपबासँ किछु वर्ष पूर्व दरभंगामे प्रिंटिंग प्रेस स्थापित भेल छलैक। ओहि समयमे पत्र-पत्रिका नहि छल। संचारक आन कोनो माध्यम नहि छलैक। एक मात्र साधन छल चिट्ठी-पतरी वा मौखिक वार्ता। प्रचार-प्रसार वा विज्ञापनक अभावमे *पुरुषपरीक्षा* क प्रकाशनक घटना कतेक प्रबुद्ध मातृभाषा अनुरागीक कान धरि पहुँचि पाओल होएत? कतेक रसग्राही ओकर रसास्वादन कएने होएताह? कतेक लोक पढ़ि प्रभावित भेल होएत एवं कतेक साहित्य-सर्जना प्रतिभा-सम्पन्न लोक ओही शैलीमे कथा-लेखनक लेल प्रेरित भेल होएताह? आइ जखन विज्ञापनक अपार सुविधा प्रकाशक आ' लेखककेँ उपलब्ध छनि, प्रकाशक अपन उत्पाद्य

केँ जन-जन धरि पहुँचेबाक लेल एकसँ बढ़ि एक ब्योँत धरबैत छथि, तखनहु प्रचार-प्रसारमे समय लगैत अछि, प्रभावित भए ओही शैलीमे लिखबाक गप्प तँ बादक थिक। अध्ययन-विवेचनक लेल लिखित प्रकाशित सामग्रीक उपलब्धि दोसर बात भेल।

अनूदित पोथीक लोकग्राह्यता एवं प्रभावशीलता सहज सरल भाषा-शैलीमे रोचक ढ़ंगे प्रस्तुत आकर्षक विषय-वस्तु पर निर्भर अछि। रोचकताक संग अनुस्यूत विचार महत्त्वपूर्ण हो, लोक जीवन-चिन्तनमे सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करबाक क्षमता रहैक एवं ओहिमे लोक अपन आशा-आकांक्षा अभिव्यंजित देखय, तँ ओहन रचना एवं ओकर प्रस्तुति आकर्षित करिते छैक। अन्यथा, उत्सुकतावश देखि, उनटा-पुनटा, कात कए दैत अछि। कवीश्वर चन्दा झाक अनुवाद कतेक आकर्षक एवं ओकर भाषा-शैली कतेक प्रभावक अछि, तकर उदाहरणक संग मैथिलीक दू मान्य विद्वानक विचार प्रस्तुत अछि। पहिने उदाहरण -

- *पूर्व हस्तिनापुर नगर मेँ महमद नामक बादशाह होइत भेलाह। आसमुद्र पृथिवीक राज्याशासन करयित छलाह। तनिक उतकर्ष नहि सकला काफराज। तनिकासौँ युद्धार्थ सेना सहित ततय जाइत भेलाह। यवनेश्वर तनिकाँ आयल जानि कम्बोज आदि सेना देशीय अश्व बहुत लक्ष ओ अश्ववार परिवादित नगरसौँ बाहर युद्धारम्भ करयित भेलाह।*[12]

पुरुषपरीक्षा क भाषाक प्रसंग डा.जयकान्त मिश्रक कहब अछि जे ओ शब्दानुवाद थिक, वाक्य संरचना भाषाक विशेषताक अनुरूप नहि अछि, तदनुरूप भाषामे गतिशीलता नहि छैक।[13] पुनः अन्यत्र डा. मिश्र लिखल अछि जे अनुवादमे बहुत कृत्रिमता छैक, वाक्य-विन्यास संस्कृतक वाक्य-विन्यासक अनुरूप चलैत छैक, टेढ़-मेढ़ गोल-गोल मार्गसँ ओ बढ़ैछ, मोटामोटी हुनक गद्यक विशेषता सब स्प्ष्ट अछि - प्रभावक अभाव, क्लिष्टता, संस्कृतनिष्ट शब्दावली, यत्र-तत्र कठिनो समस्त पदकेँ सन्हिया देबाक प्रथा, मोटामोटी पाण्डित्यक छाप सर्वत्र[14]। डा. मिश्रक स्पष्ट मान्यता छनि जे एहि प्रकारक रूपान्तरणसँ मैथिली कथाक समक्ष चरित्रांकनक कोनो आदर्श नहि आएल।[15]

पुरुषपरीक्षा क अनुवादक भाषाक प्रसंग रमानाथ झाक विचार[16] डा. जयकान्त मिश्रसँ पृथक् नहि अछि। ओहो मानैत छथि जे अनुवाद शाब्दिक अछि, ओहिमे अस्पष्टता छैक, भाषामे कोनो आकर्षण नहि छैक।

---

12. रमानाथ झा (सं.) *पुरुषपरीक्षा,* सत्यवीर कथा,पृ. सं.19
13. J.K.Mishra, *History of Maithili Literature*.1969,Vol. II, Page No. 31- While some of the first works erred in being merely literal word for word translation cared not for grace and speed in their vernacular sentences
14. *मैथिली साहित्यक रूपरेखा,* चेतना समिति
15. J.K.Mishra, History of Maithili Literature.Vol. II, Page No. 3, Imitations did not give Maithili fiction any idea of characterisation or plot construction, which are the keynotes of the modern story writings.
16. रमानाथ झा (सं.) *पुरुषपरीक्षा,* Introductioon, P.No.71- the Kavishwar's translation is too literal to be clear, the verses of the texts are translated equally literally in Maithili verse so that they are not always intangible and his language is too antiquited to be interesting.

मैथिली कथा विकासक क्रममे डा.जयकान्त मिश्र महाकवि लालदास (1856 - 1921, *पतिव्रताचार वा स्त्री शिक्षा,* 1910 ई), श्रीनन्दन झा (*सतीसप्तकोपाख्यान*), म.म.मुरलीधर झा(1868 - 1929, *अर्जुन तपस्या*,1911 ई.), म.म.मुकुन्द झा 'बक्शी' (1860-1938), हरिनारायण झा (*सुदर्शनोपाख्यान*), म.म.परमेश्वर झा (1856-1924, *सीमन्तिनी आख्यायिका,* 1906 सँ 1919 ई. क मध्य) आदिक उल्लेख कएने छथि। कवीश्वरक समकालीन वा हुनक जीवनकालमे साहित्य-सर्जना करैत किछु रचनाकारमे अन्य प्रमुख नाम अछि म.म.हर्षनाथ झा (1847-1998), कविवर जीवनझा (1849 -1912), श्रीकृष्णठाकुर (1850-1922), तेजनाथझा (1854-1934), बाबू तुलापति सिंह (1859 -1914), मुंशी रघुनन्दन दास (1860-1945), जीवछ मिश्र (1864-1923), चेतनाथ झा (1866- 1921), जनार्दन झा 'जनसीदन' (1872-1951) आदि। एहिमे मात्र श्रीकृष्णठाकुर, बाबू तुलापति सिंह, पुलकित मिश्र आ' जीवछ मिश्रक अवदान मैथिली कथा वा उपन्यास साहित्यक क्षेत्रमे अछि। शेष सभ गोटे कविता आ' नाटकक क्षेत्रमे अवदानक लेल ख्यात छथि।

अपन प्रतिभा, अध्यवसाय, मातृभाषा प्रेमसँ रचनाशील कवीश्वर चन्दा झाक समकालीन वा निकट परवर्ती अधिकतर रचनाकार मूलतः संस्कृतक अधीत विद्वान छलाह। संस्कृत भाषाक मूल ग्रन्थक आस्वादानक पूर्ण क्षमता छलनि। तखन ओ सब संस्कृत कथा साहित्यक (*पुरुष परीक्षाक*) आस्वादनक लेल ओकर अनुवादक आश्रय लेने होएताह आ' ओहिसँ प्रेरित-प्रभावित भए कथा लेखनक प्रवृत्ति जागल होएतनि, से व्यावहारिक नहि लगैत अछि। स्रोत-भाषामे निपुणताक अभाव अथवा अवोधगम्यताक स्थितिमे अनुवादक प्रयोजन होइत छैक। हँ, अनुवाद ओहनो वर्गक लोक पढ़ैत अछि, मुदा ओकर स्तरीयताक परीक्षणक हेतु प्रेरित-प्रभावित होएबाक लेल नहि।

समाजक शिष्टवर्ग, विशेषतः संस्कृत साहित्यक अध्येतालोकनि सेहो ओही समाजक लोक छलाह। समाजमे पसरल अथवा घर-घरमे मनौल जाइत व्रत-पावनिक कथासँ ओ सभ सर्वथा अपरिचित नहि रहल होएताह। ओहि कथा सभक विषय, ओकर लोकानुरंजक तत्त्व, आदर्शवादी जीवन-मूल्य, प्रतिकूल परिस्थितिकेँ अनुकूल बना लेबाक हेतु आवश्यक साहस आ' धैर्यक रोचक भाव-भंगिमाक परिचय मनमे अवश्य बैसि गेल रहल होएतनि। किन्तु, जखन मैथिली साहित्यकेँ शास्त्रीयता प्राप्त भेलैक आ' अध्ययन-विवेचन प्रारम्भ भेल तँ अपन कथा-कथनक सुदीर्घ वाचिक परम्पराकेँ बिसरि देल गेल। एहिसँ स्पष्ट अछि जे *पुरुषपरीक्षा* क एहि प्रकारक अनाकर्षक अनुवाद, मैथिली गद्य-साहित्यक दृष्टिसँ जतेक महत्त्वपूर्ण हो, मैथिली कथा लेखनक हेतु प्रेरक रहल होएत, मानब युक्तिपूर्ण नहि अछि।

आधुनिक काल : आरम्भिक कथा-लेखन

उन्नैसम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे राष्ट्रीयमंच पर अनेकहु प्रकारक सुधारवादी आन्दोलन चलल। राष्ट्रीय स्वाधीनताक लेल राजनीतिक चेतना आएल। स्थानीय भाषा-साहित्य एवं संस्कृतिक संग्रह, संरक्षण एवं अध्ययन विवेचनक प्रति अङरेज सरकारक पदाधिकारीक बढ़ल डेग देखि राष्ट्रीय स्तर पर अपन भाषा-साहित्य एवं संस्कृतिक सुप्त चेतना प्रबल भए उठल। एहि चेतना सभक लहरिसँ मिथिलाक प्रबुद्ध समाज अप्रभावित नहि रहल। अनेक दिशामे काज प्रारम्भ भेल। कथाक

वाचिक परम्परा सुदीर्घ तँ छले, लिपिबद्ध करबाक महत्त्व लोक बूझय लागल। प्रिंटिंग प्रेसक स्थापनासँ उत्साह बढ़लैक।

अपन मातृभाषामे लोकानुरंजक साहित्य-सर्जनाक चेतना संघनित भेला पर संवेदनशील रचनाकारक समक्ष ई समस्या उपस्थित भेलैक जे कोन शैलीमे लिखल जाए? शिल्पगत आदर्श केँ महत्त्व देल जाए कि साहित्यक प्रयोजनगत आदर्शकेँ महत्त्वपूर्ण मानल जाए। पूर्वहि जकाँ लोकानुरंजनक लेल कथा-लेखन हो, कि लोकानुरंजकताक संग समसामयिक जीवन, लोकक आशा-आकांक्षा एवं समाजमे व्याप्त नाना प्रकारक सामाजिक दुर्गुण पर चोट करैत सामाजिक जागरणकेँ प्रमाणिकता देल जाए।

मैथिलीक आरम्भिक समस्त कथाकार संस्कृत कथा-साहित्यक सुदीर्घ परम्परासँ परिचित छलाह। ओ परम्परा छल एक कथासँ बाहर होइत दोसर कथाक *पंचतन्त्र* क लोकानुरंजक शैली। श्रोता पर पड़ैत ओकर प्रभावक साक्षात् अनुभव छलनि। संगहिं, समाजक प्रति एक रचनाकारक की दायित्व होइत छैक, तकरो बोध छलनि। एहि हेतु राष्ट्रीय स्तर पर चलल सुधारवादी आन्दोलनक पड़ैत अनुकूल प्रभावकेँ कथामे दर्शाएब आवश्यक मानैत छलाह। एकर अन्तर्गत सामाजिक दुर्गुण आ' विषमता पर हास्य-व्यंग्यक आश्रय लैत प्रहार कए, ओहिसँ विमुख करब एवं सद्गुणक प्रतिष्ठापन होइत देखाएब छल। म. म. उमेश मिश्रक मन्तव्यसँ जे *सुदर्शनोपाख्यान* लिखबाक पीठिका थिक' सेहो इएह तथ्य निष्पन्न होइत अछि।[17] हुनक कथनक अनुसार मैथिल मात्रक सेवे थिक रचनाकारक सामाजिक दायित्वक प्रतिवद्धता एवं अपन परिवेशक प्रति रचनाकारक संवेदनशीलता।

मैथिली कथाक विकास एहि दूनू आदर्शक अनुरूप अर्थात् पंचतन्त्रक शैलीमे सुधारवादी दृष्टिक अभिव्यक्तिक संग होअए लागल। प्रो. आनन्द मिश्रक ई विचार समीचीन अछि जे एही *पंचतन्त्र* क शैलीमे विद्यापतिक *पुरुषपरीक्षा* लिखल गेल आ' ओ मैथिलीक आरम्भिक कथा-शैली केँ पूर्णरूपेण प्रभावित कएलक। उदाहरण-प्रत्यूदाहरणसँ कोनो नीति वचनक समर्थन एहि कथा शैलीक विशेषता छल। एहि माध्यमसँ शिक्षा प्रदान करब अथवा कोनो प्रेम प्रसंगक वर्णन करब कथाकार लोकनिक उद्देश्य छल। एकटा विषय आओरो जे ओहि समयमे कथा एवं उपन्यासक भेद सेहो नीक जकाँ स्पष्ट नहि भेल छलैक। एहि कोटिक कथा सभ उन्नैसम शताब्दीक अन्तिम चरणमे अबैत-अबैत लिखल जाए लागल। श्रीकृष्णठाकुरक *चन्दप्रभा* ओही परम्पराक रचना थिक।[18]

चन्द्रप्रभा क प्रसंग भ्रम निवारण

श्रीकृष्ण ठाकुरकृत *चन्द्रप्रभा*क प्रसंग अनेक भ्रम अछि। भ्रमक कारण थिक मुद्रण-दोषसँ *चन्द्रप्रभा*क नाम *चन्द्रभागा* भए जाएब। भ्रमक निवारण नहि होएबाक मूल कारण थिक लेखकक

17. म.म.उमेश मिश्र, *मिथिलामोद,* उदगार 142, 1918 ई.-'प्रिय पाठक ओ पाठिकागण! मातृभाषा मैथिलीक सेवाक हेतु सबहिकाँ यथासामर्थ्य किछु यत्न करैक थिक। एहि लेखसँ मातृभाषा ओ तत्द्वारा मैथिल मात्रक सेवामे ई तुच्छजन उपस्थित भेलाह अछि।
18. प्रो. आनन्द मिश्र, *मैथिलीक आरम्भिक कथा,* 1978 ई, रमानन्द झा 'रमण' (सं.)

मृत्युक कतेको वर्ष पछाति 1939 ई. मे एक प्रवासी संस्था, मैथिली बन्धु कार्यालय, अजमेरसँ एकर प्रकाशन आ' मैथिलीक पाठक धरि नहि पहुँचि सकब एवं प्रचार-प्रसार नहि होएब। चर्चाक क्रममे विभिन्न ठाम दोहराइत रहल *चन्द्रभागा... चन्द्रभागा... चन्द्रभागा..*।' डा. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' एक सुगठित उपाख्यान मानैत दोहराओल *चन्द्रभागा*[19]। नाम सम्बन्धी भ्रमक निवारण 1978 ई. मे *मैथिलीक आरम्भिक कथाक* प्रकाशनक[20] उपरान्त भेल।

चन्द्रप्रभा क सम्पादक बाबू लक्ष्मीपति सिंह लिखल अछि जे ओहि समय धरि पाण्डुलिपिक अधिकांश पात नष्ट भए गेल छलैक। एकर पाण्डुलिपि बहुतो वर्ष पूर्व हमरा अपन पूज्यपाद प्रो. गंगापति सिंहजी साहेबसँ अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण कागत पर लिखल प्राप्त भेल छल जे समुचित समावेशक अभावमे गर्त वर्ष धरि हमरा ओहिठाम अप्रकाशित पड़ल छल। *चन्द्रप्रभा* क भाषा-शैलीक प्रसंग लिखल अछि जे ई (*चन्द्रप्रभा*) उन्नैसम शताब्दीक मैथिली गद्य रचनाक एक नमूने थिक। प्रकाशक पण्डित रघुनाथ प्रसाद मिश्र 'पुरोहित' *चन्द्रप्रभा* केँ आइसँ (1939 ई. सँ) साठि-सत्तरि वर्ष पूर्वक लिखल मानल अछि। आ' हुनक कहब अछि जे एहि बात पर ध्यान रखलेसँ *चन्द्रप्रभा* क वास्तविक महत्त्व बोधगम्य भए सकैत अछि। म. म. उमेश मिश्रक अनुसार *चन्द्रप्रभा* मे अनेक कथाक संग्रह अछि। ग्रन्थ साहित्यिक होइतहुँ कथाक साहित्यिक लक्षणसँ आक्रान्त नहि अछि। डा. जयकान्त मिश्र सेहो *चन्द्रप्रभा* केँ एक महत्त्वपूर्ण कृति मानल अछि।[21]

डा.रामदेव झा मैथिली कथाक विकास *पुरुषपरीक्षा* क मैथिली अनुवादक प्रकाशनसँ अर्थात् 1889 ई .सँ मानल अछि। ओ म. म. परमेश्वर झाक *सीमन्तिनी आख्यायिका* केँ मैथिली कथा लेखनक दिशामे पहिल प्रयास मानल। *सीमन्तिनी आख्यायिका* स्कन्धपुराणक ब्रह्मोत्तर खण्डमे सोमव्रतक माहात्म्य प्रतिपादक सीमन्तिनी उपाख्यानक आधार पर लिखित अछि। ई सर्वप्रथम 1906 ई. (*मिथिलामोद*, उदगार 17-19) मे आ' तकर बाद कहिओ-कहिओ कतेको वर्ष धरि छपैत रहल। एहिक्रममे 1315 साल(1907 - 08 ई.) मे छपल पुलकित मिश्रक *मोहिनी मोहन* एवं 1917 ई.मे छपल जनार्दन झा 'जनसीदन'क *ताराक वैधव्य* क ओ चर्च करैत छथि। मुदा, 1909 ई. मे *मिथिलामिहिर* मे धारावाहिक रूपमे प्रकाशित बाबू तुलापति सिंहक *मदनराज चरित उपन्यास*क चर्च अनायास छूटल सन नहि लगैत अछि। डा. रामदेव झाक ई तर्क जे *मदनराजचरित उपन्यास* बीसम शताब्दीक तेसर दशकक रचना थिक[22], इतिहास सम्मत नहि अछि। ई सोचबाक बात थिकैक जे 1909 ई. मे प्रकाशित *मदनराज चरित उपन्यास* 1978 ई. मे प्रकाशित *मैथिलीक आरम्भिक कथाक* माध्यमसँ सर्वसुलभ भेलाक कारणेँ बीसम शताब्दीक तेसर दशकक रचना कोना भए जाएत? श्रीकृष्ण

19. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', *मैथिली साहित्यक इतिहास,* 1977, पृ.सं.141
20. रमानन्द झा 'रमण' (सं.) *मैथिलीक आरम्भिक कथा,* 1978 ई.
21. J. K.Mishra, *History of Maithili Literature*, 1969, Vol.II -Shrikrishna Thakur's Chandrabhaga is a small work in the old manner of tales found in Sanskrit collection of fables.It begins with Sanskrit verse which a princess is taught to understand with the help of several illustrations.These stories are imaginary, though they are full of wordly wisdom. They are substantially much like the romantic Maithili tales.

ठाकुरक *चन्द्रप्रभा* केँ बीसम शताब्दीक तेसर दशकक पूर्वक नहि मानब, ओहिना अनैतिहासिक अछि, जेना बलिराजगढ़क पुरातात्त्विक उत्खननक उपरान्त प्राप्त सामग्रीक ऐतिहासिकताक परीक्षण बिना कएने कहि देब जे ओ सभ आजुक थिक। ओहिना महाकवि लालदासक जीवन-कालसँ अनभिज्ञ केओ सगर्व कहि सकैत छथि जे *रमेश्वर चरित मिथिला रामायण* 1954 ई.क थिक।

मैथिलीक आद्य कथाक अनुसन्धानक क्रममे डा. रामदेव झा *मैथिल-हितसाधन* (भाद्रपौष शुक्ल द्वितीया, अंक 8 सँ 12, 1906 ई.) मे प्रकीर्ण विषयक रूपमे प्रकाशित जलधर झा लिखित गद्य रचना *विलक्षण दाम्पत्यक* उल्लेख कएल अछि। आ' लिखल अछि जे आधुनिक कथा-साहित्यक उद्भव ओ विकासक आद्य आधारशीलाक रूपमे *विलक्षण दाम्पत्यके*ँ राखल जाए सकैत अछि।[23]

किन्तु, डा.फूलचन्द्र मिश्र 'रमण'क कहब छनि जे जलधर झाक *विलक्षण दाम्पत्य मैथिल हितसाधन* मे (जे ओ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क ओतए रौदमे सुखाओल जाइत देखि उठाकेँ पढ़ने छलाह) 'यात्रावर्णन' कहि प्रकाशित अछि। डा.रामदेव झाक मतक उल्लेख करैत चन्द्रनाथ मिश्र'अमर'[24] लिखल अछि जे जलधर झाक 'विलक्षण दाम्पत्य' *मैथिल-हितसाधन* मे समाचार मूलक विवरणक रूपमे प्रकाशित अछि। ताहिपर पुनः डा. रामदेव झाक मन्तव्य अछि - *एहि प्रकारक कोनो लेख-सामग्री अएलापर ओकरा प्रकीर्णक (मिसेलेनियस) कालममे छापि देल जाइत छल। मैथिल-हितसाधनक दोसर वर्ष अथात् 1906 इ. मे प्रकीर्ण स्तम्भमे जलधर झा लिखित 'विलक्षण दाम्पत्य' शीर्षकसँ एकगोट रम्य गद्य रचना प्रकाशित भेल छल। आधुनिक मैथिली कथा-साहित्यक उदय-संकेत मानल जाए सकैत अछि।*[25] एहि रम्य-रचनाक प्रारम्भ निम्नप्रकारसँ भेल अछि -

'पाठक महाशय! आलइ अपने सभकेँ *एक अद्भुत वृत्तान्त कर्णगोचर करबै छी, जे सुनि कऽ क्षणमात्र बुद्धि स्तब्ध भय जायत। हम कोनो कार्यवश सिमरिया घाट दय कऽ अपन देश जाइत रही। जखन गाड़ी समस्तीपुर पहुँचल ताहि काल दिनुक चारि बाजल छल। यात्री सभ हलचल भय क्यो गाड़ीसँ उतरय लागल, क्यो चढ़य लागल। हम्हुँ शीघ्रतासँ उतरि दरभंगाक ट्रेनमे जा बैसलहुँ। जाहि कम्पार्टमेंटमे हम रही ताहीमे आओरो बहुत लोक आबि बैसल। क्षण भरिमे ओही गाड़ीमे सीतामढ़ी इलाकाक भूमिहार जमीन्दार लोकनि सेहो एकत्रित भेलाह। दैवसंयोग ओहीकाल एक व्यक्ति मुजौनाक ब्राह्मण अपन अर्द्धांगिनीके*ँ *संग नेने प्लेटफार्म पर पहुँलाह। पहुँचथु। ते*ँ *की? हुनक सन बहुतो लोक ओहिठाम उपस्थित छल। ककरामे कोन गुण वा दोष छैक, से कोना बुझल जाओ वा बिना परिचये बुझबे कोना करत वा बुझबाक प्रयोजने की? परन्तु ई बात जनितहि छी जे सुकर्मक अपेक्षा कुकर्मक प्रकाश अतिशय शीघ्र होइ अछि।*

एक समाचारमूलक रचनाकेँ मैथिलीक आद्यकथा मानबाक कोनो औचित्य नहि छैक।

प्राकृतिक विपदाक आघातसँ विश्वक कतेको क्षेत्रक लोक उजड़ल-उपटल। समुन्नत सभ्यता

22. मोहन भारद्वाज (सं.) *मैथिली आलोचना,* 1992
23. *मंडन निकेत,* दिसम्बर, 2005, सुपौल
24. चन्द्रनाथ मिश्र'अमर', *अतीत मंथन,* पृ.सं. 14
25. रामदेव झा/इन्द्रकान्त झा(सं.), *मैथिली कथा शताब्दी संचय,* पृ.सं. 8-9,साहित्य अकादेमी, 2010

आ' संस्कृति विलुप्त भए गेल। ओ उत्कर्ष सब लोकमानसहुसँ क्रमशः विस्मृत होइत रहल। ओहिमे सँ किछु गाथाक रूप लए लोककण्ठक माध्यमेँ संक्रमित होइत रहल। पुरातत्त्वविद एवं वैज्ञानिक लोकनिक संयुक्त प्रयाससँ कतेको ध्वंसावशेषक अध्ययनक उपरान्त विलुप्त सभ्यता एवं संस्कृतिक प्रसंग विस्मयकारी तथ्य सभ समक्ष आएल अछि आ' आबि रहल अछि। एहिना किछु जीव-जन्तुक जीवाष्मक अध्ययन सेहो भेलैक अछि। एहिसँ मानव सभ्यता एवं संस्कृतिक नव इतिहास लिखबाक प्रयोजन भए गेलैक अछि। ओहिना 1939 ई. सँ साठि-सत्तरि वर्ष पूर्व अर्थात् 1880 ई.क धऽकमे वा ओहिसँ पहिने लिखित आ' लेखकक मृत्युक कतेको वर्ष पछाति मिथिलासँ कोसो दूर अजमेरसँ प्रकाशित *चन्द्रप्रभा* मैथिलीक एक एहन मौलिक कथाकृत थिक, जतयसँ मैथिलीमे मौलिक कथा लेखनक प्रस्थान-बिन्दु मानब सर्वथा तथ्यसंगत आ' ऐतिहासिक होएत।

चन्दप्रभा क विभिन्न कथा जाहि विषय-वस्तु पर गढ़ल गेल अछि, से थिक, फुलबाड़ीमे गाछ उपड़ि जाय ताहिठाम दोसर रोपथि, जे फुलायल तकर फूल तोड़ाबथि, जे गाछ छोट रहै, तकरा बढ़ेबाक यत्न करथि, जे बहुत बढ़ि गेल रहै, तकरा नबाबथि, नवलकेँ कोनो तरहेँ उठबाबथि, एकठाम बहुत गाछ रहै तकरा फराक कराबथि, काँटबाला उपाड़ि फेंकथि, सुखाय पर रहै तकरा जल देयाबथि। एहन मालीक समान जे राजा राज करइत छथि, तनिका राज्य स्थिर रहैछ।

चन्द्रप्रभा क प्रथमहि कथामे गुरु विद्यानिधि चन्द्रप्रभासँ कहैत छथि - *राजाकेँ प्रथम मालि जकाँ फुलबाड़ीक रक्षा कर्त्तव्य थिक*। चन्द्रप्रभा जिज्ञासा करैत अछि - *राजा राज्य करताह कि फुलबाड़ीक रक्षा करताह?* चन्द्रप्रभाक जिज्ञासाक शान्त्यर्थ गुरु विद्यानिधि स्पष्ट करैत छथि - *मधुबन नाम नगरीमे रसध्वज राजा रहथि। ओ प्रजापीड़क अपन राज्यक सबहि......सुन्दरी कुमारिकाके*ँ *हरण कय लेथि.......। ई अत्याचार प्रजा देखि उपटि-उपटि दन्तशूर राज्यमे जाय बसल। बहुत प्रजा उपटि तदन्तर राजाके*ँ *कहि रसध्वजसँ युद्ध कराय पराजित करबाओल। कोनहु प्रजासँ साहित्य नहि। विगड़ल प्रजा नहि साहित्य करइन्ह* ।

चन्दप्रभाक प्रश्न स्वाभाविक अछि जे राजा तँ मालि नहि थिकाह आ' ने ओतेक फुरसति छनि जे फुलबाड़ीक फूलकेँ पटौताह, घास-पात कमौताह आ' डारि-पात छँटताह। मुदा, कथाकार मालि आ' फुलबाड़ीक प्रयोग प्रतीक रूपेँ कएल अछि। राजाक वास्तविक फुलबाड़ी थिक प्रजा। राजा जँ प्रजाक ध्यान नहि राखत तँ प्रजाक कष्ट बढ़तैक, समस्या बढ़तैक, उत्पीड़न बढ़तैक, असुरक्षा बढ़तैक, असंवेदनशील राजाक विरुद्ध भूखे पियासे आँट होइत प्रजाक आक्रोश बढ़तैक। राजसँ पलायन करत। उजड़ि-उपटि जाएत। एहि यथार्थकेँ स्वर देबाक हेतु श्रीकृष्ण ठाकुर मधुवन नगरीक कल्पना कएल। ओहिमे रसध्वज राजाकेँ बैसाओल। प्रजा पीड़क रूपमे रसध्वजक चरित्रक चित्रण कएल। ओकर राज्यक सुन्दरी सभक अपहरण होइत छलैक। एहि अत्याचारसँ सीदित प्रजा उपटि-उपटि दन्तशूर राज्यमे बसय लागल। मधुवनक प्रजाक व्यथा सुनि दन्तशूर राजा द्रवित भए प्रजापीड़क रसध्वज पर आक्रमण कएल। रसध्वज पराजित भेल। प्रजाक असुरक्षाबोध समाप्त भेलैक।

मैथिली कथाक ई विषय-वस्तु सामाजिक सुधारवादी दृष्टि एवं *मैथिल महासभा* द्वारा निर्णीत विषय-वस्तुक आधार पर साहित्य-सर्जना करबाक अनुरोधसँ भिन्न विषय-वस्तुक अछि। वस्तुतः

ई कथा सभ सामाजिक चेतनाक नहि, राजनीतिक चेतना जागृत करबाक कथा थिक। 1857 ई. मे भेल पहिल स्वाधीनता संग्राम एवं ओकर विफलताक उपरान्त भारतीय जनमानसमे अङरेजी सरकार एवं ओहि सरकारक पक्षधर तथा लगुआ-भगुआ राजा महाराजाक विरुद्ध सुनगैत आक्रोशक आगि क्रमशः घनीभूत भए रहल छल। तकरे प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति एहिमे भेल अछि।

स्पष्टतः फुलबाड़ी थिक देश एवं गाछ थिक देशक सामान्य जनता आ' शासक छथि माली। लौकिको जीवनमे बेटा-पुतहु, नाति-नातिन आदिसँ भरल-पुरल परिवारकेँ देखि कहबाक प्रचलन अछि -'ई फल्लाँक फुलवाड़ी थिकन्हि'। जे गाछ सुखयबा पर अछि तकरा पटाएब, नवलकेँ उठाएब, स्पष्ट अभिप्रेत अछि असहाय एवं निर्बल, शोषित-प्रताड़ित भारतवासीकेँ सामान्यो जीवन-रक्षण सुविधासँ बंचित नहि राखब। ओहिना जे फुलाएल हो, तकरा तोड़ब थिक संसाधनक संवितरण। कवीश्वर चन्दा झा रेलगाड़ी चलल तकर तँ प्रसंशा कएल। किन्तु, ओहि पर लादि देशक अन्न जखन बाहर जाए लागल तँ ओहि नीतिमे अनीतिक दर्शन सेहो भेलनि (*भारतभूमि अन्न को ढ़ोती, यह कुरीति नहि नीति भली*)।

बिगड़ल प्रजा नहि साहित्य करइन्ह सँ स्पष्ट अछि जे प्रजाक असहयोग शासन-व्यवस्थाक अन्तक कारण होइत अछि। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीक नेतृत्वमे चलल असहयोग आन्दोलन एकर प्रत्यक्ष उदाहरण थिक। शासक द्वारा पसारल अनीतिक दर्शनसँ आक्रोशक जन्म होइत छैक। ओहिना भूखल अभावग्रस्तक आक्रोश एवं स्वाभिमानक अवहेलना कोनो शासन-व्यवस्थाक लेल विस्फोटक भए जाइत अछि। श्रीकृष्ण ठाकुरक समक्ष संस्कृत कथा-साहित्यक रोचक शैलीक उदाहरण छलनि। ओही शैलीमे भारतीय जनमानसक संग मिथिलाक लोकमे विदेशी शासन-व्यवस्था एवं देशी राजा-महाराजा सभक लोक विरोधी नीतिक विरुद्ध एवं आचरणसँ, जे आक्रोश घनीभूत भए रहल छल, तकर रोचक अभिव्यक्ति *चन्द्रप्रभा* क विभिन्न कथाक माध्यमसँ ओ कएलनि अछि।

पहिल स्वतन्त्रता संग्रामक असफलता, उन्नैसम शताब्दीक अन्तिम पहरमे राष्ट्रीय मंचपर अनेक राष्ट्रवादी-स्वाधीनताकामी नेता आ' कार्यकर्ताक दरभंगामे नियमित रूपसँ आगमन तथा तदनुकूल लक्ष्यक प्राप्तिक हेतु स्थापित संस्थाक गतिविधिक दिस मिथिलाक प्रबुद्धवर्गक आकर्षणसँ जे भावधारा प्रवाहित भेल, तकर अभिव्यक्ति *चन्द्रप्रभा* मे पर्याप्त अछि। ओ चेतना अखिल भारतीय मैथिल महासभाक स्थापनासँ चलल सामाजिक सुधारवादी धाराक वैवाहिक समस्याक बेगमे भसिआएए नहि गेल। *चन्द्रप्रभा* क राष्ट्रीय चेतना बैद्यनाथ मिश्र 'विद्यासिन्धु'क अनेकहु कथामे प्रतीकात्मक शैलीमे प्रभावक ढ़गेँ विकसित भेल अछि। उदाहरणस्वरूप विद्यासिन्धुक दू टा कथाक (विस्तारक लेल देखी, बेसाहल, डा. रमानन्द झा 'रमण') चर्च पर्याप्त होएत।

वैद्यनाथ मिश्र 'विद्यासिन्धु'क कतेको छोट-छोट कथा प्रकाशित अछि। ओ प्रतीकक माध्यमसँ राष्ट्रीय चेतनाक अभिव्यक्ति कएल अछि। ओहिमे एक प्रमुख अछि *भूमिक दूत बेङ*। एहि कथामे इन्द्र छथि राजा अर्थात् भारतवर्षक शासक अङरेज, पृथ्वी थिकथि भारतमाता जे इन्द्रक प्रकोप सहबाक लेल अभिशप्त छथि। बेङ थिक भारतक पद-दलित सामान्यजन जे प्राणरक्षाक हेतु माइक पेटमे सटल रहैत अछि। राजाक प्रकोपसँ आतंकित बेङ माताक समक्ष उपस्थित भए, कल जोड़ि विनय करैत अछि,

हे माता! हमरा प्राण धरि काज अहाँकेँ हो तँ हम दए सकैत छी। हजारो बेङ तँ नित्य सापहिक मुहमे आहुति पड़ैत अछि ताहिसँ हमर शरीर अहींक काजमे आबि जाए से नीक।

राजाक अत्याचारी अनुचर सब थाकि जाइत अछि। ओकर आयुधक कोष शेष भए जाइत छैक। बेङ पृथ्वीक दूत बनि इन्द्रक समक्ष उपस्थित भए कटाक्ष करैत अछि, *सरकार ! हम पृथ्वीक दूत बेङ, पृथ्वी महरानी हमरा पठौलन्हि अछि, कहि अबिऔन्ह जे एखन धरि हमर एको कोन नहि भरल अछि; तकर की कारण?*

ई सुनि इन्द्र लज्जित होइत कहैत छथि, *पृथ्वी बहुत पैघ छथि, हम हुनकासँ हारि गेलहुँ। हमर अपराध क्षमा करथि। हम वर्षा बन्द करैत छी।*

विद्यासिन्धु भारतक सामान्य जनमानसमे प्रवाहित राष्ट्रप्रेम, दासतासँ मुक्तिक प्रबल आकांक्षा, साहस, धैर्यक धुकधुकीकेँअकानि लेने छलाह। प्रायः इहो अनुमान कए लेने छलाह जे एहन शक्ति-सम्पन्न शासककेँ शस्त्र बलेँ नहि, शास्त्र बलहिसँ पराजित कएल जाए सकैत अछि। इतिहासो सएह अछि।

कवीश्वर चन्दा झा अङरेजी न्याय व्यवस्था पर प्रहार कए शासक विरोधी मानसिकताक निर्माणक प्रयास कएने छलाह। विद्यासिन्धु *हंस आ' कौआक पंचैती कथा* मे लिखल अछि, *एखनुका पंचैतीक विषय तँ जनिते छी, अहाँ दू-चारि दिन संग-संग घूमलहुँ, बाबू! जी सरकार! कहलक ओ अपन नीक तमाकू दू चारि जून खोऔलक बस, पंचैतीमे ओकर विजय भेटलैक।* शासकक वास्तविक चरित्रक परिचायक छी निष्पक्ष न्याय व्यवस्था। किन्तु, न्याय भेटैत छलैक सुविधा सम्पन्नकेँ, न्याय होइत छलैक शक्ति-सम्पन्न वर्गक पक्षमे। जे शोषित अछि, अभाव ग्रस्त अछि, प्रताड़ित अछि, से सभ न्यायसँ वंचित छल। न्यायक पक्षधरताक चित्रण कए विद्यासिन्धु अङरेजी सरकारक विरोधमे लोकककेँजगाओल आ' प्रेरित कएल अछि। मैथिलीक राष्ट्रीय चेतनामूलक उल्लेखनीय कथामे प्रमुख अछि 'अकिचन' (श्यामानन्द झा), 'जीवनपथ' (जयनारायण मल्लिक), 'प्रतिज्ञापत्र' (श्यामसुन्दर झा 'मधुप'), 'इहो दिन देखल' एवं 'अन्तर' (लक्ष्मीपति सिंह) आदि।

एहना स्थितिमे कहि सकैत छी जे मैथिली कथाक विकासकेँकेवल सामाजिक विषय-वस्तु, सामाजिक दुर्गुण एवं सामाजिक सुधारवादी आन्दोलनक सऽह पर लिखित कथाक संग विकसित नहि मानि *चन्द्रप्रभा* क राष्ट्रवादी चेतना पर विकसित कथासँ मानब, ऐतिहासिक एवं वास्तविक स्थितिक परिचायक होएत।



मैथिली कवितामे मिथिलाक भूकम्प

कोनहु शिला खण्डपर बैसल आदिमानव एकाकी निर्झरणीक अनवरत आत्मसमर्पणकेँ देखि अथवा नील गगनक नमित इन्द्रधनुषक रंग विरंगी रूप-राशिक अनुरूप काँटमे गाँथल वन्य-कुसुमक माला 'ककरो' पहिरएबाक उत्कट भावनासँ अभिभूत भए गेल होएत। आत्मीयताक इएह भावना स्फटिक शिला खण्डपर बैसल रामकेँ अपने हाथेँ फूल बीछि, माला गाँथि सीताकेँ सादर पहिरएबाक लेल विवश कए देने छल होएतनि एवं वनवासी अर्जुन सेहो वनतरु डारिमे लेपटाएल लताकेँ देखि मनुज-दम्पतिमे एहन समर्पित-स्थितिक अभावक अनुभव कएने छल होएताह :

वन लता तरु डारि लपेटि कै,
मिलू परस्पर बाँहि समेटि कै
अहह! अंकम दम्पति संग ई,
मनुज पाव कहाँ थिर रंग ई।

मानव ज्ञान-चक्षुक अनावरणसँ पूर्व अर्थात् जखन मानव 'स्व'क सीमित परिधिकेँ पार कए 'पर'क विस्तृत भूमिमे प्रवेश कएलक तँ प्रकृति देवी चतुर्दिक् रंग-विरंग, रूप-राशि रस, गन्ध आ' ध्वनिक सुषमासँ शृंगार कए विराजमान छलीह, जकर अवलोकन उर्मिला कएलनि-

जीवन के पहले प्रभात में, आँख खुली जब मेरी
हरित भूमि के पात-पात में, मैंने हृद् गति हेरी।[2]

'स्व'क सीमित परिधिसँ 'पर'क विस्तृत भूमिमे प्रवेश कालहिसँ लोक प्रकृतिक प्रत्येक वस्तुमे गति आ' सप्राणताक अनुभव कएलक एवं विभिन्न रूप, रस एवं गन्धसँ प्रभावित होइत रहल अछि। आ' एहि वर्णनक तात्पर्य ओकर सुन्दरता, ओकर उद्दीपक रूपक वर्णन करबे धरि प्रायः वेसी साहित्यकार अपनाकेँ सीमित राखल। जकर स्पष्ट प्रभाव मैथिली साहित्यहुमे भेटैत अछि। मुदा, प्रकृतिक दोसर रूप अर्थात् विध्वंसक रूपक वर्णन नहिञे जकाँ भेटैत अछि। प्रकृतिक विध्वंसक रूपक वर्णनमे रउदी, दाही, बिहाड़ि, भूकम्प, समुद्री चक्रवात, सुनामी लहरि आदि अबैत अछि। रउदी-दाही तँ सामान्य घटना थिक तथापि ओहिसँ उत्पन्न मानवीय त्रासदीक वर्णनक प्रति ओ संवेदनशीलताक दर्शन नहि होइछ जे प्रकृतिक उद्दीपनकारी चित्रणक भेटैत अछि। तखन अकस्मात आ' बिना कोनो पूर्व संकेतक आबएबाला भूकम्पक संहार-लीला आ' मानवीय त्रासदीक वर्णनक कतेक सम्भावना अछि?

बीसम शताब्दीमे मिथिलामे दू बेर 1934 ई. एवं 1987 ई. मे विनाशकारी भूकम्प आएल अछि। भूकम्पसँ भेल विनाशक इतिहासमे 1934 ई. क भूकम्प सभसँ वेसी विध्वंसक श्रेणीमे परिगणित अछि। एहि भूकम्पक भीषण विनाश-लीला पर मैथिली साहित्यमे दू टा व्यक्तिगत पुस्तक एवं एकटा संग्रह प्रकाशित अछि। पहिल थिक कविवर सीताराम झाक *भूकम्प वर्णन*। एकर प्रकाशन

1. मुंशी रघुनन्दन दास, *सुभद्राहरण*, हरिनन्दन सिंह स्मारक निधि
2. मैथिलीशरण गुप्त, *साकेत*, चिरगाँव, झांसी

भूकम्पक किछु वर्षक बादे भेल छल। ई कविवरक पौढ़ावस्थाक एक कृति थिक। दोसर अछि कृष्णनन्दन सिंहक *कम्पकारिका* । *कम्पकारिकाक* कवि ओहि समयमे मात्र अठारह वर्षक छलाह। बाल्यावस्थाक विनाशकारी लीला एवं त्रासकेँ अपन स्मृतिमे अठतीस वर्ष धरि ओ जिआ कें रखने रहलाह। प्रतीत होइछ जे हिनक अनुभूति ततेक सघन एवं तीव्र छल जे अभिव्यक्ति लेल कवि विवश भए गेलाह। एकरा स्पष्ट करैत लिखल अछि-

घरमे एकसरि हमही लाल
भेल विवाहो, पुरल न साल
जीवन यौवन पसरल थाल
बाँचल निश्चय कालक गाल। [3]

कविवरक *भूकम्प वर्णन* मे मात्र पैंसठि पद(दोहा,रोला) अछि। *कम्पकारिका* एक स्वतन्त्र पोथी थिक जाहिमे चारि खण्ड अछि - भूमिका, भूकम्प वर्णन, भूकम्पक पूर्व मिथिला तथा भूकम्पोत्तर स्थिति। कविवरक माँजल हाथक वर्णन तँ *कम्पकारिका* मे नहि अछि, परंच भूकम्पक विभीषिका एवं कविक संत्रास -*खण्ड प्रलय सन भूकम्प, बिसरे नहि हमरा हरकम्प* क अतिरिक्त तात्कालिक मिथिलाक राजनीति, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्थितिक काव्यात्मक इतिहास सेहो अछि। कविवर सीताराम झा भूकम्पक ऐतिहासिकताक वर्णन करैत लिखल अछि -

छल फसली सन चन्द्र वेद हुतवह शशि भानक
माघ अमावस सोम, योग छौ ग्रह सङ चानक
डेढ़ पहर दिन शेष रहल ताहि समय अचानक
भेल घोर रव सहित महाभूकम्प भयानक।[4]

मुदा, कम्पकारिका भूकम्पक प्रसंग किछु आओरो तथ्य प्रस्तुत करैत अछि -

इतिहासे सँ से निष्कर्ष अन्तर उभय कुभय सै वर्ष
शत वार्षिक हिमगिरि उत्कर्ष शेष विशेष लेख अपकर्ष।[5]

अभय - कुभय सै वर्ष सँ कविक तात्पर्य 10 अक्तूबर 1735 ई., 26 अगस्त 1833 ई. आ' 15 जनवरी 1934 ई. क भीषण भूकम्पसँ छनि। एकरा स्पष्ट करैत लिखल अछि -

पूर्व अठारह सै तैंतीस, पुनः उन्नेसो सै चौंतीस,
इसवीमे बड़का भूकम्प, सन सनतावनहु किछु कम्प।[6]

बड़का भूकम्पसँ मात्र किछु दिन पूर्व कलकतासँ प्रकाशित रामधारी सिंह 'दिनकर'क कविता 'ताण्डव'मे व्यक्त प्रलयक स्थितिक वर्णनकेँ कविक चेतनामे भूकम्पक पूर्वसूचनाक रूपमे स्वीकार कएल गेल अछि -

3. कृष्णनन्दन सिंह, *कम्पकारिका*, पृ.सं. 43, हरिनन्दन सिंह स्मारक निधि, राघोपुर डेउढ़ी, दरभंगा
4. सीताराम झा, *भूकम्प वर्णन*
5. कृष्णनन्दन सिंह, *कम्पकारिका*, पृ.सं. 16
6. कृष्णनन्दन सिंह, *कम्पकारिका*, पृ.सं. 17

कवि दिनकरकेँ छल बहराएल,
प्रलयक ताण्डव लै एक पद्य
पढ़ल पत्रिका कलकत्ता के
भूकम्प हो साफे गद्य।[7]

किन्तु ध्यान केओ नहि देने छल। 'पतरामे लिखल छल जत, मिथिलामे घटिये गेल सत'- सेहो कहैत छथि।

भूकम्पक अवधिक चर्चा करैत कविवर लिखल अछि - तीन मिनट धरि रहल जोरसँ धरती कंपतहि तँ कम्पकारिका प्रत्येक मिनटक भयावहताक कारुणिक चित्र उपस्थित करैत अछि -

तीन मिनट के छल भूकम्प,
राजा रंक सभक हड़कम्प
पहिल मिनटे उड़ल हतास
दोसर क्रम भ्रम-भू भूवास।
तेसर मिनटक अनुभव की कहु
नास्तिक तक चिकड़य हरि पद गहु।[8]

एहि तीन मिनटक खेलमे शानसँ निर्मित पक्का खसल, केओ माइ, बाप, भैआ चिचियाएल तँ केओ भोतिआएल टाकाक हेतु कानल, केओ नोट आ' रुपैया तथा कुरता आ' कोटक लेल दबि गेल। ई भूकम्प राजा आ' मजदूरक लेल समान छल। अन्तर छलैक तँ मात्राक। जीवन-यापनक लेल काज करैत दरजी मशीन सहित दबि गेल - *दरजी दबल मसीन सहित कपड़ाकेँ सिबितहि*[9]। एकर भयावहताक प्रसंग *कम्पकारिका* मे वर्णित अछि - *गाछी गाछ सटै छल टगि लग। कोठामे कोठा भिर लगभग।*[10]

भूकम्पक फलस्वरूप धरती फाटि गेल। आरि टूटि गेल। मोकर फूटल। कतेको ठाम बालुक संग अबरख आ' कतहु सोन सन चमकए बाला बुकनी बहराएल। कतहु नव धार बनि गेल तँ कतहु धार, पोखरि आ' इनार भाथल। जखन गन्धकक धुआँ लोककेँ लगलैक तँ ओहि क्षणक आतंकक अनुभव शब्दक सीमामे नहि रहल। जीवनक अस्थिरताक बोध अकस्मात लोककेँ होअए लगलैक। अपनाकेँ प्राणान्तक क्षणक समीप अनुभव करए लागल, जेना साक्षात् ज्वालामुखीक समक्ष होथि।

गन्धक गन्ध सबहुके लागे। अतलक धुआँ भूतल भागे।
कते लोककेँ भय अति भेल। ज्वालामुखी करथि ने खेल।[11]

एहि भूकम्पक सीमामे सभ वर्गक लोक छल। ऊँच, नीच, जाति, उपजाति वा धनीक गरीबक

7. कृष्णनन्दन सिंह, *कम्पकारिका*, पृ.सं. 40
8. कृष्णनन्दन सिंह, *कम्पकारिका*, पृ.सं. 43
9. कृष्णनन्दन सिंह, *कम्पकारिका*
10. कृष्णनन्दन सिंह, *कम्पकारिका*
11. कृष्णनन्दन सिंह, *कम्पकारिका*, पृ.सं. 47

अन्तर नहि रहल। भेद छलैक कोठा आ' फूसमे। कोठा ढ़नमना गेल। फूसक घरक डोलपातीक चित्रण *कम्पकारिका*मे अछि -

हाकिम दबला कतै पुनि ओकिल दबला, भरल कचहरी बीच पुनि मोकिल दबला
नास्तिक दबला कते कते षट्कर्मी दबला कते सुधारक तथा सनातन धर्मी दबला।[12]

परंच, ईश्वरक लीलाकेँ अकथनीय मानि साक्ष्य प्रस्तुत करैत लिखैत छथि -

माता दबि मरि गेल बचल पुनि चिलका कोरक
भेल कनेको मलिन तकर सुरखी नहि ठोरक।[13]

कम्पकारिका मे विनाश लीलाक वर्णन अधिक व्यक्त अछि। मुजफ्फरपुरक विनाशक वर्णन तथ्यात्मक एवं व्यंग्यात्मक सेहो अछि। काल्हि साँझ धरि चतुर्भुज स्थानक(*नगरक नीवेमे जनु जहेरे*) जे रमणीयता छलैक, आकर्षण छलैक जकर उपभोगक लेल रसिकजन सतृष्ण रहैत छल, तकर आइ पुछारी केनिहारो केओ नहि रहल। एतेक धरि जे मन्दिरक पुजेगरी सेहो नहि बाँचि सकल-

सुर पुर बाट धरे सब हा! नर, काल्हि साँझ तक जे पुर नागर
सुर 'सुरसती' नाथ चतुर्भुज, घुड़ नहिएं क्यो आज कोना पुज।[14]

दरभंगा अस्पतालक वर्णन तँ औरो कारुणिक आ' त्रासद अछि। एकोटा रोगी नहि बाँचल। जे जीवित छल, थकुचाएल एवं जीवन भरि कूहरैत रहबाक लेल जीवित छल। कतेकोक प्राण तँ आदंकसँ उड़ि गेल -

दरभंगा अस्पताल खसि पड़ल, आतुर भरती अरथी घुड़ल
विरले नहि मरले वा चुड़ल,बाँचल तकरो प्राणे उड़ले।[15]

ओहि प्रलय रातिक हाहाकार आ' चिल्कारमे डाक्टरक चेतना सेहो आतंकित भए गेल छल -

सुनि शृगालक भैरव तान, मरघट निश्चय होअए भान
थर-थर काँपय सबहक प्राण, ऐल काल नहिए ई आन।[16]

जे केओ व्यक्ति डाक्टरकेँ बजेबाक हेतु अबैत छल, डाक्टर तकरा ओ साक्षात् यमदूत बूझि लैत छलाह -

भूते दूते बजबए आएल, कोन ठाँ डाक्टरकेँ लाएल
कोयं! सेयं! स्वयं सेराएल, पाओल डाक्टर प्राण हेराएल।[17]

कम्पकारिका मे राजदरभंगाक विध्वंस, विनाश आ' नवनिर्माणक कथा सेहो भेटैत अछि।

12. कृष्णनन्दन सिंह, *कम्पकारिका*
13. कृष्णनन्दन सिंह, *कम्पकारिका*
14. कृष्णनन्दन सिंह, *कम्पकारिका*, पृ.सं.73
15. कृष्णनन्दन सिंह, *कम्पकारिका*, पृ.सं.82
16. कृष्णनन्दन सिंह, *कम्पकारिका*, पृ.सं. 70
17. कृष्णनन्दन सिंह, *कम्पकारिका*, पृ.सं. 74

भूकम्पमे कामेश्वर गुम्बज खसि पड़ल, गोल बाजार उजाड़ भए गेल। बड़का गेस्ट हाउस खसि पड़ल, 'तुलापति सिंहक कोठी' एवं 'बबुआनी डेरा' खसि पड़ल। सभ किछु तहस-नहस भए गेल -

कामेश्वर गुम्बज मकरध्वज, भूतल पात पलहि फल रज भज
छल फहराइत सबसँ ऊपर, क्षणमे भावी बस भूतल पर।[18]

किन्तु, ईश्वरक एहन लीला जे धर्मशाला बँचि गेल। कोनो क्षति नहि भेलैक - धर्मशाला प्रायः बाँचल, उचिते आनो ठाँ जाँचल। एहिना काशी आ' बैद्यनाथक मन्दिरकेँ किछु नहि भेलैक। हिलबो नहि कएल -

सभ दिस डोलल भूमि माटिमे घर सभ मीलल,
किन्तु देवघर वैद्यनाथ मन्दिर नहि हीलल।
डोलल काशी भवन सकल खसबाले तूलल,
किन्तु कनिको विश्वनाथ मन्दिर नहि झूलल।[19]

भारतक सांस्कृतिक मान्यताक अनुसार काशी शिवजीक त्रिशूल पर विराजमान अछि। ई मानैत कृष्णनन्दन सिंह लिखल अछि जे एहन प्रलंयकारी भूकम्पमे काशी विश्वनाथक मन्दिर नहि हीलबाक कारण भूमिक टोपोग्राफी सेहो अछि - *देखू भूमिक टोपोग्राफी बीच उँच अछि काशी काफी*। बड़का भूकम्पक व्याप्तिक प्रसंग *कम्पकारिका* मे लिखल अछि -

नेपालोमे सेहो सैह
वैशाली मगधो तक वैह
केवल दू घंटा के भेद
नहि तँ मानू उचरल वेद।

1987 ई.क भूकम्पक बाद डा. मुरलीधर झाक सम्पादनमे दिसम्बर 1988 ई. मे *मैथिली भूकम्प काव्य* नामक एक संग्रह प्रकाशित भेल अछि जाहिमे कविवर सीताराम झा एवं कृष्णनन्दन सिंहक अतिरिक्त चौंतीस टा अन्य कविक भूकम्प काव्य संगृहीत अछि। संकलित किछु कवि दूनू भूकम्पक भोक्ता छथि। आचार्य परमानन्दन शास्त्री (15 मइ, 1915 - 20 जून, 2000) लिखल अछि -

औ! भूकम्प!! औ कालदण्ड!! क' देल अहाँ सभ अण्ड बण्ड!!
घर जन सभक आङन चासवास! कै देल सभक हा! सर्वनाश! [20]

आचार्य शास्त्री भूकम्पकेँ कालदण्ड कहल अछि। एहन दण्ड जे जनसंख्याक नियन्त्रण करैत अछि। चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क वर्णनमे समय आ' लोकक ओहि कालक मनःस्थितिक चित्रण तँ अछि, मुदा जेना ओ 1934क भूकम्पक एक भोक्ता सेहो छथि, तकर त्रासक अभाव अछि -

रहय एकैस अगस्त अठासी इसवी शनि केर भोर

18. कृष्णनन्दन सिंह, *कम्पकारिका*, पृ.सं. 88
19. कृष्णनन्दन सिंह, *कम्पकारिका*
20. मुरलीधर झा(सं.) *मैथिली भूकम्प काव्य*

सहस सहस साहसी लोकहुक सहसा बिजकल ठोर
चारि बाजि चालीस मिनट छल भेल समय तेहि काल
महाकाल सन्नद्ध छला धय रूप अपन विकराल।
किछु जागल छल, किछु अलसायल आ' किछु निन्ने भेर
प्रकृति प्रकोप प्रदर्शित कयलक तकलक एहन कुबेर
कय चीत्कार उठल घर-घर पड़ा! पड़ा!! भूकम्प!!!
एक मिनटमे मचल चतुर्दिक सगर नगर हड़कम्प।[21]

चन्द्रभानु सिंह सतासीक बाढ़ि आ' अठासीक भूकम्प दूनू विभीषिकाक वर्णन कएल अछि -

की करैत छी? की फुरैत अछि, भूगर्भक रानी,
बकसि दियौ जन निस्सहायकेँ, ज्वालामुखी भवानी,
फूटल भोम बान्हकेँ फानल सत्तासी केर हुम्मा
बमकि उठल चट्टान तोड़िकेँ अट्ठासी केर गुम्मा।[22]

डा.धीरेन्द्रक भूकम्प वर्णनमे प्राकृतिक विभीषिकाक संग विपत्तिमे मनुजता बढ़ि जएबाक स्थितिक चित्रण भेटैत अछि। एहिसँ स्पष्ट अछि जे भौतिक सुख बढलासँ विद्वेष बढ़ैत अछि। ओ लिखल अछि -

बाढ़िक झमारल मोन पड़लै अपन भितहा घर
हएत खसले आ'...की भेल हएतै हाल?
देखा रहले सभ, अपन मोनक नेह
सभ दूरी दूर चल गेल
भूकम्प केर आतंकमे छल मोन एक्के भेल।
सोचैत अछि ओ, अरे! ई भूकम्प घुरा अनलक
की मनुजता केर बोध? [23]

जीवकान्त[24] भूकम्पक त्रासक संग सरकारी उपेक्षाक प्रसंग सेहो लिखल अछि -

ई स्त्रीगण रातिमे सुति नहि सकैत छथि
जे फेर ई पृथ्वी आ' घरक देबाल
आ' चार परक खपड़ा
हाथमे हाथ जोड़ि कए नाचय नहि लागय
रोटी गिरबा काल जी ओकाइत छनि
ओसारा पर बैसबा काल ओसार
बुझाइत छनि डोलैत

21. मुरलीधर झा(सं.) *मैथिली भूकम्प काव्य*
22. मुरलीधर झा(सं.) *मैथिली भूकम्प काव्य*
23. मुरलीधर झा(सं.) *मैथिली भूकम्प काव्य*

ओक करबा लेल गलीमे बैसि नहि सकैत छथि
दूनू कातक देबाल गली दिस टऽगल अछि
हिनका माथ पर अथवा छावा पर
कोनो पजेबा नहि खसल छनि
ई स्त्रीगण सरकारी कर्मचारी द्वारा
भरल जाइत कोनो सूचीपत्रमे नहि छथि।[24]

तँ डा. भीमनाथ झा बाढ़ि एवं भूकम्पकेँ मिथिलाक विकासक मार्गमे बाधक मानल अछि -

बाढ़िक भीषणता बनले छल, ताहिमे ई पुनि पंजा प' छक्का
दीनता रोग विभीषिका मारल लागल तै पर कोटि चिरक्का
जैह कतौ कहियोक विकासक नाव खुजै कि लगैछ अरक्का
ओह! कते दिन ई मिथिला पुनि खाएत आर अमाक धक्का।[25]

कम्पकारिका मे तात्कालिक सामाजिक स्थिति यथा, स्वदेशी बिलेंतीक गोलैसी, मिथिला छोड़ि नेपालमे बसबाक प्रयास, फ्रांसक रानी एन्टोनेटक हीराक जगमग हारक प्रभावक पुनरावृत्तिक कल्पना, दरभंगा नगरक पुनर्निर्माणक हेतु महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह द्वारा सात लाख टाकाक दानसँ दरभंगा इम्प्रूभमेंट ट्रष्टक स्थापना, *लूटिक भयक नामो नहि छल, उत्साहित नहि छल ता खल, पाँच रुपैये स्वेटर नीक अठारहमे साइकिल ठीक, उत्तम ऊनी मखमल टाल, पन्द्रह टाकाक कोट विशाल* एवं *खेतक उपजा भेने साफे, मालगुजारी प्रायः माफे, भ्रष्टाचार न ककरो लाज, विना पैरवी हो नहि काज* धरि वर्णित अछि। तथापि कविवर सीताराम झाक *भूकम्प वर्णन*मे अर्थ आ' लयक प्रवाह, शब्दचयनक कुशलता, अर्थ गुम्फनक विशिष्टता जतेक अछि, कृष्णनन्दन सिंहक *कम्पकारिका* मे तकर अभाव अछि। परन्तु, *कम्पकारिका* क क्षेत्र विस्तृत अछि। भूकम्पक विनाशक वर्णनक तँ अछिए एकरा तात्कालिक मिथिलाक सामाजिक आ' राजनीतिक स्थितिक ऐतिहासिक प्रलेखक रूपमे सेहो परिगणित कए सकैत छी।



24. मुरलीधर झा(सं.) *मैथिली भूकम्प काव्य*
25. मुरलीधर झा(सं.) *मैथिली भूकम्प काव्य*

कथी ले लगेलिऐ, हे कोसी माइ....

फेर चौपट भेल जीवन फेर उपवन ध्वस्त,
भूखमरी सँ फेर जनता त्रस्त, अस्त-व्यस्त,
फेर कोशी धार उमतलि, गण्डकीमे ज्वारि,
वाग्मती, कमला, बलानो, पुनि उठलि ललकारि।[1]

महाकवि आरसी प्रसाद सिंहक बाढिक एहि हाकरोससँ स्पष्ट अछि जे मिथिलांचलक लेल बाढि अनचन्हिार नहि अछि। प्रथमहि बेर मिथिलावासी बाढ़िक प्रकोपसँ भसिआएल नहि छथि। प्रथमहि बेर मिथिलावासी भूखसँ आँट नहि भेलाह अछि। प्रथमहि बेर कोसी, कमला, बलान, गंडकी, वाग्मती, करेह, लखनदेइ, धेमुरा, तिलयुगाक ज्वारिमे मिथिलाक पुष्पित उपवन ध्वस्त नहि भेल अछि। ई वास्तविकता थिकैक जे प्रतिवर्ष बाढि अबैत अछि। प्रतिवर्ष बाढिसँ सुरक्षाक हेतु बेहिसाब सरकारी धनक व्यय होइत अछि। प्रतिवर्ष बाढि पीड़ितक सहायताक नाम पर त्रिमूर्तिक धोधि पलड़ैत अछि। ओहिसँ जे प्रतिवर्ष धनजनक क्षति होइछ तकरे प्रतिध्वनि थिक - 'फेर चौपट भेल'।

'नदी मातृक क्षेत्र सुन्दर शस्यसँ सम्पन्न' लिखबाक समय कवीश्वर चन्दा झाकेँ कमला, कोसी, सन नातिन सभक 'बाबा पोखरिमे कतेक मछरी' झूमि-झूमि खेलाएब नीक लागल होएतनि। ई विश्वास नहि छल होएतनि जे बाल सुलभ चंचलता, एक दिन उपद्रवकारी भए जाएत। एकरा सभक ज्वारिमे अन्नक कोन कथा, माटिओक दर्शन दुर्लभ भए जएतैक, रहत पानिए पानि।

पानि केवल पानि, आँखिक दृश्यता धरि पानि
अन्न की, ने माटिओ केर आइ कोनो मानि।[2]

सम्भव थिक कवीश्वर प्रेम आ' आवेशवश कल्पना कएने होएताह जे नदीमातृक क्षेत्र सुन्दर शस्यसँ सम्पन्न मिथिलामे समय पर सभ किछु होएत। खेत उपजत एवं बहुत अन्न संचित रहत। आ' प्रायः तेँ राम लक्ष्मणकेँ मिथिलाक प्रसंग कहए पड़ल छलनि -

की दिव्य भूमि मिथिला हम आबि गेलौं
देखैत मात्र मन लक्ष्मण तृप्त भेलौं
की दिव्य फूल फल बृक्ष अनन्त धान
पक्षी विलक्षण करै अछि रम्य गान।[3]

किन्तु, ओएह मिथिलावासी प्राणक रक्षाक लेल, कतए जाएत, बाट नहि सुझैत छैक। जाहिठाम 'कनक मणिसौं खचित रचित नृप विमल अटारी' छल, ततहि मिथिलाक घर-आङन आइ पोखरि बनि गेल अछि। घर भासि गेलैक। माल-जाल आँखिक समक्ष दहाइत रहलैक अछि। रक्षा करब ओकर सामर्थ्यक बाहर छैक।

1. आरसी प्रसाद सिंह, *सूर्यमुखी,* बाढिक हाकरोस,
2. आरसी प्रसाद सिंह, *सूर्यमुखी,* बाढिक हाकरोस,
3. चन्दा झा, *मिथिला भाषा रामायण,* बालकाण्ड,

कोन दिस हम जाउ? की हम करु? की गाउ?
घर आङन बीच पोखरि, पानि भासल नाउ
फेर की खरिहान आ' खेतक कहू हम हाल?
बाढ़िमे बहि गेल मानव, की मवेशी माल?[4]

जाहि महती मिथिलापुरीमे राम एवं लक्ष्मण ककरो विकल नहि देखल तथा 'जे ताकह से भेट, कतहु नहि सृष्टि एहन सन' कहबाक लेल दूनू भाए विवश भए गेल छलाह, ओही मिथिलामे अभावक साम्राज्य पसरि गेल अछि। जे किछु संचित छलैक दहा गेलैक। चूल्हि कानि रहल छैक। बाढ़िक एहि प्रलयंकारी विभीषिकाक वर्णन करैत आरसी प्रसाद सिंह लिखल -

दाहरमे डूबि गेल कुशलक सब धान,
याचक बनि ठाढ़ अछि एकटंगा मचान,
भासि गेल मूल धन लाभक की बात,
चूल्हि कानि-कानि भरल, गील-गील भात,
बान्हि कऽ करेज गेल बान्ह पर बथान
दाहरमे डूबि गेल कुशलक सब धान।
कोशी खरिहान बनल, खेत भेल झील।
बूड़ि गेल मकइ केर राशि फल फसील।
आङनमे बागमती गण्डकी दलान।
दाहरमे डूबि गेल कुशलक सब धान।[5]

महाप्रलयक समय एक शिला-खण्ड पर एकसरे बैसि मनु प्रलय प्रवाह देखि रहल छलाह। ओ एकहि बेर प्रलय-प्रवाह देखल आ' भोगल। हुनकामे ऊर्जा शेष छलनि, सृष्टिक गप्प सोचि सकल छलाह। मिथिलामे प्रतिवर्ष प्रलय अबैत अछि, शिला-खण्ड तँ नहि अछि, किन्तु छप्पर अछि। जे भाग्यवान रहैत अछि छप्पर पर बैसि अगिला वर्षक प्रलय-प्रवाह देखबाक लेल बाँचि जाइत अछि, जकर एहन सौभाग्य नहि छैक, से छप्परक खर पातहि जकाँ भसिआ कए महासमुद्रमे विलीन भए जाइत अछि। तेँ, अनवरत भोगैत प्रलयमे मनु समान ऊर्जस्वित मैथिल नहि बँचैत अछि, बँचि जाइत अछि याचनाक मुद्रामे ठाढ़ एक टङा मचान जकाँ रोग-शोकसँ ग्रस्त आतंकित लोक। जँ एकर सभ पबाइ बाँचल रहितैक तँ दोसर स्थिति छलैक। मुदा रहि पबैत छैक एक टाङ। 'दाहरि मे डूबि गेल कुशलक सब धान, याचक बनि ठाढ़ अछि एक टंग मचान' - ओही प्रलयंकारी स्थितिक द्योतक थिक। कवीश्वर एक संवेदनशील कवि छलाह। अपन युग जीवन आ' परिवेशक प्रति सदिखन सतर्क छलाह। हुनक अतीत वर्णन अतीत गाथा वा गुणोपाख्यान नहि थिक। अपितु, ओ ह्रासमान मिथिलाकेँ सचेत करबाक एक प्रक्रिया थिक। ओ अतीतक ओही अंशकेँ अपन संवेदनाक अंग बना कैँ अभिव्यक्त कएल अछि जे लोकक बोधक संस्कारमे सहायक होइत हो। ओ अपन परिवेशसँ असम्वद्ध नहि छलाह। जखन ओ अनावृष्ट देखल, अतिवृष्ट आ' बाढ़िसँ अन्न-पानि नष्ट

4. आरसी प्रसाद सिंह, *सूर्यमुखी*, बाढ़िक हाकरोस,
5. आरसी प्रसाद सिंह, *सूर्यमुखी*, बाढ़िक हाकरोस

होइत अनुभव कएल, विकल भए गेलाह। चिन्ता भेलनि गरीब लोक की खाएत? की पहिरत? कोना रहत? लोकक दारुण स्थितिक चित्रण कए ओकरा सहानुभूतिक पात्र बना देल -

भदइ सुखायल, धान दहाय।
गरीब किसान कि करत उपाय
कोना दिन काटत जियत की खाय
बाल बचा मिलि करै, हाय! हाय!
हृदय जनु फाटय।[6]

जे कोनो बाढ़िक कारण हो, किन्तु जकर जीवन बाढ़िमे उगडुम करैत छैक, चास-बास भसिआइत छैक, अपना भरि बचबाक प्रयास अवश्य करैत अछि। बाढ़ि पीड़ित लोकक जीजीविषा केँ स्वर दैत कवीश्वर लिखने छथि-

बाँधल छहर उँचके आरि
राति-दिन सभ धयल कोदारि
सारि दल उपजल लेल सम्हारि
निर्दय कमला कि कहु विचारि
हारि हृदय बैसल।[7]

बाढ़िक प्रकोपसँ मानवक यंत्रणा बढ़ैत अछि। कष्ट बढ़ैत अछि। धन-जनक क्षतिसँ हृदयपर आघात लगैत छैक। लोकक एही यन्त्रणाक अभिव्यक्ति साहित्यमे होइत अछि। इएह मानवीय करुणा साहित्यकारकेँ रचनाक हेतु प्रेरित करैत आएल अछि। बाढ़ि मिथिलामे नियमित रूपसँ अबैत रहल अछि। ओकर संत्रासकेँ लोक भोगैत अछि, चन्द्रभानु सिंह ओहि संत्रासकेँ स्वर देल अछि -

आइ अकासे छप्पड़ हमरा रातुक भुइयाँ तामी,
जे गेले, से सोझे गेले, जानथि अंतर्यामी
के नहि जानय सौंसे मिथिला शिव तोहर अनुयायी
सबहक संगे तैयो डूबल हम्मर घर नदियामी
दुखे बरात साजि उतरल छल, घोंसा बाजय द्वार
ने एहि पार रहलियै भोला, नै गेलियै ओहि पार।'[8]

मिथिलांचलमे आएल बाढ़िक विभीषिकासँ उत्पन्न कारुणिक स्थितिक चित्रण साहित्यक अन्यहु विधामे भेल अछि। ई वर्णन पानि कोना आएल, कोम्हर बाटे आएल, कतेक दिन रहल, तकर रिपोर्ट नहि थिक, अपितु पानि घटला पर लोकक यातना, अभाव आ' असहायताक वर्णन थिक। खराँतक नाम पर शोषणक कथा थिक। अत्याचारक कथा थिक। बाढ़िक मध्य आ' बाढ़िक

6. *चन्द्रपद्यावली*
7. *चन्द्रपद्यावली*
8. चन्द्रभानु सिंह, *स्वदेश भारती*, पृ. सं. 47

पानि घटला पर पीड़ित लोकक दारुण कथाक चित्रण लक्ष्मीपति सिंहक *पंचवटी,* लिली रेक *पटाक्षेप,* एवं साकेतानन्दक *सर्वस्वान्त* उपन्यासमे अछि। जीवकान्तक कथा *इन्किलाव* बाढ़ि पीड़ित लोकक आक्रोशक कथा थिक। जेँ कि बाढ़ि प्रायः प्रति वर्ष अबिते अछि, नव-नव अनुभव होइते रहैत छैक, तेँ ओहिसँ उत्पन्न यन्त्रणाक किछु ने किछु वर्णन सभ साल समक्ष अबैत अछि।

वर्ष 2008 ई.मे कोसीक बान्ह टूटब आ' आएल प्रलयंकारी बाढ़िक विभीषिका मानवीय त्रासदी एक प्रबल कारण नहि भेल, अपितु पोखरि-धार आदि जलाशयसँ अपन आहार प्राप्तकर्ता पशु-पक्षी, जीव-जन्तु ओ चीड़ै-चुनमुनीक लेल सेहो ओ विनाशकारी सिद्ध भेलैक। ओहि विनाशकारी स्थितिक वर्णन जीवकान्त एक बगुलाक व्यथाक माध्यमेँ कएल अछि -

गाछ पर होइ छै उपास
ठक दए उपास
माटि पर उमड़ल धारमे नहि होइ छै बैसार
नहि पकड़ाइ छै शिकार
ई देश कोन देश भए गेलै?
जतए मासक मास
बगुलाक पाँखि नहि छै सुखाइत
जतए नहि जगै छै माटि
जतए बगुला गाछे पर रहैए अहोरात्र
राति निराहार
दिन निराहार
ई देश रहबाक जोग नहि
बरखाक बाद
ओ दोसर देशक उदेशमे जाएत
जतए एक दिस धारो होइ
आ' कातमे जागल महारो होइ।[9]

कतेको साँझ आहारविहीन रहल बगुलाक त्रासदी एवं पुश्तैनी निवास मिथिलासँ पलायन योजनाक माध्यमसँ मानवीय त्रासदीक दारुण स्थितिक वर्णन 'बाढ़िमे बगुला' कवितामे अछि। मानवीय त्रासदीक फलक अनेक रूपात्मक अछि। धनहर खेतमे बालुक भरब, पोखरि इनारक भथब, गाछी-बिरछीक सुखाएब, सड़कक स्थान पर रेत बहब आदि एहन समस्या सभ बाढ़िक उपरान्त सम्मुख अबैत छैक जाहिमे भूख, रोग-शोकसँ बाँचल मैथिलक लेल पलायनक अतिरिक्त आन कोनो विकल्प नहि रहि जाइत छैक।

कोसीक एहि प्रलयंकारी बाढ़िक विनाशलीलासँ आहत पर्यावरणविद नदी आदिक स्वाभाविक प्रवाहमे बान्ह, छहर आदि द्वारा बाधा उत्पन्न करबाक सरकारी निर्णय पर आपत्ति करब शुरू कए देल अछि। एकर अनुगुंज सियाराम झा 'सरस'क गीत 'जे कोसी बतहिया भेलै'मे अछि-

9. जीवकान्त, *घर बाहर,* अक्टूबर-दिसम्बर, 2008

रोज-रोज तते बेसी खौंझेलिऐ
जे कोसी बतहिया भेलै।
हम ततबा ने ठेसी देखौलिए
जे कोसी बतहिया भेलै।[10]

बाढ़िक प्रकोपसँ जखन अस्तित्व संकटापन्न भए जाइत अछि तँ शत्रु मित्र भए जाइत छैक। बाढ़िमे ई स्थिति विशेषतः देखबामे अबैत छैक। एहि अनुभवक अभिव्यक्ति *सूर्यमुखी* मे आरसी प्रसाद सिंह कएल अछि -

एहन आपात काल बिसरल बैरियो अरिभाव
साप मूसक मिलन देखल रंक भेल राव।[11]

एकदिस जँ साप-मूसक मिलन होइछ तँ दोसर दिस बाढ़ि पीड़ित लोकक सहायताक लेल देश-विदेशसँ आएल राहत सामग्री सरकारी अमला एवं मन्त्रीक आय-स्रोत बनि जाइत अछि। ओ सभ एहि मानवीय त्रासदीक बेरबेर घटित होएबाक कामना करए लगैत अछि। ई घोर अमानवीय आचरण एवं मानवीय मूल्यक अवमूल्यन थिक। एहन अवसर पर विभिन्न मन्त्रीक हवाइ सर्वेक्षण सामान्य बात भए जाइत अछि। किछु क्षण लेल आशाक संचार अवश्य होइत छैक, किन्तु गगन विहारी नेता सभ लेल धनसन। बाढ़ि पीड़ित जनताक ध्वस्त होइत कामनाकेँ सुकान्त सोम स्वर देल अछि -

ओहि दिन
अहाँक विमान गामक बाम आकाश दऽ उड़ल रहय आ'
सुखैल बाँसक फट्ठी भेल आकृति सभ
अपन घेंट टेढ़ कऽ उपर देखने रहैक कि
गरदनिक नस सभ ठामठीम कुसियारक पोर जकाँ
दड़कि गेलै। मुदा
अहाँक विमान उड़िते रहल
आ' दोसर दिन टटैल-सुखैल बाँसक फट्ठीबाला असंख्य
आकृतिक संग अखबारमे एकटा हरियर आ' मुस्काइत चेहरा रहैक
ओ, अहाँ रही।[12]

नदीक कातमे विश्वक सभ्यता आ' संस्कृति विकसित भेल। नदी जल दैत छथि। जल जीवन थिक। अपन प्रवाहसँ निरन्तर बहैत, चलैत आ' सक्रिय रहबाक प्रेरणा दैत छथि। भारतीय संस्कृतिमे नदीकेँ माइक संज्ञा प्राप्त अछि। बाढिसँ लोकक कष्ट बढ़ैत छैक, कर्ज बढ़ैत छैक आ' निराशा बढ़ैत छैक। बाढ़िकेँ माइक प्रकोप मानि कवीश्वर चन्दा झा कमला माइसँ अनुरोध करैत छथि

10. सियाराम झा 'सरस', घर बाहर, अक्टूबर-दिसम्बर, 2008
11. आरसी प्रसाद सिंह, *सूर्यमुखी*
12. सुकान्त सोम

समटू समटू जल कमला माए
करू जनु एहन देवि अन्याय
असह दुख होइछ, आय लगाय
कैलहुँ खरचा करज कै खाय।[13]

मिथिलाक बाढ़िक विभीषिकाक वर्णन मैथिलीक कविलोकनिक रचनेमे नहि लोक गीतहुमे प्रचुर मात्रमे उपलब्ध अछि। एहनहि एक गीतमे कोसी माइकेँ उपराग अछि–

कथी ले लगेलिऐ, हे कोसी माइ!
आम जामुन गछिया हे।
कथी ले लगेलिऐ
हरिअर बीट बाँस हे?
कथी ले बढ़ौलिऐ
लानी लानी केसिया हे
कथी ले के लिऐ पाँतरे बलमुहाँ, हे कोसी माइ!



13. *चन्द्रपद्यावली*

मैथिली महाकाव्यमे युग-सन्दर्भ

मैथिली महाकाव्यमे अभिव्यंजित युग-सन्दर्भक अनुसन्धान एवं विवेचन मैथिलीक पाँच महाकाव्यक आधार पर प्रस्तुत अछि। ओ पाँचो महाकाव्य थिक *सुभद्राहरण, राधाविरह, अगस्त्यायनी, त्रिपुण्ड* एवं *पराशर*। एकर अर्थ ई नहि छैक जे मैथिलीक शेष महाकाव्य युग-सन्दर्भसँ हीन अछि। सभ रचनाकार अपन परिवेशसँ प्रभावित-प्रेरित होइत अछि। परंच, परिवेशक कोन घटक कोन रचनाकारकेँ कतेक प्रभावित करैत अछि, तकर अनेकहु कारण छैक। ओहि कारण सबहक अन्वेषण एवं विस्तारमे जाएब सम्प्रति हमर अभीष्ट नहि अछि। एहि महाकाव्य सबहक चयनक कारण अछि, पाँच प्रकारक समकालीन प्रयोजनक सिद्धिक निमित्त साहित्य-सर्जना। ओ प्रयोजन थिक राष्ट्रीय स्वाधीनताक लेल संघर्ष *(सुभद्राहरण)*, नारी स्वाभिमान वा आजुक शब्दावलीमे नारी सशक्तिकरण (*राधाविरह)*, राष्ट्रहितक लेल भावात्मक एकताक महत्त्व प्रतिपादन, (*अगस्त्यायनी)*, राष्ट्रक समुचित विकासक लेल युवाशक्तिक नियोजन(*त्रिपुण्ड)* तथा मैथिल उपराष्ट्रीयता *(पराशर)*।

सुभद्राहरण महाकाव्यक रचना 1933 सँ 1938 ई.क मध्य मुंशी रघुनन्दन दास कएलनि। कविचूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क *राधाविरह* स्वाधीनता कालमे लिखाएल तथा 1969 ई. मे प्रकाशित भेल। मार्कण्डेय प्रवासीक *अगस्त्यायनी* 1977 ई. क महानिर्वाचनक पश्चात, जखन आपात् काल समाप्त भए गेल छलैक, लिखाएल तथा 1980 ई. मे छपल। चारिम महाकाव्य थिक डा. धीरेन्द्रक *त्रिपुण्ड*। *त्रिपुण्ड* क रचनाक अवधि थिक 1980 ई. क महाशिवरात्रिक उपरान्तक उन्नैस दिन। *त्रिपुण्ड* 1984 ई. मे विद्यापति स्मृतिपर्वक अवसर पर प्रकाशित भेल। डा.काञ्चीनाथ झा 'किरण'कृत महाकाव्य *पराशर* 1988 मे प्रकाशित भेल। एहि पाँचो महाकाव्यमे तीनटा *राधाविरह अगस्त्यायनी* तथा *पराशर* साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत अछि।

सुभद्राहरण मे आएल युग-सन्दर्भक अन्वेषणक लेल महाकाव्यक रचनाक समय देशक राजनीतिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि की छलैक, ओहि दिस ध्यान लए जाएब आवश्यक अछि। महात्मा गाँधीक नेतृत्वमे 1930 ई. मे सम्पूर्ण देशमे अङरेज सरकारक विरुद्ध असहयोग आन्दोलन आरम्भ भेल छल। ओ आन्दोलन क्रमशः प्रखर होइत गेल। केओ व्यावहारिक स्तरपर सक्रिय छलाह तँ केओ मन आ'' धनसँ सक्रिय रहि ओहि आन्दोलनक सहभागी छलाह। महाकाव्यकारक यशस्वी पुत्र नरेन्द्रनाथ दास 'विद्यालंकार' ओहि आन्दोलनमे अनेक स्तरपर सक्रिय छलाह। ब्रिटिश सरकार हुनका पकड़ि एक राजनीतिक बन्दीक रूपमे बांकीपुर (पटना)क कैम्प जहलमे बन्द कए देने छल। नरे बाबू राजनीतिक सक्रियताक संग मैथिलीक एक साहित्यकारक रूपमे ख्याति अर्जित कए लेने छलाह। मैथिलीमे महाकाव्यक अभाव हुनका खटकैत छलनि। ओहि अभावक पूर्तिक हेतु ओ जहलहिसँ पिताकेँ मैथिलीमे महाकाव्य लिखि अभावक पूर्ति करबाक लेल अनुरोध कएलनि। पुत्रक पत्रक प्रसंग मुंशीजी लिखलनि अछि जे सुभद्राक हरण पर महाकाव्य लिखबाक विचार बहुत दिनसँ मनमे छल। जहलक चिट्ठी स्मरण-पथ पर पुनः अनलक।[1]

1. मुंशी रघुनन्दन दास, *सुभद्राहरण*, निवेदन, हरिनन्दन सिंह स्मारक निधि, राघोपुर डेउढ़ी, सकरी

प्रखर राष्ट्रीय चेतनाक कवि मुंशीजीक लेल भारतीय राष्ट्रीयतासँ कम महत्त्वपूर्ण मैथिल उपराष्ट्रीयता नहि छल। उदाहरण अछि *मिथिला नाटक*। सामाजिक वा राष्ट्रीय दायित्त्वक प्रति सतर्क मुंशी जी राष्ट्रीय मूल्यक रक्षाक हेतु एक ओहन नायककेँ लोकक समक्ष प्रस्तुत करब चाहने छल होएताह जे स्वाधीनताक रक्षाक लेल असहृय यातना सहैत अछि, जे राष्ट्रक हितमे अपन व्यक्तिगत स्वार्थ एवं पैघसँ पैघ सुख-सुविधा त्यागि देबाक लेल सदिखन तैआर रहैत अछि, जकरा राजभोग आकृष्ट नहि करैत छैक, जे प्रत्येक अत्याचार आ' अनाचारक विरोध करबाक क्षमता रखैत हो। ओहन उदात्त चरित्र मुंशीजीकेँ महान पराक्रमी योद्धा अर्जुनक व्यक्तित्वमे भेटल छलनि। अर्जुन मूल्य-रक्षा निमित्त पैघसँ पैघ राजसी सुविधा आ' सुख छोड़ि गुप्तवास कएने छलाह। ओ मूल्यक रक्षार्थ राजभोगकेँ अत्यन्त तुच्छ मानि बारह वर्ष घरसँ बाहर छलाह। एक स्वतन्त्रता सेनानीक लोकवेदक मनोदशा अपन इष्ट अपेक्षितजनक यातना सूनि, विचलित नहि भए जाए, तेँ मुंशी जी त्याग आ' बलिदानक प्रसंग लिखल -

नष्ट होअ बरु देह ने धर्म्मक नेह नशायब
प्राण-प्रणे नहि काज साधनहिँमे मन लायब। [2]

पार्थकेँ कर्त्तव्य-पथसँ विचलित करेबाक लेल कतेको तर्क देल गेल, किन्तु कोनो ब्योंत कर्त्तव्य-पथसँ हुनका विमुख नहि कए सकल। पार्थक निष्ठा आ' कर्त्तव्यबोधक माध्यमेँ युगचेता महाकवि व्रतपालनक हेतु प्रत्येक स्वतन्त्रता सेनानीकेँ प्रोत्साहित कएलनि -

दीन जनक दुख दूर करब जग थिक पुरुषारथ
पड़ि असमंजस धैर्य्य धरब करतब पुरषारथ
प्रण कय प्रण-पथ गहन गमन जन कह पुरुषारथ
बिकट संकट बीच डटब साँचे पुरुषारथ।[3]

देशाटनक क्रममे पार्थक आगमन पंचसरमे होइत अछि। पचंसरमे शापवश ग्राह बनल पाँच अप्सराक उपद्रवसँ कतेको पनिभरनीक अकाल मृत्यु भए गेल छलैक। निर्दोष पनिभरनीक अकाल मृत्यु राजाक विरुद्ध आक्रोशक कारण भेल छल। अर्जुन पाँचो ग्राहकेँ मारि अप्सराकेँ शापमुक्त कएलनि। एहि प्रकारेँ पंचसरकेँ आओरो बेसी शोकार्त होएबासँ ओ बचा लेल। एहि पौराणिक घटनाकेँ *सुभद्राहरण* मे समाहित कए मुंशीजी लोकक सामाजिक दायित्त्वक दिस संकेत कएल अछि-

जौं समाजक कष्ट सुनि चुप्पे रही
कायरे जग भाषु बड़ अयशो सही
वीरता बिनु वीर नाम धरायबे
मानु माटिक सिंह सन दरशायबे।[4]

2. मुंशी रघुनन्दन दास, *सुभद्राहरण*, पृ.सं. 34
3. मुंशी रघुनन्दन दास, *सुभद्राहरण*, पृ.सं. 40
4. मुंशी रघुनन्दन दास, *सुभद्राहरण*, पृ.सं. 124

मुंशीजीक दृढ़ विश्वास छलनि जे देशक वास्तविक शक्ति जनताक हाथमे छैक। ओकरहि इच्छापर केओ शासक टीकि सकैत अछि। देशक एक वर्गक विश्वास छलैक जे अङरेजी शासन-व्यवस्थाक अन्त सम्भव नहि अछि, तेँ जे किछु लोक विरोध करैत अछि, स्थायी नहि भए पबैत अछि। मुंशीजी एहि विचारक खण्डन करैत लिखैत छथि - शासक गाछ थिक तँ जनता जड़ि। जनता जँ विद्रोह कए देअय, तँ राजाकेँ शक्तिहीन होएबासँ कोनो शक्ति रोकि नहि सकैछ। पराधीन भारतक गुलाम जनतामे एहि प्रकारक विचारोत्पत्तिक लेल मुंशीजी लिखल अछि -

राज्य तरुवर मूल रैयति मानबे
नरपतिक बल मुख्य रैयति जानवे
करय जौं विद्रोह रैयति जानि ली
भूप खेतक धूक रूपे मानि ली।[5]

भोग-लिप्सारत पंचसरक राजाक अक्षमता तथा अत्याचारक चित्रणक माध्यमसँ मुंशीजी अङरेजी शासन-व्यवस्थाक प्रति भारतवासीक मनमे घृणा उत्पन्न करबाक चेष्टा कएल अछि। महात्मा गाँधीक नेतृत्वमे चलि रहल असहयोग आन्दोलनमे अङरेजी शासनकेँ सभ प्रकारक असहयोगक आह्वान छल। ओहिमे कर, लगान आदि नहि देबाक निर्देश छलैक। आन्दोलनक एहि पक्षकेँ महाकाव्यमे समाविष्ट करैत मुंशीजी कर प्राप्तकर्ता राजाक दायित्व मानल अछि जे ओ प्रजाक उत्थानक चिन्ता राखय तथा एहि काजमे असमर्थ राजाकेँ कर नहि देबाक चाही -

प्रजा सौं कर रूप भूपो लेथि जे
उचित थिक दुख प्रजा गन नशि देथि से
नृप विमुख कर्त्तव्य बुझि करु मन्त्रणा
कर न दी सभ मिलि करी ई यन्त्रणा।[6]

स्वाधीनतापूर्व भारतमे अछूतोद्धार सन सामाजिक आन्दोलन द्वारा युग-युगसँ अस्पृश्य बनल कतेको जातिकेँ सामाजिक प्रतिष्ठा देल गेल। एहि आन्दोलनक प्रभावसँ कविचूड़ामणि मधुप अस्पृश्य आ' घृणास्पद जड़ पदार्थकेँ काव्यमे (*शतदल*) प्रतिष्ठित कएल। स्वतन्त्र भारतमे केओ अछोप नहि रहल। सभ सामाजिक न्याय पएबाक अधिकारी बनल। जाति, धर्म, भाषा, सम्प्रदाय आदिक आधार पर समाजमे विभेदक रेखा समाप्त करबाक घोषणा कएल गेल। *राधाविरह*क माध्यमेँ कविचूड़ामणि कतेको युगीन सन्दर्भकेँ स्वर देल अछि। भारतीय मानसमे राधाक जे मूर्ति अछि, माटिक नहि, चिन्मयी चेतनाक अछि। राधा वास्तवमे भारतीय काव्य संसारक आधार छथि। ओहि राधाक कविचूड़ामणि साधारणीकरण कएल। मध्यकालीन साहित्यक ओहि रसमयी राधाकेँ *राधाविरह* मे आनि, समाजक तथाकथित छोटसँ छोट जातिक स्त्री यथा, कुम्हैन, नौआनि, बैरनि, लोहारिन, डोमिन, चमैन, जोलाहिनी आदिक रूपमे प्रस्तुत कएल अछि। कविक ई दृष्टि ओही मूल्यबोधक परिणति थिक, जकर उल्लेख उपर कएल गेल अछि।

5. मुंशी रघुनन्दन दास, *सुभद्राहरण,* पृ.सं. 118
6. मुंशी रघुनन्दन दास, *सुभद्राहरण*, पृ.सं. 118

नारी उत्थान, नारी स्वातन्त्र्य तथा राष्ट्रोत्थान हेतु नारी जातिमे आएल राष्ट्रसेवाक भाव *राधाविरह* क राधामे वर्त्तमान अछि। विरह कातर राधा नहि चाहैछ जे पतिकेँ प्रणय-पाशमे बान्हि केँ राखी जाहिसँ देश-सेवाक कर्त्तव्यबोधसँ ओ विमुख भए जाथि। राधाकेँ देशक स्थितिक बोध छनि। ओ स्पष्ट करैत छथि -

कहाँ कही हम सदिखन हमरे-संग रहू तजि कऽ सब काज
कहाँ कही हम सृष्टिक संकट देखि बढ़ू नहि भऽ निर्व्याज
कहाँ कही हम साधु-विनाशक-दुष्ट जनक नहि करु संहार,
कहाँ कही हम अमर-मण्डलीकेँ ने दिअबिअनु निज अधिकार।[7]

राष्ट्रनिर्माणमे सभ वर्गक सहभागिता आ' राष्ट्ररक्षाक निमित्त त्यागक चर्चा करैत राधा पतिकेँ विश्वास दिअबैत छथि -

कहाँ देश वा पति पर संकट देखि, आर्य-ललना पछुऐल?
कैकेयी आ' सीता रण सूनि रहली घरमे कहाँ नुकैल?[8]

युग परिवर्त्तनसँ कविक दृष्टिमे होइत परिवर्त्तनक विलक्षण उदाहरण सुभद्रा आ' राधाक चरित्रक माध्यमेँ स्पष्ट होइत अछि। स्वाधीनता संग्रामक समय स्त्री आ' पुरुष एक भए स्वतन्त्रता संग्राममे सक्रिय छल। दूनू वर्गक ध्येय छलैक विदेशी-शासनसँ अपन राष्ट्रकेँ मुक्त करब। एहि प्रयोजन आ' सहयोगक प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति सुभद्रा द्वारा रण-क्षेत्रमे सारथीक काज सम्हारला पर पार्थसँ कहब थिक -

नाथ! आब सारथी अभाव चित्त आनु ने
घोर युद्ध हस्तिनापुरेश संग ठानु ने
जाहि युक्ति जीति होअ अस्त्रकेँ चलाउने
सैन्य जौं समुद्र तौं अगस्त भै सुखाउने।[9]

किन्तु, स्वाधीनताक बाद चाबुक सम्हारबाक स्थिति नहि रहल। आवश्यकता भेल समाज केँ सुधारबाक। से केवल पुरुषे वर्गक लेल नहि, नारी वर्गक लेल सेहो सुधार आवश्यक भए गेल। युगक एहि सन्दर्भकेँ ग्रहण कए राधा अपन पतिकेँ विश्वास दिअबैत अछि -

करु बाहर सुधार देशक पहु, हम समाजमे नारि सुधार,
करइत रहब, कण्ठगत या' धरि प्राण रहत हे नन्द कुमार![10]

1977 ई.क महानिर्वाचनक बाद उत्तर भारत तथा दक्षिण भारतकेँ दू राजनीतिक शिविरक रूपमे देखबाक विवशता उत्पन्न भए गेल छलैक। जातिवादी दृष्टिक विद्वेषमे फँसि गेलासँ देशमे बुद्धि, विवेक तथा हार्दिकताक अस्तित्वे पर संकट उपस्थित भए गेल छल। तकरहि परिणति थिक *अगस्त्यायनी*। मार्कण्डेय प्रवासी कवि-कर्मक लेल आवश्यक मानैत छथि जे ओ अपन वर्तमानसँ

7. काशीकान्त मिश्र 'मधुप', *राधाविरह* पृ.सं. 120
8. काशीकान्त मिश्र 'मधुप', *राधाविरह* पृ.सं. 120
9. मुंशी रघुनन्दन दास, *सुभद्राहरण*
10. काशीकान्त मिश्र 'मधुप', *राधाविरह* पृ.सं. 120

असम्पृक्त नहि रहए। अतीतक प्रति ओतबहि मोहाविष्ट रहबाक चाही जाहिसँ वर्त्तमान जीवनक ध ारामे प्रवाह बनल रहैक। जखन सम्पूर्ण राष्ट्र मूल्यहीनताक उजाहिमे भासल जाइत छल, अविश्वास आ' शंकाक बाढ़िमे उगडूब कए रहल छल, क्षेत्र, भाषा आ' जातिक आधार पर भारतवर्षक सांस्कृतिक ऐक्यकेँ स्वार्थी आ' विदेशी तत्त्वक सहपर विखण्डित करबाक षड्यन्त्र चरमोत्कर्ष पर छलैक, कवि भारतक स्वर्णिम अतीतसँ एक एहन ऋषिकेँ अपन युगीन सन्दर्भमे प्रस्तुत कएल अछि जे अपन त्याग, कूट नीति आ' निर्भीक विचार ओ आचरणक बलेँ नेतृत्व प्रदान कए भारतीय चेतना पर सहस्रहु वर्षसँ अंकित अछि। एहि प्रसंग स्पष्ट करैत महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी लिखल अछि - 'जे देश आ' समाज जेना टूटल जाइत छलैक, अपन महाकाव्यक हेतु हमरा अगस्त्योपाख्यानसँ अधिक सार्थक आ' सशक्त कथानक भेटिए की सकैत छल? उत्तर आ' दक्षिण भारतक बीचमे आकाश ठेकैत विन्ध्यकेँ अगस्त कौशलसँ धरती पर आनि भाषा-विवादक समाधान करैत छथि। से एहि हेतु जे भावात्मक एकताक मार्गमे सबसँ प्रबल बाधक होइत अछि भाषा। तमिल आ' संस्कृतकेँ शिवहिक डमरूसँ उत्पन्न कहि, विरोधक स्थानपर समन्वय स्थापित कएल अछि -

वामासँ तमिल तथा दहिना
डमरूसँ संस्कृत ध्वनि-तरंग
निकलल; दूनू भाषा पौलक
शांकर वैयाकरण प्रबन्ध।[11]

ऋषिक समाजोद्धारक निर्णयक द्योतक थिक आतापि तथा वातापि सन राक्षसक विनाश। विदेशी तस्करदलकेँ नाश करबाक लेल अगस्त द्वारा समुद्रकेँ सुरकि जाएब थिक देशक जल-सीमापर अवाधित अधिकार राखब। समुद्रकेँ सुरकब प्रतीक थिक। कवि कालेयकेँ तस्करक रूपमे प्रस्तुत कएल अछि। ओ देशक अर्थ-व्यवस्थाकेँ छिन्न-भिन्न करबाक लेल सक्रिय अछि। भाषा-विवाद तथा आर्य अथवा द्राविड़ संस्कृतिक वर्चस्व जनित स्पर्द्धाकेँ समाप्त कए राष्ट्रक सुख-समृद्धिक लेल उत्तर भारतक ज्ञान राशिकेँ दक्षिण भारत तथा दक्षिण भारतक द्राविड़ संस्कृति केँ उत्तर भारत अनबाक आवश्यकता प्रतिपादित अछि। जाहिसँ सांस्कृतिक आदान-प्रदान तथा भावात्मक एकताक गति बढैत रहय, मन्द नहि होअए।

उत्तरमे केन्द्रित
ज्ञान-रश्मिकेँ मुनिवर
दक्षिण भारतमे
लोकप्रिय बनबै छथि
दक्षिणक द्रविड़
संस्कृतिकेँ आर्य प्रभा द'
राष्ट्रक सीमाकेँ ऋषि
असीम स्वर दै' छथि।[12]

11. मार्कण्डेय प्रवासी, *अगस्त्यायनी,* पृ.सं. 120
12. मार्कण्डेय प्रवासी, *अगस्त्यायनी,* पृ.सं. 150

पराधीन भारतक स्वाधीनताकामीक प्रेरणाक लेल प्रयोजन छल राजसी सुखोपभोगकेँ त्यागि मूल्यक रक्षा करब। *सुभद्राहरण* मे ओहि हेतु पार्थकेँ प्रस्तुत कएल गेल अछि। *राधाविरह मे* राष्ट्रीय तथा समाज-सुधारक कार्यमे नारीक सहभागिताक महत्त्व विप्रलम्भ शृंगारक बीच-बीचमे प्रतिपादित अछि। *अगस्त्यायनी* मे राष्ट्रक भावात्मक एकता एवं अखण्डताक मार्गमे अबैत बाधाकेँ समाप्त करबाक लेल ऋषि अगस्त आनल गेलाह अछि। किन्तु, डा. धीरेन्द्रक *त्रिपुण्ड* मे शिव-पार्वतीक कथाक माध्यमसँ देशक सर्वांगीण विकासक लेल गार्हस्थ्य-रसक प्रतिपादन करैत श्रमक महत्त्व प्रतिपादित अछि। डा.धीरेन्द्रक मान्यता छनि जे भूखक ज्वालाकेँ शान्त करबाक लेल लोककेँ चाहिऐक अन्न। अन्न लेल कृषिकार्य आवश्यक अछि। एही निमित्त घर-आङन छोड़ि पड़ाएल एवं अपन बाँहिक क्षमतासँ परिचित शिव गाम आबि खेती-बाड़ीक निर्णय करैत छथि -

ब्रम्हरूप ई हाथ दुहू अछि, ई सिरजय संसार,
इएह सजाबए जगती-तलकेँ इएह करए संहार।
हम तँ कृषक आगतक मात्रे राखी खाली आशा,
श्रमिक बनब हम, जानी खाली हम बाँहिक बस भाषा।[13]

कृषि कार्यक महत्त्व प्रतिपादनक हेतु कवि शिवकेँ हरक नाससँ वसुधा पटपर कविता लिखैत प्रस्तुत कएल अछि। ओ चास समारि बिआ छीटबैत छथि। उमाकेँ एक कृषकक पत्नीक रूपमे चित्रित कएल अछि -

कएलनि चास, समारल पुनि ओ विधिवत पूरा खेत,
भए गेल पूरा बीयो छीटल तँ कएलनि संकेत।
पाबि हुनक संकेत उमा लए चलली रोटी साग;
बैसि आरि पर चिबबए लगला जेना हो बड़ भाग।[14]

मुंशी रघुनन्दन दास पार्थक पौरुषक उत्कर्षकेँ चित्रित कए पराधीन भारतक भारतवासीक प्रेरणाक हेतु *सुभद्राहरण* मे सुभद्राक हरण कराओल। ओतय हुनक वीर सन्ततिक चर्चाक गुंजाइश नहि छल। कविचूड़ामणि मधुप *राधाविरह* मे विरह-कातर राधामे समाज सुधारक प्रबल उद्वेग देखाओल अछि। महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी *अगस्त्यायनी* मे ऋषि अगस्त उत्तर भारतक संग नेह-पाशमे आबद्ध रहबाक लेल अपन पुत्र दृढ़स्युकेँ ओहीठाम छोड़ि स्वयं दूनू बेकती दक्षिण भारत प्रयाण कए जाइत छथि। परन्तु डा. धीरेन्द्रक *त्रिपुण्ड* मे शिव अपन दूनू पुत्रकेँ राष्ट्रकेँ समर्पित कए दैत छथि। देवतालोकनिक अनुरोध पर एक पुत्रकेँ राष्ट्ररक्षाक निमित्त सेनापति बनाएब गछैत छथि तँ दोसर पुत्रकेँ अज्ञानताक निवारण तथा तम-तस्करसँ रक्षा करबाक हेतु शास्त्र-प्रचारक नियुक्त करबाक मांग स्वीकार करैत छथि। दूनू पुत्रकेँ सजल नयने शिव पार्वती विदा करैत छथि-

शस्त्रबोध अर्पित कुमारकेँ, गणपति शास्त्र प्रचारथि,
एक बनथु देवक सेनापति, दोसर विश्व सम्हारथि

13. डा. धीरेन्द्र, *त्रिपुण्ड*, पृ.सं. 65
14. डा. धीरेन्द्र, *त्रिपुण्ड*, पृ.सं. 66

''जय जय'' देव ओ मानव कहलनि, भरल सभक छल मोन,
पर्वत, निर्झर धारा हिचुकए, कानि रहल छल बोन।
दुनू पुत्रकेँ कयल विदा शिव, दए कर्त्तव्यक भार;
अएला विहुंसि छिटकल मुखपर, नेत्रमे नोरक धार।[15]

आजुक युगक धर्म थिक श्रमक महत्त्वकेँ बूझि कृषि-कार्यक विकासक हेतु प्रयत्न करब, आजुक युगक धर्म थिक राष्ट्रक रक्षाक हेतु ममताक त्याग, आजुक युगक धर्म थिक देशक कोटि-कोटि निरक्षर असहाय, युग-युगसँ शोषित भारतवासीकेँ आत्मबल देबाक लेल शिक्षाक प्रचार-प्रसार करब आ' से युग-धर्म डा.धीरेन्द्रक महाकाव्य *त्रिपुण्ड* मे व्यक्त भेल अछि। ई साहित्यकारक सामाजिक बोधक परिणति थिक।

डा.काञ्चीनाथ झा 'किरण' कृत *पराशर* मे अभिव्यंजित युग-सन्दर्भक विवेचन निम्नलिखित आधार पर कए सकैत छी -

क. श्रमक प्रतिष्ठापन,

ख. रंग-वर्णक आधार पर जातीय भेदभावक विरोध,

ग. भूखक समक्ष धर्म-कर्म, पूजापाठ आदिक निस्सारता एवं अर्थहीनता, तथा

घ. मैथिल राष्ट्रीयता

क. श्रमक प्रतिष्ठापन

जीवनमे श्रमक महत्त्व अछि। बिना श्रमक किछुओ सम्भव नहि छैक। श्रमे करब उद्यम थिक। ओहीसँ सिद्धि भेटैत छैक। मुदा, से क्रमशः किताबक वस्तु भए गेल। मिथिलाक उर्वरा भूमिमे बिना परिश्रमक ढ़ाकीक ढ़ाकी अन्न उपजैत छल। जीवन-यापन सुविधाजनक होइत गेलैक। एहिठामक विद्वान अणुमे ब्रह्माण्डक अन्वेषणमे कीर्तिमान स्थापित करैत रहलाह। ब्रह्माण्डसँ अणु ताकि अनबाक की अर्थ होइत छैक, तकर प्रयोजन नहि भेलनि। एहिसँ श्रमक महत्त्व नहि रहल। श्रमिक वर्ग भए गेल अस्पृश्य, अछूत एवं सामाजिक प्रतिष्ठाक परिधि-विस्तारसँ बहिष्कृत। एहिसँ सामाजिक विषमता बढ़ल। समाजमे भेद-भाव बढ़ल। सम्पूर्ण मिथिलाक सम्भ्रान्त वर्गक चेतना एहि घटाटोपी अहंकारसँ आच्छादित भए संचारहीन एवं संवेदनाहीन होइत गेल। सामाजिकताक रीढ़ कचकचा उठल। किरणजीक पराशर उद्घोष कएल -

अन्न थिक प्राण, अन्ने भगवान
करू श्रम, धरती कोडू
अन्न खूब उपजाउ,
वर्षा पानि घेरिकेँ राखू
पौटी चीरि पटाउ

15. डा. धीरेन्द्र, *त्रिपुण्ड*, पृ.सं. 75

प्रकृतिसँ लड़बे थिक पौरुष
से बुझि डेग बढ़ाउ।[16]

ख. रंग-वर्ण भेद

समाजमे श्रमक प्रतिष्ठा कमलासँ मानवीय मूल्यक क्रमश अवमूल्यन होअए लागल। सुविधाभोगी वर्ग सामाजिक राजनीतिक क्षेत्रमे अपन वर्चस्वक लेल लोक-लोककेँ बांटय लागल। अपन काज सुतारैत रहल। पराशर वैज्ञानिक सत्यक उदघाटन करैत कहैत छथि - रंग थिक प्रकृतिक लेल, दिनकर किरणक खेल। एहि सत्यक सत्यापन *पराशर* मे एकसँ बेसी स्थान पर उदाहरण सहित भेल अछि। जेना,

करिया साँढ़ कैली गायमे लागि गेल,
कैला धेलक करिकीक पछोड़
ने साँढे तकलक गायक रंग ने गाइये रंग देखि
कयलक विरोध।[17]

गाङो मुनि पराशरसँ कहैत अछि -

मुनि जी, गुँहार-गौसार खेतमे रोपल
धान, धान अइ मानल जाइत।
खेतक कारन नइ बनैए मड़ुआ, गद्दरि जनेर।
मुदा अहाँ आउरक सन्तान खेतक कारण
बनि जाइए अछोप राड़।[18]

सुभद्राहरण क सुभद्रा, *राधाविरह* क राधा आ' *त्रिपुण्ड* क पार्वतीक संग *पराशर* क गाङो वा सत्यवतीकेँ एकठाम राखि देखलासँ कविक युग-सन्दर्भक अन्यो तह समक्ष अबैत अछि। गाङोकेँ पिता सभ किछु पढ़ा-लिखा देने छलाह। काम-कुहेसक झलफलीमे ओहि चतुर नटीक ठोरक विहुसीकेँ पराशर नहि देखि पओलनि। गाङो कहैत छनि -

मुनि जी, हम छी गोढ़नी अछोप,
हमर छाहो सँ छुतइए अहाँक देह,
से अहाँ पकड़ब हाथसँ हमर लात।
रिषि मुनियों जँ एना भासि जाथि तँ ककर
लोक विसवास करत।[19]

---

16. काशीनाथ झा 'किरण'', *पराशर,* पृ.सं. 2
17. काशीनाथ झा 'किरण', पराशर, पृ.सं. 18
18. काशीनाथ झा 'किरण', *पराशर,* पृ.सं. 48
19. काशीनाथ झा 'किरण', *पराशर,* पृ.सं. 45

सभ जातिक कनिञाक संग विवाह करबाक ब्राह्मणकेँ अधिकार छैक, रतिक समयमे नहि लगैत छूति-तूति कहयबाला तीनू कालक बात बुझयबाला सर्वज्ञ मुनिश्रेष्ठ पराशर जीबछ-गाङोक कूटनीतिमे फँसि गेलाह। ओहि तीनू महाकाव्यमे समर्पण अछि, गाङोक छल-कपट नहि अछि। किन्तु एहूठाम कविक व्यक्तित्वक छाप स्पष्ट अछि। पण्डित सभक एहि प्रचार पर प्रहार अछि जे मुनिलोकनि सर्वज्ञ होइत छलाह। तीनू कालक बात जनैत छलाह। आ' जँ से सत्य तँ कोना फँसि गेलाह मुनिश्रेष्ठ पराशर जीबछ -गाङोक कूटनीतिमे?

ग. भूखक समक्ष धर्म-कर्म, पूजा-पाठक निस्सारता

पूजा-पाठ लेल फूल तोड़ैत तर्क-वितर्कमे डूबल पराशरकेँ जखन भूख लगलनि, कुटी दिस घूमि अबैत छथि -

पराशर रहलाह तर्क वितर्कमे बाझल,
धरती रहल अपन धूरी पर घूमैत,
सूर्य पहुँचलाह माथ पर,
साजीक फूल मरूऐल
नहि गेलनि ध्यान,
मुदा जखन पेटमे देलकनि खौंत
तँ घुरलाह कुटी दिस।[20]

एक अन्य ऋषि उपरागक मुद्रामे गुरु पराशरक समक्ष अपन व्यथा प्रस्तुत करैत अछि -

तीन दिनसँ खाइत छी उसिनल,
सुथनी तेकुना पेंची अनोन,
देह करैए हक हक, लागत कोना मोन,
भरले पेटें ने गीत पिरीत।[21]

पराशर तर्क-वितर्कमे डूबल छथि। जा धरि पेटक खौंत तेज नहि भए जाइत छनि, हुनक ध्यान साजीमे मरुऐल फूल आ' चानिपर आएल दिनकरक दिस नहि जाइत छनि। मुदा, किरणजीक संकेत एतहु स्पष्ट अछि। उदर-चिन्तामे कातर एवं अहूँछिया कटैत लोकक लेल पूजा-पाठ, धर्म-कर्म, प्रेम-प्रीति आदि महत्त्वहीन अछि। ओकर चर्चा करब मनुष्यक सर्वकालिक सत्यकेँ अनठाएब थिक। प्रारम्भहिमे कविक वाणी फूटल अछि - *अन्न थिक प्राण, अन्ने भगवान, करू श्रम, धरती कोड़ू, अन्न खूब उपजाउ, वर्षा पानि घेरि क' राखू पौटी चीरि पटाउ, प्रकृतिसँ लड़बे थिक पौरुष, से बूझि डेग बढ़ाउ।'*

4. मैथिल राष्ट्रीयता

चारिम सत्य जे *पराशर* मे पाठकक ध्यान आकृष्ट करैत अछि, से थिक किरणजीक मैथिल

---

20. काशीनाथ झा 'किरण', *पराशर,* पृ.सं. 6
21. काशीनाथ झा 'किरण', *पराशर,* पृ.सं. 8

उपराष्ट्रीयता। मैथिल उपराष्ट्रीयता, भारतीय राष्ट्रीयताक प्रतिकूल वा विरोधी नहि अछि। अपितु ओहिमे अन्तर्भुक्त आ' समाहित अछि। कवि अनुभव करैत छथि जे जा धरि गोसाउनिक सीर लग दीप नहि बरत, सन्हिआएल अन्हार नहि हटत। आनठाम कतबो चकमक रहय, इजोतक बाट ताकले जाएत। किरणजी एही मैथिल उपराष्ट्रीयताक समर्थक छथि। ओ लिखैत छथि - *तोड़ि सकत नहि तोहर नेह, तोहरे हित अरपल ई देह। पराशर* क प्रारम्भमे वर्णन अछि -'*जय जय पर्वत राज हिमालय, तोहरे देहक कणकणसँ बनल अछि हमर सभक ई देश।*

पराशर मे सीता-निर्वासनक नव कारणक अन्वेषण आ' व्याख्या कविक एही उपराष्ट्रीय दृष्टिक प्रतिफल थिक। ई सर्वथा कविक नूतन उद्भावना थिक। अश्वमेध यज्ञक प्रसंग सीताक विचार अछि -

मिथिलाक लोक नहि थिकनि राजाक दास
स्वाधीनमना लोकक प्रतिनिधि थिकाह मिथिलेश
अहाँ करबैक आक्रमण।
मिथिला भ' जैत पुरुषहीन, तखने ने अहाँक जीत
पतिपुत्र विहीना नारीक नोरसँ मिथिलाक भूमि हैत पाँक हेंक।
फोड़ल लहठीक लागत ढ़ेर-पहाड़,
माङक सिन्दूरसँ पोखरि झाँखडि हैत लाल,
कन्ना-रोहटसँ भरत मिथिलाक भू, नभ, दिगन्त,
सोहर कोबर बटगबनी लगनी मलार रास,
संगीतक सब राग-भास
मरि लुप्त हैत। [22]

सीताक मिथिला प्रेम, नैहर प्रेम एवं लोकतन्त्रीय शासन-व्यवस्थाक प्रति प्रेमक अभिव्यक्तिमे राजा रामचन्द्रकेँ गुरुक आदेशक आलोचना, यज्ञ-धर्मक आलोचना आ' विरोध बुझेलनि। सीताक यथार्थ-कथन भए गेल राजद्रोह। राजद्रोहक दण्ड दुइए टा होइछ - मृत्यु आ' देश निर्वासन। मिथिला प्रेमक कारणेँ देश-निर्वासनक दण्ड सीताकेँ भेटल।

मैथिली महाकाव्यक अध्ययनसँ स्पष्ट अछि जे महाकाव्यकार अतीत जीवी नहि छथि। अपन स्वर्णिम अतीतक पात्र, कथा अथवा घटनाक माध्यमसँ अपन युग-सन्दर्भकेँ पूर्ण काव्यात्मक क्षमता आ' निपुणताक संग व्यक्त करबामे सफल छथि।



22. काशीनाथ झा 'किरण', *पराशर* पृ. सं. 13

नऽब गीतमे समाज-चेतना

रमानाथ झा मैथिली गीत साहित्यकेँ *प्राचीन गीत* एवं *नवीन गीत*मे बाँटि संकलित, आलोचित आ' विश्लेषित कएने छथि। गोविन्द झा नवका लोहारकेँ नऽब प्रयोगक नेहाइ पर गीतक अंगारतुल्य शरीरकेँ देखि हथौड़ाक चोट करैत अनुभव कएलनि अछि।[1] एहि प्रयोगक उपरान्त गीतक नऽब स्वरूप समक्ष आएल। गीतक ओ स्वरूप *प्राचीन गीत* आ' *नवीन गीत*क बादक गीत थिक।

नऽब कविताक तर्ज पर एकरा नऽब गीतक नामेँ अभिहित करब बेसी श्रेयस्कर होएत। नऽब गीतक भावभूमि फराक अछि। ओ आयुवर्गक द्योतक नहि, मूल्य बोधक द्योतक थिक। तेँ, नवीन गीतक उपरान्त रचित प्रकाशित सभटा गीत नऽब गीत नहि थिक। नऽब गीत प्राचीन गीतक बज्जर परती-पराँतकेँ तामि, पारम्परिक वस्तु, कथ्यवर्ग आ' रूप-विधानकेँ छोड़ि समाज-चेतनामूलक कथ्यवर्ग तथा तदनुकूल शिल्पगत नवीनताकेँ अंगीकार कएने अछि। एहि हेतु नऽब गीतमे विद्यापति गीतक गार्हस्थ्य शृंगार अथवा भक्तिक एकान्त साधना नहि अछि। एहिमे, अपन युगक समस्त विसंगति आ' त्रासक निराकरणक उपाय ईश्वर पर थोपि देबाक कवीश्वर चन्दा झाक भाव विह्वलता नहि अछि। नऽब गीतमे राष्ट्रीय चेतनावादी गीत जकाँ मिथ्यागौरव, अतीतगान आ' मिझाइत सांस्कृतिक चेतनाक बातीकेँ उसकेबाक आतुरता सेहो नहि अछि आ' ने नऽब गीतमे मार्क्सवादी विचारधाराक प्रचारात्मकता अछि। एहिमे ने मंचीय गीतक अनुरूप तुकबन्दी अछि आ' ने भावुकतापूर्ण अभिव्यक्ति-व्यग्रता। एहिसँ अवश्य स्पष्ट अछि जे नऽब गीत, गीत सम्बन्धी पारम्परिक मान्यता तथा गीतक प्रचलित स्वरूपसँ एक प्रकारेँ प्रयाण थिक। परंच, ई प्रयाण ओहिना अछि, जेना माली फूलक गाछक पिरौंछ पातकेँ खोंटि टुस्साक आगमनक बाट प्रशस्त करए चाहैत अछि।

नऽब गीत यन्त्र युगक उपजा थिक। यन्त्रक निर्माण अथवा यन्त्रक उपयोगसँ निर्माणक काज बुद्धिजनित होइत अछि। एहि हेतु यान्त्रिक गड़बड़ीक निराकरण भावनाक वेगमे भसिआ केँ नहि, बौद्धिक कुशलतासँ सम्भव अछि। नऽब गीतमे बुद्धितत्त्व आ' भावकत्वक सम्मिश्रण रहबाक इएह कारण अछि। ओ सम्मिश्रण गद्यात्मक नहि, लयात्मक होइत अछि। ओहिमे वैयक्तिक सुख-दुख एवं रूदन-हासक अपेक्षा सामाजिकताक प्रधानता रहैत अछि। सामाजिक जीवनक द्वन्द्व एवं अस्तित्व-रक्षाक निमित्त चलैत संघर्षक अभिव्यक्ति रहैत अछि। महानगरक संत्रास, उद्योगीकरणजन्य पसरैत विसंगति आ' संघर्षशील चेतनाक अभिव्यक्ति रहैत अछि।

अनुभूतिक सहजता नऽब गीतक प्रथम विशेषिता थिक। नऽब गीतकार युग-जीवनक कटु यथार्थक साक्षात्कार निरन्तर करैत छथि। अपन जटिल अनुभवकेँ आत्मसात करैत छथि। यथार्थ संवेदित युगबोध आ' संकटापन्न परिवेश गीतकारक मधुर बोलक माध्यमसँ स्वर पबैत अछि। जाहिसँ अभिव्यक्ति सहजतासँ परिपूरित भए जाइत अछि।

1. *मैथिली गीति साहित्य,* चेतना समिति, पटना

नऽब गीतकारक अनुभव क्षेत्र व्यापक अछि। जीवनक सामान्य अनुभवक क्षेत्रसँ नेतालोकनिक चारित्रिक स्खलन आ' हुनक सुविधा-आकांक्षी राजनीति धरि व्याप्त अछि। गीतक माध्यमसँ राष्ट्रीय स्तर पर पसरैत अस्थिरता, विद्वेष आ' मूल्यहीनता पर व्यंग्यात्मक प्रहार होइत अछि। योजनाक कागजी सफलताक उद्घोषसँ सरकारक प्रति लोकक विश्वास कमल अछि। बेकारी आ' जनसंख्याक वृद्धिसँ समाजमे समस्या बढ़ल अछि। लोकक आशाक महल धाराशायी भेल अछि। बज्रसन कठोर आस्था आ' विश्वास खण्डित भेलैक अछि। एहि सभ स्थितिकेँ नऽब गीतकार अपन चेतनाक अन्तिम तहमे बैसा कें शब्दायित करैत छथि। आजुक लोकक ओहि स्थितिकेँ गंगेश गुंजनक नऽब गीतक माध्यमसँ स्वर भेटल अछि -

धरती एहि प्राण पर

पसरल अकाल,

मुट्ठी भरि अन्न नहि, भूख एतेक रास,

बालु पर लिखल हमर मोनक इतिहास

घामे नहाएल

अपस्याँत सभ समाज,

रक्तधारमे बहय मनोरथक लहास

बालुपर लिखल हमर मोनक इतिहास।[2]

'बालु पर लिखल हमर मोनक इतिहास हो' वा 'रक्तधारमे बहय मनोरथक लहास' अथवा 'मुट्ठी भरि अन्न नहि भूख एते रास' - सामाजिक जीवनमे व्याप्त असफलता एवं संत्रासकेँव्यक्त करैत अछि। एहि स्थितिक कारण थिक सुविधाभोगी वर्गक हितक रक्षाक हेतु गुप्त वा प्रच्छन्न सक्रियता। सामाजिक जीवनमे जेना-तेना अपन वर्चस्व बना कें रखबाक ब्योंत करैत रहब। किन्तु, कालक्रमेँशिक्षाक विकास भेल अछि। लोककेँअपन अधिकारक ज्ञान भेलैक अछि। सजगता अएलैक अछि। वैज्ञानिक उपलब्धिक परिचयसँ अन्धविश्वासक खण्डन भेल अछि। एहिसँ लोकमे आत्मसम्मान बढ़ल अछि। जीवनक प्रति आस्थामे बृद्धि भेलैक अछि। अपन स्वतन्त्र व्यक्तित्वक स्थापनाक चेष्टासँ सुविधाभोगी वर्गक छल आ' प्रपंच-उद्भेदनक क्षमता विकसित भेलैक अछि। नऽब गीतमे आजुक लोकक संघर्ष आ' आस्था अभिव्यंजित अछि -

आँखिमे ई भरि समुद्रक बाट पसरल

कोन गामक कातमे ओ हाट पसरल

सभ दुखक जड़ि एहिना रहत जरिते

सभ फुनगी सभ पत्ता डारि पजरल

नाव पर नहि आब कोनो धार उतरल

2. गंगेश गुंजन, *मिथिला मिहिर,*10 मार्च, 1974

कहत के ककरा कोनो आब बात पुरना

दूभि केर पेंपी पर बड़क गाछ चतरल। [3]

फुनगी, पत्ता वा डारिक पजरब आगिक संकेत थिक। आगि थिक वर्तमानक प्रति आक्रोशक अभिव्यक्ति। ओहिना 'दूभिक पेंपी पर बड़क गाछ चतरब' मात्र कवि कल्पना नहि, युग युगसँ शोषित-प्रताड़ित साधनहीन, लोकक घनीभूत होइत संघर्षमयी चेतनाक प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति थिक। दूभि थिक पददलितक प्रतीक, तकर पेंपी भेल, आएल नव चेतना आ' ओहिपर बड़क गाछक चतरब -अभिव्यक्तिएक दृष्टिसँ नहि, सामाजिक चेतनाक अनुगुंजकेँ पकड़ि स्वर देबाक दृष्टिसँ सेहो विशिष्ट अछि। मार्कण्डेय प्रवासी एहि चेतनाकेँ स्वर दैत लिखल अछि जे भूखलो रहि नवीनता जगाबी -

कतबा दिन धरि भूखल देह

नेहकेँ भम्होरत, काटत ?

रित्ती रित्ती धोती पर

के सभ दिन चिप्पी साटत

आउ, नवीनता जगाबी,

फागुनमय एक गीत गाबी!![4]

उद्योगीकरणसँ पारिवारिक आ' सामाजिक जीवन छिन्न-भिन्न भेल अछि। अपनेमे सम्पुटित लोककेँ दोसराक प्रसंग सोचबाक किंचितो पलखति नहि छैक। ओना स्वांग करैत अछि, भूमण्डलक प्रति सहानुभतिसँ ओतप्रोत होएबाक। लोकक एहि सम्बन्धहीनताक अभिव्यक्ति बुद्धिनाथ मिश्र 'जेठुआ मकइ'क प्रतीकक माध्यमसँ कएल अछि -

अन्हरोखे सूति उठि,

सिङ्हारक फूल जकाँ

मौनीमे बीछी सम्बन्ध,

तैओ जेठुआ मकैक

चिक्कस सन ई जीवन

लेसक कतहु नहि अछि गन्ध

कोवामे रोपल मखान,

आँचरमे बनफूल।[5]

3. गंगेश गुंजन, *मिथिला मिहिर,* 4 मार्च, 1973

4. मार्कण्डेय प्रवासी, *हम भेटब,* पृ. 63

5. बुद्धिनाथ मिश्र, *मिथिला मिहिर,* 18 जनबरी, 1976

मार्कण्डेय प्रवासीक लिखब - *'व्यर्थ बाँग देलक मुर्गा, भिनसरो लगैए साँझसन'*[6] सँ स्पष्ट अछि जे गामक विकासक लेल बनल एकसँ एक पैघ योजना द्वारा लोकक स्थितिमे सुधार नहि भेलैक। गामक लोकक हालति दिन प्रति दिन बिगड़ि दयनीय होइत गेल। किन्तु सरकारी तन्त्र ओकर सफलताक डुगडुगिया पीटैत रहल। लोकक ओहि स्थितिकेँ गीतकार बुद्धिनाथ मिश्र अपन संवेदनाक चासनीमे बोरि आ' बुद्धिक चालनिसँ चालि प्रस्तुत कएल अछि -

बैरन चिट्ठी जकाँ फिरैए गामे लोक

कस्तूरी मृग जकाँ मरैए गामक लोक

महानगर अपराध करै, बुधियार बनल

आ' जुर्माना तकर भरैए गामक लोक,

सभ इजोत भए गेल निपत्ता साँझहिमे

माटिक डिबिआ जकाँ बरैए गामक लोक।[7]

माटिक डिबिआ जकाँ गामक लोकक बरबाक कारणकेँ स्पष्ट करैत मार्कण्डेय प्रवासी लिखल अछि -

बौक अछि गाम हमर,

तेँ बहिरा नगर

कहबै ले बनल

मठोमाँठ अछि।

जे जनसामान्यक भीतर व्याप्त उपेक्षाभाव एवं आक्रोशक अभिव्यक्ति थिक।

नऽब गीतमे प्रणयक अनुभूति अधुनातन अछि। नऽब गीतक प्रिया चाननलेपी नहि छथि, महान उत्सर्गक प्रति कल्पित प्रतिबद्धता नहि अछि। प्रणयानुभूतिक अभिव्यक्ति अश्रुविगलित, भावुकतापूर्ण आ' रहस्यात्मक नहि, मानवीय धरातलपर स्वाभाविक एवं सहज अछि। माटिक डिबिया जकाँ बरैत लोकक भीतर आत्मीयता छैक, ओहि आत्मीयताक आग्रहसँ भेल अनुभूतिक अभिव्यक्ति बुद्धिनाथ मिश्रक नऽब गीतमे भेटैत अछि -

माटिक घरमे माटिक चुलहा माटिक ताबा

मकइक खेती अधजरुओ छल काशी काबा

साहेबबला बुफेमे जखन जखन पैसे छी

घोघक तरक ओ अस्फुट आग्रह मोन पड़ै ए।[8]

युगबोधक अनुकूल चित्रित एहि अभिव्यक्तिमे प्रेमक यथार्थकेँ बौद्धिकता आवृत्त कएने

6. मार्कण्डेय प्रवासी, *हम भेटब*, पृ.सं.9

7. बुद्धिनाथ मिश्र, *मिथिला मिहिर*, 5 अप्रैल,1981

8, बुद्धिनाथ मिश्र, *घर बाहर*, जनवरी - मार्च, 2007

भेटैत अछि। किन्तु प्रणयक स्वर पराजित नहि अछि। प्रतिकूल परिस्थितिअहुमे गाढ़ भेल प्रेमी-युगलक हार्दिकता आ' एकनिष्ठता एवं उपरागमे आत्मीयताक घनीभूत स्थितिक अभिव्यक्ति गंगेश गुंजनक प्रस्तुत गीतमे स्पष्ट अछि -

हमरा नहि शोर करू हमर बाट काटल अछि

गामक सितान जकाँ हमर मोन बाँटल अछि

एक गोट पारिजात अहाँक नाम

एकटा बबूर मोन हमर गाम

दूनू गोटेक बीच समय निस्सासँ मातल अछि

गामक सिमान जकाँ हमर मोन बाँटल अछि।[9]

नऽब गीत, जेना कथ्यक स्तरपर प्राचीन गीत आ' नवीन गीतसँ पृथक् अछि, ओहिना भाषाक स्तरपर सेहो ओ अपन पृथक् अस्तित्व रखैत अछि। तथापि, सभ गीतकारमे कवि व्यक्तित्वक अनुरूप भाषा आ' शिल्पगत विशेषताक दर्शन होइत अछि। एहि हेतु कतेको नऽब गीत प्रत्यक्षतः प्रकृति वर्णन बुझाएत, किन्तु ओकर तहमे रहैत छैक समसामयिक जीवनक विद्रूपता आ' ओहिसँ जन्म लैत चेतनाक अभिव्यक्ति। उदाहरणस्वरूप मार्कण्डेय प्रवासीक नऽब गीत *फेर पछबा बसातक स्वर वैह*[10] देखल जाए सकैछ। ओ प्रत्यक्षतः ग्रीष्म ऋतुक वर्णन प्रतीत होइत अछि किन्तु थिक ओ जयप्रकाश नारायणक सम्पूर्ण क्रान्तिक पृष्ठभूमि, जे 1975 ई. मे गुजरातक छात्र-आन्दोलनसँ शुरू भए बिहार धरि पहुँचल छल। प्रगतिशील आ' प्रगतिविरोधी मूल्यक बीच होइत संघर्षक स्पष्ट बिम्ब बनैत अछि।

नऽब गीत आ' नऽब कविता कमोवेश एकहि युगक परिणाम थिक। गीतमे बौद्धिकताक समावेश भेला पर गीतमे आधुनिकता आएल। ओहिना आधुनिक संकुल काव्यानुभूतिक वहन-क्षमता बुद्धितत्त्वक कारणेँ नऽब कवितामे आएल अछि। दूनू रोमानी दृष्टिकेँ अस्वीकार करैत अछि। दूनू परम्परागत काव्य भंगिमाकेँ त्यागि नब-नब प्रतीक आ' शब्दाबलीक प्रयोग आ' निर्माण करैत अछि। ई तँ भेल नऽब गीत आ' नऽब कवितामे साम्यक स्थिति। दूनूमे अन्तर सेहो पर्याप्त अछि। नऽब गीत आ' नऽब कविताक प्रसंग विस्तृत विवेचनक लेल देखि सकैत छी *भेटघाँट* एवं *मैथिली साहित्य ओ राजनीति* (डा.रमानन्द झा 'रमण')।

नऽब गीत, गीत साहित्यक स्वाभाविक विकास थिक। एहि विकासकेँ सुनि वा पढ़ि लोक आनन्दिते टा नहि होइछ, ओहिमे डूबि जाइत अछि। ओहिमे जीबय लगैत अछि। ई नऽब गीतक उपलब्धि थिकैक। नऽब गीतमे विविधता भेटैत अछि। एहि विविधताक कारण थिक गीतकारक व्यक्तित्व। व्यक्तित्वक अनुरूप कोनो गीतकारक संवेदना बलयाकृत होइत अछि तँ कोनो गीतकारक संवेदना सरल। केओ वैयक्तिक बेसी छथि तँ केओ बेसी सामाजिक। केओ महानगरीय संत्रास आ'

9. गंगेश गुंजन, *मिथिला मिहिर*, 10 मार्च, 1974

10. मार्कण्डेय प्रवासी, *मिथिला मिहिर*, 20 अप्रैल, 1975, *हम भेटब*

यान्त्रिक युगक विसंगति आ' विडम्बनाक अभिव्यक्तिक प्रति मुखर तँ केओ प्रकृतिक छवि-जालमे आबद्ध रहबाक लेल आकुल। केओ शिल्पक आग्रही तँ केओ उदासीन। एही भावभूमि पर नऽब गीतक लत्ती लतरल अछि। व्यापक बनल अछि। ई विविधता मैथिली गीत-साहित्यकेँ पुष्ट करैत अछि। मैथिली गीत साहित्यकेँ आजुक युगक जीवन आ' सामाजिक चेतनाक प्रति साकांक्ष बनबैत अछि।



मैथिली कविताक वर्तमान धारा

रवीन्द्रनाथ ठाकुर अपन प्रसिद्ध कविता 'भारत तीर्थमे' भारतवर्षक सामासिक संस्कृतिक तुलना सहस्रदल कमलसँ करैत लिखने छथि -

हेथाय आर्य, हेथा अनार्य, हेथाय दाबिड़ चीन
शक हूणदल, मोगल पाठान, एक देहे हलो लीन।

एहि संग, तमिलक महान राष्ट्रवादी कवि सुब्रहमण्यम भारतीक कविता 'एंगलनाड'क पांती सेहो मोन पड़ैत अछि, ओकर अङरेजी अनुवाद अछि -

She has thirty crores of faces, but her heart is one
She speaks eighteen languages, yet her mind is one.

से भारोपीय आर्यभाषाक प्राच्य समूहक मागधी प्राकृतसँ विकसित असमी, ओड़िआ, बंगला एवं मैथिली भाषीक ई अनुष्ठान भारतक ओही सामासिक संस्कृतिक अनुपम दृश्य उपस्थित कए रहल अछि। जेना, एहि चारू भाषाक विकासक गंगोत्री एकहि अछि, ओहिना एहि चारू सहोदराक लिपिक जमुनोत्री सेहो एकहि अछि। प्राचीनतम उपलब्ध साहित्य *बौद्धगान ओ चर्यापद* पर पैतृक सम्पति जकाँ सभ केओ अपन-अपन अधिकार मानैत छी। महाकवि विद्यापतिक गीत सम्पूर्ण पूर्वाचलकेँ प्रभावित कएने छल, से सर्वज्ञातहि अछि। हुनक *देसिल बयना सब जन मिट्ठा* तँ जेना जयघोष भए गेल अछि। चण्डीदास, श्रीमन्त शंकरदेव एवं वैष्णव रमानन्द रायक अवदान एहि क्षेत्रक लोकक संयुक्त सांस्कृतिक सम्पदा थिकैक। मिथिलाक भाषा आ' संस्कृतिक कतेक की प्रभाव पड़ल, से अपने लोकनि कहि सकैत छी। ओना, मोन पड़ैत अछि लगभग चारि दशक पूर्व पटनामे चेतना समितिक तत्त्वावधानमे पूर्वाचलीय साहित्यिक संगोष्ठी भेल, जाहिमे उत्कल विश्वविद्यालयक डा. बंशीधर मोहन्ती ओडिशा एवं मिथिलाक सम्बन्धक विवेचन *वर्णरत्नाकर* एवं *सरला महाभारतक* आधारपर कएने छलाह। ओहूसँ पूर्व जखन डा.आशुतोष मुखर्जीक सदाशयतासँ कलकत्ता विश्वविद्यालयमे एक वैकल्पिक विषयक रूपमे मैथिलीक पढ़ौनी आरम्भ भेलैक तँ उड़िआ भाषी कुंजबिहारी दास जे वर्ष 1972 मे *मो कहानी* क लेल साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत भेल छलाह, वैकल्पिक विषयक रूपमे मैथिली पढ़लनि। मिथिला आ' उत्कलक सांस्कृतिक सम्बन्ध कतेक सुदीर्घ एवं भावात्मक अछि तकर ई परिचय थिक। असम एवं बंगालक संग मिथिलाक सांस्कृतिक सम्बन्धक प्राचीनता एवं प्रगाढ़ताक उदाहरण थिक मिथिलाक वैवाहिक विधि-व्यवहार 'नैना-जोगिन'। ओहि अवसर पर मिथिलामे महिला लोकनिक कंठसँ स्वतः स्फुरित भए जाइत अछि -

थिकहुँ बंगालिन, बसौ बंगाला, कामरूपसँ आएल छी,
सूखल नदिआ नाव बहाओल, अपनहि तरहथ दही जमाओल।

ओहिना बाल्यकालमे लोकक मुहसँ सुनने छी -

खेलै छलियै, धूपै छलियै, रोपै छलियै धान,

मोने मोन विचारै छलियै, जेबै बाबाधाम,

बाबा जे बिराजै, ओड़िआ देशमे।

से ओही ओड़िआ देशमे अपन मौसीक आङनमे आ' अपन भाए-बहिनिक बीच ठाढ़ भए आह्लादक अनुभव कए रहल अछि।

मान्यवर! हमरालोकनि देखैत आ' अनुभव करैत छी, जेना मंत्री-संत्री वा सरकारी अमलाक निकटवर्ती लोक समाजमे अपन प्रभाव देखबैछ, ओहिना उपनिवेशकालमे शासनक केन्द्र जखन बंगाल भए गेल तँ 'बाबू मोशाय' सत्ताक निकट आबि अन्य भाषा-भाषीकेँ दमसाबए लगलाह। राज्याश्रय एवं सम्पोषणसँ बाबू मोशायक भाषा असमी, ओड़िआ, एवं मैथिलीक अपेक्षा तीव्रगतिसँ विकसित होअए लागल। एहि तीनू भाषाक क्षेत्रपर 'बाबू मोशाय'क धाख बढ़ल। दबदबा बढ़ल। मुदा, सबसँ पहिने असमी भाषी चेतलनि आ' जाल फाड़ि बाहर आबि अपन भाषा, साहित्य एवं संस्कृतिक विकास एवं संरक्षणक लेल तत्पर भए गेलाह। बिहार बनल सए वर्ष पूर्व आ' बिहार एवं ओड़िशा पृथक भेल 1935/36 ई. मे। मुदा, सांस्कृतिक मिथिला आ' सांस्कृतिक उत्कल बंटाएल नहि, पूर्ववत अन्तर्ग्रन्थित रहल अछि। ओड़िआकेँ राज्याश्रय प्राप्त भेलैक। एकर विकासक बाट द्रुतगतिसँ प्रशस्त होअए लागल। मुदा, *देसिल बयना सब जनमिट्ठा*क उदगाता 'अभिनव जयदेव' कविकोकिल विद्यापतिक भाषा मैथिली, राजकीय प्रकोप आ' संरक्षणक अभावमे पछुआ गेल। ओहिना उपनिवेश कालमे कम्पनी सरकारक कर्मचारीक रूपमे पश्चिमसँ उर्दू-हिन्दी भाषी तथा पूबसँ बंगला-अङरेजी भाषीक मिथिलामे बाढ़ि अबैत रहल। प्रशासनमे हुनका लोकनिक प्रभाव बढ़ैत गेल। ओहिसँ हमर लिपि मिथिलाक्षर वा तिरहुताक प्रयोग अवरुद्ध भए गेलैक।

मान्यवर! इतिहास साक्षी अछि, कर्णाट राजवंशक शासनकालमे मिथिलामे राजकाजक भाषा मैथिली छल तथा नेपालमे मल्लराजा लोकनिक समयमे मैथिलीकेँ पूर्ण राज्याश्रय प्राप्त छलैक। मिथिलामे जखन-जखन तुर्क, अफगान आ' मुगल शासकक अत्याचार बढ़ैत छल, मिथिलाक पण्डित लोकनि अपन भाषा, साहित्य, संस्कृति एवं धर्मक रक्षाक हेतु पशुपतिनाथक आश्रयमे चल जाइत छलाह। विद्यापति सेहो अनेकहु ग्रन्थक रचना नेपालमे कएने छथि। किन्तु मल्लराजवंशक पतन एवं राणाशाहीक उदयक संग नेपालमे मैथिलीक प्रयोग आ' विकासक बाट ठमकि गेलैक। लगभग अढ़ाइ सए वर्ष धरि राणाशाही नेपालमे रहल, जकर अन्त हालहिमे भेलैक अछि।

मैथिली भाषा-साहित्यक दृष्टिसँ वर्तमान शताब्दी दू कारणेँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। ओ थिक भारतक संविधानक आठम अनुसूचीमे मैथिलीक स्थान तथा नेपालमे प्रजातन्त्रक स्थापना। नेपालमे मैथिली भाषा-भाषी दोसर स्थान पर छथि तथा अपन भाषाक समुचित स्थानक लेल ओसब कटिबद्ध सेहो छथि। एहि दूनू घटनासँ मैथिली भाषा-साहित्यक प्रचार-प्रसार एवं संरक्षणमे गति आबि गेल अछि।

एकर अर्थ ई नहि जे एहिसँ पूर्व भारत वा नेपालमे मैथिलीमे साहित्य-सर्जना नहि होइत छल। अन्तर एतबे अछि जे नेपालमे अभिव्यक्तिक स्वतन्त्रता नहि छलैक, शासन-प्रशासन वा राजतन्त्रक विरुद्ध नेपालमे लिखब प्रतिबन्धित छलैक। तेँ ओहिठाम रचाइत मैथिली साहित्यक प्रवृत्ति भारतसँ

भिन्न रहल। भारतमे से स्थिति नहि छल। स्वाधीनताक आरम्भिक वर्षहिमे (1948 ई.) महाकवि यात्री जवाहरलाल नेहरू एवं सरदार वल्लभ भाइ पटेल पर व्यंग्यात्मक प्रहार कएने छलाह -

भ' गेलाह जमाहिर थुत्थुर बूढ़, प्रभु पटेल छथि, सर्वतन्त्र स्वतन्त्र,
तैओ चीनीक लेल कनबै छथि हकन्न।'

वर्तमान प्रमुख धारा

1. मानवजाति पर आएल संकटक चिन्ता

साहित्यमे समाजक धुकधुकी अंकित रहैत अछि। समाजक धुकधुकी अकारण कम-बेसी नहि होइत छैक आ' ने ओहिमे अकारण परिवर्त्तने होइत छैक। परिवर्त्तनक कारण थिक परिवेश वा पर्यावरण। पहिने परिवर्त्तनक एक मात्र कारण प्रकृति छल। अनुकूल प्राकृतिक पर्यावरणमे लोक जीबैत छल। प्रतिकूल प्रकृति विनाशक कारण होइत छलैक। अर्थात् विकास आ' विनाश - दूनूक कारण प्राकृतिक पर्यावरण रहैत छल। मुदा, आब प्राकृतिक पर्यावरणकेँ सामाजिक पर्यावरण प्रभावित कए रहल अछि। सामाजिक पर्यावरणक प्रभाव-क्षेत्रकेँ व्यापक एवं प्रभावशाली बनेबामे प्रौद्योगिक पर्यावरण सहायक भेल अछि। सामाजिक पर्यावरण समाज, देश आ' विश्वपर आधिपत्य चाहैत अछि। आधिपत्यक लेल अनेकहु संहारक अस्त्र-शस्त्रक आविष्कार एवं निर्माण करैत अछि। ठामठाम तकर प्रयोग भेल अछि। ओहि प्रयोगसँ मानवक संहार भेल अछि। चण्डीदास लिखने छथि, *सबेर उपर मानुष*। से मानुषक अस्तित्व सर्वोपरि नहि रहल, महत्त्वपूर्ण भए गेल अधिकार एवं संसाधनपर आधिपत्य स्थापित करब। एहिसँ मानवक अस्तित्व संकटापन्न भए गेलैक अछि। मानव सभ्यताकेँ संकटापन्न देखि मैथिलीक कवि चिन्तित छथि। हुनक एहि चिन्ताक अभिव्यक्ति मैथिली कविताक पहिल मुखर प्रवृत्ति थिक। युद्ध-जर्जर शताब्दीकेँ उपराग दैत जीवकान्त लिखल अछि। एहि उपरागमे आन्तरिक व्यथा अनुगंजित अछि -

जाउ हे युद्ध जर्जर शताब्दी
अहाँ अगबे हथिआर आ' युद्धक ओरिआओनमे
घिघरी कटैत रहलहुँ
अहाँ मनुष्यक शोषणक लेल
गढ़ैत रहलहुँ।

2. उपभोक्तावादी संस्कृतिक विरोध

स्पष्ट अछि, बीसम शताब्दी दू टा विश्वयुद्ध देखलक। शीतयुद्ध देखलक। परमाणु बमक मानव-संहारक क्रूर एवं हृदयविदारक दृश्य देखलक। एक दिस भूख आ' अभावक ताण्डव-लीला देखलक; दोसर दिस उपभोक्तावादी संस्कृतिक मोहनी रूपपर अविकसित देशक लोककेँ आकर्षित कराए, गरलपान करबैत विकसित देशक कुकृत्य देखलक। एहि सभसँ जीवन तत्त्वविहीन होइत

गेलैक। जीवनक उष्मा सौंखल जाइत रहल। मैथिली साहित्यमे उपभोक्तावादी संस्कृतिक दुष्परिणामजनित चिन्ताक स्वर मुखर अछि। उदाहरणक लेल एक कविताक किछु पंक्ति देखि सकैत छी -

चौंचंक अछि
बनीजक माइंजन सभ
कतय अछि बाँचल
एकोटा चिनगी
सगर देस कोसमे
एकोटा सारिल तन्तु
कोनो रीढ़मे,
कतय अछि बाँचल जीवन
अपन खाँटी रूपमे।[1]

एक दोसर रचनाकार गामक स्थिति देखि विस्मित छथि। अकचकाइत छथि *ई की भेलै एहू गाम कें* -

अपना आउरक
ओ साबिकक गाम
बिजुरिओ पंखाक
उमसाएल बसातसँ गुमसराह
पीपर, पाकरि
आ' नीमक बसात
अमबोनीसँ
रिसि-रिसि अबैत कोइलीक बोलो
जनु टीस बनि भोतिया गेल।[2]

गत शताब्दीमे वसन्तक स्वागत करैत उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' लिखने छलाह -

आएल वसन्त, आएल वसन्त, मंजरि-रस-मदिरा पीबि-पीबि,
शाखाक अंकमे लीबि-लीबि, स्वरमे विह्वलता सीबि-सीबि,
पिक गाबि रहल अछि, मद दुरन्त, आएल वसन्त, आएल वसन्त।

मुदा राजक *ई की भेलै एहू गाम कें* शीर्षक कवितामे कोइलीक स्वरमे विह्वलता नहि अछि, जीवनक टीस अछि, करुणा अछि जखन कि आएल *वसन्त* शीर्षक कविताक कोइलीक स्वरमे मादकता अछि। स्पष्ट अछि पर्यावरणमे आएल परिवर्त्तनक संग लोक-लोकक बीचक आपसी

1. हरेकृष्ण झा, *एना त नहि जे*, ताक मे, 2006
2. राज, *एहि अकाबोन मे*, 2011

सम्बन्ध-सरोकार बदलि गेल अछि। ई परिवर्त्तन निकटताक नहि, भावनात्मक स्तरपर दूर होएबाक थिक।

3. सांस्कृतिक साम्राज्यवाद विरोध

माइक्रोसाफ्टक सीइओ बिल गेट्स घोषणा कएलनि अछि- *The information highway is going to break down barriers and may promote a world culture or at least a sharing cultural activities and values.* एहिठाम ध्यान देबाक थिक जे बिल गेट्स जाहि विश्वसंस्कृतिक परिकल्पना कएलनि अछि, तकर आदर्श विश्वक कोन क्षेत्र वा जनसमुदायक संस्कृति होएत? की ओ अविकसित देशक संस्कृतिकेँ आदर्श मानि ओकरहि वैश्विक संस्कृतिक गरिमा प्रदान करताह? की जीवनमे त्याग एवं सन्तोषकेँ महत्त्व देबएबाला भारतक सामासिक संस्कृति हुनक आदर्श होएतनि? अपने लोकनि विज्ञजन छी, सहमत होएब, तकर प्रश्ने नहि उठैत अछि। अपितु हुनक आदर्श, ओ संस्कृति होएत जे वर्चस्व-स्थापन एवं बजार पर अधिकार करबामे संग देतनि। अभिसरण (Convergence) सिद्धान्तक अनुसार विकासक बाट एकरेखीय होइत अछि तथा ओकर निर्धारण उच्च टेकनॉलोजी करैत अछि। टेकनॉलोजी सदिखन 'सुपर पाथ'क अनुगमन करैत अछि। 'सुपर पाथ' भेल *महायनो जेन गतः सः पन्था*। आजुक युगमे संचार-साधन एवं प्रचार-माध्यम पर जकर अधिकार छैक आ' जे संसाधनसँ युक्त अछि, सएह भेल महाजन। गरीब एवं अविकसित देशक लोक आ' संस्कृतिकेँ के पूछत? विद्यापति लिखने छथि - *निरधन बापुर पुछए ने कोए*। अर्थात् बड़का माछ, छोटका माछकेँ खाए जाएत। एहि मत्स्यन्यायमे सांस्कृतिक विविधता समाप्त भए जएतैक आ' इंफोरमेशन हाइवे पर ओएह घोड़ा सरपट दौगत जकरा ओसभ चाहताह। अपनेकेँ ज्ञात अछि कार्बन उत्सर्जन सम्बन्धी क्योटो समझौता (The Kyoto Protocal in Climate Change) पर विश्वक विकसित एवं औद्योगिक देश कान-बात नहि दैत अछि। ओहिना इंफोरमेशन हाइवे पर विश्वक शेष संस्कृति अनेरुआ कुकुर जकाँ पीचा केँ मरि जाएत। ओ इतिहासक विषय भए जाएत। आ' स्थापित होएत सांस्कृतिक साम्राज्यवाद। सांस्कृतिक साम्राज्यवादक मुह सुरसा जकाँ विकराल छैक। ओकर भंगिमामे क्रूरता आ' आक्रामकता छैक। ओ अपन अकादारुण मुह बाबि ससरल आबि रहल अछि। दुर्योग एहन अछि जे घरहिमे भेदिआ अछि। कहबिओ छैक घरक भेदिआ लंका डाह। राजनीतिक उपनिवेशवाद हमरालोकनि महात्मा गाँधीक नेतृत्वमे लड़ि जीतलहुँ। मुदा, आब सांस्कृतिक साम्राज्यवादक विरुद्ध संघर्ष करए पड़त। एकर अश्वमेधी घोड़ाकेँ पकड़बाक लेल लव-कुशकेँ शस्त्रशिक्षा देबयबाला गुरु केँ ताकय पड़त। मैथिली कविता सांस्कृतिक विविधता पर आएल संकटसँ चिन्तित अछि तथा सांस्कृतिक साम्राज्यवादक विरुद्ध ठाढ़ अछि। निम्नलिखित पाँतीमे ओही भावक अभिव्यक्ति अछि-

की रसनचौकीपर बजैत
तिरहुतक राग-भास
भेटत अपन चौबगली जीवनक सोहमे,
कि अपन कल्पनाक लोकमे?
रचि लिअ,

रचि लिअ अपन लिपिमे
देसिल बयनासँ
अइपन अपन आत्माक,
जे दिन से दिन। [3]

4. पर्यावरण असन्तुलनक चिन्ता

मानवजातिक अस्तित्वपर पर्यावरणक असन्तुलनसँ पड़ि रहल प्रभावक प्रति संवेदनशीलता एवं तकर सफल अभिव्यक्ति मैथिली साहित्यक एक प्रमुख प्रवृत्ति थिक। एहि असन्तुलनक मूल कारण थिक जैविक वैविध्यमे ह्रास। ई ह्रास एवं उत्पन्न संकट साम्राज्यवादी मानसिकताक प्रतिफल थिक। UN Global Biodiversity Assessment क अनुसार जैविक वैविध्य तीन स्तरपर प्रभावित भए रहल अछि - Organism (genetics), Species आ' Ecosystem । एहि प्रभावसँ फकीर मोहन सेनापतिक कालजयी उपन्यास *छओ बिगहा आठ कट्ठा (छ माण आठ गुंठ)* मे वर्णित मंगराजक कलमबाग आब नहि भेटत। ओ उपटि गेल। ओकर वर्तमान मालिक विभिन्न रस आ' स्वादबाला फलक स्थान पर एकछाहा ओहन गाछ रोपलनि अछि, जकर फल बजारमे बेसी दाम दैत छनि। ओ आब एकोटा फल बिलहैत नहि छथि, सर-कुटुम्बकेँ बेन नहि सँठैत छथि, आ' ने अपनो चिखैत छथि, अपितु मज्जर-टिकुलासँ पहिने बेचि निश्चिन्त भए जाइत छथि। आब सुगन्धित चाउरबाला धानक बदलामे हाइब्रीड आ' हाइयील्डबाला धान रोपाइत अछि। एतहु सुगन्धि आ' स्वादक महत्त्व नहि रहल। पर्यावरणक रक्षामे मानबक सहयोगी जटायुक सन्तान, गिद्धक वंश संकटापन्न अछि। इकोसिस्टममे आएल विनाशकारी परिवर्त्तनसँ नेचुरल हैबिटेट समाप्त भए रहल अछि। पोखरि आ' धारक माछपर जीबैत आ' गाछपर खोंता बनाकेँ रहैत बगुला मासक मास जलमग्न धरती देखि व्याकुल अछि। चाङुर रोपबाक थल नहि भेटैत छैक। अन्ततः दिनक दिन उपासल बगुला बेमने देश छोड़बाक मोन बना लेलक अछि। प्रस्तुत पंक्तिमे एही संकटक अभिव्यक्ति अछि -

ई देश कोन देश भए गेलै?
जतय मासक मास उपास
बगुलाक पाँखि नहि छै सुखाइत
जतए नहि जगैत अछि माटि
जतए बगुला गाछेपर रहैए अहोरात्रि
राति निराहार
दिन निराहार
ई देश रहबो योग नहि
बरखाक बाद

3. हरेकृष्ण झा, *एना त नहि जे,* जे दिन से दिन।
4. जीवकान्त, बाढ़िमे बगुला, *घर बाहर,* 2008 ।

ओ देशक उदेशमे जाएत
जतए एक दिश धारो होइ
आ' कातमे जागल महारो होइ। [4]

इकोसिस्टमक कारणेँ बगुलाक पलायन तँ एक प्रतीक थिक। आजीविका विहीन गामक गाम संत्रस्त एवं असुरक्षित अछि। गामक गाम आजीविका एवं सुरक्षाक लेल पलायन कए रहल अछि।

उपर हम मैथिली साहित्यक वर्तमान किछु प्रमुख धाराक चर्चा मैथिली कविताक उदाहरणक संग कएलहुँ अछि। मैथिली साहित्यक अन्यहु विधामे समाजक एहन स्थिति एवं ओहि स्थितिक प्रति लेखकीय संवेदनशीलता प्रखर रूपमे अभिव्यंजित अछि। एहि धाराक अनेकहु उपधारा छैक। ओकर विस्तारमे सम्प्रति हम नहि गेलहुँ अछि। मुदा, जाहि किछु प्रमुख धाराक चर्च भेल अछि, से सुनि ई नहि मानि लेबाक थिक जे मैथिलीक साहित्यकार अपन वर्तमान सामाजिक पर्यावरणक समक्ष पंगु छथि। मानव जातिपर संकटक जे घटाटोप अछि, संस्कृतिपर जे संकट अछि, भाषापर जे संकट अछि, साहित्यमे अन्तर्निहित पारम्परिक ज्ञानक स्रोतक विलुप्तिक जे संकट अछि, नेचुरल हैबिटेट पर जे संकट अछि, तकर संरक्षणक प्रति ओलोकनि साकांक्ष आ' संवेदनशील नहि रहि गेल छथि। सामाजिक मूल्यक अवमूल्यनसँ सामाजिक जीवनमे जे विघटनकारी तत्त्व एवं सम्बन्धहीनताक प्रवृत्ति बढ़ि रहल अछि, तकरा प्रति साकांक्ष नहि छथि।

प्रसंगवश, हम ऐशबीक अपेक्षित बहुमुखता नियम (Ashby's Law of Requisite Variety)[5] दिस अपनेक ध्यान आकृष्ट करए चाहब। ओ कहैत अछि जे पर्यावरणक विरुद्ध ठाढ़ होएबाक लेल कमसँ कम ओतेक अन्तर्बल अवश्य चाही, जतेक पर्यावरणमे छैक एवं जकरासँ संघर्ष करबाक अछि, अन्यथा अस्तित्व सुरक्षित नहि रहि सकैत अछि। से देखी जे हमरालोकनि कोना अपन अस्तित्वक रक्षाक लेल साकांक्ष एवं सक्रिय भए गेल छी।

ऐतिहासिक-सामाजिक कारणेँ मिथिलापर, मैथिली भाषी क्षेत्रपर विभिन्न भाषा, संस्कृति एवं धर्मक अनुयायीक आक्रमण होइत रहल। मिथिलाक उर्वरा भूमिमे राजकीयोत्पातक संग मैथिलीभाषीक घनत्व क्रमशः पतराइत गेल। जाहि मिथिलामे भारती सन विदुषी भेल छथि, ओहि सनातनी मिथिलामे पहिने बौद्ध आ' पछाति तुर्क, अफगान आ' मोगलक उत्पात एवं आतंकसँ स्त्री-शिक्षापर पर्दा खसि पड़ल। किन्तु आब मिथिलामे स्त्री-शिक्षा जोड़ पकड़ि लेलक अछि। ओहि सभक कारणेँ मिथिलाक सामाजिक जीवनमे विषमता बढ़ि गेल छल। सामाजिक विषमतासँ मैथिलीक सुदीर्घ ओ विशाल लोकसाहित्य तथाकथित शिष्ट समाजक वस्तु नहि रहल, समाजक अपढ़ सदस्यक मनोरंजनक साधन भए गेल छल। मुदा, लोकशक्तिक उदयक संग मैथिली लोकसाहित्य समाजक लेल ऊर्जाक स्रोत भए गेल अछि। कहि सकैत छी, लोक महानायक जागि गेलाह अछि।

5. The variety within a system must be at least as great as the environmental variety against which it is attempting to regulate itself'.

6. सुभाष मुखोपाध्याय, अद्भुत समय, *समकालीन भारतीय साहित्य,* 2002

किछु दिन पूर्व बंगलाक प्रसिद्ध रचनाकार सुभाष मुखोपाध्यायक[6] कविताक हिन्दी अनुवाद पढ़बाक अवसर भेटल छल। ओ लिखने छथि -

सागर से हिमालय तक/ मेरे विश्वास की भूमि है

मुझे बातों से बहला कर/ कोई उसे नहीं छीन सकता।

अर्थात् सागरसँ हिमालय धरि जे विशाल भूमि अछि, ओएह हमर विश्वास थिक। एही ऊर्जा एवं विश्वासक संग मैथिली रचनाकार भारतमे होथि वा नेपालमे साहित्यक विभिन्न विधाक माध्यमसँ अपन भाषा-संस्कृति पर पड़ैत विघटनकारी प्रभावकेँ यथासम्भव थाम्हि लेबाक लेल प्राण-प्रणसँ साकांक्ष एवं सक्रिय छथि। उदयनारायण सिंह 'नचिकेता'क कविताक निम्न पंक्तिमे ओही अन्तर्बलक उद्घाटन भेल अछि -

झाँपि देने छल हमरे पंख

हमर इतिहासकेँ ने जानि के?

झाँप देलक अछि, बर्फक प्रलेपसँ

तकर तरसँ झलकि रहल अछि

मात्र पंख हमर।[7]

एक वैदिक ऋचा अछि, *चेतमहि स्वराज्ये* आउ हम सब मिलि स्वराज्यक कामना करी। मुदा सम्प्रति राजनीतिक स्वराज्यक कामनाक प्रश्न नहि अछि, प्रश्न अछि अपन सांस्कृतिक वैविध्यक रक्षाक। एही सँ राजनीतिक स्वराज्यकेँ बल भेटतैक। आ' तखनहि यूनेस्कोक मोटो *Languages matter* एवं सांस्कृतिक वैविध्यक सार्वभौम घोषणाक (Universal Declaration on Cultural Diversity) मार्ग-दर्शनक सफल कार्यान्वियन सम्भव भए सकत। अतएव, इंनफोरमेशन हाइवे पर सरपट दौगि रहल सांस्कृतिक साम्राज्यवादक अश्वमेधी घोड़ाक रासिकेँ पकड़बाक लेल हमरा लोकनि कटिबद्ध भए जाए।

(प्रस्तुत आलेख भारतीय भाषा संस्थानक पूर्व क्षेत्रीय भाषा केन्द्र, भुवनेश्वर द्वारा ओतहि आयोजित Common Features in the Languages of Eastern India & Current Trends in the Literatures of Easten India विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठीमे 18 मार्च, 2012 केँ पढ़ल गेल छल।)



7. उदयनारायण सिंह 'नचिकेता, *घर बाहर*, अप्रैल 2010

मैथिली लोकगीत : अवस्था एवं संरक्षण

उपर्युक्त विषयक डा. महेन्द्रनारायण रामक कार्यपत्र परिश्रमपूर्वक तैआर कएल गेल अछि। डा. राम बहुत कम समयमे मैथिली लोक साहित्यक क्षेत्रमे बहुत किछु मौलिक एवं महत्त्वपूर्ण काज कएलनि अछि। किन्तु एहि स्तरक राष्ट्रीय संगोष्ठीमे कार्यपत्र प्रस्तुत करबाक समय किछु बिन्दु ध्यानमे राखब आवश्यक होइत छैक। से एहि हेतु जे संगोष्ठीक श्रोता सामान्य नहि, विशिष्ट एवं सम्बद्ध क्षेत्रक अधीत विद्वान रहैत छथि। हम देखैत छी जे हमरा समक्ष लोक साहित्यक एकसँ बढ़ि एक विशेषज्ञ उपस्थित छथि। हिनका लोकनिकेँ लोकसाहित्यक ककहरा सुनाएब कतहुसँ उपयुक्त नहि अछि। कहबाक तात्पर्य जे प्रस्तुत कार्यपत्र विशिष्ट श्रोताकेँ समक्ष राखि नहि लिखल गेल अछि। एकरा परिचयात्मक आ' इतिवृत्तात्मक नहि, विश्लेषणात्मक होएबाक चाहैत छलैक। एहन विश्लेषणात्मक जे श्रोता/पाठककेँ वैचारिक स्तरपर उद्वेलित कए सकए। उदाहरणक लेल विशेष अवसर आ' भासक गीत 'लगनी'क नाम लेब। लगनी कोन संस्कृतिक उपज थिक। जाँताक थकनीकेँ लगनी गीत गाबि कोना बिसरल जाइत छल। गीतक माध्यमेँ ननदि-भाउजक हास-परिहाससँ वातावरण कोना महमहा उठैत छलैक। सम्प्रति जखन जाँतक स्थान मिक्सी लेने जाइत अछि आ' ढ़ेकीक स्थान मील, तखन एहि तरहक श्रम-गीतक विलुप्तिक सम्भावना कोना बढ़ि रहल अछि, आदि।

कार्यपत्रक विषय अछि, लोक गीतक अवस्था। एहिमे तीन टा पद अछि - लोक, गीत आ' अवस्था। गीतक महत्त्व सर्वकालिक छैक। जहिआसँ मानवक अस्तित्व छैक, कोनो ने कोनो प्रकारक गीत ओकर कंठसँ स्वतः निःसृत होइत रहल अछि। अपन परिवेश वा सजातीय किंवा मानव जातिक प्रति रागात्मक होएब लोकक स्वभावगत विशेषता थिकैक। तेँ सभ भौगोलिक वा सांस्कृतिक क्षेत्रक लोकक जीवनमे गीतक महत्त्व छैक आ' सदा रहतैक। एतेक धरि जे हमरालोकनिक देवी देवता सेहो संगीत प्रेमी छथि। केओ डमरू बजाकेँ ताण्डब करैत छथि तँ केओ वीणावादिनी कहबैत छथि।

दोसर पद अछि लोक। लोक तँ सभ दिनसँ अछि। लोक अछि, तेँ राग अछि, विराग अछि। तेँ गीत अछि। मैथिल संस्कृतिमे जेना वेदक अर्थात् शास्त्रक महत्त्व अछि, ओहिना लोकक अर्थात् शास्त्रीयतासँ मुक्त आचार-व्यवहारक महत्त्व अछि। लोक आ' वेद समानान्तर मानल गेल अछि। *'लोके च वेदे च'*। व्यावहारिको जीवनमे लोक-वेदक पुछारी करब सामान्य शिष्टाचार भए गेल अछि। समाजमे दूनू वर्गक लोक रहैत आएल अछि। जे शास्त्रीय शब्दावलीमे आभिजात्य वर्ग आ' सामान्य वर्ग थिक। एही आधार पर साहित्योक वर्गीकरण - शिष्ट साहित्य एवं लोकसाहित्य अछि। सिद्धाचार्य लोकनि तथाकथित शिष्टवर्गक लोक नहि छलाह। किन्तु मैथिलीमे जे प्राचीनतम गीत-साहित्य उपलब्ध अछि, से सिद्धाचार्य लोकनिक रचना थिक। ओ जीवनक रागात्मक अनुभूतिक स्थानपर अपन अनुभव आ' दर्शनक अभिव्यक्तिक माध्यम लोकभाषाकेँ बनाए गीतक रचना कएलनि। कविकोकिल विद्यापति लोकक महत्त्व आ' लोकक भाषाक महत्त्व बूझलनि। तेँ सर्वत्र

पूज्य आ' मान्य छथि। लोक हुनक रचनामे अपन राग-विरागकेँ अभिव्यक्त भेल अनुभव करैत अछि। लोकक महत्त्वकेँ देखैत महाकवि भवभूति (*उत्तररामचरित*)रामकेँ आदर्श शासकक रूपमे चित्रित करैत हुनकासँ कहबाओल अछि - राज्य, सुख आ' देशकेँ - एतेक धरि जे सीताकेँ लोकक आराधनाक हेतु छोड़बामे व्यथा नहि होएत -

राज्यं, दयां च सौख्यं च, यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुंचतो नास्तिमेकथा।।

लोक की कहत? से सोचि राजा राम सीताक निर्वासन कए देलनि। किन्तु हुनकामे लोकतन्त्रीय जीवन-मूल्यक अभाव छल। एकर विपरीत सीता लोकतन्त्रीय शासन-व्यवस्थामे जनमल छलीह। लोकतन्त्रमे अपन विचार व्यक्त करबाक स्वतन्त्रता होइत छैक, से हृदयंगम छलनि। ओ जनैत छलीह जे मिथिलामे लोकशक्तिक महत्त्व अछि आ' राजा जनक लोकहिक प्रतिनिधि थिकाह। लोकतन्त्रक भूमिमे जनमलि सीता अश्वमेध यज्ञक प्रसंगमे राजा रामक समक्ष मिथिलाक लोक आ' शासन-व्यवस्थाक स्मरण करबैत अपन विचार रखने छलीह -

मिथिलाक लोक नहि थिकनि राजाक दास
स्वाधीनमना लोकक प्रतिनिधि थिकाह मिथिलेश
अहाँ करबैक आक्रमण।
मिथिला भ' जैत पुरुषहीन, तखने ने अहाँक जीत?
पति-पुत्र विहीना नारीक नोरसँ मिथिलाक भूमि हैत पाँक हेंक।
फोड़ल लहठीक लागत ढ़ेर-पहाड़,
माङक सिन्दूरसँ पोखरि झाँखडि हैत लाल,
कन्ना-रोहटसँ भरत मिथिलाक भू, नभ, दिगन्त,
सोहर, कोबर, बटगबनी, लगनी, मलार, रास,
संगीतक सब राग-भास
मरि लुप्त हैत।[1]

सीताक विचाराभिव्यक्ति राजद्रोह भए गेल। राजद्रोहक दण्ड छल मृत्युदण्ड वा देश निष्कासन। देश निष्कासनक दण्ड सीता पओलनि।

मिथिलाक संस्कृतिमे लोकतन्त्रात्मक मूल्य कतेक प्रगाढ़ अछि तकर साक्ष्य नेपाल तराइक घुमन्तू गायकक मुहेँ सुनि लिपिबद्ध भेल जॉर्ज अब्राहम ग्रिअर्सन संकलित *गीत दीनाभद्री* सँ सेहो प्रमाणित होइत अछि। मुसाहु बनिञा जखन अकारण दीनाभद्रीकेँ अपन दोकान परसँ ठोंठिआ दैत अछि तँ ओ तकर प्रतिकार अपन शारीरिक बलसँ नहि कए, निसाफक हेतु पंचक ओतए जाए नालिस करैत अछि -

1. काञ्चीनाथ झा 'किरण', *पराशर*

पंच मेँ भद्री देलन्हि नालिस कराय।
छोट पंच बड़ पंच सिरक मटुक।
बिनु अपराधेँ गरदनियाँ देलक मुसाहु, करू मोर निसाफ।
किअ कहौ, हे मुसाहु, बिनु अपराधेँ गरदनियाँ देलह।।
तोहर दोकान मना परि जाएत।

हमर देश अर्थात् भारत विदेशी आक्रमण, राजतन्त्र आ' उपनिवेशवादक पीड़ा कतेको शताब्दी धरि भोगि स्वतन्त्र भेल अछि। लोकतन्त्रात्मक शासन-व्यवस्था स्थापित भेलैक अछि। भारतक नागरिककेँ अपन भाषा-साहित्य एवं संस्कृतिक प्रचार-प्रसार एवं संरक्षणक अधिकार छैक। ओहि लेल पूर्ण अवसर प्राप्त छैक। अपने लोकनि (नेपालवासी) कतेको शताब्दी धरि राजतन्त्रकेँ भोगैत ओहिसँ मुक्तिक लेल अनवरत संघर्ष करैत अएलहुँ अछि। ओहि संघर्षसँ लोकतन्त्रक उदय भेल अछि। सुन्दर विहान समक्ष अछि। एहि लोकतन्त्रक युगमे जाहि कोनो शक्तिक सबसँ बेसी महत्त्व छैक से थिक लोकसत्ता आ' लोकक राग-विराग एवं लोक जीवनकेँ प्रतिनिधित्व करएबाला लोक साहित्यक। एहि सन्दर्भमे 'मैथिली लोकसंस्कृति' पर संगोष्ठी आयोजित करब, लोकशक्तिक प्रतिष्ठापनक दिशामे एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण डेग थिक। अपने लोकनि लोकतन्त्रक स्थापनाक लेल कतेक लालायित छलहुँ आ' कतेक आशान्वित छी, तकरा ई संगोष्ठी प्रतिध्वनित करैत अछि।

तेसर पद अछि अवस्था। अवस्था कालक द्योतक थिक - भूत, वर्तमान आ' भविष्य। अर्थात् मैथिली लोकगीतक अवस्था की छलैक, वर्तमान कालमे कोन अवस्थामे अछि तथा भविष्यमे मैथिली लोकगीत कोन अवस्थामे रहत। ई सभ केओ एक स्वरेँ एवं मुक्त कण्ठसँ स्वीकारैत छी जे मैथिलीक लोकगीत हमर महान संस्कृतिक वाहिका थिक। एहि लोकगीतमे हमर राग-विराग, आशा-आकांक्षा, सुख-दुख, ज्ञान-विज्ञान, हमर जातीय इतिहास, हमर भौगोलिक स्थिति एवं प्राकृतिक सुषमा, जीवन-शैली तथा सांस्कृतिक वैविध्य अदौसँ संवाहित होइत आबि रहल अछि। ई सांस्कृतिक सम्पदा दृश्य आ' अदृश्य दूनू प्रकारक अछि जे रागात्मकतासँ लबालब भरल अछि। जीवनक एहन कोनो पक्ष नहि छैक, जकर रागात्मक अभिव्यक्ति लोकगीतमे नहि हो। तुलसी, कुश, आम, महु, नीम, बाँस, काछु, पुरैनिक पात, तिलकोरक पातसँ लए केँ भोजन-विन्यास धरि लोकगीतमे भेटत। गर्भधारणसँ मृत्यु धरिक समस्त संस्कार लोकगीतमे अपन पृथक राग-भास एवं विषय-वस्तुक संग अनुस्यूत अछि।

लोकगीतमे मात्र मनोरंजनक साधने नहि, एवं युग-युगक अनुभव सुरक्षित अछि। लोकगीतमे अभिव्यक्त अनुभव पारम्परिक लोकज्ञानक स्रोतक रूपमे मान्यता पाबि गेल अछि। एहि प्रसंग एक दू टा उदाहरण प्रस्तुत अछि।

विवाह पूर्व वा अन्यो अवसर पर उबटन लगेबाक प्रथा अदौकालसँ प्रचलित अछि। उबटनमे मेथीक प्रयोग होइत अछि। ओहिना हरदि लगेबाक प्रथा अछि। एहि दूनूमे औषधीय गुण छैक जे विज्ञान द्वारा प्रमाणित अछि। घर-घरमे तुलसीक गाछ अछि। धी-सुआसिन ओकर जड़िमे जल ढ़ारैत छथि। साँझमे दीप लेसैत छथि। बेलक पात शिवजीकेँ चढ़बैत छथि। मैथिली लोकगीतमे एहि

वनस्पतिक सभक महत्त्व अकारण नहि अछि। समय-शीला पर परीक्षित एवं अनुभवसिद्ध अछि। ई वनस्पति सभ औषधीय एवं पर्यावरणीय महत्त्वक वस्तुक थिक जकर उपयोग होइत आएल अछि। लोकगीतमे आ' व्यवहारमे रहलाक कारणेँ ई पारम्परिक ज्ञानक स्रोत भए गेल अछि। एहि पारम्परिक लोकज्ञानक स्रोतसँ मानवजाति लाभान्वित भेल अछि। लोकगीतमे वैज्ञानिक तत्त्वक रहबाक ई स्पष्ट उदाहरण थिक। उबटनक गीतमे मेथी पीसबाक चर्च बेर-बेर अबैत अछि।

कओन नाना मेथिया बेसाहल? कओने नानी पीसल?

अपन नाना मेथिया बेसाहल, सूहब नानी पीसल।

कनि बिलमि एहि गीत पर विचार कएल जाए। बेसाहब थिक, अपन खेत-पथारसँ आवश्यकताक पूर्ति नहि होएब। बेसाह लगैत छनि, अर्थात् अन्न-पानिक अभाव छनि। ई लोकगीत परिवारक आर्थिक स्थितिकेँ सेहो देखबैत अछि। तथापि, मातामह द्वारा दौहित्रीक उबटनक हेतु मेथी बेसाहल जाइत अछि। बेसाहल मेथी मातामही नातिन लेल पीसैत छथि। आनो केओ पीसि सकैत छलीह। मुदा रागात्मकताक महत्त्व छैक। तेँ नानीक पीसल मेथी लगाओल जएबाक चर्च अछि। रागात्मकताक रंगमे व्यावहारिकता एवं लाभप्रदताकेँ बोरि जीवनमे अंगीकृत कए लेब मैथिल संस्कृतिक अनुपम विशेषता थिकैक। ई विशेषता उबटनक एहि गीतमे वर्तमान अछि। एहिना हरदिक प्रसंग लोकगीतमे पर्याप्त चर्च अछि -

हरदीके बड़ा सजाबट जनक जी, हरदीमे बड़ा सजाबट।

पहिल हरदी दादा चढ़ावे पाछू सँ दादी सोहागिन, जनक जी।

हरदी बड़ा सजाबट।

लोक जीवनमे उपयोगिता, रागात्मकता, सौन्दर्यप्रियता एवं सामाजिकताक अत्यन्त महत्त्व अछि। सामाजिकता रागात्मकतासँ कोना मंडित रहैत अछि तकर उदाहरण निम्नलिखित गीतक पाँतीमे द्रष्टव्य अछि। 'सेन्टो गमकदार' प्राचीन प्रयोग नहि थिक। ई लोकगीतक लोचकताकेँ प्रदर्शित करैत अछि।

जनकपुरमे धूम मचल अछि, संगीता पसाहिन आइ अछि।....

चाचीक हाथमे तेल फुलेल, मामीक हाथ कसाइ अछि

मौसीक हाथमे अत्तर सुगन्धित, सेन्टो गमकदार अछि।

जनकपुरमे धूम मचल अछि, संगीता पसाहिन आइ अछि।

विवाहक अवसर पर सोहाग देबाक प्रथा अछि। सोहाग थिक सौभाग्य-कामना, मंगलमय दाम्पत्य जीवनक हेतु आशीर्वचन। मैथिल संस्कृतिमे सामाजिक समरसताक तत्त्व प्रगाढ़ अछि। एहि तत्त्वक गीतात्मक अभिव्यक्ति हास्य-विनोदक सृष्टिक संग कोना कएल जाइत अछि, से प्रस्तुत सोहाग गीतक *'लट छिलकी धोबिनिञा'*क प्रयोगमे वर्तमान अछि। धोबिनिञा सामान्य नहि अछि, सौन्दर्य चेतना छैक। कपोल पर लट लटकौने अछि। एहि लटक कतेको कवि *'कारी सियाह नाग'*सँ तुलना कएने छथि। एहिठाम आनो केओ भए सकैत छलि, धोबिनिञा किएक? एकरहु एक पौराणिक कारण छैक। शिवजीक मानस पुत्रीक विवाहक अवसर पर समाजक अनेकहु महिला लोकनि सोहागक लेल उपस्थित भेल छलीह। किन्तु ओहिमे सभसँ आगू छलि एक धोबिन। गणेशजीसँ ओकरा अखण्ड सौभाग्यक वरदान भेटलैक। एहि हेतु सभसँ पहिने अखण्ड सौभाग्यक वरदान प्राप्त धोबिनसँ सोहागक परिपाटी मिथिलामे अछि। एहि एक शब्दमे एक संस्कृति अछि। एक कथा गुम्फित अछि।

सियाजी के दही ने सोहाग गे, लट छिलकी धोबिनिञा

हमरो सियाजी कें पिअरे पिताम्बर

सेहो तों लिहे फेराए गे, लट छिलकी धोबिनिञा।

हमरो सियाजीकें सोना अशर्फी।

सेहो तों लए गे, लट छिलकी धोबिनिञा।

समाजमे कन्याकेँ पुत्रवत् सुविधा, विकासक अवसर आ' अधिकार प्राप्त नहि छैक। ई विभेद जन्मकालहिसँ आरम्भ भए जाइत अछि। एकोटा एहन सोहर नहि भेटत जाहिमे सीता, पार्वती, राधा, लक्ष्मी वा सरस्वतीक जन्मक उल्लास हो। सभटा राम वा कृष्णक जन्मसँ सम्बन्धित अछि। पुत्रक जन्मक अवसर पर सहथ फेंकबाक कतेको ठाम प्रथा अछि। ई प्रसन्नताक संग शौर्यक अभिव्यक्ति थिक। बेटीक जन्मसँ उल्लासक स्थान पर परिवारमे अवसाद पसरि जाइत छैक। धरतीक झझकब, नार-पुरैनि काटबाक लेल हँसूक कोन कथा, चक्कुओ नहि भेटब आ' अन्ततः खुरचनसँ नार काटब, सासु एवं ननदिक व्यवहारमे रुच्छता तथा पतिक मुखाकृतिमे अप्रसन्नता खुदिआएब आदिक अभिव्यक्ति लोकगीतमे पर्याप्त भेल अछि। *'जाहि दिन आगे बेटी तोहरो विवाह भेल, तारा गिरल आधी रात'* बेटीक विवाहक लेल माइक चिन्ताकेँ स्वर दैत अछि-

जाहि दिन आगे बेटी तोहरो जनम भेल, धरती उठल झझकाइ हे।

हँसुआ खोजइते गे बेटी छुरियो न भेटल, सितुआसँ नार कटाओल हे।

सासु ननदी गे बेटी मुखहुँ न बोलए, स्वामी जीकेँ जियरा उदास हे।

जाहि दिन आगे बेटी तोहरो विवाह भेल तारा गिरल आधी रात हे।

भ्रूण-परीक्षण आधुनिक विज्ञानक देन थिक। एहि परीक्षणसँ अनिच्छित सन्तानकेँ सूर्यक प्रथम रश्मि देखबाक अवसर नहि भेटैत छैक। पहिने ई सुविधा नहि छलैक। गर्भपात करेबाक लेल मरीचक प्रयोग होइत छल। बेटीक जन्मसँ माए केँ जे पारिवारिक आ' सामाजिक प्रतारण एवं उपेक्षा होइत छलैक, लोकगीतमे तकर चित्रण अत्यन्त कारुणिक अछि। नारीक प्रति ई उपेक्षा भाव वर्तमान समय धरि व्याप्त अछि। एहि मानसिकतासँ स्त्री-पुरुषक जनसंख्यामे भेल असन्तुलनकेँ समाज वैज्ञानिक सामाजिक संकटक रूपमे देखय लगलाह अछि। परिवारमे पुत्रीक जन्मसँ होइत अवसादक लोकगीतमे भेल अभिव्यक्ति मानवीय संवेदनाक तारकेँ झनझना दैत अछि।

पहिले जे जनितउँ धिया रे जनम लेत, खएतउँ मरिच पचास हे।

मरिचक झाँस धिया दुरि जाइत, छुटितइ धियाक संताप हे।

पितृसत्तात्मक समाजमे पुरुष मानसिकताक दोसर उदाहरण थिक पत्नीकेँ सेविका मानबाक मानसिकता। एहि मानसिकतामे विवेकक अभाव तँ अछिए, पुरुषवर्गक अर्थलोलुपता सेहो अछि। निम्नलिखित लोकगीतमे *'रुनझुन-रुनझुन'* शब्द नव विवाहिताक पति-मिलनक उत्कंठा, पूर्ण रागात्मक संवेदनाक संग अभिव्यक्त भेल अछि। प्रतीत होइछ, नव कनियाँक पएरक नुपूर नहि बजैत हो, ओकर हृदय एवं शरीरक अंग-अंग पुलकित एवं झंकृत भए निनाद कए रहल हो। किन्तु स्वामीक आदेशपर ओ भरि राति बिअनि हौंकैत रहि जाइत अछि -

रुनझुन-रुनझुन, इहो नबि कोहबर हे।

आहे माइ, ताहि कोहवर सुतलनि कओन दुलहा, बेनिया डोलए मांगे हे।।

आध राति हौंकल, पहर राति हौंकल हे।

होत भिनसर बेनिया टूटि गेल, बंनिया ला रूसि गेला हे।।

ककरा भेजब बाबा घर, ककरा भेजब भइया घर हे।

परभुजी अरजल बेनिया टूटि गेल, बेनिया ला रूसि गेल हे।।

हजमा भेजऽ बाबा घर, ब्राह्मन भेजऽ भइया घर हे।

आगे माइ, हरिजी अरजल बेनिया टूटि गेल, बेनिया ला रूसल छथि हे।।

हाथी चढ़ल बाबा आबे, घोड़ा चढ़ल भइया आबे हे।

बीचहिं बेनिया झलकैत आबे, आब हम नैहर जएबै।।

उपर्युक्त उदाहरणमे प्रभुजीक अर्थात् पतिक अरजल बिअनि प्रभु जीकेँ अनवरत हौंकैत रहलासँ पत्नीक हाथमे टूटि जाइत अछि। एहिमे ओकर कोन दोष छलैक? किन्तु त्रासद पक्ष अछि जे पतिक आचरणसँ पत्नीमे असामान्य ग्लानिक बोध होइत छैक। कोनो आन उपाय नहि देखि, नैहर समाद पठाए तकर प्रतिपूर्ति करबाक निर्णय करैत अछि। एक प्रकारेँ ओ जुर्माना भरैत अछि। तकर बादे नैहर जएबाक अनुमति भेटैत छैक। अर्थात् पतिक अरजल बिअनि टूटि गेलासँ जुर्माना भरबा धरि ओ सासुरमे बन्धक बनल छलि। *हाथी चढ़ल बाबा आबे, घोड़ा चढ़ल भइया आबे हे, बीचहिं बेनिया झलकैत आबे आ' आब हम नैहर जएबै* नारी जातिक एही त्रासदीक अभिव्यक्ति थिक। ई सामाजिक विकृति एवं अर्थलोलुपता कमल नहि अछि। दहेज लोभी लोकक आखेट नव विवाहिता निरन्तर भए रहल छथि। लोकगीतमे पुरुष मानसिकता आ' नारी उत्पीड़नक पर्याप्त चित्रण अछि। ई चित्रण सभ वस्तुतः सामाजिक मनोवृत्तिक एक करुण इतिहास थिक।

कृषि संस्कृतिक देन लगनी, विशेष भास एवं अवसरक गीत थिक। एहि कोटिक गीतमे सेहो बधू उत्पीड़नक चित्रण अछि -

घर पछुअरबा लौंग केर गछिया, लौंग फूलेल आधि रतिया रे दइबा।

लौंगवाके चुनी चुनी संजिया ओछइली, सुती रहलइ सासुजी के बेटबा हो दइया।

घुरि सुतु फिरि सुतु सासुजीके बेटबा ननदी जीके भैया।

तोहर घामसँ भीजल सभ चोलिया हे दइया।

उपर्युक्त गीतक पाँतीमे प्रयुक्त *'सासुजी के बेटबा'* एवं *'ननदी जीके भैया'* पर विचार कएल जाए। ओ पति, स्वामी आदि कहि सम्बोधित नहि करैत अछि। स्पष्ट अछि जे पति अपन पत्नीक निकट नहि छथि। ओ माए-बहिनिक पाँजमे छथि। सासु एवं ननदि सुनियोजित रूपसँ अत्यधिक परिश्रम करबैत छैक जाहिसँ पुतहुक स्वेदसिक्त अंगबस्त्र पतिक विकर्षणक कारण बनल रहए। *'घुरि सुतु फिरि सुतु सासुजी के बेटबा ननदी जीके भैया'*- एही स्थिति दिस संकेत करैत अछि।

प्रस्तुत गीतमे मिलनोत्कंठित नायिकाक मनोदशाक सूक्ष्म एवं सुन्दर वर्णन अछि। ओ अपन तुलना लवंगक फूलसँ करैत अछि। जे पूर्णतः प्रस्फुटित होएबासँ पहिने अधरतिएमे तोड़ि लेल गेल हो। ई नायिकाक अर्द्ध विकसित रहबाक द्योतक थिक। किन्तु प्रस्फुटनक उष्मासँ अवश्य ओ मातलि अछि, जे *'लौंगवाके चुनी चुनी संजिया ओछइली'* सँ स्पष्ट अछि। एहि गीतमे अप्रस्तुत एवं प्रस्तुत विधानक अद्भुत नियोजन भेल छैक। एक बेर नायिका लेल, जे प्रस्तुत अछि, प्रस्तुत लवंगक फूल आ' दोसर बेर अप्रस्तुत मनक उल्लासक लेल प्रस्तुत लवंगक फूलक प्रयोग भेल अछि। बेली, चमेली वा केओलाक प्रयोग मैथिली लोकगीतमे ठाम-ठाम भेटैत अछि। किन्तु औषधीय गुणसँ युक्त एवं मिथिलासँ भिन्न प्राकृतिक एवं भौगोलिक क्षेत्रमे सुलभ लवंगक फूलक संग नायिकाक मनोदशाक वर्णन दुर्लभ अछि। एही लगनीक अगिला पांतीमे अछि -

घर पछुअरबामे बसे एक मलहा, मलहा रे जमुनामे फेंकू महजाल रे दइबा।

तोहरो के देबौ मलहा दही-चूड़ा भोजन रे, जमुनामे फेकू महजाल रे दइबा।

एक जाल फेंकले मलहा, दुइ जाल फेंकले, तेसर जाल घोंघटा संए मारलए रे दइबा।

एक जाल फेंकले मलहा दुइ जाल फेंकले, तेसर जाल धनी के लहरबा रे दइबा।

कृषि संस्कृतिक नायिकाक कृषि संस्कृतिक नायकक *(घर पछुअरबामे बसे एक मलहा)* प्रति आर्कषण सहज अछि। किन्तु नायिका द्वारा जमुनामे जाल फेंकबाक लेल कहब, कम महत्त्वपूर्ण नहि अछि। गंगा शान्त छथि तँ जमुना तीव्र प्रवाहिनी। एहि हेतु जमुनामे पार होएबाक लेल अपेक्षाकृत बेसी साहस, धैर्य आ' परिश्रम चाही। स्पष्ट अछि जे नायिका तेसर बेर जाल फेंकला पर आकर्षित होइत अछि। अपन तुलना ओ जमुनासँ करैत अछि। एहि आकर्षणक नाटकीय अभिव्यक्ति प्रस्तुत लोकगीतमे भेल अछि। मिथिलाक सुस्वादु एवं सुपाच्य भोजन चूड़ा-दहीक चर्च सेहो अछि।

वर्तमान

परिवेश बदलैत अछि। लोकक आवश्यकता आ' रुचि बदलैत अछि। सम्बन्ध आ' सरोकार बदलैत अछि। एहिसँ सामाजिक जीवनमे परिवर्त्तन अबैत अछि। एहि परिवर्त्तनक प्रभाव लोकक जीवन-यापन पर पड़ैत छैक। उद्योगीकरण आ' शहरीकरणसँ श्रमक पलायन आरम्भ भेल। गाम-घर, खेत पथार पोखरि-झांखरि, वन-पर्वतक स्थान पर लोककेँ गोठुल्लामे रहबाक बाध्यता भए गेलैक। ओ भिन्न भाषा-भाषी एवं संस्कृतिक लोकक बीच जीबैत रहबा लेल विवश होइत रहल। पहिने देशहिक एक कोणसँ दोसर कोन लोक जाइत छल। आब विश्वक एक कोणसँ दोसर कोण धरि उड़ि जाइत अछि। जाहिठाम सभ किछु अनचिन्हार रहैत छैक। अपरिचित रहैत छैक। बजारवाद अपन अकादारुण मुह बाबि सभ किछु गीरि अपन रंग पसारबाक लेल द्रुत वेगसँ चतुर्दिक पसरि रहल अछि। जाँत पीसब वा ढ़ेकी कूटब अनावश्यक भए गेलैक अछि। तखन लगनीक कोन प्रयोजन रहि जाएत! पहिनहिसँ वर-कनिञा 'हाय! हेलो!' करैत रहैत छथि, तखन मुहबज्जी वा कोवरक गीतक की होएतैक? बाजारमे रंग-विरंगक क्रीम आ' बौडी लोशन उपलब्ध छैक, नानी मेथी कथी लेल पीसतीह। गोदना आब गोदौल नहि जाइत अछि। खोदपारनि आओत कतए सँ जे अवसरोचित गीत द्वारा हास-परिहास होएत। टेटूक फाहामे लहरिआ कतयसँ आओत, जकर तुलना पति वियोगक लहरिसँ कएल जाइत छल। (*हमरो लहरिया गे सुन्दरी सहलो ने जाइ छउ रे जान! जान सूइया के लहरिया कोना सहबे रे जान! सूइया के लहरिया हे पिअबे घड़ी रे दंइ घड़िए रे जान! जान तोहरो लहरिया हो पिअबे सगर रतिया रे जान!*)। नेनाक स्वास्थ्यक रक्षाक लेल विभिन्न प्रकारक औधषि एवं सूइ आदिक निर्माण भेल अछि। तखन पाच आ' ओहि अवसर पर गबै जाए बाला पाचगीतक कोन प्रयोजन रहि जएतैक। पसरैत यान्त्रिकता, सांस्कृतिक परिवेशसँ दूर जीवन-यापन, प्रदर्शन-प्रभाव एवं बजारबाद तथा संचार माध्यमक अहर्निश प्रहारसँ लोकसंस्कृति प्रभावित एवं विकृत भए रहल अछि। ओकर कतेको वैशिष्ट्य लुप्त होएबाक कनगी पर छैक।

संरक्षणक उपाय

पारम्परिक ज्ञानक स्रोत एवं मानव जातिक विकासक भावात्मक अभिलेखक संरक्षण दिस विश्व समुदाय (यूनेस्को)क ध्यान हालहिमे गेलैक अछि। पहिने विश्वसमुदाय इंटा-पाथरहिकेँ सांस्कृतिक सम्पदा मानि विश्वस्तर पर ओकर संरक्षणक हेतु नीति-निर्धारण करैत छल। ओहि लेल सुविधा दैत छलैक। किन्तु भूमण्डलीकरणक चपेटमे विश्वक सम्पन्न सांस्कृतिक वैविध्य पर बढ़ल संकट एवं कतेको राष्ट्र तथा एवं नृवर्गक (ethnic group) सांस्कृतिक परिचितिकेँ संकटापन्न स्थितिमे अनुभव कए यूनेस्कोक ध्यान अस्पृश्य, अभौतिक सांस्कृतिक सम्पदाक संरक्षणक महत्त्व दिस गेलैक अछि। आ' ई विश्वास बलवती भए गेलैक अछि जे अभौतिक एवं निराकार सांस्कृतिक सम्पदा कोनहु प्रकारसँ साकार भौतिक सांस्कृतिक सम्पदासँ दऽब नहि अछि। इहो ओहिना संरक्षणीय अछि जेना साकार भौतिक सम्पदा। एहि निमित्त आहूत बैसारमे अभौतिक एवं निराकार सांस्कृतिक सम्पदाकेँ परिभाषित करैत विश्वक सभ देशसँ संरक्षणक हेतु आवश्यक उपाय करबाक हेतु कहल गेल अछि।

यूनेस्कोक वैविध्य सांस्कृतिक सार्वभौम घोषणाक अनुसार सांस्कृतिक विविधता मानवजातिक सामूहिक सम्पदा थिकैक एवं वर्तमान तथा भविष्यक संततिक लाभक हेतु एकरा स्वीकृत आ' सम्पुष्ट कएल जएबाक चाही। सांस्कृतिक सम्पदाक संरक्षणक हेतु दू टा बाटक अनुशंसा कएल गेल अछि। ओ थिक - चिन्हित करब एवं संरक्षण। सांस्कृतिक सम्पदाकेँ तीन प्रकारेँ चिन्हित कएल जाए सकैत अछि। ओ थिक -

i) लोक गीतक सार्वत्रिक (ग्लोबल) उपयोग हेतु सामान्य मार्ग निर्देश,

ii) लोक गीतक एक व्यापक रजिस्टर तैआर करब, तथा

iii) लोकगीतक क्षेत्रीय वर्गीकरण करब।

एहि आधार पर मैथिली लोकगीतकेँ चिन्हित कएल जाए सकैत अछि। मैथिली लोकगीतकेँ चिन्हित कएलाक ओकर संरक्षणक उपाय कएल जएबाक चाही। चिन्हित लोकगीतक संरक्षणक लेल सातटा बाट सुझाओल गेल अछि। ओ थिक -

i) एक राष्ट्रीय अभिलेखागारक स्थापना करब जतय लोकगीत नीक जकाँ संकलित रहए तथा जिज्ञासुकेँ उपलब्ध भए सकए।

ii) एक केन्द्रीय अभिलेखागारक स्थापना करब जे सेवा कार्यक हेतु काज करए।

iii) एक संग्रहालय स्थापित कएल जाए अथवा स्थापित संग्रहालयमे पारम्परिक एवं लोकप्रिय संस्कृति एवं कलाकृति प्रदर्शित रहए।

iv) पारम्परिक एवं लोकप्रिय संस्कृतिकेँ प्रस्तुतिमे प्राथमिकता देल जाए तथा यथासम्भव ओही परिवेश/पृष्ठभूमिक जीवन-यापन, कौशल तकनीकी आदिक सृजन रहए।

v) लोकगीतक संकलन एवं अभिलेखनकेँ सुमेलित कएल जाए।

vi) संकलनकर्ता, अभिलेखकर्ता, एवं अन्य विशेषज्ञकेँ लोकगीतक भौतिकसँ विश्लेषणात्मक संरक्षण लेल प्रशिक्षित करब, तथा

vii) संकलित सांस्कृतिक सम्पदाक सुरक्षाक हेतु लोकगीतक प्रतिलिपि सांस्कृतिक समुदाय एवं क्षेत्रीय संस्थाकेँ उपलब्ध कराएब जाहिसँ ओ सब सक्रिय बनल रहथि।

नृविज्ञानक मत अछि जे मानवताक विकासक क्रममे लोकमे सर्वप्रथम समष्टि चेतना (Tribal consciousness) आएल। समष्टि चेतना जखन प्रबल भेलैक तँ कालक्रमेँ एवं विभिन्न भौगोलिक सामाजिक परिवेशमे 'हम-चेतना' (we - consciousness)क लोक सतर्क भेल आ' तकर बाद 'अहं चेतना (I - consciousness) विकसित भेलैक। मानव-विकासक वास्तविक यात्रा एतहिसँ प्रारम्भ होइत छैक। ओना हम के छी ? से बुझबाक लेल कहि सकैत छी जे हम एक प्राणी छी, मनुष्य छी, नेपाली छी, भारतीय छी, उच्चवर्गमे जनमल छी, निम्नवर्गमे जनमल छी, आरक्षित वर्गमे छी, अनारक्षित वर्गमे छी आदि। मुदा, व्यष्टि चेतनाक सोड़ समष्टि चेतनामे ततेक गहींर धरि गेल छैक जे चाहिओकेँ लोक समष्टि चेतनासँ अपनाकेँ फराक नहि राखि सकैत अछि आ' अपन

परिचितिक अभिव्यक्ति वा प्रदर्शन समष्टि चेतनामे एकाकार भए करैत अछि। उदाहरण अछि विभिन्न सांस्कृतिक अनुष्ठान, विद्यापति स्मृतिपर्व अथवा मिथिला महोत्सव आदिक आयोजन कएल जाएब। ई आयोजन सभ व्यष्टि-चेतनाक समष्टि चेतनामे एकाकार होएबे थिक। एहिसँ स्पष्ट अछि जे विकासक उत्कर्षक परिचयक हेतु अपन इतिहासक पन्नाकेँ उनटाएब आवश्यक भए जाइछ छैक। बिना इतिहासकेँ देखने, बूझने आ' गमने वर्तमानमे ने प्रासंगिक रहि सकैत छी आ' ने नीक भविष्यक कल्पने कए सकैत छी। मैथिली लोकगीतमे हमरालोकनिक इएह समिष्ट चेतना, हमर राग-विराग, उल्लास, अवसाद पराजय आदि, गीतक माध्यमसँ अभिव्यंजित अछि। आ' तेँ जखन वा जतए कतहु पारम्परिक भासक गीत कानमे पड़ैत अछि, जाहिमे हमर अतीकक समस्त अनुभूति अपन सन्दर्भ आ' परिवेशक संग साकार भेल रहैत अछि, हमर सुषुप्त आत्मीय रागात्मक तन्तु अकस्मात झनझना उठैत अछि। एही हेतु लोकगीतकेँ संस्कृतिक सर्वाधिक बलिष्ठ आ' सुरक्षित तत्त्व मानल गेल अछि।

संस्कृतिक उपयोगिताक प्रसंग एक अमेरिकन समाजशास्त्री ओग बर्नक मत सर्वथा समीचीन अछि जे द्रुत सामाजिक विकास एवं नवोन्मेषक लेल सांस्कृतिक तत्त्वक वैविध्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि (The large number of cultural elements, the greater number of inventions and faster the rate of social change.)। अर्थात् सांस्कृतिक चेतना जतेक प्रखर एवं वैविध्यपूर्ण, विकासक गति ततेक द्रुततर होएत।

मैथिल, सीमाक एहि पारक होथि वा ओहि पारक, अपेक्षित विकासक अवसरसँ वंचित रहलाह छथि। एहना स्थितिमे द्रुत सामाजिक आ' आर्थिक विकासक लेल एक मात्र समाधान सांस्कृतिक चेतनाक जागृति एवं सबलता होएत। एहि अभियानमे मैथिली लोकगीतक संरक्षण उचिते नहि, अनिवार्य सेहो भए गेल अछि।

(नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान एवं रामानन्द युवा क्लव, जनकपुरधामक संयुक्त तत्त्वावधानमे ओतहि 23-24 मइ, 2010 केँ मैथिली लोकसंस्कृति पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठीमेँ प्रस्तुत आलेख।)



उपनिवेशवादक नऽब चालि

औपनिवेशिक शासनक अन्तक संग औपनिवेशिक भाषाक स्थान पर अपन भाषाकेँ प्रतिस्थापित करबाक संकल्प भारतक संग विश्वक अन्यो देशक सरकारक द्वारा कएल गेल छल। तकर मूल कारण छलैक अपन भाषाक माध्यमेँ अपन देशक राजकाज चलाएब, जाहिसँ औपनिवेशिक भाषासँ अपरिचित देशक उपेक्षित एवं अभावग्रस्त ग्रामीण क्षेत्रक बहुसंख्यकक लेल विकासक बाट प्रशस्त भए सकय। जेँ कि, औपनिवेशिक प्रशासन औपनिवेशिक भाषाक माध्यमसँ चलैत छल, तेँ आवश्यक छलैक देशी भाषाकेँ प्रशासनिक भाषाक अनुरूप विकसित कए स्तरीयता प्रदान करब। एहि लेल सर्वप्रथम शब्दावलीक निर्माण कराओल गेल। दोसर स्थान पर छलैक देशी भाषाक माध्यमेँ शिक्षाक व्यवस्था करब। ई प्रयास भारतमे सेहो ओहिना भेल जेना औपनिवेशिक शासनसँ मुक्त आन-आन देश सभमे भेल छल। भारतमे संविधान-निर्माता लोकनिक विश्वास छलनि जे पन्द्रह वर्षक अभ्यन्तर ई काज पूर्ण भए जाएत आ' औपनिवेशिक भाषाक स्थान स्वदेशी भाषा लए लेत। इहो विश्वास छलनि जे देशक जनता जेना एकजुट भए उपनिवेशवादी शासनकेँ समूल उखारि फेंकबाक समय तन-मन-धनसँ एक छल, सएह एकजुटता स्वदेशी भाषाकेँ प्रतिष्ठापित करबामे सेहो ओ सभ देखओताह। मुदा, से भेलैक नहि। सरकार समय बढ़बैत गेल। आब तँ हाल ई अछि जे भारतमे जाधरि देशक एकहुटा राज्य चाहत, औपनिवेशिक भाषा सरकारी कामकाजक माध्यम भारतमे बनले रहत।

तंजानियाँ 1962 ई मे औपनिवेशिक शासनसँ मुक्त भए विश्वक राजनीतिक क्षितिज पर एक स्वतन्त्र देशक रूपमे उदित भेल। राष्ट्रपति न्येरेरे (Nyerere) औपनिवेशिक भाषाक स्थानपर अपन भाषा किस्वाहिलीकेँ विकासक माध्यम बनेबाक संकल्प कएलनि। एहि हेतु शब्दावलीक निर्माण तथा शिक्षाक माध्यम किस्वाहिलीकेँ बनेबाक संकल्पक संग विधान बनल। शब्दावली निर्माणक हेतु Institute of Kiswahili Research स्थापित भेलैक। 1970-80क बीच शब्दावलीक निर्माणक काज सम्पन्न भए छल। निर्धारित नीति आ' कार्य-योजनाक अनुरूप वर्ष 1973-74सँ प्राथमिक स्तरपर किस्वाहिली शिक्षाक माध्यम बनि गेल। सभ किछु सरकारक संकल्प आ' कार्य-योजनाक अनुसार चलय लागल छल। किन्तु 1980क बाद एकाएक तंजानियाँक आर्थिक स्थिति खराब होएए लगलैक। घोर आर्थिक संकटमे फँसल तंजानियाँक समक्ष विश्वबैंक आ' अन्तरराष्ट्रीय मुद्राकोष ओहिना उपस्थित भए गेल, जेना गरामे उतरी देखि महाजन अपन बटुआक संग कर्ताक समक्ष उपस्थित भए जाइत छथि। ओ दूनू सहानुभूति प्रदर्शित करैत कतेको तरहक कागत पर तंजानियाँ सरकारक औंठा छाप लए लेलक। ओकर शर्तमे प्रमुख छल आर्थिक सुधार। आर्थिक सुधारक मतलब छलैक देशक अर्थ-व्यवस्थाक उदारीकरण एवं शिक्षाक संगहि, विभिन्न क्षेत्रमे निजीकरणक प्रक्रियाकेँ प्रश्रय देब। एहि बाट पर चलब तंजानियाँक वाध्यता भए गेलैक। पहिल चपेटमे आएल तंजानियाँक भाषा नीति। 1966 ई. मे जे तंजानियाँ अपन बजटक 14.2 प्रतिशत शिक्षा पर आ' 8 प्रतिशत ऋणक शोध पर व्यय करैत छल, से 1987-88 मे राष्ट्रीय बजटक 33.2 प्रतिशत ऋण शोध पर आ' 5.4 प्रतिशत शिक्षा पर खर्च करए लागल। 1992 ई. मे शिक्षा

पर व्यय घटि केँ 4 प्रतिशत भए गेलैक। विश्वबैंक आ' अन्तरराष्ट्रीय मुद्राकोषक एक प्रमुख शर्त छलैक शिक्षाक निजीकरण। शिक्षाक निजीकरणक अर्थ छल शिक्षा पर सँ सरकारक नियंत्रणक समाप्ति एवं सरकारी भाषा-नीतिसँ मुक्ति अर्थात् किस्वाहिलीकेँ शिक्षाक माध्यम बनेबासँ मुक्ति। एहि नीतिक लक्ष्य छल एहन नवयुवक वर्गक फौज तैआर करब जे स्थानीय भाषा किस्वाहिलीक पक्षधर नहि बनि सकए ।

ई सर्वज्ञात अछि जे तंजानियाँ ब्रिटिश सरकारक एक उपनिवेश छल। ओहिठामक राजकाजक भाषा अङरेजी छलैक। ओकरा एहि बातक बेसी दुख छलैक जे राजपाट तँ उठिए गेल, आब जँ किस्वाहिली सामर्थ्यवान भए जाएत तँ भाषाक विदाइ सेहो भए जएतैक। लार्ड मेकाएलेक मन्त्र जपए लागल। शासन करबाक अछि तँ भाषाक सूत्र पकड़ि लिअ। एहि हेतु ब्रिटिश सरकारक ओवरसीज डेवलपमेंट एडमिनिसट्रेशन 1985 ई. मे तंजानियाँक आर्थिक विकासक लेल एक दश वर्षीय विकास कार्यक्रम (English Language Teaching Support Programme- ELTSP)क जाल फेंकलक।[1] ओ मुक्त हाथेँ एहि कार्यक्रमक लेल धन उपलब्ध करबैत रहल। अनेकहु प्रकारक प्रलोभनकारी योजना चलौलक। तंजानियाँक अभावग्रस्त लोक आकर्षित भेल। सरकारी स्कूलक बदला निजी स्कूलक दिस डेगक संख्यामे बृद्धि भेलैक। अपन स्थिति मजगूत होइत देखि, ओ एहि शर्त पर आर्थिक सहायता करबाक लेल तैआर रहल जे अङरेजी शिक्षाक माध्यम बनल रहय जाहिसँ तंजानियाँमे ओकर भाषाक वर्चस्व समाप्त नहि होइक। उपनिवेशवादक एहि नव चालिक भान जखन तंजानियाँक सरकारकेँ भेलैक तँ ओ अपन भाषा नीतिक समीक्षा कए, वर्ष 1987 ई सँ शिक्षाक माध्यमक प्रसंग नीति निर्धारित कएलक जे 1985 ई. क योजनाक अनुसार 1992 सँ माध्यमिक स्तर पर आ' 1992 सँ विश्वविद्यालयक स्तर पर किस्वाहिलीकेँ शिक्षाक माध्यम बना देल जाए। एहि निर्णयक अनुसार 2001ई सँ माध्यमिक स्तरपर किस्वाहिलीक शिक्षण आरम्भ होएबा लेल छलैक। कितु अङरेजी माध्यमक स्कूलक संख्या अप्रत्याशित रूपेँ ततेक बढि गेल छल जे किस्वाहिली केँ राजकाजक भाषा बनेबामे तंजानियाँक सरकारक संकल्प, दाताक चाप, आर्थिक स्थिति एवं औपनिवेशिक भाषाक माध्यमेँ शिक्षित प्रबुद्धजनक जालमे ओकर भाषा नीति ओझरा गेल अछि। ओहिना जेना भारतमे भेल अछि।

देशी भाषाकेँ प्रतिष्ठित करबाक योजनाकेँ आर्थिक सहयोगक माध्यमेँ निष्फल करबाक प्रयास आनो-आनो देश सभमे भेल अछि। मेडागास्कर फ्रांसक उपनिवेश छल। स्वाधीनताक बाद मलागसी शिक्षाक माध्यम बनाओल गेल। मुदा, 1988 मे फ्रेंचक शिक्षणक लेल फ्राससँ विभिन्न प्रकारक सुविधा आ' सामग्री मुपतमे आबय लागलासँ मेडागास्करक सरकार फ्रेंचकेँ फेर सँ लागू कए देलक। ओहिना 2003 मे मलेसियाक सरकार फेरसँ अङरेजीकेँ लागू कए देलक ।

1. Suzanne Romaine, Planning for the Survival of Linguistic Diversity, 2006- Criper and Dodd(1984) - stated categorically that English had ceased to be a viable medium of education, Yet, instead of lending support to the government's origional plan to expand the use of Kisawahili, Criper and Dodd offered the disease as the cure. They recommended that the British government fund the ELTSP on condition that English continued to be the medium of instruction.

गत शताब्दीक सातम दशकमे औपनिवेशिक भाषाक विरुद्ध उत्तरी भारतमे जोरसँ आन्दोलन चलल छल जाहिमे कर्पूरी ठाकुर सदृश लोकक महत्त्वपूर्ण योगदान छलैक। किन्तु औपनिवेशिक भाषाक माध्यमेँ शिक्षित समाजक प्रबुद्धजन औपनिवेशिक भाषाक वर्चस्वकेँ समाप्त करबाक लेल चलल आन्दोलनक घोर विरोध कएल आ' जखन माध्यमिक परीक्षासँ अङरेजीक वर्चस्वकेँ समाप्त कए देल गेलैक तँ 'कर्पूरी डिविजन' कहि खिधांस कएल जाए लागल। विश्वबैंक आ' अन्तरराष्ट्रीय मुद्राकोष उपनिवेशी शासनसँ मुक्त भेल विश्वक कतेको देशकेँ आर्थिक उदारीकरण, निजीकरण आदिक नामपर सुविधा उपलब्ध कराबए लागल छल, ओहि जालसँ भारत सेहो बाँचल नहि रहि सकल। सभटा शर्त क्रमशः मानैत गेल। सम्प्रति हालति तँ ई अछि जे शहर-नगरक कोन कथा, सुदूर ग्रामांचल धरिमे औपनिवेशिक माध्यमक निजी स्कूलक पथार लागि गेल अछि।

एहि बीच औपनिवेशिक भाषाक प्रचार-प्रसार आ' संरक्षणक हेतु अमेरिका आ' ब्रिटेन द्वारा बिहारमे जे डेग उठाओल गेल अछि चौंकाबयबाला अछि। 19 नवम्बर, 2008 क स्थानीय दैनिक[2] मे दू टा समाचार अछि - ब्रिटिश सरकारक डिपार्टमेंट आफ इंटरनेशनल डेवलपमेंटक मंत्री डगलस एलेक्जेंडर बिहार एडमिनिस्ट्रेव रिफार्मसक मंचसँ गवर्नेंस आ' प्रशासनिक सुधारक लेल आर्थिक सहयोगक घोषणा कएल तथा तंजानियाँमे वित्तीय सुधारक माध्यमेँ भ्रष्टाचार पर नियंत्रण कोना भेल, तकरो सगर्व उल्लेख कएल। ओ जहानाबाद जाए बालिका विद्यालयक छात्रालोकनिसँ पाठ्यक्रमक प्रंसग जिज्ञासा सेहो कएलनि। ठीक ओही दिन दिल्ली स्थित अमेरिकन दूतावासक रिजिनल इंगलिश लैंग्वेज आफिसक क्षेत्रीय प्रमुख रिचर्ड बोयम तथा वाणिज्य दूतावासक अधिकारी आर. माओलिक बरकेना पटनाक जे.डी. विमेंस कालेजक छात्राकेँ अङरेजीक महत्त्व जनौल आ' कोना ओहि पर अधिकार कएल जाए सकैछ, तकर गुरुमन्त्र देलनि ।

एहिठाम ध्यान देबाक थिक जे भाषाक माध्यमेँ उपनिवेशक विस्तार आ' स्थायित्वक लेल एकसँ एक प्रलोभनकारी योजना बनौनिहार एहि दूनू देशक प्रतिनिधि समाजक एकहि वर्गक दू खण्डक चयन कएलनि अछि। ब्रिटिश सरकारक प्रतिनिधि बालिका विद्यालय गेलाह तँ अमेरिकाक प्रतिनिधि विमेंस कालेज। सुनियोजित रूपसँ ओलोकनि समाजक ओहि वर्गक बीच गेलाह, जाहि वर्गमे शिक्षाक अभाव अछि एवं सरकारी स्तर पर स्त्री-शिक्षाक विकासक लेल प्रयास चलि रहल अछि। प्रायः ई सोचि जे पुरुषवर्ग तँ औपनिवेशिक भाषाक प्रभावमे छथिए, महिला वर्ग सेहो जँ प्रभावमे आबि जाथि तँ एकार्णव भए जाएत।

मैथिली पर दू तरफा मारि

ओहि दिन पटना प्रवासी वयोवृद्ध ओकिल साहेब बाजि रहल छलाह, पचास-साठि वर्ष पूर्व पटनाक सड़क पर मैथिलकेँ मैथिली बजबामे संकोच होइत छलनि। आब तँ देशक जाहि कोनो क्षेत्रमे जाइत छी, मैथिली कानमे पड़ि जाइत अछि। से ठीके बाजल छलाह ओकिल साहेब। ओहि समयमे मिथिलाक गामक गाम कहाँ एतेक उजड़ल-उपटल छल। मिथिलाक नवयुवक आजीविकाक लेल कहाँ रने-बने बौआइत छलाह। ई सम्भव जे ओलोकनि पटना वा आने शहरक सड़क पर

2. *The Hindustan Times*, Patna, 19 November, 2008

मैथिली नहि बाजैत छल होथि, वा मैथिली भाषी नहि भेटैत छल होइतथिन, मुदा ई निश्चित जे हुनकालोकनिक डेरामे मैथिली छोड़ि आन भाषा नहि बाजल जाइत छल होएत। ओलोकनि गामसँ आएल छलाह। गामक इसकूलमे मैथिली भाषा-भाषी संगतुरिआक संगे बढ़ल-खेलाएल छलाह। घरहुमे मैथिली छोड़ि आन भाषा नहि बाजल जाइत छलनि। किन्तु आब स्थिति की अछि? ओहि ओकिल साहेब सन प्रबुद्ध एवं वयोवृद्ध मैथिल सबहक घरसँ पारिवारिक भाषाक रूपमे मैथिली उठि गेल वा उठबा पर अछि। कारण स्पष्ट अछि। हुनक सन्तानक पालन-पोषण आ' शिक्षा-दीक्षा हुनकासँ भिन्न सामाजिक परिवेशमे भेलनि अछि। सामाजिक परिवेशमे परिवर्त्तनसँ नेनहिसँ द्विभाषिक भए जाइत अछि। माए-बापक सऽह सेहो भेटैत छैक। शैक्षणिक क्षेत्रमे तँ छलनिहें, व्यावहारिक जीवनमे सेहो मैथिलीक प्रयोग क्रमशः घटैत गेलैक। आब तँ ओकिल साहेब सन लोकक तेसर खाढ़ी अपवाद छोड़ि एकभाषिया भए गेल अछि। प्रायः एहनहि स्थितिमे समाज भाषावैज्ञानिक टी.एफ.ओ' रैहिलीक निष्कर्ष भेल होएतनि जे जखन कोनहु भाषाक भाषी अनदेशी भाषाक समक्ष समर्पण कए दैत अछि आ' ओकर शब्दावलीक अधिकाधिक प्रयोग करैत द्विभाषिक भए जाइत अछि तँ ओहि भाषाक परिणति होइत अछि मृत्यु।[3] ई भाषाहिक नहि, भाषाक संग स्वतः संक्रमित होइत संस्कृतिक विलुप्तिक कारण सेहो होइत अछि।

भारतीय मूलक ब्रिटेनक एक उद्योगपति लार्ड करन बिलमोरिय[4] अङरेजीक गुण-कीर्तन करैत भारत भ्रमरणक क्रममे बजलाह अछि जे हिन्दी माए थिकनि आ' अङरेजी पत्नी। दूनू सँ प्रेम छनि। अर्थात् हुनक माए हिन्दी भाषी छथिन आ' पत्नी अङरेजी। एहन स्थितिमे स्वाभाविक छैक, ओहि कोटिक दम्पतिक सन्तान ओही स्थानक भाषा बाजत, जाहि परिवेशमे ओ पैघ भए रहल अछि अथवा जाहि भाषामे ओकर माए-बाप सम्भाषण करैत छथिन। एहि कोटिमे निरन्तर मैथिल युवक युवती सेहो आबि रहलाह अछि। एक ग्रामीण महिला अपन व्यथा व्यक्त करैत कहने छलीह, 'एहन दिन आबि गेल जे अपन पौत्र/पौत्रीक संगे गप्प नहि कए सकैत छी।' ई तँ एक सामान्य मैथिल परिवारक उदारहण भेल। प्रो. हरिमोहन झा एक असामान्य मैथिल भेलाह अछि। जनार्दन झा 'जनसीदन'सँ मैथिली संक्रमित भए प्रो. हरिमोहन झामे आएल आ' ओहि ठामसँ मैथिली ख्यातलब्ध कथाकार राजमोहन झामे संक्रमित भेल। किन्तु स्वदेशहिमे रहैत पति-पत्नीक बीच संवादक भाषा मैथिली नहि रहलाक कारणेँ राजमोहन झाक मातृभाषा हुनक सन्तानमे संक्रमित नहि भए सकल।।

ग्रामीण क्षेत्रसँ पटनामे आएल एक टा मैथिल दम्पति छथि। अपने तँ मैथिलीक प्राध्यापक छलाहे, पत्नीकेँ सेहो मैथिलीक प्राध्यापक बनएबामे सफल भेलाह। महिला सशक्तिकरणक दृष्टिसँ हुनक ई प्रयास अवश्य स्तुत्य अछि। मुदा, आजीविकाक आधार मैथिली होइतहु, पारिवारिक सम्भाषणक भाषाक रूपमे मैथिली संक्रमित नहि कएनि। उक्त प्राध्यापक महोदयक तेसर खाढ़ी ओकिलहि साहेबक तेसर पीढ़ी जकाँ मैथिली नहि बजैत छनि। भाषा वैज्ञानिक जे. ए. फिशमैनक

3. When a language surrenders itself to foreign idiom and when all its speakers become bilingual, the penalty is death." -T.F.O' Rahilly- Irish dialects past and present: With chapters on Scottish and Manx. Dublin Institute of Advanced Studies
4. *The Hindustan Times*, Patna, 19 November, 2008

कहब पूर्णतः सत्य अछि, *जे भाषा आनुवंशिक रूपमे संक्रमित नहि होइत अछि, तकरा जीवित रहि सकब कठिन छैक।*[5] जे घटना पहिने विरल छल, से आब सामान्य भेल जाए रहल अछि।

स्वाधीनताक बादहिँ मैथिलीक प्रति प्रान्तीय सरकारक नीति उपेक्षापूर्ण रहल अछि। मातृभाषाक माध्यमेँ शिक्षाक प्रश्न हो, वा माध्यमिक अथवा डिग्री एवं विश्वविद्यालय स्तर पर मैथिलीक पठन-पाठनक प्रश्न, मैथिली उचित स्थान एवं सुविधासँ बंचित कएल जाइत रहल अछि। एतेक धरि जे बिहारक एक मैथिल पूर्व मुख्यमन्त्रीकेँ उर्दूकेँ बिहारक द्वितीय राजभाषा बनेबामे अपन स्वर्णिम भविष्य चमकैत देखेलनि आ' ओहि जोशमे कुलनाम धरि त्यागि देल।[6] धन्य कही अटल बिहारी बाजपेयी जीक सरकारकेँ जे संविधानक आठम अनुसूचीमे मैथिलीकेँ स्थान दए मैथिलीमे प्राणक संचार कए देलनि। नहि तँ पड़ैनी, बदलैत सामाजिक स्थिति आ' भूमण्डलीकरणक चपेटमे मैथिलीक कोन गति होएतैक, स्वतः अनुमान कए सकैत छी।

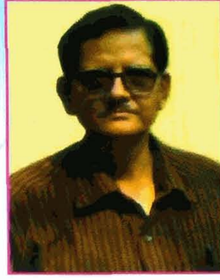


5. J.A.Fishman, Reversing Language shift, Clevedon, *Multilingual Matters, Without intergenerational mother tounge transmission,--no language maintenance is possible. That which is not transmitted , can not be maintained'.*
6. Editorial, *The Indian Nation*, English daily, Patna, 4th June, 1987- *People are told to discard casteism and caste labels and even surnames are being dropped to demonstrate to the world that a particular politician is above caste and creed but the caste weapon is blantantly used to win the elections.*



मैथिलीमे आलोचना लेखन एखनहु किछु गुटबन्दीक चपेटमे प्रशंसात्मक आ निन्दात्मक - एहि दू दलमे विभक्त भए पाठककेँ बेसी काल दिग्भ्रमित करैत छैक तथा पुस्तकक मूल विषय धरि पहुँचबामे कठिनताक अनुभव करैत छथि। ई श्री रमण झा जकाँ एक गुटनिरपेक्ष आलोचक छथि जे अपन आलेख तथ्यानुसार आगाँ बढ़बैत छथि जाहिसँ ओकर प्रामाणिकता बढ़ैत छैक।

—प्रो. आनन्द मिश्र



डा. रमानन्द झा 'रमण'

प्रकाशित कृति

अनुवाद

1. मौलियरक दू नाटक,(साहित्य अकादेमी), 2. छओ बिगहा आठ कट्ठा (साहित्य अकादेमी), 3. सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा, 4. टाकाक गाछ (रिजर्व बैंक), 5. लखपति जी लुटयलाह (रिजर्व बैंक)

सम्पादन

1. मैथिलीक आरम्भिक कथा, 1978, 2. श्यामानन्द रचनावली, 1981, 3. जनार्दन झा 'जनसीदन'कृत *निर्दयी सासु* एवं *पुनर्विवाह*,1984, 4. चेतनाथ झाकृत *श्रीजगन्नाथपुरी यात्रा*, 1993, 5. तेजनाथ झाकृत *सुरराजविजय नाटक*, 1995, 6. रासबिहारी दासकृत *सुमति*, 1996, 7. जीबछ मिश्रकृत *रामेश्वर*, 1996, 8. पण्डित श्री गोविन्द : अर्चा ओ चर्चा (प्रबन्ध सम्पादन), 1997, 8. भेटघाँट, 1998, 9. रूचय तँ सत्य ने तँ फूसि, 1998, 10. पुण्यानन्द झाकृत *मिथिला दर्पण*, 2001, 11. उग्रानन्दकृत *शिवगंगा*, 2002, 12. यदुवर रचनावली, 2003, 13. मैथिली उपन्यासमे चित्रित समाज, 2003, 14. श्रीवल्लभ झाकृत *विद्यापति विवरण*, 2005, 15. कवीश्वर चेतना, 2008, 16. मैथिलीक आरम्भिक यात्रा साहित्य, 2009, 17. ग्रिअर्सनकृत *गीत दीनाभद्री ओ गीत नेबारक*, (अनुवाद पण्डित श्री गोविन्द झा), 2010, 18. ग्रिअर्सनकृत *मैथिली व्याकरण* (अनुवाद पण्डित श्री गोविन्द झा), 2011, 19. लक्ष्मीपति सिंह रचना संचयन (मुद्रणाधीन, स.अ.)

विनिबन्ध

1. लक्ष्मीपति सिंह (मुद्रणाधीन, स.अ.)

समीक्षा

1. नवीन मैथिली कविता, 1981, 2. मैथिली नऽव कविता, 1993, 3. मैथिली साहित्य ओ राजनीति, 1994, 4. अखियासल, 1995, 5. बेसाहल, 2003, 6. भजारल, 2005, 7. हिआओल

व्यावसायिक

1. निर्यात कैसे शुरू करें? 1999 (रिजर्व बैंक)